सोवियत
नाटक

'क्रेमलिन की घण्टियां' में नाटककार निकोलाई पोगोदिन प्रभावशाली चित्रण द्वारा यह दिखाने में सफल रहा है कि भयंकर आर्थिक तबाही, भुखमरी और दारिद्र्य के बीच समाजवाद की नींव डालने के बारे में लेनिन का सपना कैसे साकार हुआ।

सोवियत नाट्य-साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों में व्सेवोलोद विश्नेव्स्की का नाटक 'बलिदान व्यर्थ न गया' एक उल्लेखनीय नाट्य-रचना है, जो गृहयुद्ध के दिनों की एक प्रभावशाली घटना पर आधारित है। घटनाओं की नाटकीयता इस बात से गहन होती है कि अराजकता, उच्छृंखलता, ग़द्दारी और प्रतिक्रान्तिकारी ताकतों से जूझने का बोझ एक महिला पर पड़ता है, जो ख़ुद अभी कम उम्र है।

मानव हृदय की दो महान शक्तियों का नाम है — प्रेम और श्रम। अलेक्सेई अर्बूज़ोव के 'सच्चा प्रेम' नाटक का केन्द्रीय भाव यही है। नाटक में नायिका वाल्या के मानसिक विकास का क्रमिक चित्रण किया गया है। प्रारंभ में वह एक छिछोरी लड़की है जो आत्मिक भलमनसाहत, मानवीय निःस्वार्थता और सुख में विश्वास खो चुकी है। लेकिन उसके जीवन में युवक सेर्गेई का प्रवेश होता है जिसने न केवल उसे अकेलेपन से छुटकारा दिलाया, बल्कि उसके सम्पूर्ण जीवन का रुख ही मोड़ दिया।

सोवियत नाटक

СОВЕТСКАЯ ПЬЕСА

КРЕМЛЁВСКИЕ КУРАНТЫ

ОПТИМИСТИЧЕСКАЯ ТРАГЕДИЯ

ИРКУТСКАЯ ИСТОРИЯ

सोवियत नाटक

क्रेमलिन की घंटियां

बलिदान व्यर्थ न गया...

सच्चा प्रेम

अनुवादक : रामेश सिनहा
सम्पादक : संगमलाल मालवीय

СОВЕТСКАЯ ПЬЕСА

На языке хинди

SOVIET PLAYS

In Hindi

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु , अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। हमें आशा है कि आपकी भाषा में प्रकाशित रूसी और सोवियत साहित्य से आपको हमारे देश की संस्कृति और इसके लोगों की जीवन-पद्धति को अधिक अच्छी तरह जानने-समझने में मदद मिलेगी।

हमारा पता है :

रादुगा प्रकाशन,
१७, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

सोवियत संघ में प्रकाशित

ISBN 5-01-002098-0

अनुक्रम

निकोलाई पोगोदिन
क्रेमलिन की घंटियां

लेनिन पुरस्कार विजेता निकोलाई पोगोदिन (१६०० — १६६२) एक लोकप्रिय नाटककार हैं। उनके प्रारंभिक नाटक 'रफ़्तार' (१६२६), 'कुदाल का काव्य' (१६३१), 'मेरा दोस्त' (१६३२) और 'बॉलनृत्य के बाद' प्रथम पंचवर्षीय योजना में सोवियत जनता के जोशीले श्रम का गौरव गान करते हैं। कालान्तर में लेखक ने सीमा-रक्षकों, महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में सोवियत जनता के साहसिक कार्यों और युद्धोत्तर निर्माण की उपलब्धियों से संबंधित कई नाटक लिखे ('विश्व की सृष्टि', 'मखमली मौसम' और अन्य नाटक)। पोगोदिन के सृजन का चूड़ान्त लेनिन के जीवन से संबंधित उनकी नाट्य-त्रयी में देखने को मिलता है — 'बन्दूकधारी' (१६३७), 'क्रेमलिन की घण्टियां' (१६४०) तथा 'तीसरी करुण-गाथा' (१६५८)।

यह नाट्य-त्रयी लेनिन के जीवन की सच्ची मर्मस्पर्शी घटनाओं पर आधारित है। संस्मरण के माध्यम से उनके जीवन-काल को विभिन्न घटनाओं द्वारा प्रस्तुत किया गया है। नाटक 'बन्दूकधारी' अक्तूबर के सशस्त्र विद्रोह के दिनों की घटना पर आधारित है। 'क्रेमलिन की घण्टियां' नाटक में नवजात सोवियत देश के तनावपूर्ण संक्रमण काल का ज़िक्र है, जब वह शान्तिमय समाजवादी निर्माण की ओर अग्रसर था। नाटक 'तीसरी करुण-गाथा' का विषय — देश के जीवन का एक अत्यन्त जटिल समय है। यह नवीन आर्थिक नीति निर्धारण का एक नाज़ुक काल था।

पात्र

लेनिन।
द्ज़ेर्जिन्स्की।
रिबाकोव, नौसैनिक।
ज़बेलिन, पुराना इंजीनियर।
ज़बेलिना, उसकी पत्नी।
माशा, उनकी बेटी।
चुदनोव, किसान।
आन्ना, चुदनोव की पत्नी।
रोमान, उनका बेटा।
लीज़ा, उनकी बहू।
स्त्योप्का
मारूस्या } उसके बच्चे।
काज़ानोक, घंटा बजानेवाला।
पुराना मज़दूर।
दाढ़ीवाला मज़दूर।
अपरेन्टिस।
भिखारिन।
बूढ़ी औरत।
बुनाई करनेवाली महिला
भयभीत महिला
संशयवादी
आशावादी } ज़बेलिन के मेहमान।
ज़बेलिन की बावर्चिन।
चेयरमैन।
लेनिन की सेक्रेटरी।
ग्लागोलेव, विशेषज्ञ।

'क्रेमलिन की घण्टियां' में नाटककार प्रभावशाली चित्रण द्वारा यह दिखाने में सफल रहा है कि भयंकर आर्थिक तबाही और भुखमरी के बीच समाजवाद की नींव डालने के बारे में लेनिन का सपना कैसे साकार हुआ, कैसे इस सपने की प्रेरक शक्ति से देशभक्त रूसी बुद्धिजीवी नये समाज के निर्माण की ओर अग्रसर होता है।

लेनिन के बहुमूल्य विचारों और भावनाओं को तथा देश व जनता के भविष्य पर उनके प्रभाव को उद्घाटित करते हुए नाटककार ने उनका चित्रण प्रतिभाशाली चिन्तक, लोकप्रिय नेता के रूप में ही नहीं, वरन् एक सहृदय, दयालु और संवेदनशील सामान्य व्यक्ति के रूप में भी किया है, जिसकी भावनाएं प्रबल हैं, बुद्धि प्रखर और चुभते व्यंग्य से परिपूर्ण है।

लेनिन के कक्ष में सभी मुख्य पात्रों के जीवन पथ मिलते हैं। मरम्मत के बाद क्रेमलिन की घण्टियों की गूंज भी यहीं सुनायी देती है। राज्य की मुख्य घड़ी का जीर्णोद्धार देश के पुनर्जन्म और पुनर्निर्माण का प्रतीक है।

टाइपिस्ट।
घड़ीसाज़।
अंग्रेज़ लेखक।
गुड़ियां बेचनेवाली।
लाल सैनिक।
राही।
पादरी।
दलाल।
चर्बी बेचनेवाली।
औरत।
गोटा-बेल बेचनेवाली।
बूटवाला।
पहला आवारा लड़का।
दूसरा आवारा लड़का।
तीसरा आवारा लड़का।
राहगीर, दुकानदार, फ़ौजी।

पहला अंक

दृश्य १

(मास्को का ईवेर्स्कीया गिरजाघर। अविराम जगमगाते हुए दीपदान। अप्रैल की एक शाम का दृश्य। लाल चेहरेवाली एक मोटी-सी औरत गुड़ियां बेच रही है। पुराने फ़ैशन का कोट पहने हुए एक दलाल जल्दी-जल्दी कभी आगे जाता है, कभी पीछे। राहगीर गुज़रते जाते हैं। उनकी वेषभूषा और हाव-भाव से यह साफ़ है कि वे ग़रीब लोग हैं जो किसी तरह भुखमरी के राशन पर दिन काट रहे हैं)

गुड़ियां बेचनेवाली : गुड़ियां ले लो , गुड़ियां ले लो! बच्चों के लिए बेहतरीन तोहफ़ा! सिल्क की गुड़ियां, साटन की गुड़ियां, कीमखाब की गुड़ियां—हर एक का दाम साढ़े सात लाख रूबल! चुन लो, छांट लो, गुड़ियां ले लो! गुड़ियां ले लो!

(एक पादरी आता है। आंखें नीचे किये हुए धीरे-धीरे वह आगे बढ़ जाता है)

पादरी (कोमल स्वर में, किन्तु साफ़-साफ़) : सोने के प्राचीन सलीब ले लो! आटा दे दो, सलीब ले लो!!

राही : क्या घंटे भी आप आटे से बदल लेंगे?

पादरी : क्यों? क्या तुम लेना चाहते हो?

राही : तुम पूरे जूडाज़ * हो! मौक़ा मिले तो तुम माता मरियम को भी बेच डालो!

गोटा-बेल बेचनेवाली : ब्रसेल्स और शैन्टिली की बेलें ले लो!

---

* यीशु मसीह के साथ विश्वासघात करनेवाला उनका एक कुख्यात शिष्य।

बढ़िया-बढ़िया गोटे ले लो! खरीद लो, ब्रसेल्स और शैन्टिली की बेलें! बढ़िया-बढ़िया गोटे ले लो!

दलाल (भर्रायी, शराबी जैसी आवाज़ में): पुराने कपड़ों के बदले जौ ले लो! बाज़ार का सबसे अच्छा जौ! बाहर से आया है, ख़ूब ख़ुशबूदार है! पुराने कपड़े दे दो, जौ ले लो, जौ!

रास्ता चलती एक औरत: शाल लोगे क्या?

दलाल: यह तो देखकर ही कहा जा सकता है।

औरत: ओरेन्बुर्ग का रोयेंदार शाल है, एकदम नया।

दलाल: है कहां?

औरत: तुम्हारा जौ कहां है?

दलाल: यहीं, पास ही है। घबराओ नहीं, मैं तुम्हें ठगूंगा नहीं। मैं एक ईमानदार व्यापारी हूं।

(औरत और दलाल चले जाते हैं)

चर्बी बेचनेवाली: चर्बी ले लो, चर्बी ले लो! पोल्तावा की चर्बी ले लो। अभी-अभी पोल्तावा से आयी है! सोना दो, चर्बी लो!

आवाज़ें: पेटियां, पेटियां, पेटियां! सैकरीन की गोलियां! शक्कर जैसी मीठी, शक्कर जैसी बढ़िया—खर्च कम, किफ़ायत ज़्यादा...

गोटा-बेल बेचनेवाली: गोटे ले लो! ब्रसेल्स और शैन्टिली के गोटे ले लो!

(एक आदमी आता है। चेहरे से उम्र का अन्दाज़ नहीं लगता। वह पेटेन्ट लेदर के ऊपर तक कसे हुए औगीवाले बूट और चारख़ानेदार कपड़े का फ़ौजी गर्म कोट पहने है तथा अंग्रेज़ी ढंग की टोपी लगाये है)

बूटवाला: एकदम नया धर्म-विरोधी साहित्य ले लो! दोस्तोयेवस्की की नयी किताब—उनके मरने के बाद छपी किताब—'पति की ग़ैर मौजूदगी में पत्नी के कारनामे'! काउन्ट सोलोगुब की प्राइवेट लाइफ़ के असली किस्से—किस्म-किस्म के चुटकुलों और दास्तानों से भरपूर। उनकी हरकतों के सचित्र किस्सों से भरपूर।

पहला आवारा लड़का: यह क्या है? यह इक्का तो दूसरे ताश का है!

दूसरा आवारा लड़का: अब तू बकता क्या है!

(दोनों में गुत्थमगुत्था शुरू हो जाती है)

पहला आवारा लड़का: पैसा रख!

दूसरा आवारा लड़का: अच्छा-अच्छा! अपना पंजा तो हटा!

पहला आवारा लड़का: बोल, ईमानदारी से खेलेगा?

दूसरा आवारा लड़का: ज़िंदगी की क़सम।

(वे फिर खेलने लगते हैं)

गोटा-बेल बेचनेवाली: ब्रसेल्स और शैन्टिली की गोटे ले लो!

दूसरा आवारा लड़का: इस बार मैंने पांच लाख लगाया।

पहला आवारा लड़का: दौलत की शक्ल तो दिखा।

दूसरा आवारा लड़का: यह रहा।

तीसरा आवारा लड़का: अरे देखो! वह दियासलाइयां बेचनेवाला इंजीनियर आ रहा है।

ज़बेलिन (मंच के पीछे से): दियासलाइयां। गंधक की दियासलाइयां। ख़तराविहीन दियासलाइयां। गंधक की बनी दियासलाइयां, ख़तरे से मुक्त दियासलाइयां!

पहला आवारा लड़का: होशियार! हम उसके रुपयों-पैसों और सिगरेटों को मार लेंगे। फिर वह हमारे नाम रोता रहेगा।

(ज़बेलिन सामने आता है। उसकी दाढ़ी सफ़ाचट है। कनपटी और मूंछों के चितकबरे बाल करीने से कटे हैं। वह वर्दीवाला कोट पहने है और टोपी लगाये है। उसका कॉलर कलफ़ के कारण कड़ा है। उस पर वह पुराने फ़ैशन की एक महंगी टाई बांधे है। ऊपर से एक पुराना ओवरकोट डाले हुए है)

पहला आवारा लड़का: नमस्ते, इंजीनियर!

ज़बेलिन: नमस्ते।

पहला आवारा लड़का: क्या हाल-चाल है?

ज़बेलिन: तुम्हारे हाल से बेहतर नहीं।

पहला आवारा लड़का: ऐसा कैसे हो सकता है! आपके पास एक घर तो है। मैं तो कोलतार के एक पुराने बॉयलर में रहता हूं!

ज़बेलिन: जल्द ही मैं भी तुम्हीं के पास आ जाऊंगा।

पहला आवारा लड़का : तब की तब देखी जायेगी। अभी से क्यों ऐसा कहते हो! आज धन्धा अच्छा रहा?

ज़बेलिन : कह नहीं सकता। पैसे गिने नहीं।

पहला आवारा लड़का : लाइये, हम लोग गिन दें!

ज़बेलिन : तुम कैसे गिनोगे?

पहला आवारा लड़का : मैं? सवालों में तो मैं अव्वल आता था। अरे, उधर देखो! इंजीनियर साहब, जाओ। हम लोग आपसे फिर मिलेंगे। भागो, लौंडो, चलो हम लोग त्वेर्सकाया की तरफ़ कैन्टीन में चलें। शायद कुछ खाने को ही मिल जाय।

(गाते हुए लड़के चले जाते हैं)

दोन नदी में सर-सर करता
जाता स्टीमर एक तेज़,
चप्पू उसके करते ख़ूब
घर्र-घर्र आवाज़!
नदी गया था मछली मारने
व्हाइट गार्ड एक मछलीमार,
आया झटका तीव्र पवन का
बन गया मछली का आहार!!

ज़बेलिन : लड़ाई से पहले की गंधक की सलाइयां!

गुड़ियां बेचनेवाली : बच्चों के लिए तोहफ़ा, सिल्क की गुड़ियां, साटन की गुड़ियां, कीमखाब की गुड़ियां! गुड़ियां ले लो, गुड़ियां ले लो!! अपने बच्चों के लिए अनोखा तोहफ़ा ले लो!!

(गुड़ियां बेचनेवाली के पास आकर एक लाल सैनिक रुक जाता है)

लाल सैनिक : कितने की है?

गुड़ियां बेचनेवाली : सात लाख पचास हज़ार की।

लाल सैनिक : क्या कहा? एक गुड़िया के लिए इतने सारे पैसे? इस बेकार चीज़ के लिए इतना रुपया? यह तो दिन-दहाड़े लूट है!

गुड़ियां बेचनेवाली : अरे, नहीं चाहिए तो न खरीदो।

लाल सैनिक : कौन कहता है नहीं चाहिए? काम की बात करो। ठीक बोलो, क्या लोगी?

गुड़ियां बेचनेवाली : वही सात लाख, पचास हज़ार।

लाल सैनिक : पांच लाख नहीं?

गुड़ियां बेचनेवाली : मज़ाक़ करना है तो कहीं और जाओ।

लाल सैनिक : मैं तुम्हें पूरे पांच लाख दूंगा... आख़िर... कोई घोड़ा तो बेच नहीं रही हो—गुड़िया है न, खिलौना ही तो है।

गुड़ियां बेचनेवाली : अगर ऐसी बात है, तो अपना रास्ता नापो! छोड़ो गुड़ियों का चक्कर **(गुस्से से)** दबा-दुबूकर उन्हें गन्दा न करो!

लाल सैनिक (शान्तिपूर्वक) : अच्छा, अच्छा! तुम अपने हाथ से निकाल दो। इसमें कौन सबसे बड़ी है?

ज़बेलिन : क्यों? क्या तौलकर लेंगे?

लाल सैनिक : देखा! कुछ दिखाने को भी तो हो कि इतने रुपये में क्या मिला! **(गुड़ियां बेचनेवाली को ध्यान से देखते हुए)** देखो जी, वह ऐंचा-तानी आंखोंवाली मुझे मत देना!

गुड़ियां बेचनेवाली : अनाड़ी कहीं का! इसकी आंखें ऐंचा-तानी नहीं हैं, इसके चेहरे पर एक ख़ास भाव है।

लाल सैनिक : अगर क़ीमत नहीं घटातीं तो चीज़ भी बढ़िया देनी चाहिए। **(ज़बेलिन से)** ठीक है न?

ज़बेलिन : तुम्हें गुड़िया लेने की ज़रूरत ही क्या है?

लाल सैनिक : यह भी क्या सवाल है? मेरी छोटी लड़की है, उसी के लिए ले रहा हूं। मोर्चे से लौटकर मैं घर जा रहा हूं। साथ में कुछ तोहफ़े ले जाना चाहता हूं। तुम्हारी दियासलाइयों की क्या क़ीमत है?

ज़बेलिन : मैं मोल-भाव नहीं करता हूं।

लाल सैनिक : जलती भी हैं?

ज़बेलिन : धोखा देने की आदत नहीं।

लाल सैनिक : यह कौन जाने! कल मैंने एक रोटी ख़रीदी थी। उसमें मुंह लगाया—सारा मुंह कड़ुवा हो गया! कुत्ते को दी—उसने भी सूंघकर मुंह फेर लिया। लेकिन तुम कहो कि ये सचमुच अच्छी हैं, तो मैं कुछ सलाइयां भी ले लूंगा। दूसरी चीज़ों के साथ उन्हें भी गांव लेता जाऊंगा। गांव में दियासलाइयों तक का अकाल है। अब हर चीज़ का अकाल है। **(नोटों का एक बंडल निकालते हुए)** लेकिन, यह देखो, हम कितने रईस हैं—सैकड़ों और हज़ारों रुपये यों ही फेंकते चल रहे हैं! दौलत में लोट रहे हैं!

ज़बेलिन: बहुत दिनों से फ़ौजी हो?

लाल सैनिक: १९१४ में प्रथम विश्वयुद्ध में लड़ा था और फिर गृहयुद्ध में भी।

ज़बेलिन: हुंह ... तब तुम्हारे हाथ लगा ही क्या नहीं है! एक गुड़िया, दियासलाई की एक डिबिया — बस?

लाल सैनिक: कुछ भी हो, आख़िर तोहफ़े तो ये भी हैं। अरे, यहां खड़ा मैं तुमसे बात करता रहूंगा तो मेरी गाड़ी छूट जायेगी। घड़ी है, क्या बजा है?

ज़बेलिन: नहीं। क्रेमलिन की घड़ी बन्द हो गयी है।

लाल सैनिक: क्यों? क्या उसमें कोई ख़राबी आ गयी है?

ज़बेलिन: हां, मेरे दोस्त! राज्य की इस मुख्य घड़ी में शायद कुछ गड़बड़ी हो गयी है! क्रेमलिन की घंटियां ख़ामोश हैं। ख़ुदा हाफ़िज़, सैनिक! तुम गुड़िया ही घर ले जाओ।

लाल सैनिक: सुनो जी, मैं तुम्हारे जैसों को ख़ूब जानता हूं। इस तरह की बातें करोगे तो दीवाल के पास खड़ा करके तुम्हें गोली मार दी जायेगी।

ज़बेलिन: तुम्हारा ख़याल है कि उससे हालत सुधर जायेगी? हरगिज़ नहीं!

लाल सैनिक: यह मैं नहीं जानता, लेकिन इतना ज़रूर जानता हूं कि तुम्हें गोली मार देने से कोई नुक़सान न होगा। अच्छा, ख़ुदा हाफ़िज़! मैं जल्दी में हूं।

ज़बेलिन: लड़ाई से पहले की दियासलाइयां। गंधक की दियासलाइयां। **(गुड़ियां बेचनेवाली से)** हां, क्रेमलिन की घंटियां ख़ामोश हैं... श्रीमती जी, इसके बारे में आपका क्या ख़याल है?

गुड़ियां बेचनेवाली: मेरी अलार्म घड़ी ज़मीन पर गिर पड़ी थी। वह भी बन्द हो गयी है। अब पता नहीं चलती है कि उसे कहीं ठीक करायें।

ज़बेलिन: श्रीमती जी, आप बकवास कर रही हैं।

गुड़ियां बेचनेवाली: आप इतने होशियार हैं, तो मूर्ख लोगों से क्यों बोलते हैं? **(उसकी तरफ़ से मुंह घुमा लेती है)** अपने बच्चों के लिए भेंट ले लो! बच्चों के लिए इससे अच्छा तोहफ़ा नहीं हो सकता। चुन लो, छांट लो, बढ़िया से बढ़िया गुड़िया ले लो!

ज़बेलिन: लड़ाई से पहले की गंधक की दियासलाइयां! सेफ़्टी दियासलाइयां!

(दलाल लौट आता है)

दलाल: पुराने कपड़ों के बदले जौ ले लो। कपड़े दो, जौ लो! जौ से अधिक ताक़तवर कोई चीज़ नहीं होती।

ज़बेलिन: ऐ जौवाले! सुनो!

दलाल: फ़र्माइये, हुज़ूर!

ज़बेलिन: लन्दन में अगर वेस्टमिंस्टर एबे की घंटियां ख़ामोश हो जायें तो तुम्हारा क्या ख़याल है—अंग्रेज़ क्या कहेंगे?

दलाल: मैं नहीं जानता, हुज़ूर!

ज़बेलिन: वे कहेंगे इंग्लैण्ड का अन्त हो गया।

दलाल: शायद! हां, शायद वे यही कहेंगे!

ज़बेलिन: भाई, मैं तुम्हें बताता हूं कि यह फ़ालिज है, दिल का फ़ालिज है।

दलाल: हुज़ूर! अच्छा हो अगर आप ऐसी बातें अपनी श्रीमती जी से ही करें। हमसे नहीं।

गुड़ियां बेचनेवाली: तुम जी० पी० यू० * के लिए मर रहे हो, तो जाओ मरो। लेकिन, ख़ुदा के वास्ते, हमें अपने साथ न घसीटो! तुम वैधानिक जनवादी ** हो तो बने रहो—यह विज्ञापन किसलिए करते घूम रहे हो? क्रेमलिन-विरोधी प्रचार करके मेरे ग्राहकों को भड़का रहे हो? तुम्हें यह राज पसन्द नहीं तो जाओ क्राइमिया में व्रांगेल *** के पास चले जाओ। तुम ईमानदार सोवियत मुनाफ़ाख़ोर नहीं हो! मैं इतना चिल्ला रही हूं और तुम ऐसे खड़े हो जैसे तुम्हारे ज़बान ही नहीं है। घमण्ड से फूले जा रहे हो। तुम तो दूसरे यीशु हो—तुम्हारे पास सिर्फ़ ख़ुदाई सन्देश-वाहक नहीं हैं! **(वहां से दूर हटते हुए)** अपने बच्चों के लिए बढ़िया उपहार ले लो! **(आंखों से ओझल हो जाती है)**

---

* सुरक्षा विभाग।

** रूसी पूंजीपति वर्ग की मुख्य पार्टी जो क्रान्ति के समय पूर्णतया क्रान्तिविरोधी बन गयी थी।

*** एक व्हाइट गार्ड जनरल जिसका विदेशी साम्राजियों और रूसी क्रान्ति के विरोधियों ने इस्तेमाल किया था।

ज़बेलिन : मैं तो वही कहता हूं जो सोचता हूं। तुम लोग डरपोक हो।

दलाल : निस्सन्देह, मैं डरता हूं। कहूं तो, बुरा न मानियेगा, हुज़ूर, इस तरह की बातचीत के लिए आदमी को वे सण्डासें साफ़ करने का काम दे सकते हैं। वेस्टमिन्स्टर की घंटियों की बात दूर रही। **(चला जाता है)**

पादरी (जो पास ही खड़ा हुआ इस बातचीत को सुन रहा था) : तुम्हें देखकर मुझे लगता है कि तुम्हारे दिल में एक महान ज्योति जल रही है।

ज़बेलिन : माफ़ करना, पादरियों से मैं कभी कोई बात नहीं करता।

पादरी : मेरे दोस्त, यही तो तुम्हारी ग़लती है। इन लोगों ने पादरियों को निकाल बाहर किया है और इसका नतीजा क्या निकला?

ज़बेलिन : ख़ास तौर से तुमसे बात करना तो और भी गन्दा होगा।

पादरी : तुम तो किसी भी तरफ़ नहीं हो! तुम ज़रूर डूब जाओगे।

ज़बेलिन : मैं फिर कहता हूं कि पादरियों और बदमाशों से मैं कोई ताल्लुक़ नहीं रखता।

पादरी : तुम शैतान की औलाद हो!

ज़बेलिन : बुड्ढा पाखण्डी, भाग जा यहां से!

पादरी : पाखण्डी तू ख़ुद है!

ज़बेलिन : अब मैं मरम्मत करूंगा तुम्हारी।

पादरी : तेरे ऊपर शैतान सवार है। तू पूरी तरह पागल हो गया है। मैं तुझे बताये देता हूं!

(पादरी वहां से खिसक जाता है। उसी समय ज़बेलिन की पत्नी आ जाती है। उसकी उम्र चालीस की होगी, लेकिन लगती कम है। किसी समय वह सुन्दर रही होगी, आकर्षक अब भी है। उसके कपड़े व्यवस्थित हैं। सिर पर एक सफ़ेद ऊनी शाल है)

ज़बेलिना : अन्तोन इवानोविच, कृपया घर चलें।

ज़बेलिन : सड़कें ही मेरा घर हैं।

ज़बेलिना : सड़कों पर रहने के लिए तुम्हें कौन मजबूर करता है? कोई नहीं।

ज़बेलिन : सोवियत सत्ता। यह तुम्हारी अक्ल का फितूर है। इसके बारे में हम बाद में बात करेंगे—जब तुम्हारी समझ ठीक हो जायेगी। मेरी सलाह है कि तुम अपनी बेटी की देखभाल करो... मुझे देखभाल की ज़रूरत नहीं है।

ज़बेलिना : लेकिन माशा तो अब बच्ची नहीं रह गयी। वह ख़ुद अपनी देखभाल कर सकती है। उसकी ख़ुद अपनी ज़िन्दगी है।

ज़बेलिन : हां, तुम यह ठीक कहती हो। और कल अगर वह एक वेश्या बन जाती है तो मुझे ताज्जुब नहीं होगा!

ज़बेलिना : अन्तोन इवानोविच, ख़ुदा तुम पर रहम करे। तुम माशा के बारे में ऐसी बातें कर रहे हो, अपनी ही बेटी के बारे में!

ज़बेलिन : क्या तुम जानती हो कि एक घंटा पहले ही तुम्हारी बेटी एक आदमी के साथ मैट्रोपोल होटल गयी थी?

ज़बेलिना : मैट्रोपोल अब होटल नहीं रह गया। वह सोवियतों का अब दूसरा दफ़्तर बन गया है।

ज़बेलिन : मैं नहीं जानता, वहां कौन-सा दफ़्तर है। मैट्रोपोल तो एक होटल है। तुम्हारी बेटी वहां जाती है। उसे ख़ुद मैंने देखा है।

ज़बेलिना : तुम मेरे पति हो या न हो, ख़बरदार, अगर मुझसे ऐसी बातें फिर कहीं! मर्ज़ी हो तो मुझे तलाक़ दे दो।

ज़बेलिन : वह महाशय अगर तीन दिनों के अन्दर हमारे घर बात करने नहीं आते तो फिर जो ठीक समझूंगा वह करूंगा...

ज़बेलिना : ठीक है, अब इस बात को ख़त्म करें... अन्तोन इवानोविच! यह बड़ा दुखदायी जीवन है जो अब हमने शुरू किया है... बड़ा कटु है!

ज़बेलिन : पूरा रूस ही अब दुखदायी जीवन बिता रहा है। जीवन बहुत कटु हो गया है।

बूटवाला : काउन्ट कैलिऑस्ट्रो, मेरे पास आधा मग देशी ठर्रा है। आप कुछ लेना चाहते हैं? **(ज़बेलिना को देखकर)** ओह, माफ़ कीजियेगा।

ज़बेलिना : अन्तोन इवानोविच, तुम्हारे हाथ बिल्कुल ठिठुर गये हैं। मेरे साथ घर चलो। सुबह से तुमने कुछ खाया नहीं। आओ, चलें।

ज़बेलिन : मैं सुबह कभी नहीं खाता। तुम जहां जा रही थीं, जाओ।

ज़बेलिना : ओह, कैसी दुखदायी ज़िन्दगी है! **(जाती है)**

ज़बेलिन : गन्धक की बनी दियासलाइयां, लड़ाई से पहले की दियासलाइयां... बढ़िया...

(फेरीवालों में यकायक हलचल मच जाती है। मंच पर दूर कहीं से लाल सैनिकों के गाने की आवाज़ आ रही है)

चर्बी बेचनेवाली: ओह, मुझे कहीं छिपा लो, मेरी मदद करो! मैं चर्बी छिपाये हूं। मेरे शरीर पर सब जगह चर्बी ही चर्बी है। **(भागती है)**

(सैन्य प्रशिक्षार्थी गाते हुए निकल जाते हैं)

दृश्य २

(मैट्रोपोल होटल का एक कमरा। वह होटल के कमरे जैसा नहीं लगता। चारों तरफ़ अख़बारों और किताबों के अम्बार लगे हैं। मेज़ पर एक लैम्प, काली रोटी का एक टुकड़ा, चाय की केतली, एक गिलास और कारतूसों के कई बंडल रखे हैं। चारपाई के ऊपर दीवाल पर एक राइफ़ल, एक तलवार और एक पिस्तौल लटक रहे हैं। पिस्तौल चमड़े के कबूर में बन्द है। दरवाज़े के समीप कोट और हैट पहने माशा ज़बेलिना खड़ी है। कमरे के दूसरे किनारे पर रिबाकोव बैठा हुआ किताब के पन्ने पलट रहा है। माशा थोड़ी देर तक उसे यों ही देखती रहती है। उसके चेहरे पर एक व्यंग्यात्मक मुस्कान है)

माशा: तुमने दरवाज़ा क्यों बन्द किया?
रिबाकोव: ताकि कोई अन्दर न आ सके।
माशा: झूठ...

(रिबाकोव चुप है)

माशा: दरवाज़ा खोल दो, मैं जा रही हूं।
रिबाकोव: नहीं खोलूंगा।
माशा: समझते हो यह तुम क्या कर रहे हो?

(रिबाकोव चुप है)

कैसी गन्दी चाल है! दरवाज़ा बन्द करके उसकी चाभी ले लेना — उचक्कों की तरह! तुम हंस रहे हो, कैसी घृणित हंसी है... मुझे जाने दो। तुमने सुना?

रिबाकोव: सुना।

माशा: फिर?

रिबाकोव: दरवाज़ा मैं नहीं खोलूंगा।

माशा: तो मैं खिड़की से कूद जाऊंगी।

रिबाकोव: तो कूद जाओ।

माशा: यह कितनी गन्दी हरकत है। लेकिन तुम्हारे बिल्कुल अनुरूप है। तुम्हारा ख़याल है कि कोई लड़की तुमसे मिलने आये तो पहला काम यह करना चाहिए कि दरवाज़े बन्द कर दो! है न?

रिबाकोव: यह कोई गन्दी हरकत नहीं है।

माशा: अत्यन्त घृणित हरकत है।

रिबाकोव: हरगिज़ नहीं।

माशा: अत्यन्त जघन्य हरकत है।

रिबाकोव: आज मैं तुम्हारे साथ फ़ैसला करके रहूंगा।

माशा: दरवाज़े बन्द करके?

रिबाकोव: मैं कर ही क्या सकता हूं?

माशा: और इस पर भी तुम में यह कहने की हिम्मत है कि तुम मुझसे प्यार करते हो?

रिबाकोव: फिर तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूं! जब भी मैं तुमसे बात करने की कोशिश करता था, तुम हंसकर भाग जाती थीं। अब देखें, कैसे भागती हो!

माशा: इसके माने हुए कि तुमने मेरे साथ छल किया?

रिबाकोव: बिल्कुल ठीक। झांसा देकर मैंने तुम्हें यहां बुलाया है। बैठ जाओ।

माशा: तुम्हारे बोलने का ढंग कैसा बढ़िया है! क्या तुम मेरे ऊपर हुक्म चलाने की कोशिश कर रहे हो?

रिबाकोव: बैठ जाओ।

माशा: मैं नहीं बैठूंगी।

रिबाकोव: न बैठो, उससे मेरे लिए कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। चाहो तो सुबह तक तुम इसी तरह खड़ी रह सकती हो।

माशा: सुबह तक—तुम्हारा मतलब क्या?

रिबाकोव: वही जो मैं कह रहा हूं—सुबह तक, कल सुबह तक!

माशा: रिबाकोव, तुम नशे में तो नहीं हो?

रिबाकोव: मारीया अन्तोनोवना, तुम्हारी चुहल से अब मैं थक गया हूं। तुम्हारे खेलने के लिए मैं कोई खिलौना नहीं हूं, तुम्हारी ही तरह मैं भी हाड़-मांस का बना एक इनसान हूं। तुम मुझसे ज़्यादा पढ़ी-लिखी हो। हमारा-तुम्हारा जिस तरह पालन-पोषण हुआ है उसका भी कोई मुक़ाबला नहीं किया जा सकता। लेकिन नामालूम किस वजह से तुम मेरे साथ इतना बेहूदा बर्ताव कर रही हो। तो ठीक है, अब मैं भी तुम्हारे ही क़दमों पर चलूंगा! जब तक मुझे तुम जवाब नहीं दे दोगी तब तक यह दरवाज़ा बन्द रहेगा और तुम इसी तरह यहीं खड़ी रहोगी।

माशा: अच्छा! तो तुम कहना क्या चाहते हो?

रिबाकोव: कहने को—कहने को दरअसल कुछ नहीं है... मुझे कहना ही क्या है, तुम सब जानती हो।

माशा: लेकिन तुम मुझसे बात करना चाहते थे न? करो फिर, मैं सुन रही हूं!

रिबाकोव: यह ठीक नहीं है, मारीया अन्तोनोवना! तुम मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं कर रही हो...

माशा: हज़ारवीं बार मैं तुमसे फिर कह रही हूं कि मुझे मारीया अन्तोनोवना मत कहो। माशा कहकर बुलाने की इजाज़त बहुत पहले ही मैंने तुम्हें दे दी थी।

रिबाकोव: माशा! मुझे और कुछ नहीं कहना है। मुझे जो कुछ कहना है वह मैं कई-कई बार कह चुका हूं।

माशा: प्रिय रिबाकोव, मैं तुम्हारी पत्नी नहीं बनूंगी।

रिबाकोव: आखिर क्यों?

माशा: मैं नहीं बनूंगी, बस। इस बात को भूल जाओ। गुड बाई। दरवाज़ा खोल दो।

रिबाकोव: यह कोई जवाब नहीं है। क्या यही तरीका है तुम्हारा?

माशा: बिल्कुल यही मेरा आख़िरी जवाब है।

रिबाकोव (यकायक बहुत उत्तेजित होकर): तब फिर तुम्हारे चेहरे पर यह मैत्री भाव क्यों है? जब कोई लड़की किसी आदमी को अस्वीकार कर देती है तब उसकी आंखों में इतनी ममता, इतनी ख़ुशी नहीं रह

सकती, रह सकती है क्या? या सचमुच ऐसी भी लड़कियां होती हैं जिनकी सहृदयता और सौन्दर्य का कोई मतलब ही नहीं होता? "आकाश की अप्सरा की तरह रूपसी, किन्तु राक्षसी की तरह बद और काइयां!.."

माशा: अरे, तो क्या तुम जानते नहीं थे? मैं राक्षसी ही तो हूं—बद और काइयां!

रिबाकोव: इसमें खुशी की क्या बात है?

माशा: और तुम, गृहयुद्ध के एक योद्धा... कितनी हास्यास्पद बात है... कितनी शर्मनाक...

रिबाकोव: अच्छा, तो मैं अब समझा! तुम्हारी राय में गृहयुद्ध का योद्धा इनसान नहीं होता?

माशा: मैंने यह नहीं कहा था।

(टेलीफ़ोन की घंटी बजती है)

रिबाकोव: हां, मैं रिबाकोव बोल रहा हूं... जन-कमिसार परिषद से? मैं रिबाकोव बोल रहा हूं... कृपया व्लादीमिर इल्यीच से कह दीजिये कि उनके आदेश पूरे हो गये हैं...हां... ठीक...

माशा: देखो तो! हम कैसे समय में जी रहे हैं! तुम्हारा लेनिन से इतना नज़दीकी परिचय है...

रिबाकोव: मारीया... माशा! तुम बिल्कुल ग़लत सोच रही हो, बिल्कुल ग़लत। हम लोग कोई साधु-संन्यासी नहीं हैं...

माशा: साधु-संन्यासियों के बारे में तुम कैसे जानते हो?

रिबाकोव: कैसे जानता हूं? रात-रात भर बैठकर जो मैं पढ़ता रहता हूं वह किसलिए है?

माशा: कल रात तुमने क्या पढ़ा था?

रिबाकोव: 'हमारे युग का एक नायक'। *

माशा: और इससे पहलेवाली रात में?

रिबाकोव: 'दूर से लिखे गये पत्र'। **

माशा: अपने पढ़ने के बारे में तुम मुझसे कोई सलाह लेना पसन्द करोगे?

---

* लेरमोन्तोव का प्रसिद्ध उपन्यास।

** लेनिन के वे प्रसिद्ध पत्र जो रूस की नवम्बर क्रान्ति से पहले उन्होंने रूस के बाहर से लिखे थे।

रिबाकोव: माशा, बैठ जाओ, क्षण भर के लिए ही बैठ जाओ!

माशा: दरवाज़ा खोलो।

रिबाकोव: नहीं।

माशा: यह बहुत बेहूदा बात है। बहुत अपमानजनक है।

रिबाकोव: किसी व्यक्ति पर हंसना क्या कोई बेहूदगी नहीं?

माशा: मैं तुम्हारे ऊपर नहीं हंस रही हूं।

रिबाकोव: चाहे तीन दिन और तीन रातें बीत जायें, तुम यहीं बन्द रहोगी। जब तक संजीदगी से, सचाई से मेरी बात का जवाब नहीं दे दोगी, तब तक मैं तुम्हें बाहर नहीं जाने दूंगा।

माशा: मैंने जवाब दे दिया।

रिबाकोव: वह कोई जवाब नहीं था।

माशा: क्योंकि वह तुम्हें पसन्द नहीं आया?

रिबाकोव: नहीं, इस वजह से नहीं।

माशा: मैं कोई दूसरा जवाब तुम्हें नहीं दूंगी।

रिबाकोव: तब तुम यहीं कैद रहोगी।

माशा: अच्छी बात है, मैं यहीं रह जाऊंगी।

रिबाकोव: ठीक।

माशा: मेहरबानी करके सिगरेटें कम पीजिये और खिड़की खोल दीजिये।

रिबाकोव: इसके लिए मैं माफ़ी मांगता हूं।

माशा: तुम हथियारों का इस्तेमाल क्यों नहीं करते? पिस्तौल उठाइये और धमकी दीजिये।

रिबाकोव: मैं किसी को डराना-धमकाना नहीं चाहता।

माशा: मेरी एक सहेली को उसके चीफ़ ने हुक्म दिया था कि तीन दिनों के भीतर वह उससे शादी कर ले। अगर वह ऐसा नहीं करेगी तो उसके चीफ़ ने धमकाया था, कि उसको और उसके मां-बाप को भूतपूर्व पूंजीपतियों के नाते निर्वासित कर दिया जायेगा।

रिबाकोव: ऐसे बदज़ात आदमी को तो गोली मार देनी चाहिए।

माशा: लेकिन क्या तुम उससे भिन्न हो?

रिबाकोव: बेशक।

माशा: कैसे?

रिबाकोव: मैं तुम्हें प्यार करता हूं।

माशा : क्या?

रिबाकोव : मैं तुम्हें प्यार करता हूं। और तुम इस बात को जानती हो।

माशा : कृपया मुझसे प्यार-व्यार की बातें न कीजिये। तुम्हारी बात सुनकर मुझे उबकाई आती है।

रिबाकोव : उबकाई?

माशा : हां।

रिबाकोव (दरवाज़ा खोल देता है) : यह है असली जवाब... सच्चा और ईमानदारी से दिया गया।

माशा (अनिश्चित भाव से) : तब तुम नाराज़ क्यों हो गये?

रिबाकोव : कम से कम यह मानवीय है... अब जाओ।

(दरवाज़े पर ज़बेलिना आ जाती हैं)

ज़बेलिना : क्या मैं अन्दर आ सकती हूं?

माशा : मां? तुम? यहां कैसे आ गयीं?

ज़बेलिना : मैंने बाहर पूछ लिया था कि नागरिक रिबाकोव कहां रहते हैं।

माशा : तुम किसलिए आयी हो? कोई खास बात?

ज़बेलिना : क्या मैं अन्दर आ सकती हूं?

रिबाकोव : हां, हां, अवश्य!

ज़बेलिना (अन्दर आ जाती है और रिबाकोव को सम्बोधित करती है) : नमस्ते, नौजवान! देख लो तुम्हारी भावी सास कैसी है!

माशा : मां! तुम्हारे दिमाग़ में यह ख्याल कैसे आ गया?

ज़बेलिना : तुम्हारी बातों से।

माशा : लेकिन तुम तो कुछ भी नहीं जानतीं...

ज़बेलिना : मैं सब कुछ जानती हूं। न जानती होती तो यहां क्यों आती? तुम्हारा कमरा कितना गन्दा है, नौजवान — चारों तरफ़ कितना कूड़ा पड़ा है! इतने अख़बार तुम क्यों रखे रहते हो? पढ़ने के बाद फेंक दिया करो। नहीं, तुम्हारे रहने का तरीक़ा ठीक नहीं है। मैं सब कुछ जानती हूं, अलेक्सांद्र मिखाइलोविच।

रिबाकोव : पर मैं कुछ नहीं जानता।

माशा : मां, मैं विनती करती हूं! कृपया खामोश रहें।

ज़बेलिना : मैं कुछ नहीं कहूंगी। नौजवान, तुम्हें बहुत पहले ही हमारे घर आकर बात करनी चाहिए थी।

रिबाकोव : मुझसे ऐसा करने के लिए कहा ही नहीं गया।

ज़बेलिना : इसके बारे में मैं कुछ नहीं जानती। लेकिन तुम्हें ख़ुद ज़िद करनी चाहिए थी और आकर हम लोगों से मिलना चाहिए था। **(माशा से)** तुम्हारे पिता ने तुम्हें इस नौजवान के साथ देखा था। वह जानते हैं कि तुम इनसे मिलने यहां आती हो।

माशा : यह हो नहीं सकता...

ज़बेलिना : तो तुम्हारा क्या ख़याल है, मुझे कैसे पता चला कि तुम यहां हो?

माशा : हे भगवान! उन्होंने क्या कहा?

ज़बेलिना : माशा, अब हमें जल्दी से घर पहुंचना चाहिए। रास्ते में सारी बात मैं तुम्हें बता दूंगी। और तुम, नौजवान, तुम्हें मैं शनिवार को अपने घर आने के लिए आमंत्रित करती हूं—शाम को, क़रीब सात बजे। **(कमरे में एक बार फिर वह चारों तरफ़ नज़र डालती है)** कमरा अच्छा है, लेकिन बहुत बेतरतीब है! तुम ठीक से नहीं रहते! गुड बाई! माशा, आओ चलो।

रिबाकोव : मैं क्या करूं, मारीया अन्तोनोवना?

माशा : आपकी मर्ज़ी!

(ज़बेलिना और माशा बाहर चली जाती हैं)

रिबाकोव : हां! जब आदमी दूसरे वर्ग की किसी लड़की के प्रेम में फंस जाता है तो उसका यही हाल होता है। ओह, वर्ग-हीन समाज की स्थापना कब हो सकेगी?

दृश्य ३

(झील का किनारा, कुंज में शिकारी की एक झोंपड़ी। वसन्त का प्रारम्भ है। पौ फटने में अभी एक-आध घण्टे की देर है। झोंपड़ी के द्वार पर एक लालटेन लटकी है। पास ही आग पर एक केतली चढ़ी है जिसमें पानी गर्म हो रहा है। शिकारगाह का रखवाला किसान चुदनोव वहीं आग के पास

कुछ कर रहा है। गांव के गिरजे की घंटियां बजानेवाला काज़ानोक भी वहीं पुरानी बन्दूक के सहारे झुका खड़ा है)

चुदनोव: प्यारी सुबह, मेहरबानी बनाये रखना और अपने साथ अच्छा मौसम लाना। ओ, सर्वशक्तिमान, मैं तुम्हारी पूजा करूंगा।

काज़ानोक: नहीं, चुदनोव, मैं तुम्हें बताये देता हूं, आज कुहरा पड़नेवाला है। मैं अच्छी तरह जानता हूं।

चुदनोव: पर आकाश में बादल का तो नाम तक नहीं है... मेरी समझ में नहीं आता कुहरा कहां से आ जायेगा। कुहरा होगा तो साथी लेनिन को फिर शिकार में कुछ नहीं मिलेगा।

काज़ानोक: हां, याद है जाड़े के दिनों में उस बार जब वह लोमड़ी का शिकार करने आये थे और बर्फ़ का तूफ़ान शुरू हो गया था? शिकार की जगह तब हम स्कीइंग करने वन चले गये थे। उस समय जो हमारी बात हुई थी उसे मैं कभी नहीं भूल सकूंगा।

चुदनोव: मुझे ज़िन्दगी में बहुतों से मिलने और उन्हें जानने का मौक़ा मिला है। तरह-तरह के लोग रहे हैं। जी हां, जनाब, बड़े-बड़े मशहूर लोग भी मेरे यहां शिकार करने आते थे। किन्तु लेनिन उन सबसे बहुत बड़े हैं। पर ऐसा क्यों है, यह मैं नहीं जानता।

काज़ानोक: वे अत्यन्त सरल हृदय हैं। यही वजह है।

चुदनोव: नहीं, वैसे भी बहुतेरे लोगों से मेरी मुलाक़ात हुई है। उनमें कुछ और ही बात है।

काज़ानोक: कितना बज गया? पांच के क़रीब हो गया होगा?

चुदनोव: अरे, हां। अच्छा, काज़ानोक, तुम यहां नज़र रखना, मैं ज़रा जाकर व्लादीमिर इल्यीच का पता लगा आऊं। आंखें खोलकर बैठना। **(जाता है)**

काज़ानोक: मैं कोई बच्चा नहीं हूं, जानता हूं।

(मंच से दूर गीत सुनाई देता है। फिर रिबाकोव सामने आता है)

काज़ानोक: कौन है?

रिबाकोव: सब ठीक है।

काज़ानोक: ख़ाक ठीक है! मैं पूछता हूं, कौन है?

रिबाकोव: मैं कहता हूं, सब ठीक है।

काज़ानोक : ठहरो!

रिबाकोव : ठहर गया।

काज़ानोक : तुम हमारे आदमी नहीं हो।

रिबाकोव : फिर किसका हूं?

काज़ानोक : कोई अजनबी हो।

रिबाकोव : अरे, दादा, अपनी उस तोप को तो सामने से दूर करो। कहीं वह चलती न हो!

काज़ानोक : चलती तो है ही।

रिबाकोव : फिर उसे मेरी खोपड़ी के सामने मत रखो!

काज़ानोक : तुम हो कौन?

रिबाकोव : सबसे पहले, एक आदमी।

काज़ानोक : कहां से आये हो?

रिबाकोव : मास्को से।

काज़ानोक : तुम्हें गिरफ़्तार किया जाता है।

रिबाकोव : फिर?

काज़ानोक : हाथ ऊपर उठाओ।

(चुदनोव आ जाता है)

चुदनोव : अरे, यह तो साथी रिबाकोव हैं! काज़ानोक, यह क्या मूर्खता कर रहे हो? यह तो वही नौसैनिक है जो इल्यीच के साथ आये थे।

रिबाकोव : मोटर को ठीक करने के लिए मैं ड्राइवर के पास रुक गया था...

चुदनोव : और तुमने इन्हें गिरफ़्तार कर लिया!

रिबाकोव : वह भी तब जब मेरे पास एक रिवाल्वर है और इसके पास चिड़ियों को मारनेवाली यह सड़ी-सी बन्दूक! लेकिन भाई, पहरेदार पहरेदार होता है, और यह डरपोक नहीं निकला।

काज़ानोक : आप हमारे ही आदमी हैं, तो ठीक है। पूछना मेरा फ़र्ज़ था। माफ़ कीजियेगा, मेरा इरादा आपका अपमान करने का नहीं था।

रिबाकोव : और मैंने इसे अपमान माना भी नहीं।

काज़ानोक : तब फिर आप मेरे ऊपर गुर्रा क्यों रहे थे?

रिबाकोव : किसी आदमी के छाती के बाल पकड़कर तुम उसे खींचो तो वह क्या करेगा?

काज़ानोक : जो कुछ भी पकड़ो उसे मज़बूती से जकड़े रहो! इस वक़्त मैं पहरे पर हूं, ड्यूटी पर हूं। अच्छा, फिर मिलेंगे। अब मैं गश्त पर जा रहा हूं। आप इधर नज़र रखियेगा... **(चला जाता है)**

रिबाकोव : इल्यीच कहां हैं?

चुदनोव : झील की तरफ़ गये हैं।

रिबाकोव : अकेले ही?

चुदनोव : चिन्ता मत करो। यहां चारों तरफ़ हमने पहरेदार खड़े कर दिये हैं। बैठ जाओ। क्षण भर में चाय तैयार हो जायेगी। गाजर की चाय है। ख़ुदा जाने उसमें से किस चीज़ की बू आती है। यह भी कैसा ज़माना है! कोई चीज़ नहीं मिलती—न चाय, न चीनी, न मिट्टी का तेल।

रिबाकोव : मुझसे शिकायत करने से क्या फ़ायदा? तुम्हारा ख़याल है, मैं नहीं जानता?

चुदनोव : रिबाकोव, क्या मास्को में कोई बात हुई है?

रिबाकोव : कैसी बात?

चुदनोव : कोई भी असाधारण बात...

रिबाकोव : मैं नहीं जानता। मैं नहीं समझता कि ऐसी कोई विशेष बात हुई है। पर तुम पूछ क्यों रहे हो?

चुदनोव : ख़ैर... **(कुछ सोचकर)** साथी लेनिन किसी चिन्ता में हैं... यहां आकर वे एक शब्द तक नहीं बोले। जब मैंने लालटेन जलाई तो उन्होंने अपनी बन्दूक़ में कारतूस लगाना शुरू कर दिया। किन्तु शीघ्र ही वह रुक गये, और कमरे में टहलने लगे। फिर उन्होंने कहा कि वह झील की तरफ़ जा रहे हैं, हमें उनकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। जब ज़रूरत होगी तब वह ख़ुद हमें बुला लेंगे। जब वह चिन्तित होते हैं, मुझे फ़ौरन पता चल जाता है...

रिबाकोव : मैं नहीं जानता... यहां आते समय रास्ते भर वह देहातों के बारे में, रूस के बारे में बातें कर रहे थे। मैं तुम्हें बताता हूं कि अपनी सारी ज़िंदगी में किसी को इस तरह बात करते मैंने नहीं सुना।

चुदनोव : तुम्हारी लम्बी ज़िन्दगी है न?

रिबाकोव : छब्बीस साल की हो गयी! बाबा जी, हंसिये नहीं! बात यह न भूलिये कि ओर्योल से काकेशस तक मैंने युद्ध में सारा रूस छान मारा है। हां, इल्यीच को कौन-सी चीज़ चिन्तित कर रही है? तुम उनके पास जाओ और सावधानी से उन्हें बता दो कि चाय तैयार हो गयी।

चुदनोव : मेरा ख़याल है कि इस वक़्त उन्हें न छेड़ना ही बेहतर होगा।

रिबाकोव : नहीं, उन्हें बता देना ही अच्छा होगा। शायद चाय के बारे में वह बिल्कुल भूल गये हैं। ठंड से अकड़ गये होंगे। हम लोग यहां बहुत तड़के आ गये हैं।

चुदनोव : लो, यह चम्मच लो। चाय को अच्छी तरह हिला दो जिससे कुछ तो रंगत आ जाये। मैं उनके पास चला ही जाऊं। **(जाता है)**

रिबाकोव (थोड़ी देर गुनगुनाता है, फिर पुश्किन की एक कविता की कुछ पंक्तियां सुनाने लगता है): "वृक्षों की शाखाओं पर जलपरियां बैठी हुई थीं... और उन अछूती वीथियों पर जिन पर कभी किसी मानव ने पैर नहीं रखा था..." आख़िर, इल्यीच इस वक़्त किस चिन्ता में पड़ गये हैं? उनके पास चौकीदार को मैंने क्यों भेज दिया? मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। बिल्कुल नहीं करना चाहिए था। **(धीरे से आवाज़ देते हुए)** चुदनोव! रूस का जो चित्रांकन वह कर रहे थे उसके पीछे अवश्य ही कोई बात थी। ..."और उन अछूती वीथियों पर जिन पर कभी किसी मानव ने पैर नहीं रखा था, पशुओं के उन मार्गों पर जो मानव को अज्ञात थे... एक छोटी-सी झोंपड़ी थी..." गाजर की चाय... ज़रा ख़याल तो कीजिये!

(चुदनोव वापिस लौटता है)

क्या तुमने उन्हें बुलाया?

चुदनोव : बुलाना चाहते हो तो जाकर तुम ख़ुद उन्हें आवाज़ दे दो। कुछ कह सकने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ी गोकि मैं उनको वहां देख आया हूं। वहां वह किसी ठूंठ या बड़े पत्थर पर बैठे हैं। समझ नहीं सका। वह बैठे हुए दूर, उस पार कुछ देख रहे हैं... कौन जाने वह कौन-सी महत्वपूर्ण योजनाएं बना रहे हों। ऐसे में हम मूर्ख लोग उनके काम में दख़ल देकर उन्हें यहां चाय पीने के लिए खींच लाना चाहते हैं!

रिबाकोव : अच्छा। तो चलो, हम लोग यहीं इन्तज़ार करें **(सन्नाटे को चीरती स्टीम इंजन की तेज़ सीटी सुनाई देती है)** सुना इसे?

चुदनोव : वह बेचारा भूखा है।

रिबाकोव : हालत गम्भीर है—जाने नहीं दे रहे हो। झील के पास ये लहरों की कलकलाहट, पत्तों की कानाफूसियां... यह भी कैसी रात है!

चुदनोव, यह तो बताओ, क्या यहां कभी जलपरियां भी दिखलाई देती हैं?

चुदनोव: जलपरियां? इस समय वे अपने घरों में सो रही हैं।

रिबाकोव: मैं उनकी बात कर रहा हूं जो डालों पर बैठी रहती हैं।

चुदनोव: ओह! उस तरह की इधर नहीं दिखलाई देतीं।

रिबाकोव: अफ़सोस!

चुदनोव: क्या किया जाय!

रिबाकोव: चुदनोव, मैं सोच-विचार में उलझा हुआ हूं। देखो, क्रान्ति के दौरान हमने इतना बदल दिया है, किन्तु ये तारे! ये अब भी वैसे ही हैं जैसे हमेशा से रहे हैं। यह बात अक्ल से बाहर है—यह अनन्तता।

चुदनोव (झोंपड़ी के द्वार के पास से): मैं यह सोच रहा हूं कि अब तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए।

रिबाकोव: शायद तुम ठीक कह रहे हो...

चुदनोव: पहले तुम जलपरियों के विषय में पूछते हो, फिर तारों को ताकते हो... ईस्टर के बाद तुम यहां आना, उस वक़्त हम एक ऐसी ही परी से तुम्हारी शादी कर देंगे।

रिबाकोव: मेरी तो ख़ुद अपनी एक परी है।

चुदनोव: तुम्हारी? पर तुम बहुत ख़ुश नहीं मालूम पड़ते।

रिबाकोव: मेरा अभागा, अप्रतिदत्त प्रेम है!

चुदनोव: अफ़सोस है। और यह भी तुम जैसे नौसैनिक हीरो के साथ हुआ! मास्को की लड़कियों से होशियार रहने की ज़रूरत है! उन्हें ख़ुश कर पाना आसान नहीं होता!

रिबाकोव: मुसीबत तो यही है कि वह मेरी पहुंच से परे है।

चुदनोव: हां, इन लोगों से डरने से काम भी नहीं बनता। यहां भी एक मोर्चा होता है—डरे कि मरे! डरना ही है तो उसे डरने दो! तुम सीना तानकर खड़े हो जाओ!

रिबाकोव: नहीं, साथी चुदनोव, मैं उसके बारे में संजीदा हूं... लेकिन देखो, इल्यीच से इस बारे में कुछ न कहना...

चुदनोव: क्यों? डरते हो?

रिबाकोव: तुम भी क्या ख़ुराफ़ात सोचते हो!

चुदनोव: निश्चय ही तुम डर रहे हो।

रिबाकोव: अच्छा, हम लोग क्या करें? चाय ठंडी हो रही है।

चुदनोव: शि... उनके आने की आहट लग रही है। वह आ रहे हैं।

दृश्य ४

(चुदनोव परिवार की झोंपड़ी। झोंपड़ी की तीन खिड़कियां हैं। झोंपड़ी के गलियारे में अलावघर है। कुछ बेंचें, एक मेज़ और एक देव-प्रतिमा रखी हुई है। दीवाल पर कुछ सस्ती तस्वीरों और कई पारिवारिक चित्रों के बीच लेनिन की एक तस्वीर लगी है। बूढ़ी आन्ना और उसकी बहू लीज़ा कमरे की सफ़ाई कर रही हैं। लीज़ा के बच्चे मारूस्या तथा स्त्योप्का, उत्साह से फुसफुसाकर बातें कर रहे हैं)

आन्ना (लीज़ा से): लीज़ा, इन बूटों को ले जाओ। इन्हें तुम बेंच पर क्यों रखती हो? इनमें से तारकोल की बू आ रही है। लोग आते ही होंगे। घर अब भी इस बुरी हालत में है। **(बच्चों से)** खुसर-फुसर बन्द करो! अलावघर पर चढ़ जाओ!

(लीज़ा बूट उठा ले जाती है। काज़ानोक प्रवेश करता है)

काज़ानोक: जश्न मुबारक हो, आन्ना व्लास्येव्ना।

आन्ना: तुम्हें भी।

काज़ानोक: मैं आपको यह बताने आया हूं कि व्लादीमिर इल्यीच शीघ्र ही आनेवाले हैं।

आन्ना: हे भगवान! काज़ानोक, घन्टाघर तक दौड़ जाओ!

काज़ानोक: घन्टाघर? किसलिए?

आन्ना: लो, यह तो मैं भूल ही गयी कि किसलिए!

(लीज़ा वापिस आ जाती है)

लीज़ा! काज़ानोक को घन्टाघर किसलिए जाना है?

लीज़ा: रोमान ने कहा था कि अगर मीटिंग करनी हो तो गिरजे के बड़े घन्टे को बजा देना।

काज़ानोक: अच्छी बात है। **(दरवाज़े की ओर बढ़ जाता है)**

लीज़ा: ज़रा रुको... वह सभी जगह कोहराम मचा देगा!

आन्ना: काज़ानोक, ठहरो!

काज़ानोक: क्यों, अब क्या हो गया?

आन्ना: घण्टाघर पर चढ़कर गली की तरफ़ नज़र रखना। हम

स्त्योप्का को भेज देंगे। अगर वह छड़ी से इशारा करता है तो बड़े घण्टे को बजाना ... ठहरो! और उसको लगातार न बजाना, धीरे-धीरे बजाना, जैसे सुबह की प्रार्थना के समय।

काज़ानोक : मुझे यह सिखाने की ज़रूरत नहीं है कि साथी लेनिन के लिए घण्टा कैसे बजाया जाये। **(चला जाता है)**

आन्ना (बच्चों को सम्बोधित करते हुए) : चलो, अलावघर पर चढ़ जाओ।

लीज़ा : इन्हें आप हटाना क्यों चाहती हैं?

आन्ना : इनकी शक्लें तो देखो! ऐसे मेहमान के सामने क्या हम इन्हें पेश कर सकते हैं? लो, इन चाबियों को लो और सन्दूक से एक मेज़पोश निकाल लाओ... मेरावाला निकाल लेना, झालरदार...

लीज़ा : आप कितनी परेशान हैं! घबड़ाइये नहीं।

आन्ना : मेज़पोश ले आओ। मेज़ कैसी उघारी पड़ी है!

(लीज़ा चली जाती है)

आन्ना (बच्चों से) : और तुम चलो, अलावघर के ऊपर बैठ जाओ!

स्त्योप्का : अच्छा, दादी...

आन्ना : चलो, चलो, ऊपर चढ़ो! और न तुम वहां से झांकोगे, न हंसोगे, न और कोई शरारत ही करोगे... समझे?

स्त्योप्का : दादी, जब वह हमारी तरफ़ न देख रहे हों — क्या हम उन्हें झांक सकते हैं?

(लीज़ा वापिस आ जाती है)

आन्ना : मैं तुम्हें दिखा दूंगी तुम्हारी पीठ पर पट्टा बांधकर!

लीज़ा : मैं चाहती थी कि इन्हें साफ़ क़मीजें पहना दूं, लेकिन घर में एक भी क़मीज़ ऐसी नहीं है जो किसी काम की हो।

आन्ना : लीज़ा, वहां खड़ी-खड़ी क्या कर रही हो? क्या देव-प्रतिमा को ढक दिया जाये? वैसे पाखण्डी बनने की ज़रूरत ही क्या है?

लीज़ा (दरवाज़े से वापिस लौटती हुई) : वे लोग आ रहे हैं!

आन्ना : कौन?

लीज़ा : लेनिन और पापा।

आन्ना : और कोई नहीं?

लीज़ा : नहीं।

आन्ना : तो हमारे गांववालों ने उन्हें पहचाना नहीं। तुम दरवाज़े पर खड़ी रहना जिससे कि ज्यों ही वे लोग आयें उन्हें चाय वग़ैरा दी जा सके। और सिर पर एक रूमाल बांध लो!

(लेनिन और चुदनोव अन्दर आते हैं)

चुदनोव (लेनिन को सम्बोधित करते हुए): यह मेरी बुढ़िया है, आन्ना व्लास्येवना।

लेनिन : नमस्ते।

चुदनोव : यह मेरी बहू, लीज़ा है।

लेनिन : सुप्रभात।

आन्ना : शिकार कैसा रहा?

लेनिन : कुछ नहीं मिला। हम कुछ वैसे ही शिकारी हैं जिन्हें एक सेर वज़न की चिड़िया मारने के लिए सेर भर बारूद की ज़रूरत होती है।

चुदनोव : अपने को इतना कच्चा न बताइये। आज का कुहरा भी कितना भयंकर था! ऐसा कुहरा मैंने पहले कभी नहीं देखा... उसने पूरी झील को एक कम्बल की तरह ढक दिया था।

लेनिन (दरवाज़े के पास कोट उतारते समय अचानक उनकी नज़र अलावघर पर बैठे बच्चों पर पड़ती है): यह पैर किसका है?

आन्ना : ओह, ये पाजी बच्चे मेरी नाक कटाकर ही रहेंगे!

लेनिन : कौन है? बच्चो तुम! बाहर निकल आओ! अरे, तुम तो दो हो! दोनों बाहर आ जाओ!

स्त्योप्का : क्यों दादी? हम बाहर आ जायें?

आन्ना : अब रह ही क्या गया... **(लेनिन से)** ये गन्दे बच्चे हैं।

लेनिन : कोई बात नहीं। **(स्त्योप्का से)** तुम्हारा नाम क्या है?

स्त्योप्का : स्त्योप्का।

लेनिन (मारूस्या से): और तुम्हारा?

स्त्योप्का : यह मारूस्या है।

लेनिन (स्त्योप्का से): उसकी तरफ़ से तुम क्यों जवाब देते हो?

स्त्योप्का: वह डरती है। वह भीगी बिल्ली है।

लेनिन: क्या तुम मुझसे डरती हो?

मारूस्या (तेज़ी से): नहीं।

लेनिन: फिर छिपी क्यों थी?

स्त्योप्का: जिससे कि लेनिन हमें देख न सकें।

लेनिन: सचमुच? अच्छा, तो अब लेनिन यहां आ गया।

स्त्योप्का: कहां?

लेनिन: यहां।

स्त्योप्का: नहीं... आप लेनिन नहीं हैं।

लेनिन: नहीं? फिर कौन?

मारूस्या: कोई अजनबी... हमारे घर का मेहमान।

स्त्योप्का: लेकिन आप लेनिन तो लगते नहीं।

लेनिन: क्यों, वह कैसे लगते हैं?

स्त्योप्का: उनकी तस्वीर देख लीजिये, आप ख़ुद समझ जायेंगे।

लेनिन (अपनी तस्वीर के पास जाकर उसे देखते हैं): यह थुलथुल आदमी तो लेनिन से बिल्कुल नहीं मिलता।

स्त्योप्का (व्यंग से): और आप शायद मिलते हैं?

लेनिन: मैं निश्चय ही उनसे मिलता हूं!

आन्ना: स्त्योप्का!

लेनिन: नहीं, नहीं, कृपया हमारी बातचीत के बीच न आइये। **(स्त्योप्का से)** मैं बिल्कुल लेनिन की तरह हूं, तुमसे सच कहता हूं।

स्त्योप्का: बिल्कुल नहीं। ज़रा भी नहीं। वहां जो तस्वीर लगी है वही उनकी असली तस्वीर है, वर्ना लोग उसे मशीन से न छापते।

लेनिन: नहीं, असली मैं हूं, वह नहीं।

स्त्योप्का: जी नहीं, असली वही हैं।

लेनिन: नहीं, असली मैं हूं।

स्त्योप्का: अच्छा, शर्त लगा लें।

लेनिन: लगा लो।

स्त्योप्का: क्या शर्त आप लगायेंगे?

लेनिन: जो भी तुम कहो।

स्त्योप्का: चीनी का एक टुकड़ा।

लेनिन (अपनी टोपी उतार लेते हैं): अब बताओ? कौन असली है?

(स्त्योप्का पहले लेनिन को घूर-घूरकर देखता है फिर उनकी तस्वीर को। धीरे-धीरे पीछे हटकर वह घरवालों के पास चला जाता है। मारूस्या की आंखें आश्चर्य से खुली की खुली रह जाती हैं)

और अब? **(फिर टोपी लगा लेते हैं)**

मारूस्या: अब फिर आप उनकी तरह नहीं लगते।

लेनिन (टोपी उतारते हुए): अब?

स्त्योप्का: सचमुच, असली लेनिन! अब इन्हें देने के लिए मैं चीनी कहां से लाऊंगा? **(अचानक, दृढ़ता से)** दादी, मैं घण्टाघर जा रहा हूं! **(भाग जाता है)**

लेनिन: घण्टाघर क्यों?

आन्ना: वह पूरा बदमाश है।

लेनिन: वह बहुत होशियार और तेज़ लड़का है।

चुदनोव: शरारती है।

लेनिन: इसकी उम्र का जब मैं था तो शायद मैं भी तेज़ और शरारती था। लड़के एक पहेली होते हैं। समस्या यह है कि अभी तक हम यह नहीं जानते कि उन्हें कैसे सम्भाला जाये। बहुत-सी ऐसी चीजें हैं जिन्हें हम अभी तक नहीं जानते। अब हमें बहुत सी बातें सीखनी होंगी। हमें इसका अधिकार नहीं है कि हम अज्ञानी बने रहें... **(सामने किसी चीज़ की बनी एक बत्ती पर उनकी नज़र पड़ती है)** बत्ती, लैम्प की पुरानी असली बत्ती?

चुदनोव: आप इसके बारे में जानते हैं? आप जानते हैं कि यह कैसे काम करती है?

लेनिन: हां, मैं अच्छी तरह जानता हूं। लेकिन क्या तुम्हारे पास रोशनी के लिए बस यही चीज़ है?

चुदनोव: मिट्टी का तेल कहीं मिलता नहीं।

आन्ना: यह आवाज़ बहुत करती है। अंधेरे में रहने से तो बेहतर है।

लेनिन: हां, इसमें क्या शक!

(रोमान प्रवेश करता है। वह आधे बोरे में कुछ लिये है। साफ़ है कि वह कोई भारी चीज़ नहीं है। उसे यह ख़याल नहीं था कि लेनिन पहले ही उसके घर पहुंच जायेंगे)

चुदनोव: यह मेरा लड़का है, रोमान। स्थानीय सोवियत का सभापति और हां... ख़ैर।

लेनिन: नमस्ते, सभापति जी। अगर मेरा पूछना बेजा न समझें तो बतायें कि इस बोरे में क्या है।

रोमान: नाटक का कुछ सामान है।

लेनिन: यह मज़ेदार चीज़ है। क्या एक नज़र मैं भी देख सकता हूं?

रोमान (हिचकिचाते हुए): हां।

लेनिन (उसे अपनी अंगुलियों पर वे घुमाते हैं और फिर ऊपर-बाहर टटोलते हैं): सिल्क का है... बहुत सुन्दर। इसका अर्थ हुआ कि यहां तुम्हारे पास थियेटर है?

रोमान: सर्वहारा सांस्कृतिक केन्द्र।

लेनिन: सर्वहारा सांस्कृतिक केन्द्र? यह क्या है?

रोमान: मैं ख़ुद पक्की तरह नहीं जानता। वह सर्वहारा संस्कृति का एक प्रकार का केन्द्र है।

लेनिन: इस टोप को तुम कहां से ले आये?

रोमान: मास्को से। इसे हमने सुख़ारेव्का के बाज़ार में ख़रीदा था।

लेनिन : इसे कौन पहनेगा?

रोमान: मैं।

लेनिन: तुम किसका पार्ट कर रहे हो?

रोमान: एक बैंकपति का।

लेनिन: बैंकपति का? क्या उसका पार्ट मुश्किल है?

रोमान: नहीं।

लेनिन: मैं कभी नहीं निभा पाता।

चुदनोव (उत्तेजना से): डूब मरने की बात है, व्लादीमिर इल्यीच, डूब मरने की!

लेनिन: क्यों, इसमें ग़लत क्या है?

चुदनोव: देखिये, यह सेना से घर वापिस आया है—अन्य तमाम लोगों की तरह भला-चंगा। अचानक यह अभिनय शुरू कर देता है! ज़रा सोचिये तो कई बच्चों का बाप—और अभिनेता!

लेनिन: लेकिन अभिनय तो एक बहुत अच्छी चीज़ है। मैं बैंकपति का

पार्ट कभी नहीं कर सकता, लेकिन यह उसे कर सकता है। साथी चुदनोव, तुम और मैं बहुत पुराने ख़याल के हो गये!

चुदनोव: हुंह... यह तो नहीं कहा जा सकता...

(दौड़ता हुआ काज़ानोक आ जाता है)

काज़ानोक: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर...

लेनिन: क्या?

काज़ानोक: अरे, मैं कह क्या रहा हूं... मेरा नाम पन्तेलेई काज़ानोक है। घण्टा बजाता हूं और फ़ायरमैन का काम भी संभालता हूं। आपको याद नहीं, पिछले जाड़ों में आपके साथ स्कीइंग के लिये जंगल गया था?

लेनिन: हां, हां! मुझे अच्छी तरह याद है!

काज़ानोक: उन्हें याद है... बस, मैं तो आपको यही बताना चाहता था कि मैं अब भी यहीं हूं, मज़े में हूं, और काम कर रहा हूं... **(दूसरों की ओर देखते हुए)** तुम लोग चिन्ता न करो, मैं अपने काम पर पहुंच जाऊंगा। **(लेनिन से)** हम ख़ुश हैं... सारी जनता ख़ुश है! अब मैं उस घण्टे को बजाने जा रहा हूं। उसे ख़ूब ज़ोर से बजाऊंगा। यह रहा मैं—काज़ानोक जो कुछ अन्दर है वही बाहर। अच्छा, अब मुझे अपने अड्डे पर पहुंचना चाहिए। **(तेज़ी से बाहर चला जाता है)**

लेनिन: क्यों, वह दौड़ता हुआ क्यों जा रहा है?

आन्ना: वह सीधा-सादा आदमी है... लगाव-बनाव उसे नहीं आता...

रोमान: व्लादीमिर इल्यीच... साथी लेनिन, मैं आपसे एक मीटिंग में बोलने की दरख़्वास्त करना चाहता हूं। साथ ही सर्वहारा सांस्कृतिक केन्द्र में हम लोग आपको चाय पर आमंत्रित करना चाहते हैं।

आन्ना: नहीं, नहीं, व्लादीमिर इल्यीच, इन लोगों के यहां चाय-वाय पीने आप मत जाइयेगा। इनके पास ठिकाने का एक समोवार तक तो है नहीं!

लेनिन: अच्छा, अगर सर्वहारा सांस्कृतिक केन्द्र हम लोग नहीं जाते, तो यहां चाय मिलेगी? मुझे यहीं बना रहने दो। और मीटिंग भी न करो तो और भी अच्छा होगा।

(रिबाकोव तेज़ी से आता है)

रिबाकोव: देखा, मैं ले आया! तीन-तीन चिड़ियों को मार लाया! **(बंधी हुई जंगली मुर्ग़ाबियों को दिखाता है)** मैं हवा का इन्तज़ार कर रहा था। उसने मेरा साथ दिया ... ज्यों ही वह चली कोहरा फट गया और मैंने इन तीन मुर्ग़ाबियों को मार गिराया! **(चुदनोव से)** कहो कैसा रहा!

लेनिन (अफ़सोस से): साथी चुदनोव ...

चुदनोव: ग़लती मेरी है, व्लादीमिर इल्यीच ...

लेनिन: मुर्ग़ाबियां ... असली जंगली मुर्ग़ाबियां! हम वहां बैठे-बैठे कुहरे, बुरे मौसम और दूसरी प्राकृतिक विपदाओं के सम्बन्ध में फ़िलासफ़ी झाड़ते रहे और यह गया और उन्हें मार भी लाया!

आन्ना: छिः, तुम, जंगल के रक्षक! तुम्हें शर्म आनी चाहिए ...

चुदनोव: मैं सचमुच शर्मिन्दा हूं! लेकिन, व्लादीमिर इल्यीच, जहां तक मैंने समझा था, इस बार आपकी शिकार में कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं थी।

लेनिन (आश्चर्य से): ऐं?

चुदनोव: मुझे तो सचमुच ऐसा ही लगा था।

लेनिन: सच? शायद तुम ठीक कह रहे हो, साथी चुदनोव। आज मैंने शिकारी की तरह व्यवहार नहीं किया, लेकिन ... **(रुक जाते हैं)** लेकिन, रिबाकोव, तुम ख़ुशी मना सकते हो। और हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि यह कोई अनुभवी शिकारी नहीं है, यह तो सिर्फ़ एक जहाज़ी है।

रिबाकोव: लगता है कि मैंने सबको परेशानी में डाल दिया?

लेनिन: इसमें क्या शक! ऐसा कौन शिकारी होगा जो इस सब को देखकर परेशान न हो उठे? तुमने हवा का रुख़ बदलने का इन्तज़ार किया और तमाम पुराने शिकारियों को पराजित कर दिया। साथी चुदनोव, देखो तो, कितनी अच्छी मुर्ग़ाबियां हैं! इन्हें ऐसी जगह रख दो जहां बिल्ली न पहुंच सके।

(घण्टे की आवाज़ आकाश में दूर-दूर तक गूंज उठती है)

ख़तरे का घण्टा?

आन्ना: नहीं, काज़ानोक घण्टा बजा रहा है। वह इशारे का इन्तज़ार नहीं कर पाया।

चुदनोव: बड़ा शैतान है!

रोमान (खिड़की से बाहर देखते हुए): बहरहाल, अब तो उसने

सबको बुला ही लिया। देखो, पूरा गांव बाहर निकलता चला आ रहा है।

लेनिन: तब तो शायद हमें भी चलना चाहिए। ओह, घण्टा बजानेवाले, तुम तो सारी दुनिया को बता दोगे कि मैं यहां हूं! मगर किया क्या जाये! घण्टा बजानेवाला तो घण्टा बजायेगा ही। साथी चुदनोव! **(दरवाज़े पर रुक जाते हैं)**

चुदनोव: जी?

लेनिन: उन बोल्शेविकों को एक क्षण भी कभी चैन नहीं मिलता, है न?

चुदनोव: कभी नहीं, व्लादीमिर इल्यीच।

लेनिन: यह कोई नहीं कह सकता कि अगले ही क्षण वे और क्या सोच निकालेंगे।

चुदनोव: आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं।

लेनिन: हमारी मजबूरी है, साथी चुदनोव। ऐसा न करें तो ख़त्म हो जायें, वे हमें ज़िन्दा ही खा जायें। चलो, साथियो, वर्ना वह घण्टा बजा-बजाकर ज़मीन आसमान एक कर देगा।

(घण्टे के बजने की ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ आती है)

दृश्य ५

(क्रेमलिन की ऊंची चहारदीवारी और उसके बग़ल की चौड़ी सड़क। रात्रि की निस्तब्धता। मद्धिम रोशनी की लालटेनें लगी हुई हैं। एक पेड़ के नीचे रिबाकोव एक बेंच पर बैठा है। थोड़ी देर तक वह धीरे-धीरे सीटी बजाता है, फिर गुनगुनाने लगता है)

रिबाकोव (गाता हुआ):

हर दरख़्त पर चिड़ियां गुनगुना रही हैं।
उनके उल्लासमय संगीत से

दिशाएं मुखर हैं;
चारों ओर वसन्त का आह्लाद
हिलोरें ले रहा है —
पर यह सब मेरे लिए नहीं
है, मेरे लिए नहीं है...

(ख़्यालों में खोया रहता है, फिर उठ खड़ा होता है) अगर मैं मंगल को ढूंढ़ निकालूं... तो हां, अगर नहीं... तो नहीं। **(आकाश में चारों तरफ़ नज़र दौड़ाता है, धीरे-धीरे गुनगुनाता जाता है)**

(एक भिखारिन पास आ जाती है)

भिखारिन: नौजवान, एक ग़रीब बीमार बूढ़ी को एक सिगरेट दे सकते हो?

रिबाकोव: लो, शौक़ करो।

भिखारिन: शुक्रिया, नौजवान। **(चली जाती है)**

(लेनिन आते हैं। वह रिबाकोव को पहचान लेते हैं)

रिबाकोव: व्लादीमिर इल्यीच?

लेनिन: साशा रिबाकोव, तुम यहां क्या कर रहे हो?

रिबाकोव (चौंककर): आप अकेले हैं? आपके अंगरक्षक कहां हैं?

लेनिन: मैं उनसे बचकर निकल आया हूं।

रिबाकोव: आप कामयाब कैसे हो गये?

लेनिन: नहीं, नहीं, यह तुम्हें नहीं बताऊंगा। रहस्य की बात है। मैं एक बड़ी लम्बी मीटिंग में बैठा था और अब खुली हवा में ज़रा सांस लेने खिसक आया हूं। लेकिन अपनी घड़ी मैं मेज़ पर ही भूल आया हूं। हां, मेरा यहां आना तो एक तरह से उचित है, लेकिन तुम यहां कैसे? आधी रात को तुम अकेले यहां क्या कर रहे हो? तारे गिन रहे हो क्या?

रिबाकोव: इन्कार नहीं करूंगा।

लेनिन: साथी रिबाकोव, क्या तुम प्रेमजाल में फंस गये हो?

रिबाकोव: जी।

लेनिन: अच्छा आओ, मेरे साथ टहलने चलो। **(दोनों साथ-साथ टहलने लगते हैं)** वास्तव में हम बड़े कठिन दौर से गुज़र रहे हैं। यह समय ऐसा निर्मम है कि इसमें प्रेम की कोई गुंजाइश ही नहीं। लेकिन तुम

परेशान न हो... तुम प्रेम में पड़ ही गये हो तो उसे अब छोड़ना नहीं। मैं तुम्हें सिर्फ़ एक सलाह दूंगा: नये-नये तरीक़ों के चक्कर में तुम न पड़ना। पुराने तौर-तरीक़ों पर ही अमल करना। इन नये सम्बन्धों के बारे में मैंने बहुत कुछ सुना है। उनके फलस्वरूप अब तक केवल घृणित उच्छृंखलता ही देखने में आयी है।

रिबाकोव: जी, मैं जानता हूं।

लेनिन (अचानक रुक जाते हैं और रिबाकोव का हाथ पकड़कर स्नेह से कहते हैं): प्रेम करना अच्छा होता है, है न? आदमी को कितना अद्भुत लगता है!

रिबाकोव: हां, व्लादीमिर इल्यीच, बहुत अद्भुत।

(लेनिन और रिबाकोव चले जाते हैं। ठेले को ढकेलते हुए ट्राम के तीन मज़दूर सामने आते हैं। उनमें से एक के दाढ़ी है, एक नया अपरेन्टिस है और तीसरा एक पुराना मज़दूर है)

पुराना मज़दूर: ज़रा टार्च तो जलाओ, देखें क्या है। ठीक है, बढ़ते चलो।

अपरेन्टिस: तुमने देखा? वह लेनिन हैं।

दाढ़ीवाला मज़दूर: हमारे भी आंखें हैं। ज़बान को बन्द रखना सीखो। बड़े होशियार बनते हो।

(लेनिन और रिबाकोव सामने आ जाते हैं)

लेनिन: साथियो, आप लोग क्या हमें टाइम बतला सकते हैं?

पुराना मज़दूर (अपरेन्टिस से): टार्च जलाओ। **(जेब से चेनवाली घड़ी निकालता है)** सवा दो।

लेनिन: शुक्रिया।

पुराना मज़दूर: पहले क्रेमलिन की घड़ी घंटे बजाया करती थी। अब वह ख़ामोश है।

लेनिन: हां, और यह बहुत बुरी बात है। क्रेमलिन की घड़ी को कभी ख़ामोश नहीं होना चाहिए। साशा, किसी अच्छे घड़ीसाज़ को ढूंढ़ो — ऐसा आदमी हो जो पुरानी घड़ियों को ठीक कर सकता हो।

रिबाकोव: मैं ढूंढ़ लाऊंगा, व्लादीमिर इल्यीच।

लेनिन : काम इतना आसान नहीं है। कई लोग उसे ठीक करने की कोशिश कर चुके हैं, पर आखिर में हार कर बैठ गये।

रिबाकोव : कोई न कोई ज़रूर ऐसा होगा जो उसे ठीक कर सकता है।

दाढ़ीवाला मज़दूर : साथी लेनिन, इतनी जल्दी न जाइये। कुछ मिनट मज़दूरों के साथ भी बिता लीजिये।

पुराना मज़दूर : मैं आपको बता दूं, यह आदमी भारी हंसोड़ है।

लेनिन : अब भी हंसी-ठट्ठा करने का जी करता है?

दाढ़ीवाला मज़दूर : क्यों नहीं? पूंजीवाद को हमने कुचल दिया है कि नहीं?

लेनिन : लेकिन पूंजीवाद को कुचलने मात्र से इनसान का पेट नहीं भर जाता।

दाढ़ीवाला मज़दूर : अब हम समाजवाद की रचना शुरू करेंगे।

लेनिन : जानते हो वह कैसे की जाती है?

दाढ़ीवाला मज़दूर : दुनिया में भले लोगों की कमी नहीं। कोई न कोई हमें बतला ही देगा।

लेनिन : भले लोग तो बहुत हैं, लेकिन मैं तुम्हें उन सबका विश्वास करने की सलाह न दूंगा।

दाढ़ीवाला मज़दूर : अरे नहीं, हम लोग चुन-चुनकर तै करेंगे। हम उन्हीं का विश्वास करेंगे जिन पर आप विश्वास करते हैं।

लेनिन : क्या तुम्हारा ख़याल है कि लोगों को पहचानने में लेनिन ने कभी ग़लती नहीं की? उन्होंने भी ग़लतियां की हैं।

दाढ़ीवाला मज़दूर : ख़ास चीज़ तो यह है कि लेनिन को चुनकर हमने कोई ग़लती नहीं की।

लेनिन : पूंजीवाद को ख़त्म कर देना समाजवाद का निर्माण करने से कहीं अधिक आसान है!

दाढ़ीवाला मज़दूर : क्या यह सच है , व्लादीमिर इल्यीच?

लेनिन : इसकी कोशिश करनेवाले हम ही सबसे पहले लोग हैं। ऐसा कोई नहीं है, जो हमें बता सके कि उसका निर्माण कैसे किया जाये। समस्या इसलिए और भी कठिन हो गयी है कि फ़िलहाल हम बिल्कुल दरिद्र हैं।

दाढ़ीवाला मज़दूर : आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। हम लोग ग़रीब हो गये हैं।

लेनिन: निर्माण का सारा काम हमें ख़ुद ही करना पड़ेगा... हमें मदद कोई नहीं देगा।

दाढ़ीवाला मज़दूर: ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे सोवियत सत्ता नहीं कर सकती। बाइबिल में कहा गया है कि बेबीलोन के लोग आसमान तक ऊंची एक मीनार बनाना चाहते थे। वे उसे न बना सके। क्यों? क्योंकि उनके अन्दर अलग-अलग बोलियों का गड़बड़झाला था—यही लिखा है। लेकिन अगर आप मुझसे पूछें तो मैं कहूंगा कि उनके पास सोवियत सत्ता नहीं थी।

लेनिन: तुमने बात बहुत बढ़िया कही।

दाढ़ीवाला मज़दूर: मैं हंसी नहीं कर रहा हूं, व्लादीमिर इल्यीच! सोवियत सत्ता जो भी चाहे कर सकती है।

लेनिन: तुम्हारे इतने पक्के भरोसे का क्या आधार है?

दाढ़ीवाला मज़दूर: मैं आपको एक बात बतलाऊं। आप बहुत जल्दी में तो नहीं हैं?

लेनिन: नहीं। आओ, बैठ जाओ।

दाढ़ीवाला मज़दूर: आप हम तीन आदमियों को देखते हैं। हम मास्को ट्राम के मज़दूर हैं। रात की पाली में काम करते हैं। पक्के कामगार हैं। न साधु हैं, न शैतान... मामूली आदमी हैं। फिर बताइये, रोटी के एक सूखे टुकड़े के लिए हम और किस सत्ता के नीचे सारी रात काम कर सकते थे? **(जेब से रोटी का टुकड़ा बाहर निकालता है)** किसी भी दूसरी सत्ता के नीचे नहीं। अगर हम थकान से गिर जाते हैं, थोड़ी देर तक पड़े रहते हैं, फिर उठ खड़े होते हैं और फिर काम में जुट जाते हैं। सोवियत सत्ता की शक्ति पर इसीलिए मुझे इतना भरोसा है।

पुराना मज़दूर: साथी लेनिन को अब हमने काफ़ी तंग कर लिया, न? मेरा ख़याल है कि अब हम चलें। अभी बहुत काम बाक़ी है।

दाढ़ीवाला मज़दूर: इतनी लम्बी बात के लिए माफ़ कीजियेगा। हमें बात करना नहीं आता।

पुराना मज़दूर: शुभ-रात्रि, साथी लेनिन।

लेनिन: शुभ-रात्रि।

(मज़दूर चले जाते हैं)

साथी रिबाकोव, मामूली रूसी आदमी जैसा दूसरा कोई प्राणी नहीं। जब तुम मेरी उम्र के हो जाओगे तभी तुम उसकी ख़ूबियों को वास्तव में समझ सकोगे। तोलस्तोय ने अगर तोलस्तोयवाद का आविष्कार करके मज़ा किरकिरा न कर दिया होता तो, मैं तुमसे कहता हूं, रूसियों का जैसा चित्रण उन्होंने किया है दूसरा कोई नहीं कर सकता। लेकिन उन्हें मज़दूरों के बारे में कोई समझदारी नहीं थी। घर वापिस जाने की मेरी तबीयत नहीं हो रही है। तुम तो प्रेम में पड़े हुए हो... पर मुझे क्या हो गया है? तुम्हारा क्या ख़याल है? अच्छा, मैं तुम्हें अपना एक गुप्त भेद बताऊंगा। कभी-कभी मुझे स्वप्न देखना अच्छा लगता है... अनदेखी, अनसुनी चीज़ों के बारे में सपने देखता हुआ मैं अकेला भटकता रहता हूं। नहीं, आसमान तक ऊंची मीनार तो हम नहीं बनायेंगे, परन्तु अपने जैसे लोगों को लेकर हम बड़े-बड़े कामों को करने का साहस ज़रूर कर सकते हैं, स्वप्न ज़रूर देख सकते हैं... **(इर्द-गिर्द देखते हैं)** किसी के आने की आहट मिल रही है...

रिबाकोव: कौन है?

(भिखारिन सामने आती है)

भिखारिन: मैं हूं।

लेनिन: और क्या मैं पूछ सकता हूं कि तुम कौन हो?

भिखारिन: एक भिखारिन। एक ग़रीब बूढ़ी की मदद करो।

लेनिन: साशा, तुम्हारी जेब में कुछ है?

रिबाकोव: एक कोपेक भी नहीं।

लेनिन: मेरे पास भी कुछ नहीं है। **(भिखारिन से)** माफ़ करो!

भिखारिन: ज़रा अपनी शक्ल तो देखो! बढ़िया कोट डाटे हो... लेकिन हालत हम भिखारियों से भी बदतर है।

रिबाकोव: दादी मां, अब तुम घर जाकर सो जाओ!

भिखारिन: मैं रात को नहीं सोती... यही तो मेरे काम करने का वक़्त है। इस वक़्त मैं चायखानों और रेलवे स्टेशनों के पास जाकर भीख मांगती हूं।

लेनिन: तुम इसे काम कहती हो?

भिखारिन: मेरे काम में क्या बुराई है? जैसे दूसरे काम हैं वैसे ही यह भी। अब सब एक समान है... यहां तो हर आदमी कुत्ते की तरह भूखा

फिर रहा है। अपने ही को ले लो। तुम मुझे दिमाग़ी काम करनेवाले आदमी लगते हो — क्या तुम्हें आज भरपेट खाना मिला था?

रिबाकोव : व्लादीमिर इल्यीच, चलिये हम लोग आगे चलें...

लेनिन (रिबाकोव से) : रुको! **(भिखारिन से)** क्रान्ति से पहले तुम क्या करती थीं?

भिखारिन : यही काम।

लेनिन : तब फिर तुम शिकायत किस चीज़ की कर रही हो? तुम्हारा तो कोई नुक़्सान हुआ नहीं।

भिखारिन : जी नहीं, जनाब! सबसे ज़्यादा नुक़्सान तो हमारे भिखारी वर्ग का ही हुआ है।

लेनिन : यह कैसे?

भिखारिन : क्रान्ति से पहले मैं दुनिया की रानी थी! उस समय मैं एक कमज़ोर दिमाग़ धार्मिक भिखारिन बना करती थी। मेरे पास बैंक में साढ़े तीन हज़ार सोने के रूबल थे।

लेनिन : वह सब तुमने भीख मांगकर जमा किये थे?

भिखारिन : मेरे पक्के यजमान थे। उनमें से कोई भी धनी व्यापारी से नीचा ओहदा नहीं रखता था! लेकिन अब वह सब कहां है! अब हमें कौन कुछ देता है! लेनिन ने पूरे रूस को बर्बाद कर दिया। और लोग कहते हैं कि ख़ुद भी वह क्रेमलिन में भूखा रहता है। ख़ुद उसकी भी अच्छी ज़िन्दगी नहीं है, लेकिन दूसरों को भी मज़ा-मौज नहीं करने देता। अब तुम अपना रास्ता देखो, और मैं अपना काम! **(जाती है)**

लेनिन : इसके बारे में तुम क्या कहते हो, नौजवान?

रिबाकोव : बड़ी ढीठ बुढ़िया है!

लेनिन : ख़ास बात यह नहीं कि वह कौन है। वह जो कुछ कहती है उसमें सचाई का एक अंश है। अगर अभी हम किसी उड़नेवाली मशीन पर चढ़कर उड़ें तो हम देखेंगे कि नीचे एक विशाल रेगिस्तान की तरह एक काला, प्रकाशहीन विस्तार है। रूस की कैसी भयानक दुर्गति हो गयी है! हमारे गांव फिर उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दिनों की हालत में पहुंच गये हैं। रोशनी के लिए लकड़ी की शलाकाएं जलायी जाती हैं। उराल के कारख़ानों में, उदाहरण के लिए ज़्लातोऊस्त में, स्वचालित मशीनों की जगह लोगों को हाथ से काम करना पड़ता है। दोन क्षेत्र की कोयले की खानों में श्वेत गार्डों ने पानी भर दिया था। **(काफ़ी देर तक**

ख़ामोश रहने के बाद) तुम्हें स्वप्न देखना अच्छा नहीं लगता, साथी रिबाकोव?

रिबाकोव (हकलाता हुआ सा): मैं? स्वप्न देखना?

लेनिन: हर आदमी को स्वप्न देखना चाहिए... यह एकदम ज़रूरी है। लेकिन क्या एक बोल्शेविक को, एक मार्क्सवादी को भी स्वप्न देखने का अधिकार है? क्यों? मेरा ख़याल है कि इस अद्भुत चीज़ का अधिकार उसको भी है। अगर पार्टी के, अपने देशवासियों के नये कामों को वह आगे बढ़ाना चाहता है तो उसे ज़रूर स्वप्न देखना चाहिए... एक चीज़ और है, साशा रिबाकोव, तुम्हारा स्वप्न अगर वास्तविकता से बहुत दूर की चीज़ लगता है तो तुम्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिए। अगर तुम सचमुच उसमें विश्वास करते हो तो तुम्हें बिल्कुल चिन्ता नहीं करनी चाहिए। जीवन का सूक्ष्म अध्ययन करो और बिना रुके, पूरे तन-मन से, अपने स्वप्न को साकार बनाने में जुट जाओ। बहुत पहले, इस शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में ही, हम लोगों ने अपनी पार्टी के अन्दर रूस के भविष्य के बारे में स्वप्न देखना और उसके विद्युतीकरण की योजनाएं बनाना शुरू कर दिया था... आज हमें राशन कम कर देना पड़ा है, हर चीज़ में हमें किफ़ायत करनी पड़ रही है; हम बुरी हालत में, बड़ी तकलीफ़ में रह रहे हैं; लेकिन रूस का विद्युतीकरण हम ज़रूर करेंगे। उसके बिना फिलहाल कोई चारा नहीं। अगर हम ऐसा नहीं करते तो वे हमारे ऊपर फिर हावी हो जायेंगे, हमें कुचल देंगे और तब सौ साल तक हमें फिर शर्मनाक ग़ुलामी और विदेशी उत्पीड़न भुगतना पड़ेगा। तुम्हारा क्या ख़याल है, साशा रिबाकोव, विद्युतीकरण में हम सफल हो जायेंगे न?

रिबाकोव: व्लादीमिर इल्यीच, आप तो हज़ारों मील दूर तक देख सकते हैं। मैं भला आपको क्या बतला सकता हूं?

लेनिन: अपने जैसे लोगों को लेकर हम सब कुछ कर सकते हैं!

(पर्दा गिरता है)

दूसरा अंक

दृश्य १

(प्रीचिस्टेन्स्की एवेन्यू, गोगोल की मूर्ति के समीप। एक बेंच पर एक बूढ़ी औरत बैठी है। उसकी बग़ल में एक बच्चागाड़ी खड़ी है)

बूढ़ी औरत : मेरा लाल, सो गया। सोओ, सोओ मेरे लाल! सो ले, मेरे मुन्ने! **(ख़ुद भी ऊंघने लगती है)**

(रिबाकोव दौड़कर आता है। इधर-उधर देखने के बाद उसका चेहरा उतर जाता है)

रिबाकोव : चली गयी! **(जेब घड़ी निकालकर देखता है)** हां, गोगोल की मूर्ति तो है यहां, लेकिन मुझे पन्द्रह मिनट की देर हो गयी। उस जैसी लड़की के लिए बस इतना ही काफ़ी है। सत्यानाश हो गया। **(तेज़ी से, बूढ़ी औरत से)** सुनो, आया!

बूढ़ी औरत (नाराज़गी से) : नौजवान, तुमसे किसने कहा कि मैं आया हूं?

रिबाकोव : माफ़ करना, मेरी नज़र में इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।

बूढ़ी औरत : तुम्हारी नज़र में न पड़ता हो, मेरी नज़र में तो पड़ता है!

रिबाकोव : मैंने देखा कि यहां एक बच्चागाड़ी है, बच्चा है... मैं आपसे पूछना चाहता था कि...

बूढ़ी औरत : इतना शोर न करो। देखते नहीं, वह सो रहा है।

रिबाकोव : माफ़ी चाहता हूं। फिर ऐसा नहीं करूंगा। लेकिन कृपया मुझे यह बतायें कि मेरे आने से पहले क्या यहां कोई युवती इन्तज़ार कर रही थी?

बूढ़ी औरत : जाओ, अपना काम देखो। तुम क्या बकबक कर रहे हो, मुझे एक भी शब्द सुनाई नहीं पड़ता।

रिबाकोव (उसका हाथ पकड़कर): मेरे ऊपर मेहरबानी करो! कृपया इतना बता दें!

बूढ़ी औरत: तुम मुझे घसीटकर कहां ले जा रहे हो? मैं शोर मचा दूंगी!

रिबाकोव (उसे बच्चागाड़ी से दूर ले जाते हुए): शोर मचाने से तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। मैं गुप्तचर हूं। मुझे ठीक-ठीक जवाब दो: थोड़ी देर पहले उस मूर्ति के पास क्या तुमने किसी युवती को देखा था?

बूढ़ी औरत: युवती को? हां, हां ... एक लड़की थी यहां। मेरे बग़ल में बैठी हुई मेरे नाती की तारीफ़ कर रही थी।

रिबाकोव: वह कैसी थी? देखने में बहुत अच्छी? दरअसल, बहुत सुन्दर? काले दस्ताने पहने थी?

बूढ़ी औरत: हां, हां, ठीक ऐसी ही थी! काले दस्ताने पहने थी।

रिबाकोव: उसे गये कितनी देर हुई?

बूढ़ी औरत: अभी-अभी, मुश्किल से एक मिनट बीता होगा।

रिबाकोव: किस तरफ़ गयी?

बूढ़ी औरत: उस रास्ते।

रिबाकोव: अगर वह मुझे मिल गयी तो सारी ज़िन्दगी मैं तुम्हारा आभारी रहूंगा! धन्यवाद! **(दौड़ता हुआ जाता है)**

बूढ़ी औरत (परेशानी की हालत में): गुप्तचर! कैसा गुप्तचर? मेरी समझ में तो कोई बावला है! घबराहट में मैंने बेचारी का पता बता दिया। कैसा भयानक आदमी था! गिद्ध की तरह मेरे ऊपर झपट पड़ा! **(मन ही मन में वह ईश्वर की प्रार्थना करती है, अपनी छाती पर हाथ से सलीब का निशान बनाती है और फिर बैठ जाती है। रिबाकोव की दिशा में देखने लगती है)** उसने उसे पकड़ लिया ... वह उसे यहां ले आ रहा है ... मैं यहां से खिसक जाऊं, यही ठीक होगा ... भगवान हमारी रक्षा करे! **(बच्चागाड़ी को चलाती हुई वहां से चली जाती है)**

(माशा तथा रिबाकोव आते हैं)

रिबाकोव: हां, मुझे देर हो गयी थी, लेकिन कम से कम यह तो देखो कि दौड़ते-दौड़ते मेरी क्या हालत हो गयी है। मुझे देखकर एक बूढ़ी औरत यहां इतना डर गयी थी कि वह मर ही जाती।

माशा: बस, बस, रिबाकोव! मैं तुम्हारी सारी चालें जानती हूं।

तुम्हारा यह साइक्लोप * जैसा ढंग कुछ दिनों के बाद बोर करने लगता है। **(बैठ जाती है)**

रिबाकोव: साइक्लोप जैसा! अच्छी बात है, साइक्लोप ही सही। और तुम क्या हो?

माशा: मैं सचमुच सोच नहीं पाती कि तुम मुझे किस रूप में देखते हो। मैं इसके बारे में अक्सर सोचती हूं। घर पर जब से उन्हें तुम्हारे बारे में पता चल गया है मैं जैसे बेघर हो गयी हूं। मेरी समझ में नहीं आता क्या करूं। हो सकता है तुम मेरी बात का ग़लत मतलब लगा लो, लेकिन मैं तुमसे सच कहती हूं कि मैं आशा और निराशा के बीच निरन्तर हिचकोले खाती रहती हूं। मुझे आशा थी कि तुम मेरी कुछ मदद करोगे। कल रात मैं एक क्षण भी न सो सकी। लेकिन तुम्हें क्या, तुम्हारे लिए सब बराबर है! जैसे कि किसी युवती से मुलाकात का कोई महत्त्व ही नहीं है! और वह युवती भी ख़ूब ही है: मिलने की बात ख़ुद ही तै करती है। प्रतीक्षा में बीते उन पन्द्रह मिनटों में ही इस मूर्ति से मैं नफ़रत करने लग गयी थी। मालूम होता था, मेरा मज़ाक़ उड़ाने के लिए ही उसे यहां लगाया गया था।

रिबाकोव: माशा, तुम तो मुझे मुंह खोलने भी नहीं देतीं, मेरी भी तो सुनो।

माशा: मेरे इतना बोलने पर भी तो तुम कुछ नहीं समझते।

रिबाकोव: मैं इतना बड़ा मूर्ख हूं तो मुझसे बात करने से क्या फ़ायदा!

माशा: फिर आज तुमने आने में यह गड़बड़ी कैसे कर दी?!

रिबाकोव: लेकिन मैं आ तो गया!

माशा: काश, तुम समझ पाते कि आज का दिन कोई मामूली दिन नहीं है। आज तुम्हें मेरे पिता जी से मिलना है। तुम्हें कोई अन्दाज़ नहीं कि इसका मतलब क्या होता है। वह बहुत ही टेढ़े आदमी हैं। उनके दिमाग़ में आ जाये तो वह तुम्हें घर से निकाल दें—और तब? तब हमारा सब किया-कराया चौपट हो जायेगा।

रिबाकोव: तब तो मैं जाऊंगा ही नहीं।

माशा: क्या!

रिबाकोव: मैं नहीं जाऊंगा, और क्या!

---

* यूनान के पौराणिक साहित्य का एक विशाल दानव जिसके माथे पर एक आंख होती थी।

माशा : तुम क्या कह रहे हो? तुम भी सचमुच ख़ूब हो! तुम्हें किसी चीज़ का ख़ौफ़ नहीं मालूम होता। हर चीज़ तुम्हें इतनी आसान, इतनी हल्की-फुल्की लगती है! तुम्हें कोई चीज़ परेशान नहीं करती। सच बात यह है कि अभी तक अपने पिता के बारे में तुम्हें मैंने सब कुछ बताया नहीं। वह सिर्फ़ चिढ़ की वजह से दियासलाइयां बेचते घूमते हैं। सिर्फ़ यह दिखाने के लिए कि देखो! इंजीनियर ज़बेलिन मास्को की सड़कों पर दियासलाइयां बेचता घूमता है!!

रिबाकोव : सचमुच विचित्र प्राणी हैं!

माशा : हां, लेकिन वह मेरे पिता हैं और मैं उन्हें प्यार करती हूं। और अगर तुम भी उन्हें अच्छी तरह जानते होते तो तुम भी उनसे प्यार करते।

रिबाकोव : फिर क्या? चलो, हम दोनों उन्हें प्यार करें और उनका हृदय जीत लें।

माशा : यही तो कठिन चीज़ है—उनको प्रभावित करना बहुत मुश्किल है। मैंने क्या कहा—प्रभावित करना?! अन्देशा यह है कि वह तुम्हें दुत्कार दें, तुम्हारा अपमान करें, और ख़ुदा जाने और क्या-क्या करें। मैं सोच रही थी कि तुम नहीं आये तो अच्छा ही हुआ, शायद क़िस्मत यही चाहती थी।

रिबाकोव : तीन दिनों से मैं एक घड़ीसाज़ की तलाश में पागल की तरह घूम रहा हूं।

माशा : कैसा बढ़िया बहाना है! इससे बेहतर बहाना नहीं सोच सके? तुम्हें सिर्फ़ अपनी घड़ी बनवाने की फ़िक्र थी!

रिबाकोव : बिल्कुल ठीक कहती हो, मुझे सिर्फ़ उसी की फ़िक्र थी...

माशा : धन्यवाद!

रिबाकोव : माशा, अब गुस्सा ख़त्म करो। तुम्हें मालूम होता कि मैं कैसे यहां आया हूं तो शायद तुम ऐसी बातें न करतीं। आज हर तरफ़ गड़बड़ ही थी। मैं एक ट्राम पर बैठा—वह रुक गयी। क्यों? क्योंकि बिजली नहीं थी। मैं कूदकर एक लारी पर बैठ गया—वह उल्टी दिशा में चली गयी!! मैंने एक बग्घी पकड़ी, हम कुछ ही दूर गये होंगे कि एक सीटी ने हमें रोक दिया। आख़िर बात क्या है? गाड़ीवान के पास लाइसेन्स नहीं था। उसने प० वि० में रजिस्टर नहीं कराया था!

माशा : "प० वि०"? यह क्या बला है?

रिबाकोव : प० वि० का मतलब है परिवहन विभाग। असल बात यह है, माशा, कि मुझे एक महत्त्वपूर्ण काम दिया गया है। मुझसे कहा गया है कि क्रेमलिन की घंटियों की मरम्मत के लिए एक होशियार घड़ीसाज़ ढूंढ़ लाऊं।

माशा : रिबाकोव, तुमसे पार पाना बड़ा मुश्किल है। मुझे मालूम कैसे होता कि तुम क्या कर रहे हो? तुम समझते थे कि सारी दुनिया को मालूम होगा कि तुम कहां हो?

रिबाकोव : देखा, तुम्हें मालूम कुछ नहीं था और फिर भी तुम मेरे ऊपर नाराज़ थीं। ख़ुद देख लो कि तुम कितनी बेइन्साफ़ हो!

माशा : अच्छा, अच्छा। फिर घड़ीसाज़ तुम्हें मिल गया?

रिबाकोव : हां। लेकिन उसे ढूंढ़ने में मुझे कितनी दिक़्क़त हुई, इसका तुम्हें अन्दाज़ नहीं हो सकता! ज्यों ही किसी से कहता हूं कि उसे किस घड़ी की मरम्मत करनी है, वह डर जाता है... सफ़ेद दाढ़ीवाला एक आदमी था — उसकी उम्र मैथूसला * से कम न होगी। उसके सामने ज्यों ही मैंने क्रेमलिन का नाम लिया त्यों ही वह वहीं ज़मीन पर बैठ गया। अपना सिर पकड़कर बोला : "तुम चाहो तो मुझे गोली मार दो, वहां मैं नहीं जाऊंगा!" पुराने मास्को के कोने-कोने में मैंने तलाश मारा तब कहीं एक आदमी मिला। लेकिन आदमी बहुत बढ़िया है! लाखों में एक! आज वह क्रेमलिन जायेगा। पर मुझे फ़िक्र लगी हुई है, डर लग रहा है...

माशा : क्यों?

रिबाकोव : मैंने उसे यह नहीं बतलाया था कि उसे कौन-सी घड़ी बनानी है। वह समझता है कि उसे किसी मामूली घड़ी की मरम्मत करनी है, पर वह घड़ी जो घण्टाघर में, यानी टावर में है उसका वज़न सैकड़ों सेर है... माशा, अगर तुम जानतीं कि पिछली रात मेरे साथ कैसी घटना घटी थी! जिस समय सारा मास्को निद्रा में लीन था उसी समय, आधी रात में, मैं इधर-उधर भटक रहा था। वहीं मेरी मुलाक़ात लेनिन से हो गयी। उनका दिमाग़ किस तरह काम करता है इसे मैं बिल्कुल नहीं समझ पाता। जब से उनसे बात हुई है तभी से जैसे बिना होश-हवास के मैं इधर-उधर दौड़ रहा हूं। ऐसा लगता है कि मैं भी उस सुदूर भविष्य की एक झांकी देख आया हूं, जिसमें अभी तक कोई नहीं पहुंचा है। साथ ही

---

* एक पौराणिक प्राणी जो ९६९ वर्ष तक ज़िन्दा रहा था।

इस बात से मैं परेशान भी हूं कि वास्तव में वहां मैं नहीं, बल्कि लेनिन हो आये हैं। अब मैं जान गया हूं कि ऐसे भी लोग हैं जिन्हें कोई भी चीज़ कठिन नहीं लगती, किसी भी चीज़ से डर नहीं लगता, उनके लिए कुछ भी अकल्पनीय नहीं है, वे सब कुछ कर सकते हैं।

माशा: प्रिय साशा, तुमसे बात करने में कितनी शान्ति मिलती है! ऐसा क्यों होता है मैं ख़ुद नहीं जानती, किन्तु जिस मुसीबत की मैं कल्पना कर रही थी, वह अन्तर्धान हो गयी! पर मैं आशा करती हूं कि इतना तो तुम्हें याद होगा कि आज शनिवार है और मेरे घर के लोग तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आयेंगे न?

रिबाकोव: ज़रूर!

माशा: और मान लो मेरे पिता तुम पर बिगड़ते हैं, तो तुम बुरा तो नहीं मान जाओगे?

रिबाकोव: हरगिज़ नहीं।

माशा: लेकिन जब मैं तुम पर बिगड़ी थी तब तो तुमने मुंह बना लिया था।

रिबाकोव: वह बात दूसरी है। तुम्हारे सामने मैं कुछ नहीं कह पाता...

माशा: सच?

रिबाकोव: माशा, मैं तुमसे प्रेम करता हूं। हर रात तुम्हारे नाम मैं पत्र लिखता हूं और फिर सुबह उन्हें फाड़ डालता हूं!

माशा: फाड़ा मत करो, डाक से भेज दिया करो।

रिबाकोव: मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैं प्रेम की बात सोचता हूं और जानता हूं कि तुम्हें मैं भरपूर प्यार करता हूं। लेकिन मुझे यह नहीं मालूम कि इसे लिखा कैसे जाये। मेरे पास शब्द नहीं हैं।

माशा: बस, तुमने जितना कह दिया उतना ही काफ़ी है। मैं तुम्हारी बात का विश्वास करती हूं। इसके बाद फिर रह ही क्या जाता है? न जाने क्यों आज मुझे तुममें पहले से भी ज़्यादा विश्वास की अनुभूति होती है। लेकिन अब मुझे जाना चाहिए।

रिबाकोव: मैं तुम्हें घर तक छोड़ आऊं, माशा?

माशा: तुम्हें ले जा सकती तो मुझे भी कितना अच्छा लगता, लेकिन डर है कि कहीं मेरे पिता हम लोगों को न देख लें।

रिबाकोव: क्या सचमुच तुम्हारे पिता इतने ख़ौफ़नाक हैं?

माशा : अब देर ही क्या है, तुम्हें ख़ुद पता चल जायेगा। ख़ैर, जो होना है वह तो होगा ही। मैं पहले से अपना दिमाग़ ख़राब नहीं करना चाहती। मेरा हाथ पकड़ लो।

रिबाकोव : धन्यवाद!

माशा (हंसती हुई) : नहीं, साशा। यह धन्यवाद-वन्यवाद की बातें तुम न करो—तुम जैसे हो वैसे ही बने रहो।

रिबाकोव : इससे अच्छा और क्या होगा! मैं जैसा हूं हमेशा वैसा ही रहूंगा—इन बनावटी चीज़ों के बिना!

दृश्य २

(ज़बेलिन परिवार का घर। शाम हो गयी है। अन्तोन इवानोविच का अध्ययन-कक्ष। इसका बहुत दिनों से कोई इस्तेमाल नहीं हुआ है। ज़बेलिन की पत्नी अपने मेहमानों की ख़ातिरदारी में तल्लीन है। एक महिला है जो बुनाई कर रही है। उसका पति आशावादी है। एक दूसरी महिला है जो डरी हुई है। उसका पति संशयवादी है)

ज़बेलिना (बातचीत को जारी रखते हुए) : अन्तोन इवानोविच दिनोंदिन बिगड़ते जा रहे हैं। उनका रवैया अधिकाधिक असह्य होता जा रहा है। कुछ दिन पहले मैंने देखा था वह एक पादरी से लड़ रहे थे। और कल—यह सचमुच कितनी शर्म की बात है—वह हमारे एक परिचित से ही लड़ पड़े।

संशयवादी : घर पर या खुले आम?

ज़बेलिना : थियेटर के सामने, शाम सात बजे।

संशयवादी : फिर जीत किसकी हुई?

ज़बेलिना : जीत तो अन्तोन इवानोविच की ही हुई। पर तुम जानते हो झगड़ा किसलिए हुआ था? उन सज्जन ने अन्तोन इवानोविच के मातहत कभी काम किया था। कल, थियेटर में जाते समय उन्होंने अन्तोन इवानोविच की पीठ थपथपाकर बड़प्पन से बात करने तथा उनके ऊपर एहसान जताने की गुस्ताख़ी की थी।

भयभीत महिला : क्या वे सज्जन बोल्शेविक हैं?

ज़बेलिना : बोल्शेविक तो नहीं हैं, किन्तु वह आधुनिक विचार के हैं।

भयभीत महिला : अन्तोन इवानोविच ऐसी बातें करेंगे, तो कहीं चेका * उन्हें गिरफ़्तार न कर ले!

संशयवादी : आजकल बाहर कौन है? सभी तो पकड़ लिये गये हैं।

भयभीत महिला : तुम तो नहीं पकड़े गये!

संशयवादी : अभी तक नहीं, लेकिन तै है कि मैं भी पकड़ लिया जाऊंगा।

भयभीत महिला : ख़ुदा के वास्ते, ख़ामोश रहो! कम से कम यहां तो मुझे न डरवाओ।

ज़बेलिना : अन्तोन इवानोविच जिस ढंग से चल रहे हैं, उसे देखकर हमेशा उनकी कुछ चीज़ें मैं बांधकर तैयार रखती हूं। न जाने किस वक़्त ज़रूरत पड़ जाये! मुझे लगता है कि सचमुच वह अपने को गिरफ़्तार करवा लेंगे।

आशावादी : अन्तोन इवानोविच भावावेश में आ जाते हैं, उनका और कोई क़ुसूर नहीं है। चेका के लोग लोगों को उनकी भावनाओं के लिए गिरफ़्तार नहीं करते।

भयभीत महिला : लेकिन उन्होंने तो बोल्शेविक विचारों के एक सज्जन को ही पीट दिया था। यह तो आतंकवाद हुआ!

आशावादी : अगर ज़रूरत पड़े, तो चाहे जो भी शासन हो वह उनके कान तो गर्म करेगा ही।

संशयवादी : अन्तोन ज़रूर पकड़ लिये जायेंगे। तुम देखना।

भयभीत महिला : यह आदमी तो मेरी जान लिये बग़ैर नहीं रहेगा...

संशयवादी : आधे मास्को में यही चर्चा है कि ज़बेलिन दियासलाइयां बेचते घूमते हैं। क्या तुम समझती हो कि बोल्शेविक बेवक़ूफ़ हैं और कुछ समझते नहीं?

बुनाई करनेवाली महिला : हमारा वोलोद्या "भविष्यवादी" बन गया है। सारे दिन वह एक भयानक कविता सुनाता भटकता रहता है। कविता का नाम है 'पतलून में बादल'!

ज़बेलिना : क्या-या? बादल... पतलून में? क्या सचमुच ऐसी भी कोई कविता हो सकती है?

---

* प्रतिक्रान्ति से संघर्ष के लिए बना एक असाधारण आयोग।

बुनाई करनेवाली महिला : वे उसे कविता ही कहते हैं! वोलोद्या तो कहता है कि इससे बढ़िया कविता आज तक लिखी ही नहीं गयी। वह निश्चित रूप से अश्लील है। कवि प्रथम पुरुष के रूप में एक महिला से तरह-तरह की अक्षम्य बातें कविता के माध्यम से संकेत में कहता है।

आशावादी : लेकिन पुश्किन ने भी तो ऐसा ही किया था।

बुनाई करनेवाली महिला : पुश्किन ने शालीनता की सीमा कभी नहीं तोड़ी थी, मायाकोव्स्की तो बिल्कुल उजड्ड है।

आशावादी : ये सब एक ही धातु के बने होते हैं। वोलोद्या भविष्यवादी है, तो होने दो। उससे रोज़ की रोटी तो मिल ही जायेगी!

ज़बेलिना : सचमुच क्या कविता लिखने के लिए भी बोल्शेविक राशन देते हैं?

बुनाई करनेवाली महिला : शुरू में मुझे ख़ुद इस बात पर विश्वास नहीं हुआ था। लेकिन वे सचमुच उन्हें राशन देते हैं।

संशयवादी : वे अन्तोन को ज़रूर गिरफ़्तार कर लेंगे, आप देखियेगा।

ज़बेलिना : दिमीत्री दिमीत्रियेविच, आप हमारे रिश्तेदार ज़रूर हैं, लेकिन ऐसी अशुभ बातें निश्चय ही अनुचित और अशिष्ट हैं।

भयभीत महिला : ये मुझे बार-बार रुला देते हैं। यह आदमी तो नरक के जल्लादों से भी बुरा है। हर एक से यह यही कहता फिरता है कि उसे गोली मार दी जायेगी।

(माशा का प्रवेश)

ज़बेलिना (माशा से) : क्या अभी तक तुम काम ही करती रही हो?

माशा : हां।

ज़बेलिना : जाओ, कुछ खा लो।

माशा : मुझे भूख नहीं है।

ज़बेलिना : बेटी, तुम्हारा चेहरा उतरा-उतरा है। तुम्हें कुछ खाना-पीना चाहिए।

माशा : अभी नहीं। बाद में खा लूंगी। **(अतिथियों से हाथ मिलाती है)**

आशावादी : तुम कहां काम करती हो, माशा?

माशा : अ० स० में।

आशावादी : यह क्या चीज़ है?

माशा : हम लोग अकालग्रस्त लोगों की मदद करते हैं।

आशावादी : क्या सचमुच हालत इतनी ही ख़राब है जितनी कि लोग बताते हैं?

माशा : हां, बहुत ही ख़राब। अकाल प्रलय की तरह फैलता जा रहा है!

संशयवादी : यह कोई ख़ास रूसी क़िस्म का प्रलय है! विदेशों में वे अपने जानवरों को बढ़िया गेहूं की बनी रोटियां खिलाते हैं। और यहां हमारी आधी आबादी भूख से दम तोड़ रही है! चीज़ों को मैं बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कह रहा हूं।

(ज़बेलिन का प्रवेश)

ज़बेलिना : अन्तोन इवानोविच, माफ़ करना, हम लोगों ने तुम्हारे अध्ययन-कक्ष पर क़ब्ज़ा कर रखा है। यहां सर्दी कम लगती है।

ज़बेलिन : सो तो मैं देख ही रहा हूं। **(अतिथियों को अभिवादन करते हुए)** हां, कभी यह अध्ययन-कक्ष हुआ करता था, अब तो यह एक क़ब्र है। हां तो, आप लोग क्या बातें कर रहे थे?

आशावादी : आजकल देश में लोग क्या बातें करते हैं? अकाल, मृत्युदर ताबड़तोड़ और गिरफ़्तारियां... यही तो रोज़मर्रा की बातें हैं...

ज़बेलिन : जंगलियों ने एक सभ्य जहाज़ को पकड़ लिया, उसके तमाम श्वेत आदमियों को मार डाला, मल्लाहों को पानी में फेंक दिया, जहाज़ की तमाम रसद हड़प कर गये... लेकिन, सवाल है कि इसके बाद होगा क्या? अरे, जहाज़ को चलाना भी तो जानना चाहिए, और यह उनके बस का नहीं। उन्होंने समाजवाद क़ायम करने का एलान किया है, लेकिन उसे कैसे क़ायम किया जाये इसका ककहरा तक उनमें से कोई नहीं जानता! **(संशयवादी से)** दिमीत्री दिमीत्रियेविच, क्या तुम जानते हो कि समाजवाद कैसे क़ायम किया जाता है?

संशयवादी : नहीं जानता, और जानना भी नहीं चाहता!

ज़बेलिन : अपनी जवानी में मैं चांद पर उड़कर पहुंच गया था... यानी सैद्धान्तिक रूप से, अपनी कल्पना में। और अब यह देखो—यह मेरी बेटी है जो बोल्शेविकों के लिए कुछ भी करने को, हर तरह की मुसीबतें उठाने को तैयार है! इसकी सारी हमदर्दी उन लोगों के साथ

है। इसकी नज़र में हम सब क्रान्तिविरोधी हैं, बोरबोन* हैं...

(बावर्चिन तेज़ी से अन्दर आती है)

बावर्चिन: एक जहाज़ी आया है। पूछ रहा है कि ज़बेलिन परिवार कहां रहता है।

भयभीत महिला: जहाज़ी? जहाज़ी क्यों?

संशयवादी: जैसे कि तुम जानती ही नहीं कि जहाज़ी किसलिए आते हैं!

ज़बेलिना: आप डरें नहीं! वह जहाजी नहीं है।

बावर्चिन: मैं अन्धी तो नहीं हूं... वह जहाज़ी ही है... और ग़ुस्से में है...

संशयवादी: मैं अपने साथ अपना परिचय-पत्र नहीं लाया। बेहतर हो कि अब सपत्नीक पीछे के दरवाज़े से खिसक जाऊं!

भयभीत महिला: मुझे तो बाहर जाने में डर लगता है। जहाज़ी हमें देख लेंगे तो शक करेंगे कि हम लोग भागने की कोशिश कर रहे थे।

ज़बेलिना: आप लोग डरिये नहीं... वह इस तरह का जहाज़ी नहीं है। **(माशा से)** अब तुम क्यों ख़ामोश खड़ी हो? जाओ, उसे अन्दर लिवा लाओ!

(माशा जाती है। अतिथि परेशानी से चुपचाप दरवाज़े की तरफ़ देखते हैं)

आशावादी (अन्तोन इवानोविच से): अरे भाई, यह क्या क़िस्सा है?

ज़बेलिन: शायद वह मेरी बेटी का मंगेतर है। 'अरोरा' युद्धपोत का एक नौसैनिक है।

संशयवादी: 'अरोरा' के नौसैनिकों को अपनी बेटी से मिलने ही देते हैं?

ज़बेलिन: अच्छा, तो मेरे प्यारे चचेरे भाई, थोड़ी देर पहले तुम मेरे घर से भाग क्यों जाना चाहते थे?

संशयवादी: भागना?

ज़बेलिन: हां, भागना! कुछ दिन पहले तुम ऐसी हास्यास्पद बात सोच तक न सकते। हमें रोना चाहिए, रोना! और तुम व्यंग करते हो!

---

* प्रतिक्रियावादी।

(माशा और रिबाकोव आते हैं)

माशा: महाशय ... **(बीच ही में रुक जाती है)**

ज़बेलिन: हां, हां, बोलती जाओ। अपने मेहमान के सामने हमें महाशय कहकर सम्बोधित करने में बुरा लगता है? तो लो, मैं बताता हूं कि तुम्हें किस तरह बोलना चाहिए। तुम हम लोगों को "साथी" कहकर बुलाओ तो तुम्हारे मेहमान को बुरा नहीं लगेगा।

माशा (रिबाकोव से): मैंने तुमसे कहा था न ... पापा हमेशा ही मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं। **(दूसरों से)** यह मेरे मित्र हैं, अलेक्सांद्र मिख़ाइलोविच रिबाकोव ... ये मोर्चे पर रह चुके हैं ... इन्होंने बहुत-सी दिलचस्प चीज़ें देखी हैं ...

संशयवादी (रिबाकोव से हाथ मिलाते हुए): आपसे मिलकर ख़ुशी हुई!

भयभीत महिला (रिबाकोव को ग़ौर से देखती हुई): मैं कुछ समझ नहीं पाई — आप जहाज़ी हैं, या नागरिक अधिकारी?

रिबाकोव: मैं जहाज़ी था, लेकिन स्थलसेना में लड़ना पड़ा था। अब सेना से मुझे छुट्टी मिल गयी है।

भयभीत महिला: फिर आप यह जहाज़ियोंवाली वर्दी क्यों पहने हैं? हम तो सोचने लगे कि तलाशी आयी है, पर आप तो मेहमान बनकर आये।

रिबाकोव: तलाशी क्यों? मैं तो कभी सोच भी नहीं सकता कि मेरी कोई तलाशी लेने आयेगा।

संशयवादी: हरगिज़ नहीं, आपकी तलाशी कौन लेगा! आपने तो पूरे देश को ही जीत लिया है!

रिबाकोव: जीत अभी पूरी कहां हुई!

ज़बेलिन: वह कब पूरी होगी?

रिबाकोव: शायद समाजवाद की स्थापना के बाद।

ज़बेलिन: वह किस वर्ष तक मुमकिन होगा?

रिबाकोव: खेद है, यह मैं आपको बता नहीं सकता।

ज़बेलिन: क्या वह कोई रहस्य है जिसे छिपाना चाहिए?

रिबाकोव: नहीं, मैं ख़ुद नहीं जानता।

ज़बेलिन: अच्छा, यह बात है!

ज़बेलिना: बैठ जाओ, अलेक्सांद्र मिख़ाइलोविच ... लो, यह

राखदानी है। क्या तुम हमारे परिवार की तस्वीरों का अलबम देखना पसंद करोगे?

भयभीत महिला: परिवार का अलबम इन्हें क्यों दे रही हो? उसमें तमाम ऊट-पटांग लोगों के चित्र हैं... **(रिबाकोव से)** यह देखिये—ये इटली की कुछ तस्वीरें हैं... यह रोम है, यह कोलीज़ीयम है, यह विसूवियस...

ज़बेलिन: क्यों जनाब, क्या इतालवी सागर की तरफ़ भी जाने का मौक़ा कभी आपको मिला है?

रिबाकोव: जी नहीं। बाल्टिक से आगे मैं कहीं नहीं गया।

ज़बेलिन: और क्या मैं आपसे पूछ सकता हूं कि कम्युनिस्ट पार्टी के भी आप सदस्य हैं?

रिबाकोव: हां। क्यों?

ज़बेलिन: यह जानना दिलचस्प होगा कि जब हम जैसे लोगों के बीच कोई कम्युनिस्ट आ जाता है तो वह क्या सोचता है।

रिबाकोव: इसमें सोचने ही क्या है? कुछ भी तो नहीं।

ज़बेलिन: हां, आप ठीक ही कहते हैं। आपके सोचने के लिए है ही क्या? आपकी नज़र में तो हम लोग बुर्जुआ और बदकार हैं। लेकिन यह जान लीजिये कि इन बुर्जुआ लोगों ने सारी ज़िन्दगी गुलामों की तरह काम किया है। हमारी मेहनत की एवज़ में पूंजीवाद ने हमें पैसा दिया है, खुशहाल ज़िंदगी दी है—मेरे अध्ययन-कक्ष में आपको उसी के कुछ बचे-खुचे अवशेष नज़र आ रहे हैं। लेकिन कम्युनिज़्म मुझे खाने के लिए क़रीब आधा मन जौ देता है—वह भी ऐसा जो सिर्फ़ कुत्तों के खाने लायक़ है! बहुत अच्छा! मैं गन्दे पिल्लों के इस आहार को भी खाने के लिए तैयार हूं, लेकिन वह भी तो मुझे नहीं मिलता! नये समाज को मेरी कोई ज़रूरत ही नहीं है, क्योंकि मेरा काम बिजलीघरों का निर्माण करना है और वे अब बन्द किये जा रहे हैं। मैं बेकार हूं। बिजली के बारे में सोचने के लिए हमारे पास कोई टाइम नहीं है। विद्युत-शक्ति की जगह बैलों की जोड़ी ले रही है। और प्रोमीथियस की तरह मैं लोगों के पास आग पहुंचा रहा हूं। सुबह से रात तक इबेरियाई गिरजाघर के फाटक पर खड़ा-खड़ा मैं दियासलाइयां बेचता हूं।

संशयवादी: और, प्रोमीथियस की ही तरह, ज़ंजीरों से बांधकर वे तुम्हें क़ैद कर देंगे।

ज़बेलिन (रिबाकोव से): क्यों जनाब, आप क्या कहते हैं?

रिबाकोव: मेरी समझ में नहीं आता कि उन्होंने अब तक ऐसा क्यों नहीं किया!

संशयवादी (ख़ुश होकर): सुना आपने?

ज़बेलिन: सामने टेलीफ़ोन रखा है। रिपोर्ट कर दो।

रिबाकोव: उन्हें मेरी रिपोर्ट की ज़रूरत नहीं। लेकिन असल बात यह नहीं है। आप हम लोगों से चिढ़े हुए हैं... और बिल्कुल बेकार। आपकी जगह मैं होता तो न जाने कब का कहीं काम में लग गया होता। देखिये, हम लोग आपस में ही बात कर रहे हैं इसलिए मैं आपको बताये देता हूं कि आप प्रोमीथियस-वोमीथियस कुछ नहीं हैं, सिर्फ़ तोड़-फोड़ करनेवाले एक षड्यंत्रकारी हैं!

ज़बेलिन: ओह-हो! कहिये, यह कैसी रही? यह आदमी पहली बार मेरे घर आता है और इस बात पर ताज्जुब करता है कि मुझे अभी तक गिरफ़्तार क्यों नहीं किया गया और कितने मज़े से ख़ुदा जाने कैसी-कैसी गालियां मुझे दिये जा रहा है। शेख़ी की भी हद है! आजकल अपने घरों में मेहमान भी हम लोग कैसे-कैसे बुलाते हैं?

आशावादी: हमारा वोलोद्या भी ठीक इसी तरह की बातें करता है। हर दिन वह मुझे सड़ा हुआ बुर्जुआ कहता है। और मुझे यह सब चुपचाप पी जाना पड़ता है।

ज़बेलिन: वोलोद्या आपका लड़का है। यह आदमी एक अजनबी है। **(रिबाकोव से)** शराफ़त जैसी भी कोई चीज़ होती है — इसका क्या आपको बिल्कुल पता नहीं?

रिबाकोव: यह सचमुच ही अजब बात है! सोवियत व्यवस्था के लिए मैंने अपनी जान तक की परवाह नहीं की। लेकिन उसके बारे में आप किसी बहुत सभ्य भाषा में तो बात कर नहीं रहे थे। फिर भी मैं न तो चिल्लाया, न शोर किया, और न ग़ुस्सा ही हुआ। मैंने तो सिर्फ़ यही कहा कि आप एक तोड़-फोड़ करनेवाले हैं।

ज़बेलिन: मैंने तो, जनाब, केवल सच कहा था!

रिबाकोव: आपने सच-वच कुछ नहीं कहा था, आप महज़ बकवास कर रहे थे! सच तो मैंने ही कहा है।

ज़बेलिन: क्या यह सच नहीं है कि मैं बेकार हूं?

रिबाकोव: नहीं!

ज़बेलिन: तुम्हारे जैसे लोगों ने एक पुराने जूते की तरह मुझे कूड़े के ढेर पर फेंक दिया है—क्या यह सच नहीं है?

रिबाकोव: नहीं!

ज़बेलिन: अच्छा, जनाब, तो सुनिये: आप मेरे घर से निकल जाइये! इससे पहले आपका परिचय प्राप्त करने का सौभाग्य भी मुझे नहीं प्राप्त हुआ और अब मैं उसकी कोई ज़रूरत नहीं समझता।

रिबाकोव: मैं नहीं जाऊंगा।

ज़बेलिन: ओह, यह बात है... मैं भूल गया था कि आप मेरे मकान पर क़ब्ज़ा कर सकते हैं।

रिबाकोव: मैं यहां किसी चीज़ पर क़ब्ज़ा-वब्ज़ा करने नहीं आया हूं...

ज़बेलिन: तो आप ही रहिये! मैं यहां से चला जाता हूं!

रिबाकोव: मैं आपको भी जाने नहीं दूंगा। आपको इस तरह पागलों की तरह बातें करते देखना कितना हास्यास्पद लगता है। और आप अपने को सभ्य कहते हैं!

ज़बेलिन: तो मैं जंगली हूं?

रिबाकोव: लगता तो ऐसा ही है।

ज़बेलिन: और आप मुझे सभ्य बनाने आये हैं?

रिबाकोव: बेशक! आप क्या समझते हैं?

ज़बेलिन (हंसते हुए): मैं तो इस आदमी की बेबाक शेख़ी को देखकर ही निरस्त्र हो गया हूं! कैसा मज़े का जीव है! हम सब को सभ्य बनाना चाहता है! बहुत अच्छा, साथी मिशनरी, मैं तैयार हूं! शुरू करो!

(बावर्चिन आती है)

बावर्चिन: मकान कमेटी के चेयरमैन आये हैं।

ज़बेलिन: अकेले?

बावर्चिन: नहीं, अकेले नहीं।

ज़बेलिन: अकेले नहीं?

बावर्चिन: उनके साथ कोई एक फ़ौजी है... ग़ुस्सैल!

चेयरमैन (खुले हुए दरवाज़े पर बेसब्री से दस्तक देता हुआ): क्या हम लोग अन्दर आ सकते हैं?

ज़बेलिन: आ जाइये...

(चेयरमैन अन्दर आता है, उसके पीछे-पीछे उस समय की फ़ौजी वर्दी में एक अजनबी)

चेयरमैन: नागरिक ज़बेलिन, ख़ुद आपको लेने आये हैं!

ज़बेलिन: बहुत ख़ूब! इसके लिए तो मैं बहुत दिनों से तैयार बैठा था!

फ़ौजी: कृपया आप जल्दी कीजिये!

ज़बेलिन: चलिये, मैं एकदम तैयार हूं!

फ़ौजी: शुक्रिया।

ज़बेलिन: मुझे एक मिनट से अधिक नहीं लगेगा... **(सब लोगों को अभिवादन करता है)** मेरी पत्नी ने आपको ग़लत वक़्त पर दावत दी थी... माफ़ कीजिये... **(पत्नी से)** अलविदा!

ज़बेलिना (पति के हाथ में एक गठरी पकड़ाते हुए): भगवान तुम्हारी रक्षा करे...

ज़बेलिन: शुक्रिया। अच्छा, मैं चला...

फ़ौजी: मोटर अहाते में आपका इन्तज़ार कर रही है।

ज़बेलिन: मैं समझता हूं।

ज़बेलिना: अन्तोन, ऐसा न कहना!

(चेयरमैन, फ़ौजी और ज़बेलिन चले जाते हैं)

ज़बेलिना: अन्तोन! मैं उन्हें नहीं जाने दूंगी! तुम लोग हमें भी ले चलो! मुझे भी पकड़ लो! **(चिल्लाती हुई दौड़ती है)** वारंट कहां है? चेयरमैन को वापस बुलाओ! चेयरमैन!

(चेयरमैन वापिस आता है)

आपके पास कोई वारंट है?

चेयरमैन: और नहीं तो क्या! मय दस्तख़त और सरकारी मुहर के... एक-एक चीज़ दुरुस्त! **(चला जाता है)**

ज़बेलिना: ओह, माशा, वे उन्हें हमसे छीन ले गये...

माशा (रिबाकोव से): क्या तुम्हें मालूम था कि पापा गिरफ़्तार होनेवाले हैं?

रिबाकोव: मुझे कुछ नहीं मालूम था। मुझे लगता है कि यह गिरफ़्तारी है भी नहीं।

(पर्दा गिरता है)

तीसरा अंक

दृश्य १

(क्रेमलिन में लेनिन का अध्ययन-कक्ष। लेनिन और द्ज़ेर्जिन्स्की बैठे हुए हैं। लेनिन थोड़ी देर तक अपनी मेज़ पर झुके काम करते रहते हैं, फिर घंटी बजाते हैं। सेक्रेटरी आती है)

लेनिन (सेक्रेटरी से): इन्जीनियर ज़बेलिन को अन्दर लिवा लाओ। और हमारे विशेषज्ञ, इन्जीनियर ग्लागोलेव को भी ढूंढ़ लाओ। वह यहीं कहीं मंत्रालय में हैं।

(सेक्रेटरी चली जाती है। ज़बेलिन अन्दर आते हैं)

इन्जीनियर ज़बेलिन?

ज़बेलिन: जी।

लेनिन: अन्तोन इवानोविच?

ज़बेलिन: जी।

लेनिन: नमस्ते। कृपया बैठिये! बैठिये!

(ज़बेलिन कुर्सी पर बैठ जाते हैं। ख़ामोशी)

हां तो, आपका इरादा क्या है? आप तोड़-फोड़ करेंगे या काम?

ज़बेलिन: मुझे इस बात का पता नहीं था कि मेरी व्यक्तिगत समस्याओं में भी किसी की दिलचस्पी हो सकती है।

लेनिन: आप ख़ुद देख रहे हैं कि हमारी दिलचस्पी उनमें है। एक बहुत महत्त्वपूर्ण मामले में हम आपसे मशविरा लेना चाहते हैं।

ज़बेलिन: मुझे शक है कि मेरी सलाह आपके लिए किसी काम की होगी।

लेनिन: आप किस पर शक कर रहे हैं—हम पर या अपने पर?

ज़बेलिन: एक ज़माना हुआ जब से मुझसे किसी ने कुछ नहीं पूछा, किसी ने कोई सलाह नहीं मांगी।

लेनिन: इसका मतलब है कि लोग दूसरे कामों में लगे थे। आपका क्या ख़याल है?

ज़बेलिन: हां, यह तो ठीक है। लोगों को दूसरे काम करने थे।

लेनिन: लेकिन अब आपकी सलाह की ज़रूरत है। इसमें आपको ताज्जुब क्यों हो रहा है?

ज़बेलिन: मैं कुछ... कुछ... उलझन महसूस कर रहा हूं।

द्ज़ेर्जिन्स्की: उस पोटली से आपको परेशानी हो रही है। उसे आप नीचे क्यों नहीं रख देते?

लेनिन: आज शनिवार है, स्नान का दिन। शायद आप स्नानघर की तरफ़ जा रहे थे?

ज़बेलिन: हां... स्नानघर की तरफ़...

लेनिन: नहाने के लिए वक़्त रहेगा। हम लोग आपको बहुत देर नहीं रोकेंगे।

(इन्जीनियर ग्लागोलेव अन्दर आते हैं)

ग्लागोलेव: नमस्कार।

लेनिन (ग्लागोलेव से): गेओर्गी इवानोविच, इन्जीनियर ज़बेलिन से परिचित हो?

ग्लागोलेव: नहीं, हमें मिलने का इत्तफ़ाक़ नहीं हुआ।

लेनिन (ज़बेलिन से): गेओर्गी इवानोविच ग्लागोलेव से मिलिये। ये हमारे विशेषज्ञ हैं।

ज़बेलिन: हां, हमें पहले कभी मिलने का इत्तफ़ाक़ नहीं हुआ था।

ग्लागोलेव: क्या इन्जीनियर ज़बेलिन से आपने बात कर ली?

लेनिन: नहीं, अभी नहीं। मैं नहीं समझता कि इन्जीनियर ज़बेलिन को इस बात का पता है कि हमने उन्हें क्यों तकलीफ़ दी है। अच्छा, और समय न ख़राब किया जाये। हां, साथी, यह तुम्हारा अपना क्षेत्र है, तुम्हीं इन्हें बतलाओ।

ग्लागोलेव: इन्हें किसी ख़ास चीज़ के बतलाने-समझाने की ज़रूरत नहीं है। इन्जीनियर ज़बेलिन जैसे लोगों को रूस के विद्युत विकास

के सम्बन्ध में दूसरा कोई कुछ बतलाये इसकी ज़रूरत नहीं है। **(ज़बेलिन से)** मैं ठीक कहता हूं न?

ज़बेलिन: जी ...

ग्लागोलेव: फिर भी इतना तो आप जान ही लें कि तकनीकी दृष्टि से देश की अर्थ-व्यवस्था के मौलिक पुनर्निर्माण में हम बोल्शेविक क्रान्तिकारियों की हमेशा ही गहरी दिलचस्पी रही है।

ज़बेलिन: लेकिन आप ... क़ता-कलाम के लिए माफ़ कीजियेगा ... आप तो इन्जीनियर हैं ... एक पुराने इन्जीनियर, हैं न?

लेनिन (उनकी आंखों में व्यंग्यपूर्ण हंसी की झलक है): आपका मतलब — क्या एक पुराना इन्जीनियर क्रान्तिकारी नहीं हो सकता? **(ग्लागोलेव से)** अच्छा-अच्छा, तुम अपनी बात कहो।

ग्लागोलेव: एक ऐसे इन्जीनियर के रूप में, जो क्रान्तिकारी भी है, रूस के विद्युतीकरण के लिए मैं अपनी सारी शक्ति लगाने के लिए तैयार हूं।

लेनिन: और वह भी सुदूर भविष्य में नहीं, बल्कि फ़ौरन, इसी वक़्त ... हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का इरादा भी यही है।

ज़बेलिन: ठीक है... फिर?

लेनिन: यही तो हम आपसे पूछना चाहते हैं।

ज़बेलिन: मुझसे?

लेनिन: हां। एक विशेषज्ञ की हैसियत से आप हमारी मदद कर सकते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से, विशेषज्ञों के तरह-तरह के विचार हैं। ग्लागोलेव, कृपया अपनी बात जारी रखें।

ग्लागोलेव: एक पुरानी धारणा है कि विद्युत उत्पादन के लिए रूस में प्राकृतिक साधनों की कमी है। कल ही इस मसले पर हम लोग एक अत्यन्त प्रतिष्ठित वैज्ञानिक से बात कर रहे थे — इसी तरह जैसे इस वक़्त हम आपसे बातें कर रहे हैं। मैं उनका नाम नहीं लूंगा। लेकिन आप जानते हैं उन्होंने क्या कहा? उन्होंने कहा, "हमारा देश सपाट है ... यहां की नदियां धीरे-धीरे बहती हैं ... जाड़ों में वे जम जाती हैं ..." यह ठीक है कि अमरीका की तरह हमारे यहां नियाग्रा प्रपात नहीं है। इसलिए, हम एक भी अच्छा जल-विद्युत केन्द्र नहीं बना सकते!

ज़बेलिन: ऐसी बात केवल कोई अज्ञानी ही कह सकता है।

लेनिन: नहीं, मैं आपको यक़ीन दिलाता हूं, वह एक बहुत बड़े

वैज्ञानिक हैं... और बिजली की एक बड़ी कम्पनी के शेयर-होल्डर भी।

ज़बेलिन: या फिर ऐसी बात कोई धूर्त कह सकता है।

द्ज़ेर्जिन्स्की: यह अलग चीज़ है।

लेनिन: धूर्त क्यों? क्या आप उन्हें ग़लत साबित कर सकते हैं?

ज़बेलिन: रूस का कोई नक़्शा है यहां?

लेनिन: अवश्य।

(ग्लागोलेव मेज़ पर एक बड़ा-सा नक़्शा फैला देते हैं)

ज़बेलिन: मैं आपको दर्जनेक ऐसी जगहें बतला सकता हूं जहां फ़ौरन हम जल-विद्युत केन्द्र बना सकते हैं ... यहां, और यहां ... और इस के बारे में आपका क्या ख़याल है?

लेनिन: यह क्या है?

ज़बेलिन: द्नेपर नदी यहां ऊपर से नीचे उतरती है।

लेनिन: लेकिन वहां हम कैसे विद्युत केन्द्र बना सकते हैं?

ज़बेलिन: नीचे की तरफ़ किसी जगह, लेकिन समुद्र के नज़दीक नहीं।

लेनिन: यहां समुद्र तट पर एक विशाल विद्युत प्रासाद बन जाये तो कितना अच्छा हो!

ज़बेलिन: या कोयलेवाले इन इलाक़ों को देखिये... पूर्व में अंगारा नदी है... काकेशिया में एल्ब्रस है... और अगर वोल्गा पर हम एक बांध बना दें...

लेनिन: वोल्गा पर कहां? यह आपने बड़ी दिलचस्प बात बतायी। मेरा घर वोल्गा के ही पास है।

ज़बेलिन: यहां, इस जगह — जीगुली की पहाड़ियों के पास... अगर मैं भूल नहीं रहा हूं तो पुरानी गणना के अनुसार वोल्गा से जितनी बिजली पैदा होगी वह दोन के आधे कोयला-क्षेत्र के बराबर काम कर सकेगी।

लेनिन: इस सम्बन्ध में क्या आप एक स्मृति-पत्र तैयार कर सकते हैं?

ज़बेलिन: मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं आपसे क्या कहूं! ऐसे कार्यों को कभी मैंने किया था, एक ज़माना गुज़र गया।

लेनिन : फिर आप कर क्या रहे हैं?

ज़बेलिन : कुछ नहीं।

द्ज़ेर्जिन्स्की : नहीं, यह सच नहीं है। इन्जीनियर ज़बेलिन इन दिनों दियासलाइयां बेचते हैं।

लेनिन : क्या मतलब तुम्हारा?

द्ज़ेर्जिन्स्की : सड़क पर खड़े होकर ये दियासलाइयां बेचते हैं।

लेनिन : थोक या फुटकर? क्या उनके बॉक्स के बॉक्स बेचते हैं? देखिये, यह बहुत ही निन्दनीय बात है! जनाब, यह डूब मरने की बात है! आजकल, हमारे ज़माने में आपका दियासलाइयां बेचते फिरना... इसके लिए तो गोली मार दी जानी चाहिए। मैं सच कहता हूं!

ज़बेलिन : मैं इसके लिए बहुत दिन से तैयार बैठा हूं।

लेनिन : किस चीज़ के लिए तैयार? शहीद बनने के लिए? आपसे कौन कहता है कि आप दियासलाइयां बेचिये?

ज़बेलिन : मेरे लिए और कुछ करने को है ही नहीं।

लेनिन : और कुछ करने को नहीं? ज़रा सोचिये तो आप कह क्या रहे हैं!

ज़बेलिन : मुझसे किसी ने कभी कुछ करने को नहीं कहा।

लेनिन : और यह क्यों ज़रूरी है कि हमीं आपसे कुछ कहें? हम लोगों के आने से पहले क्या बैठकर आप इस बात का इन्तज़ार करते थे कि कोई आये और आपको हुक्म दे? लेकिन मैं आपसे साफ़-साफ़ कहे देता हूं, अगर विद्युतीकरण का विचार आपको अनुप्राणित नहीं करता तो जब तक जी चाहे आप दियासलाइयां बेचते रह सकते हैं।

ज़बेलिन : मैं नहीं जानता... मैं कुछ कर भी सकता हूं...

(लेनिन ग़ुस्से से उठकर कमरे में दूसरी तरफ़ चले जाते हैं)

द्ज़ेर्जिन्स्की : सिलसिला टूट गया है, काम से बहुत दिनों से आपका सम्बन्ध नहीं रहा—क्या यही चीज़ आपको परेशान कर रही है?

ज़बेलिन : मैं बोल्शेविक कभी न बन सकूंगा।

द्ज़ेर्जिन्स्की : पर हम आपको पार्टी में शामिल होने का न्योता तो नहीं दे रहे हैं।

ज़बेलिन : आप लोग रूस में समाजवाद क़ायम करना चाहते हैं और मेरा समाजवाद में विश्वास नहीं है।

लेनिन : लेकिन मेरा तो है। हममें से कौन सही है? आप सोचते हैं, आप, मैं सोचता हूं, मैं। हमारे बीच कौन फ़ैसला करेगा? हम द्ज़ेर्जिन्स्की से पूछ सकते हैं। लेकिन अधिक सम्भावना इसी बात की है कि वह कहेंगे कि मैं सही हूं, आप नहीं। क्या उससे आप सन्तुष्ट हो जायेंगे?

ज़बेलिन : मेरी बातें आपको बचकानी बकवास की तरह लगती होंगी।

लेनिन : आप मेन्शेविक तो नहीं हैं? या सोशल-डेमोक्रेट? या कोई समाजवादी-क्रान्तिकारी? आपने मार्क्स की 'पूंजी' पढ़ी है? 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' का अध्ययन किया है?

ज़बेलिन : नहीं, इस बारे में मैं अधिक नहीं जानता।

लेनिन : अगर आप अधिक नहीं जानते तो फिर समाजवाद में विश्वास या अविश्वास आप कैसे कर सकते हैं?

ग्लागोलेव : आप साथी क्रभिजानोव्स्की को जानते हैं?

ज़बेलिन : हां।

ग्लागोलेव : विद्युतीकरण की हमारी योजनाओं के सम्बन्ध में उन्होंने जो काम किया है उसके बारे में क्या आपने कुछ नहीं सुना?

ज़बेलिन : हां... इधर-उधर कुछ सुना तो है...

लेनिन : उन्होंने मुझे बतलाया था कि आपको इस सम्बन्ध में बहुत अनुभव है, आप एक अत्यन्त योग्य इन्जीनियर हैं—और आप दियासलाइयां बेचते घूम रहे हैं! कैसी अजब बात है!

ज़बेलिन : उसे मैं बन्द कर दूंगा। वह बात तो ख़त्म हो गयी।

द्ज़ेर्जिन्स्की : अल्लाह का शुक्र है!

लेनिन : फ़ेलिक्स, तुमने क्या कहा?

द्ज़ेर्जिन्स्की : मैंने कहा, अल्लाह का शुक्र है!

ज़बेलिन : तो क्या मैं यह समझूं कि मुझसे काम करने के लिए कहा जा रहा है?

द्ज़ेर्जिन्स्की : जी हां, और उसे आप जितनी जल्दी शुरू कर सकेंगे उतना ही अच्छा होगा।

ज़बेलिन : लेकिन आप लोग सचमुच मुझे अच्छी तरह नहीं जानते।

लेनिन : थोड़ा-बहुत जानते हैं।

ज़बेलिन : कम्युनिस्टों की पार्टी में ऐसा कोई नहीं, जो मेरी सिफ़ारिश कर सके।

लेनिन : मानिये चाहे न मानिये, लेकिन आपकी सिफ़ारिश करनेवाले लोग मौजूद हैं।

ज़बेलिन : मैं सोच नहीं सकता कि ऐसा कौन होगा।

द्ज़ेर्जिन्स्की : एक तो मैं ही हूं।

ज़बेलिन : आप मुझे कैसे जानते हैं?

द्ज़ेर्जिन्स्की : यह मेरा काम है।

ज़बेलिन : हां, मैं भूल रहा था।

द्ज़ेर्जिन्स्की : इसके अलावा, इन्जीनियर ज़बेलिन को कौन नहीं जानता? और चूंकि सरकार से मैं आपकी सिफ़ारिश कर रहा हूं इसलिए मैं चाहूंगा कि एक बात आप भी मेरी सुन लें। इस समय आप कुछ परेशान हैं...

ज़बेलिन : जी हां, बहुत।

द्ज़ेर्जिन्स्की : और उद्वेलित भी हैं। यह स्वाभाविक है। अपने सुचित होने के लिए आपको समय चाहिए। अब आप घर जायें, हमारी बात पर अच्छी तरह विचार करें, और फिर जवाब दें।

लेनिन : कल तक आप हमें जवाब दे सकेंगे?

ज़बेलिन : हां।

लेनिन : ठीक। तो फिर कल मुलाक़ात होगी।

(ज़बेलिन झुककर सलाम करते हैं और दरवाज़े की तरफ़ चलते हैं)

द्ज़ेर्जिन्स्की : आप अपनी पोटली को यहीं भूले जा रहे हैं।

ज़बेलिन : भाड़ में जाये वह पोटली!

लेनिन : नहाने का दिन ... अभी आप नहाने जा सकते हैं, अब भी काफ़ी वक़्त है।

ज़बेलिन : असल बात यह है कि मैं नहाने नहीं जा रहा था। सभी को विश्वास था कि मुझे गिरफ़्तार करके चेका के पास ले जाया जा रहा है ... इसलिए मेरी पत्नी ने मुझे यह गठरी पकड़ा दी थी।

लेनिन : अब मैं समझा। तो यह बात थी! ज़रा रुकिये! **(घंटी बजाकर सेक्रेटरी को बुलाते हैं)** असल बात यह है कि हम लोग बहुत ही

कठिन समय में रह रहे हैं। वहां, आपके घर पर, इस वक़्त सभी आपके लिए अफ़सोस कर रहे होंगे, कोहराम मचा होगा...

(सेक्रेटरी आती है)

इन्जीनियर ज़बेलिन को घर पहुंचाने के लिए एक कार मंगा दो... फ़ौरन।

(ज़बेलिन और सेक्रेटरी चले जाते हैं)

अब भी सैकड़ों और हज़ारों, बल्कि कहना चाहिए कि लाखों लोग बेकार फिर रहे हैं। यह कोई तोड़-फोड़ करनेवाले नहीं हैं! हाथ में कोई काम न होने की वजह से इनका दिमाग़ ख़राब हो गया है। गेओर्गी इवानोविच, तुम्हारा क्या ख़याल है—इन्जीनियर ज़बेलिन हमारे लिए काम करेंगे?

ग्लागोलेव: मेरा ख़याल है कि वह करेंगे, व्लादीमिर इल्यीच।

लेनिन: वह करेंगे, लेकिन वर्तमान परिस्थिति में अपने को फिट करना उनके लिए कठिन होगा, बहुत कठिन।

ग्लागोलेव: व्लादीमिर इल्यीच, फिलहाल मेरी कोई ज़रूरत तो नहीं?

लेनिन: नहीं, गेओर्गी इवानोविच, धन्यवाद।

(ग्लागोलेव जाते हैं। सेक्रेटरी अन्दर आती है)

कहो?

सेक्रेटरी: एक घड़ीसाज़ आया है ... रिबाकोव ने भेजा है, आपने उससे कहा था।

लेनिन: उसे अन्दर ले आओ।

सेक्रेटरी: जी। **(चली जाती है)**

लेनिन: ये ख़ामोश घंटियां मुझे चैन नहीं लेने देतीं... किसी न किसी तरह उन्हें फिर से चालू करना होगा!

(घड़ीसाज़ अन्दर आता है)

नमस्ते, साथी! आप घड़ीसाज़ हैं न?

घड़ीसाज़: इकला दस्तकार हूं।

लेनिन: माफ़ करना, मैंने तुम्हारी बात समझी नहीं। इकला क्यों?

घड़ीसाज़: आजकल मेरी तरह के नाचीज़ दस्तकारों को "बिना मोटर का इकला दस्तकार" ही कहा जाता है।

लेनिन: यह क्या है—"इकला और बिना मोटर का"?

द्ज़ेर्जिन्स्की: मालूम होता है कि तुम्हारे साथ ठीक से व्यवहार नहीं किया गया? बात क्या है, हमें बताओ।

घड़ीसाज़: साथी लेनिन की मौजूदगी का फ़ायदा उनसे निजी शिकायतें करने के लिए मैं नहीं उठाना चाहता। मैं अपना दुखड़ा कभी नहीं रोता। मुझे यहां किसी काम के लिए बुलाया गया है न?

द्ज़ेर्जिन्स्की (घड़ीसाज़ की तरफ़ मैत्री भाव से सिर हिलाते हुए, प्रसन्न स्वर में): नहीं, नहीं, बताओ, असल बात क्या है? सब साफ़-साफ़ बतला दो।

लेनिन: और इसी बीच मैं गरम चाय के लिए आर्डर दे देता हूं। **(दरवाज़े की तरफ़ जाकर)** चाय भेजने के लिए कहला दीजिये। **(घड़ीसाज़ से)** बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ रही है? अकाल, बर्बादी, अराजकता फैली हुई है? थके हो? भूख से पीड़ित हो?

घड़ीसाज़: जो दूसरों पर बीत रही है वही मुझ पर भी।

लेनिन (द्ज़ेर्जिन्स्की की तरफ़ इशारा करते हुए): हमारे यह साथी कहते हैं कि तुम्हारे साथ बेइन्साफ़ी की गयी है। क्या इनका ख़याल ग़लत है?

घड़ीसाज़: मैं ऐसे सवालों की उम्मीद नहीं कर रहा था। मैं तो ख़ुश था कि मुझे फिर काम के लिए बुलाया गया। पुराने ज़माने में एक बार मैंने काउण्ट लेव तोलस्तोय की घड़ी की मरम्मत की थी।

लेनिन: ओ-हो... यह तो वाक़ई महत्त्वपूर्ण बात है!

द्ज़ेर्जिन्स्की: तोलस्तोय को तो ज़रूर अच्छे कारीगर की पहचान रही होगी।

लेनिन: वह किस तरह के थे?

घड़ीसाज़: वह ऊंचे बूट पहनकर घूमा करते थे... बहुत दिलचस्प आदमी थे। उनकी तस्वीरों से उनके सही रूप-रंग का पता नहीं चलता।

लेनिन: वह क्या बातें करते थे?

घड़ीसाज़: वह तो मैं अब भूल गया। उन्हें सवाल पूछना बहुत पसन्द था। और वह अच्छी घड़ी को पहचान सकते थे।

द्ज़ेर्जिन्स्की : और वह पैसा भी अच्छा ही देते रहे होंगे?

घड़ीसाज़ : नहीं, यह देखकर कि वह काउण्ट तोलस्तोय थे मैंने उन्हें काफ़ी कमीशन दे दिया था।

लेनिन : इस बात का उन्हें पता था?

घड़ीसाज़ : शायद नहीं।

लेनिन : तुम्हें अब क्या परेशानी है? देखो, सवाल पूछने का हमें भी मर्ज़ है।

घड़ीसाज़ : मेरी समझ में नहीं आता आपको कैसे बताऊं। निस्सन्देह, मैं जानता हूं कि, जैसा कि हैमलेट ने कहा था, "वक़्त बिगड़ा हुआ है"।

लेनिन : "जियें या न जियें?"

घड़ीसाज़ : जी हां! आपने एकदम ठीक-ठीक बात कह दी! मुझे काम नहीं दिया जा रहा।

द्ज़ेर्जिन्स्की : सहकारी कारख़ाने तो चल रहे हैं... लेकिन शायद उनका इन्तज़ाम ठीक नहीं है।

घड़ीसाज़ : मुझसे वहां जाकर काम करने के लिए कहा गया था। मैं वहां गया। मैंने एक ऐसे काम में हाथ लगाया जिसे और कोई नहीं कर सकता था। वह इंगलिस्तान की बनी घड़ी थी—असली नौर्टन। बहुत ही बढ़िया चीज़ थी—कम से कम तीन सौ वर्ष पुरानी रही होगी। रेलों के आविष्कार से बहुत पहले उसे बनाया गया था। मैं एक महीने तक उससे जूझता रहा। आख़िर में वह चलने लगी। इस पर उन लोगों ने वहां मेरे ख़िलाफ़ एक आम सभा की और कहा कि मुझे जितना वेतन मिलता है, उतना काम मैं नहीं करता। उस वक़्त मुझसे भी एक ग़लती हो गयी: अपने जवाब में मैंने उन्हें ईसप की नीति-कथा सुना दी।

लेनिन : वह क्या?

घड़ीसाज़ : मैंने उन्हें उस लोमड़ी की कहानी सुनायी जिसने शेरनी के पास जाकर इस बात पर दु:ख प्रकट किया था कि उसके एक ही बच्चा हुआ था। लोमड़ी के जवाब में शेरनी ने कहा था: "हां, लेकिन वह बच्चा एक शेर है"। और इस कहानी से यह सबक़ मिलता है कि संख्या से गुण बेहतर होता है।

लेनिन : इसके उत्तर में उन्होंने क्या कहा?

घड़ीसाज़ : कारख़ाने के निदेशक ने कहा कि ईसप क्रान्तिविरोधी

हैं और मैं दुश्मनों तथा ईसप का एजेन्ट हूं। फिर उन्होंने मुझे निकाल बाहर किया।

(लेनिन मेज़ को पकड़कर ज़ोरों से हंसने लगते हैं। द्ज़ेर्जिन्स्की भी हंस रहे हैं और घड़ीसाज़ भी हंसने लगा है)

लेनिन : इस पर भी तुम कहते हो कि तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार नहीं किया गया? निस्सन्देह, उन्होंने तुम्हारे साथ ग़लत सलूक किया है। चलो, हम लोग उन्हें माफ़ कर दें कि ईसप की नीति-कथाओं को वे नहीं जानते। इसके अलावा, इस समय दुर्लभ घड़ियों के अलावा और भी अनेक सवाल हैं जिनके बारे में उन्हें चिन्ता है। अन्त में, जैसा कि तोलस्तोय ने कहा है, सब कुछ ठीक हो जायेगा... इस समय तुम्हारे लिए एक काम है।

घड़ीसाज़ : मैं तैयार हूं। **(अपना छोटा बॉक्स खोलता है और जल्दी-जल्दी अपनी आंख में आतशी शीशे लगा लेता है)**

लेनिन : मेरा ख़याल है कि इस काम में तुम्हारे औज़ार बहुत उपयोगी नहीं होंगे।

घड़ीसाज़ : नहीं? क्यों?

लेनिन : तुम्हें दूसरी ही साइज़ के पेचकशों की ज़रूरत होगी...

द्ज़ेर्जिन्स्की : वहां तो मनों, सैकड़ों मनों के बोझ को उठाने-हटाने का सवाल है।

घड़ीसाज़ : लेकिन मैं तो केवल एक घड़ीसाज़ हूं।

लेनिन : हां, क्रेमलिन की घंटियों को तुम्हें ठीक करना है।

घड़ीसाज़ : क्रेमलिन की घंटियों को? स्पासकाया टावर की घंटियों को?!

लेनिन : हां, स्पासकाया टावर पर लगी क्रेमलिन की घड़ी को! क्या तुम उसे ठीक कर सकोगे?

घड़ीसाज़ : आदमी ही बनाते हैं, आदमी ही तोड़ते हैं, और आदमियों को ही उसे फिर चालू करना पड़ता है।

लेनिन : हां, लेकिन आदमियों ने जब उसे बनाया था, तब तक 'इंटरनेशनल' गीत की रचना नहीं हुई थी। अब हमें घंटियों को उस गीत को बजाना भी सिखाना होगा। क्या तुम उन्हें सिखा सकोगे?

घड़ीसाज़ : कोशिश करूंगा।

लेनिन : बहुत ठीक। फिर कल से काम शुरू कर दो।

घड़ीसाज़ : क्या मैं उसे अभी देख सकता हूं? मुझे इन्तज़ार करते बैठा रहना अच्छा नहीं लगता।

द्ज़ेर्जिन्स्की : और अगर तुम्हारे काम में कोई दख़ल दे या तुम्हें कोई परेशान करे, तो इस नम्बर पर टेलीफ़ोन कर देना।

घड़ीसाज़ : मैं किसे नाम लेकर बुलाऊंगा?

द्ज़ेर्जिन्स्की : द्ज़ेर्जिन्स्की का।

घड़ीसाज़ : और वह ख़ुद मेरी मदद करेंगे?

लेनिन : हां, हम ख़ुद उनसे आपकी मदद करने के लिए कहेंगे। जहां तक मज़दूरी वग़ैरा की बात है उसके बारे में हमारे कमान्डेन्ट से बात कर लेना।

घड़ीसाज़ : कैसी मज़दूरी! क्रेमलिन की घंटियों को 'इंटरनेशनल' गीत बजाना सिखानेवाला मैं पहला घड़ीसाज़ हूंगा!

लेनिन : लेकिन एक राशन कार्ड ले लेने में तो कोई नुक़सान नहीं होगा?

घड़ीसाज़ : यह सच है, राशन कार्ड ले लेने में कोई नुक़सान नहीं होगा। यह काम देने के लिए, मुझमें इतना विश्वास दिखलाने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। कृपया मुझे माफ़ कीजिये, इस वक़्त मैं बहुत उत्तेजित हो गया हूं। अब मैं टावर देखने जाऊंगा। **(बाहर चला जाता है)**

लेनिन : यह काम भी समझो कि हो ही गया। मुझे पूरा भरोसा है कि घंटियां बजने लगेंगी। फिर भी, फ़ेलिक्स एद्मुन्दोविच, तुम्हारा क्या ख़याल है—क्या ज़बेलिन हम लोगों के साथ काम करने को राज़ी हो जायेंगे?

द्ज़ेर्जिन्स्की : मेरा ख़याल है कि वे राज़ी हो जायेंगे।

लेनिन : हमें तेज़ी से काम करने की ज़रूरत है, जिससे कि इन तमाम छिपे हुए लोगों को ढूंढ़-निकालकर फिर सामने ला सकें। ऐसे सैकड़ों लोग अपने घरों में जा बैठे हैं। इस काम को हमें और भी अधिक तेज़ी से, और भी अधिक सावधानी से करना होगा।

(द्ज़ेर्जिन्स्की बाहर चले जाते हैं। लेनिन अपनी मेज़ के सामने बैठकर फिर काम में लग जाते हैं)

दृश्य २

(उसी दिन शाम को ज़बेलिन के अध्ययन-कक्ष में। ज़बेलिन, माशा और रिबाकोव को छोड़कर शेष सभी पुराने पात्र मौजूद हैं)

संशयवादी : मैं आपसे कहता हूं, हमें वारंट ज़रूर देख लेना चाहिए था।

ज़बेलिना : देखा या न देखा, उससे फ़र्क़ क्या पड़ता!

भयभीत महिला : यह भयानक रात मैं कभी नहीं भूलूंगी, अपनी मृत्यु-शैय्या पर भी नहीं! यह सब अगर मैंने स्वप्न में भी देखा होता तो मैं चीख़कर उठ जाती। लेकिन यहां तो उन लोगों को मैंने आंखों से, ख़ुद अपनी इन आंखों से देखा है! वे आये और एक शब्द भी कहे बिना उनको पकड़ ले गये!

संशयवादी : अब पूरे महीने तक यह अनिद्रा की शिकार रहेगी। अमरीकी पेटेन्ट गोलियां भी काम नहीं देंगी। अच्छा चलो, अब घर चलें। तुम कांप रही हो।

ज़बेलिना : ज़रा देर और रुकिये। माशा लौटकर आती ही होगी।

(बावर्चिन आती है)

बावर्चिन : लीदिया मिख़ाइलोव्ना, मालूम पड़ता है कि उन्होंने पूरे घर को घेर लिया है। मैं अभी रसोई की खिड़की से बाहर देख रही थी—सामने सिपाही खड़े दिखलायी दिये। और यही हाल इधर है—इधर भी सिपाही खड़े हुए हैं।

आशावादी : सिपाही ...

भयभीत महिला : रोशनी गुल कर दो।

आशावादी (खिड़की से बाहर की तरफ़ झांकते हुए) : ये सब मामूली सिपाही हैं।

संशयवादी : तो क्या आपका ख़याल है कि आपके लिए वे कोई ग़ैरमामूली सिपाही भेजेंगे?

आशावादी : लग रहा है कि वे किसी चीज़ का इन्तज़ार कर रहे हैं।

भयभीत महिला : भगवान के लिए, रोशनी गुल कर दो!

संशयवादी : लेकिन अंधेरे में तो तुम्हें और भी डर लगेगा!

बुनाई करनेवाली महिला : मैं डरती नहीं। लेकिन मेरा भी ख़याल है कि अच्छा यही होगा कि हम रोशनी बुझा दें और तेल का कोई लैम्प जला लें। लीदिया मिख़ाइलोव्ना, तुम्हारे पास लोट्टो है?

ज़बेलिना : लोट्टो? किसलिए?

बुनाई करनेवाली महिला : अगर वे हम लोगों की जांच-पड़ताल करने आयें तो हम कह देंगे कि हम लोग लोट्टो खेल रहे हैं!

आशावादी : बहुत ख़ूब, लोट्टो ही सही। बस, हिम्मत न हारना। लोट्टो की बाज़ी ले आओ।

भयभीत महिला : लेकिन रोशनी तो बुझा दो!

ज़बेलिना (बावर्चिन से) : प्रास्कोव्या, तेलवाला लैम्प निकाल लाओ। **(रोशनी बुझा देती है)** मैं लोट्टो की बाज़ी ले आती हूं। **(जाती है)**

(अन्धकार। ख़ामोशी)

बुनाई करनेवाली महिला : मेरा ख़याल है कि हम पैसों से खेलें।

भयभीत महिला : अरे नहीं! ऐसा हम नहीं कर सकते। वह तो जुआ खेलना होगा!

बुनाई करनेवाली महिला : अच्छा, तो फिर मूंगफलियों से ही सही!

संशयवादी : मूंगफलियां हमें कहां मिलेंगी?

बुनाई करनेवाली महिला : ज़बेलिना के पास ज़रूर थोड़ी-बहुत होंगी।

(ज़बेलिना तेल का लैम्प और लोट्टो लेकर लौटती है)

पत्ते बांट दो। कौन बोली बोलेगा? लीदिया मिख़ाइलोव्ना, तुम्हारे पास मूंगफलियां हैं?

ज़बेलिना : मूंगफलियां अब कौन खाता है!

भयभीत महिला : मुझे बैग दे दो। मैं बोली बोलूंगी।

ज़बेलिना : माशा अब जल्दी ही लौट आयेगी। वह कुछ न कुछ पता लगाकर रहेगी।

भयभीत महिला : बाईस ... छह ... इकानवे।

(बावर्चिन अन्दर आती है)

बावर्चिन : अब वे सड़क के उस पार तक आ गये। ग़ुस्से से आगबबूला हुए जा रहे हैं ... हमारी खिड़कियों की तरफ़ घूर रहे हैं।

ज़बेलिना : प्रास्कोव्या, तुम भोजन-कक्ष की खिड़की से उन्हें देखती रहो ... अगर वे यहां आयें तो कह देना कि घर में कुछ मेहमान आये हुए हैं।

सब एकसाथ : नहीं, नहीं!

ज़बेलिना : अच्छा, फिर बेहतर यही होगा कि कुछ न कहो।

भयभीत महिला : चवालीस ... छब्बीस ...

आशावादी : मेरा सेट पूरा हो गया ...

भयभीत महिला : तेरह ... इकसठ ... इकासी ...

बावर्चिन : मालूम होता है वे चले गये **(खिड़की के पास जाती है)** नहीं ... वे यहां इसी नुक्कड़ पर आ गये हैं।

संशयवादी : बन्दूक़ों के साथ?

बावर्चिन : हां, बन्दूक़ों के साथ।

(संशयवादी लैम्प को फूंककर बुझा देता है)

भयभीत महिला : बारह ... तेरह ... पन्द्रह ... किसी के क़दमों की आहट सुनाई पड़ रही है। ओह, मुझसे अब और नहीं सहा जाता! कोई आ रहा है ... बत्ती जलाओ!

(कमरा जगमगा उठता है। दरवाज़े पर ज़बेलिन खड़े हैं)

ज़बेलिना : अन्तोन?!

सब लोग : अन्तोन इवानोविच?!

ज़बेलिना : यह तुम्हीं हो?!

ज़बेलिन : हां।

ज़बेलिना : अन्तोन ... वहां क्यों खड़े हुए हो? अन्दर आओ, बैठो! ओह, मेरे प्यारे! माशा! वह कहां है? ओह, मैं फिर भूल गयी! बैठते क्यों नहीं, अन्तोन? यहां आओ! मैं तुम्हारा आलिंगन तो कर लूं! मेरे प्यारे अन्तोन इवानोविच ... **(उनसे लिपटकर रोने लगती है)**

ज़बेलिन: रोओ मत।

ज़बेलिना: माफ़ करो। मैं समझी थी कि तुम गये, अब तुम्हें कभी नहीं देख पाऊंगी... मैं समझ नहीं पाती थी कि क्या करूं। कितनी भयानक बात थी! वह... पर हुआ क्या? क्या तुम्हें ग़लती से पकड़ लिया गया था?

ज़बेलिन (अर्थपूर्ण ढंग से): यही तो सवाल है जिसका कल मुझे जवाब देना है।

ज़बेलिना (और अधिक ध्यान से उनकी तरफ़ देखती हुई): तुम कैसे अजीब से लग रहे हो। तुम अजीब से उत्तेजित दीख रहे हो, अन्तोन! तुम थे कहां?

ज़बेलिन: मुझे याद नहीं।

ज़बेलिना: फिर तुम अपनी पुरानी आदत पर आ गये: "मुझे याद नहीं!" तुम्हें कुछ भी याद नहीं रहता, कुछ भी दिखलाई नहीं देता।

ज़बेलिन: मैं देख रहा था कि ज़मीन मेरे पैरों के नीचे से खिसकी जा रही है। **(संशयवादी से)** साल भर बूंद-बूंद करके मेरा ख़ून कौन निचोड़ रहा था? क्यों? उन्होंने मुझे गिरफ़्तार किया? नहीं, वे ज़बेलिन को जानते हैं! पहले वे सोचते थे कि मुझे गोली मार दें, लेकिन ऐसा उन्होंने नहीं किया, क्योंकि अन्तोन ज़बेलिन केवल एक है। तुम इस तरह घूर क्यों रहे हो? क्या मुझे पहचाना नहीं? इसका मतलब क्या होता है—क्या मैं ज़बेलिन नहीं लगता?

ज़बेलिना: अन्तोन, तुम तो पहेलियां बुझा रहे हो।

ज़बेलिन: घबराओ मत। वह मेरी बात को अच्छी तरह समझते हैं।

ज़बेलिना: तुम थे कहां?

संशयवादी: आपको वे कहां ले गये थे?

आशावादी: आप ठीक तीन घंटे वहां रहे।

ज़बेलिन: तीन घंटे नहीं, तीन साल।

ज़बेलिना: फिर पहेलियां!

ज़बेलिन: मुझे फ़ील्ड-मार्शल बना दिया गया है और हुक्म दिया गया है कि हिन्दुस्तान को फ़तह करो!

(माशा दौड़ती हुई अन्दर आती है)

माशा: पापा! **(दौड़ती हुई ज़बेलिन के पास जाकर उनसे लिपट जाती है)**

ज़बेलिन : देखो, तुम भी रोओ-धोओ मत... ओह, तुम्हारा दिल कितनी ज़ोर से धड़क रहा है... अपने चिड़चिड़े बाप के लिए अफ़सोस कर रही हो? तुम उसे प्यार करती हो?

माशा : हां, मैं उन्हें बहुत प्यार करती हूं... मुझसे जितनी तेज़ दौड़ा गया दौड़ती रही। मुझे किसी ने कुछ नहीं बताया... जब मैं वापिस लौटी तो बाहर खड़ी थी, अन्दर आने में डर लग रहा था... मैं सोच रही थी... मेरे प्यारे पापा!

संशयवादी : लेकिन आप थे कहां?

ज़बेलिन : क्रैमलिन में।

संशयवादी : बस?

ज़बेलिन : बस।

ज़बेलिना : हमें पूरी बात बताओ।

ज़बेलिन : वहां कोई बात-वात नहीं थी।

बुनाई करनेवाली महिला : अन्तोन इवानोविच को मैं अच्छी तरह समझती हूं। वह कितने रोमैन्टिक ढंग से वापिस लौट आये हैं... इसे सिर्फ़ मैं ही समझती हूं। अन्तोन इवानोविच ... तुम कितने रहस्यपूर्ण ढंग से बातें कर रहे हो... तुम रोमैन्टिक मूड में हो... अन्तोन, मैं तुम्हारी तारीफ़ करती हूं। अच्छा, अब सवाल पूछकर इन्हें परेशान न करो।

ज़बेलिन : लीदिया मिखाइलोव्ना, सुबह से मैंने कुछ नहीं खाया। यह भी कैसी बात है—घर मेहमानों से भरा हुआ है, और मेज़ खाली है। हमारे पास काफ़ी सामान है: हम अपनी मेज़ को मास्को के पारम्परिक ढंग से सजा सकते हैं। हमारे विद्यार्थी जीवन की उस शराब को निकालो, वह जो हमने पचास कोपेक फ़ी बोतल के हिसाब से ख़रीदी थी।

ज़बेलिना : अभी लायी। कृपया आप सब लोग खाने के कमरे में आ जाइये।

संशयवादी : लेकिन वह मेरे ऊपर इस तरह क्यों टूट पड़े—जैसे कि आज रात जो कुछ हुआ है उस सबके लिए मैं ही ज़िम्मेदार हूं।

आशावादी : अगर सारा मामला शराब के गिलास के साथ ख़त्म हो जाता है, तो फिर तुम्हारी शिकायत के लिए जगह कहां रह जाती है, मेरे दोस्त?

(ज़बेलिन और माशा को छोड़कर सब लोग बाहर चले जाते हैं)

ज़बेलिन : माशा, तुम मेरे पास बैठो... तुम्हें मैं जाने नहीं दूंगा। **(एक किताब उठा लेते हैं)** 'एलेक्ट्रिक इन्जीनियरिंग'—लेखक अन्तोन ज़बेलिन। माशा, तुम इतनी नन्ही-सी थीं जब मैंने इसे लिखा था। तुम मेरे पास आ जाती थीं और कहती थीं: "पापा, तुम लिख रहे हो? मैं तुम्हारे पास यहीं बैठूंगी..." और तुम यहां आकर बैठ जाती थीं, फिर मेरी पीठ पर चढ़ जाती थीं, और हम दोनों कमरे में टहलने लगते थे। अब तुम बड़ी हो गयी हो—एक समझदार नवयुवती हो, और तुम्हारा पिता थोड़ा-थोड़ा तुमसे डरने लगा है। तुम ये कौन-से कपड़े पहने हुए हो? अपने स्नेही मित्र के लिए सज-धज कर तैयार हुई हो?

माशा : रोज़ काम पर जाते समय मैं इन्हीं कपड़ों को पहनती हूं। किसी प्रशंसक को प्रसन्न करने के लिए आज तक कभी मैंने कपड़े नहीं पहने। पापा, तुम बेकार की बातें न किया करो!

ज़बेलिन : मैं मूर्ख बुड्ढा हूं! अच्छा, यह तो बताओ—मिस्टर रोमियो कहां है?

माशा : कौन-सा रोमियो?

ज़बेलिन : आधुनिक, सोवियत-मार्का रोमियो! वह नाविक कहां है?

माशा : उसकी तुम्हें क्या ज़रूरत पड़ गयी?

ज़बेलिन : अब मैं उससे बात करना चाहूंगा।

माशा : पापा, तुम्हें मालूम नहीं कि क्या हो गया है... मैंने इस बीच क्या कर डाला है, नहीं तो तुम ऐसी बातें न करते! जब वे लोग तुम्हें पकड़कर ले गये तो मुझे लगा कि यह सब उसी की कारस्तानी थी। मैंने उसे बहुत फटकारा। अब हम लोगों ने सम्बन्ध तोड़ लिये हैं...

ज़बेलिन : मूर्ख बच्ची! तुझे कैप्टन अलेइस्की के साथ शादी कर लेनी चाहिए थी... कर ली होती तो इस वक़्त तुम पेरिस में रहती होतीं।

माशा : मैंने सुना है कि कैप्टन अलेइस्की पेरिस में बलालाइका बाजा बजाकर रोज़ी कमाता है।

ज़बेलिन : मास्को में दियासलाइयां बेचने से पेरिस में बलालाइका बजाना कहीं बेहतर है।

माशा : तो फिर तुम क्यों नहीं पेरिस चले गये? तुम्हें भी तो जाने का मौक़ा था।

ज़बेलिन : क्योंकि मैं एक रूसी हूं।

माशा : और मैं क्या हूं?

ज़बेलिन: तुम औरतें गिरगिटों की तरह होती हो। हेलेन ट्रोजनों के साथ ख़ूब मजे में रहती थी। सलाम्बो एक बर्बर आदमी पर आशिक़ हो गयी थी। तुम एक नाविक पर रीझी हुई हो। लेकिन मैं शलजम के बिना नहीं रह सकता! और पेरिस में वे लोग खाने के लिए मेढक देते हैं... **(यकायक)** क्या मेरी ज़िन्दगी सचमुच ख़त्म हो गयी? माशा, मेरी बेटी, मेरी तरफ़ देखो—क्या मेरी ज़िन्दगी वाक़ई ख़त्म हो गयी?

माशा: पिताजी, बात क्या है? मुझे ठीक-ठीक बताओ। तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि तुम्हारी ज़िन्दगी ख़त्म हो गयी?

ज़बेलिन: अभी तक मैं ऊट-पटांग बातें करता आया हूं। तुम समझती हो, है न? असल बात यह है कि मैं क्रेमलिन हो आया हूं ... तुम कुछ कहती क्यों नहीं? जानती हो कि वहां क्या हुआ? मैं हमेशा अपने को एक वैज्ञानिक, एक निर्माता समझता आया हूं। जीवन भर मैंने अपने काम के सिलसिले में सख़्त मेहनत की है। उसी को लेकर उत्तेजित रहा हूं। मैंने सदा नयी-नयी योजनाएं बनायी हैं। और अब वह सब बेकार हो गया!

माशा: पापा, मुझे ठीक-ठीक बताओ हुआ क्या है?

ज़बेलिन: उन लोगों ने तुम्हारे ज़बेलिन को चक्कर में डाल दिया है, उसे गूंगा बना दिया है... जब मैं घर वापिस लौट रहा था, तभी उनके विचारों के पूरे अर्थ को मैं समझ सका, उनकी विराटता को अच्छी तरह हृदयंगम कर सका।

माशा: मुझे शान्तिपूर्वक बतलाओ। तुम कह क्या रहे हो यह मैं समझ नहीं पा रही हूं। बात क्या है?

ज़बेलिन: माशा, जल्दबाज़ी न करो। उसके बारे में अच्छी तरह से सोचने के लिए कल तक का वक़्त है। मुझे कल जवाब देना होगा...

माशा (ख़ुशी से भरकर): क्या वे तुम्हें काम दे रहे हैं?

ज़बेलिन (आहिस्ता से फुसफुसाते हुए): हां, अब मैं दियासलाइयां नहीं बेचूंगा। मैं उनसे वादा कर आया हूं।

माशा: ख़ुदा का शुक्र है!

ज़बेलिन: तुम भी! माशा, मैं तुमसे पूछना चाहता हूं, सिर्फ़ तुमसे... एकान्त में: तुम क्या सोचती हो—इस समय और इस युग में क्या मैं किसी काम आ सकता हूं? या मैं ख़त्म हो गया?

माशा: पापा, ऐसी बात तुम ज़बान पर भी कैसे ला सकते हो? कौन

कहता है कि तुम ख़त्म हो गये? मैं तुम्हें यक़ीन दिलाती हूं... तुम बेकार हो गये होते तो क्या वे लोग तुम्हें क्रेमलिन बुलाते?

ज़बेलिन: नहीं, तुम तो दूसरी ही दिशा में बह गयीं। वे लोग ज़बेलिन को जानते हैं, तुम अपने बाप को जानती हो।

माशा: तुम्हें याद है उस बार हम लोगों में कैसी लड़ाई हो गयी थी? लगता था कि हमेशा के लिए सम्बन्ध ख़त्म हो गया। तुम्हें याद है वह किसलिए हुआ था?

ज़बेलिन: तुम फिर ग़लत समझीं! तुम अपने नाविक को मेरे साथ खड़ा करो और फिर सोचो: उसके साथ क्या मेरी निभ सकेगी? मैं तुमसे संजीदगी से पूछ रहा हूं, सच्चाई से पूछ रहा हूं। यह बहुत गम्भीर बात है। इसके बारे में मैं मज़ाक़ नहीं कर सकता। क्या वह नाविक और मैं एक ही जुए में जोते जाकर साथ-साथ काम कर सकते हैं? बताओ, क्या ऐसी टीम की कल्पना तुम कर सकती हो?

माशा (तेज़ी से): हां, कर सकती हूं। इस बात को समझा सकने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। लेकिन आप मेरी बात का विश्वास करें। इस बात का आपको विश्वास दिलाने के लिए मैं कुछ भी क़ुर्बान कर सकती हूं।

ज़बेलिन: माशा... रूस—समोवारवाला रूस, पादरियों के चंगुल में फंसा रूस—इसी रूस की वे कायापलट करना चाहते हैं। वे इसका नव-निर्माण करना चाहते हैं। तुम्हारा क्या कहना है इस बारे में?!

माशा: फिर तुम पसोपेश में क्या पड़े हुए हो? पीछे की तरफ़ क्यों देखते हो? तुम्हें अफ़सोस किस चीज़ का है? जाओ... अपनी दियासलाइयां बेचो। **(नक़ल बनाती हुई)** "गन्धक की बनी दियासलाइयां, लड़ाई से पहले की बढ़िया दियासलाइयां..."

ज़बेलिन: ख़बरदार, जो तुमने मेरा मज़ाक बनाने की कोशिश की!

माशा: फिर मुझे बतलाओ, तुम क्या सोच रहे हो?

ज़बेलिन: श... श... मैं तुम्हें ज़रूर बतलाऊंगा।

माशा: मैं तुम्हारी बात का इन्तज़ार कर रही हूं, पापा।

ज़बेलिन: क्रेमलिन में अभी-अभी मैंने एक महान पुरुष के दर्शन किये थे।

(पर्दा गिरता है)

चौथा अंक

दृश्य १

(एक बड़ा-सा पुराना हॉल। दरवाज़े के पास एक कोने में एक झाड़ू तथा कूड़े का बड़ा-सा ढेर पड़ा हुआ है। दीवाल के पास एक लम्बी मेज़, काले रंग की एक आराम-कुर्सी और एक मामूली-सा स्टूल रखा है। मेज़ पर टेलीफ़ोन है।

ज़बेलिन सीटी बजाते हुए कमरे में टहल रहे हैं। स्टूल को उठाकर वे खिड़की के पास ले जाते हैं और उस पर बैठ जाते हैं। लेकिन एक ही सेकेन्ड बाद वे कूदकर खड़े हो जाते हैं, और झाड़ू उठाकर कोने में लगे मकड़ी के जाले की सफ़ाई करने लगते हैं। झाड़ू को एक किनारे फेंक देते हैं और अपनी पहलक़दमी शुरू कर देते हैं। माशा अन्दर आती है, चारों तरफ़ आश्चर्यपूर्ण दृष्टि से देखती है)

ज़बेलिन : दरबान! दरबान! माननीय नागरिक दरबान, तुम कहां मर गये हो! वह ग़ायब हो गया—कुछ बता भी नहीं गया कि कहां गया। मैं किसी को फ़ोन करूं... लेकिन, किसको? ख़ुद द्ज़ेर्जिन्स्की को, चेका से? बहुत ठीक, लेकिन मैं उनसे कहूंगा क्या? क्या यह कि दरबान मेरी बात नहीं सुनता? कैसी पागलपन की बात है! तो फिर क्या यह कहूं कि मैं स्लाइड रूल की मदद से सरल परिकलन करने के लिए मरा जा रहा हूं? यह भी उतनी ही सनक की बात है... नहीं, इस तरह की स्थिति की कभी भी मैं कल्पना नहीं कर सकता था! **(माशा को देखकर)** आह! तो तुम आ गयीं? देखो और तारीफ़ करो! एक अखिल रूसी संस्थान का प्रधान बनाकर मुझे एक महल दे दिया गया है, लेकिन दरबान भाग गया! वह कूड़े की सफ़ाई करना नहीं चाहता, क्योंकि यहां उसे कोई कुछ देता नहीं। बाज़ार में कपड़े-लत्ते बेचकर वह ज़्यादा कमा लेता है।

माशा : यह आराम-कुर्सी भी कैसी विचित्र है!

ज़बेलिन : मैं अभी-अभी उसे ऊपर की कोठरी से निकाल लाया हूं। इसकी बनावट शुद्ध गोथिक शैली की है। पुराना कचरा है। सायबान में एक बग्घी पड़ी है जिस पर शाही वंश-चिन्ह बना है। इस मकान में मैं ख़ुद भी एक प्रदर्शनीय वस्तु जैसा ही महसूस करने लगा हूं। मोटे-मोटे चूहे, मुनाफ़ाख़ोरों की तरह, चारों तरफ़ बराबर चौकड़ियां भरते रहते हैं। वे मेरी खिल्ली उड़ाते हैं।

माशा : अब बेकार की चीज़ें सोचकर अपना दिमाग़ न ख़राब करो।

ज़बेलिन : मैं कोई देवता नहीं हूं, न ऐसा मूर्ख ही हूं, जो यह मान ले कि ज़िन्दगी मेरे ऊपर एक बड़ी मेहरबानी है! जाओ, तुम घर जाओ, तुम्हारे पास कहने को मौलिक कोई चीज़ नहीं है।

माशा : अच्छा, मैं चली जाऊंगी, लेकिन तुम क्या करने जा रहे हो?

ज़बेलिन : ऐसी परिस्थितियों में आदमी कर ही क्या सकता है? क्या मैं किंग लियर के उस दृश्य का अभिनय करूं, जिसमें वह पागल हो जाता है? वह कमाल का दृश्य है।

माशा : मैं क्या कहूं! तुम्हें इस दशा में देखकर मैं तुम्हारी तारीफ़ नहीं कर सकती।

ज़बेलिन : कोई परवाह नहीं, पर मैं तो तुम्हारी पूजा करता हूं!

माशा : तुम कितनी अजीब बातें कर रहे हो!

ज़बेलिन : और तुम कितने प्रेम से बोल रही हो!

माशा : मैं तुम्हें जानती हूं! इस मनोदशा में तुम कुछ भी कर सकते हो—काम छोड़ सकते हो, चिढ़कर कोई ख़राब-सी चिट्ठी लिखकर चले जा सकते हो। कठिनाइयां आती हैं, तो उनको दूर किया जाना चाहिए, उनका सामना किया जाना चाहिए।

ज़बेलिन : कैसी सारगर्भित बात है! इससे पहले इसे मैंने कभी नहीं सुना था।

माशा (यकायक अपने पिता के स्वर की नक़ल करती हुई) : तुम्हें देखकर मुझे शर्म आती है।

ज़बेलिन : क्या कहा?

माशा : हां, मुझे शर्म आती है और नफ़रत होती है! तुमने उनसे वादा किया था...

ज़बेलिन : ठीक है... मैंने किया था वादा...

माशा : और... नहीं, नहीं, मिनट भर रुको... मैं भी जानती हूं कि

क्या कहना चाहिए! तुम प्रसन्न थे कि तुम काम करने के लिए तैयार हो गये थे। हम देख रहे थे कि तुम में फिर जीवन लौट आया है, तुम फिर पहले जैसे हो गये हो।

ज़बेलिन : तुम कल की बात कर रही हो, और मैं तुम्हें आज की बात बता रहा हूं...

(माशा कुछ कहनेवाली है)

बीच में बात मत काटो! तुम्हारी खोपड़ी में क्या यह नहीं घुसता कि क्रोध से मैं इसलिए पागल हो रहा हूं कि मैं फ़ौरन, जैसा कि लेनिन ने कहा था, इसी वक़्त, काम नहीं शुरू कर पा रहा हूं? हां, मैंने उनसे वादा किया था और उसे पूरा करने के लिए मैं तैयार हूं.. काम में जुटने के लिए मैं बेचैन हो रहा हूं। लेकिन उसे मैं दूसरे लोगों के ज़रिए, अन्य प्राणियों के सम्पर्क में रहकर ही तो कर सकता हूं, और यहां — यहां कौन है? हलो! सुना तुमने? सिर्फ़ एक सूनी प्रतिध्वनि गूंज रही है!

(दरवाज़े से रिबाकोव अन्दर आता है। उसके हाथ में एक टाइपराइटर है)

अच्छा, तो आप हैं! निस्सन्देह, वही तो हैं! मामला क्या है, क्या तुम लोगों ने पहले से यहां मिलने की बात तै कर ली थी? क्यों? सच है न? मान लो, इसमें कोई हर्ज नहीं है। और, जनाब, जहां तक आपकी बात है, आप मुझे अभिवादन कर लेंगे तो छोटे नहीं हो जायेंगे। बहरहाल, आज फिर मुझ पर किसलिये आपकी कृपा हुई है?

रिबाकोव : मुझे आपके साथ काम करने के लिए भेजा गया है।

ज़बेलिन : आपको यहां तैनात किया गया है? ज़रूर। आइये, मेरी कुर्सी पर तशरीफ़ रखिये! पधारिये और हुक्म कीजिये।

रिबाकोव : इतना व्यंग करने की कोई ज़रूरत नहीं। यहां मुझे आपकी मदद करने के लिए भेजा गया है।

ज़बेलिन : आप यह कौन चीज़ लाये हैं? टाइपराइटर?

रिबाकोव : मैंने इसे रास्ते में लिया था... यानी उधार मांग लिया था...

ज़बेलिन : शायद किसी से छीन लिया है?

रिबाकोव : एक तरह से...

ज़बेलिन : तो इसे कहीं रख दीजिये।

रिबाकोव : हम अभी सब ठीक-ठाक कर लेंगे। अभी तो यह सब आरज़ी ही है।

ज़बेलिन : बिल्कुल नयी मशीन है... रैमिंगटन। लेकिन टाइप कौन करेगा, यह तो बतलाइये।

रिबाकोव : मैं एक टाइपिस्ट भी उधार ले आया हूं। वह आती ही होगी।

ज़बेलिन : माशा, देखो। अब कुछ आफ़िस जैसा लगने लगा... (**रुक जाता है**) नहीं, आफ़िस की तरह बिल्कुल नहीं।

माशा : अच्छा, तो अब मैं जा रही हूं।

रिबाकोव : इस तमाम कूड़े को तो देखिये! (**ज़बेलिन से**) आप अगर अनुमति दें तो मैं यहां ज़रा सफ़ाई कर दूं... चारों तरफ़ कितना गन्दा है!

ज़बेलिन : आप कितने भोले बन रहे हैं! जनाब, आप बेवक़ूफ़ किसे बना रहे हैं?

रिबाकोव : बेवक़ूफ़ क्यों? इस हालत में तो यहां काम किया नहीं जा सकता।

ज़बेलिन (सख़्ती से) : नौजवान, तुम दोनों यह क्यों जताना चाहते हो कि तुम लोग आपस में मिलते नहीं? चोरों की तरह मुझसे छिपकर क्यों मिलते हो?

माशा : यह सच नहीं है। मैं तुमसे कह चुकी हूं... तुम जानते हो, मैं कोई चीज़ छिपाती नहीं हूं। और मैंने ऐसा कभी सोचा भी नहीं था... संक्षेप में, मुझे कुछ नहीं चाहिए। अलविदा।

रिबाकोव : क्या मैं भी एक शब्द कह सकता हूं?

ज़बेलिन : एक नहीं, जितने चाहो।

रिबाकोव : आदमी को अपनी चादर देखकर पैर फैलाना चाहिए। मारीया अन्तोनोव्ना ने कहा है कि उनसे प्रेम करने के बहाने मैं आपकी गतिविधियों पर गुप्त दृष्टि रखा करता था — इसलिए मुझे बुरा लग गया है। जासूसी करने की मुझे ज़रूरत ही क्या थी?

ज़बेलिन : हां... फिर?

रिबाकोव : वास्तव में, मुख्य बात वह नहीं है। असल बात यह है कि हमारी शिक्षा, हमारे लालन-पालन, आदि में बहुत फ़र्क़ है। हमारे बीच

एक बड़ी खाई है। इसीलिए मैंने तै कर लिया कि यह क़िस्सा यहीं ख़त्म किया जाये। अच्छा, तो अब मैं इस कूड़े की सफ़ाई के मोर्चे पर जुट जाऊं। **(दरवाज़े की ओर जाता है)**

माशा: रिबाकोव... **(वह उसकी तरफ़ मुंह करता है)** तुम ठीक कहते हो... हमारे बीच एक पूरी खाई है। तुमने बड़ी अक़्लमन्दी का फ़ैसला किया है। मैंने अकारण ही तुम्हारा अपमान किया था—और उसके लिए मैं माफ़ी भी नहीं मांगना चाहती। लेकिन तुमने मेरे साथ हमेशा इतना उदार और शिष्ट व्यवहार किया है। अब मैं तुमसे एक आख़िरी चीज़ और मांगना चाहती हूं—तुम यहां से बिल्कुल चले जाओ। मुझे कभी न दिखलाई पड़ना। तुम्हारे बारे में मैं कभी कुछ न सुनूं... **(दौड़कर वह बाहर निकल जाती है)**

ज़बेलिन: और यह आदमी यहां खड़ा हुआ चुपचाप मुंह देख रहा है... अरे दौड़, जा, उससे माफ़ी मांग...

रिबाकोव: हां, शायद मुझे यही करना चाहिए।

ज़बेलिन: हे देवताओ! इसकी बात सुनो! कहता है, "शायद मुझे यही करना चाहिए"... दौड़, भले आदमी, जा, उसको पकड़!

(रिबाकोव दौड़ता हुआ बाहर जाता है)

आदमी कर ही क्या सकता है? इसी का नाम जीवन है... जीवन, तुम्हारा ज़ायका बहुत तेज़ है, तुम्हारे अन्दर मिर्च भी है और कड़ुवाहट भी, लेकिन कोई चारा नहीं। तुम जैसे हो वैसा ही तो लोगों को ग्रहण करना पड़ता है। माशा बेचारी सचमुच ही प्रेम में पड़ गयी है। कौन है?

(दोपहर का खाना लेकर ज़बेलिना अन्दर आती हैं)

आओ, आओ।

ज़बेलिना: मैं तुम्हारा खाना लायी हूं।

ज़बेलिन: मैं बहुत ख़ुश हूं। बहुत-बहुत शुक्रिया।

ज़बेलिना: बैठ जाओ और खा लो। नैपकिन ले लो और खा लो—उसी तरह जिस तरह अपने पुराने दफ़्तर में खाते थे।

ज़बेलिन: मुझे भूख नहीं है।

ज़बेलिना: तुम्हारी मसख़री से मैं ऊब गयी हूं। बैठो और खा लो।

ज़बेलिन: हुश, लीदिया, हुश! अच्छा, मैं खा लूंगा।

ज़बेलिना: चुपचाप बैठो और खाना खाओ।

ज़बेलिन: खा रहा हूं।

ज़बेलिना: अच्छी तरह चबा-चबाकर खाओ।

ज़बेलिन: चबा तो रहा हूं... सुनो, सड़क पर तुम्हें कोई मिला था?

ज़बेलिना: सड़कों पर तो न जाने कितने लोग होते हैं।

ज़बेलिन: बेशक...

ज़बेलिना: अन्तोन इवानोविच, भगवान के लिए अब काम करो, किसी से लड़ाई-झगड़ा न करना।

ज़बेलिन: मैं किसी से झगड़ा नहीं करूंगा।

ज़बेलिना: अपने मन को शान्त करो। ठीक से काम करो और ऐसा सोचो कि यह सब... यह तमाम गड़बड़ी तथा अन्य चीज़ें ठीक हो जायेंगी, सुधरकर और अच्छी बन जायेंगी।

ज़बेलिन: ज़रूर, ज़रूर।

ज़बेलिना: काश, तुम समझ सकते कि तुम्हें फिर से काम में लगा हुआ देखने के लिए मैं कितनी व्याकुल हूं!

ज़बेलिन: तुम मुझे दुलारना बन्द करो! मैं कोई नन्हा बच्चा नहीं! तुम व्याकुल हो! और मैं? मैं क्या हूं — भूसे का बोरा? लकड़ी का निर्जीव कुन्दा? मुझे उत्साहित करने की कृपा के लिए धन्यवाद! पर अब बहुत हो गया।

(माशा अन्दर आ जाती है)

तुम फिर आ गयीं? लौट किस लिए आयीं?

माशा: मम्मी के लिए... मैं इन्हें घर ले जाऊंगी।

ज़बेलिन: मम्मी के लिए...

(रिबाकोव आ जाता है)

आह, अब पवित्र परिवार पूरा हो गया! बस, यीशु मसीह की जगह — एक नाविक है!

रिबाकोव (ग़ुस्से से उबलते हुए): आप के हंसी-मज़ाक़ से अब मैं थक गया। आखिर, मैं भी यहां काम करने के लिए आया हूं। यह देखिये, यह मेरी नियुक्ति का आर्डर है। पढ़ लीजिये। मुझे सख़्त

आदेश थे कि ज़रा भी समय खराब न करूं। अब बताइये, हमें क्या और कैसे करना है।

ज़बेलिन: बहुत अच्छा। आप क्या हैं—इलेक्ट्रिकल इन्जीनियर? कम से कम मामूली इलेक्ट्रीशियन तो होंगे ही?

रिबाकोव: फ़्यूज़ जल जाये तो मैं दुरुस्त कर सकता हूं।

ज़बेलिन: रूस के विद्युतीकरण की योजना पर काम करने के लिए तो इतना काफ़ी नहीं है।

रिबाकोव: अपने को उपयोगी बनाने के तरीक़े मैं ढूंढ़ निकालूंगा।

ज़बेलिन: तब तो काम और भी शानदार हो जायेगा। पहले इस खाली कमरे में केवल एक ही बेवक़ूफ़ सीटी बजाता घूमता था, अब उनकी संख्या दो हो जायेगी।

रिबाकोव: मैं सीटी-वीटी बजाने नहीं जा रहा हूं और इससे भी बड़ी बात यह है कि मैं आपको भी सीटी नहीं बजाने दूंगा। पहले यह बताइये—आपको यहां क्या दिक़्क़त हो रही है?

ज़बेलिन: कुछ नहीं।

रिबाकोव (परेशानी में पड़ता हुआ): जी? क्या कहा आपने?

ज़बेलिन: आदि काल में भी कुछ नहीं था! क्या बाइबिल यह नहीं बताती?

ज़बेलिना (इशारे से माशा को अलग बुलाकर): माशा, हम लोग अभी नहीं जा सकते... चलो, ज़रा दूसरे कमरों को भी देख आयें...

(वे दोनों चुपचाप वहां से चली जाती हैं)

रिबाकोव (विचारों में खोया खोया चारों तरफ़ नज़र डालता हुआ): जहां तक मुझे दिखलाई देता है, लगता है कि आप, मैं और यह थोड़ा-सा फ़र्नीचर—यही हमारा दफ़्तर है। हमारे पास एक टेलीफ़ोन भी है। आपको कोई सवारी भी दी गयी है?

ज़बेलिन: हां। सायबान में एक बग्घी रखी है—बग़ैर घोड़ों की।

रिबाकोव: उससे तो हम बहुत दूर नहीं जा सकेंगे। लेकिन, जो भी हो, आप किसी रुकावट को आड़े न आने दीजियेगा, किसी चीज़ से हार न मानियेगा... एक बार मैंने एक शहर पर क़ब्ज़ा किया, उसकी नगर कौंसिल में पहुंचा और वहां के खज़ाने को ज़ब्त कर लिया। पर

खज़ाने में पीतल के सिर्फ़ दो कोपेक निकले। उन्हीं दो कोपेकों की मदद से मैंने वहां सोवियत सत्ता चालू कर दी थी।

ज़बेलिन: यह बात बहुत मनोरंजक है! यह आपने कैसे किया था?

रिबाकोव: तमाम—छोटे, मझोले और बड़े—पूंजीपतियों को मैंने स्थानीय थियेटर में इकट्ठा किया और वहीं मंच पर एक मशीनगन तथा एक अलार्म घड़ी रख दी। तीन घंटे बाद जब अलार्म बजना शुरू हुआ तो उन लोगों ने तीस लाख रूबल निकालकर मेज़ पर रख दिये।

ज़बेलिन: क्या अब भी आप यही करने जा रहे हैं? मास्को में जो बचे-खुचे पूंजीपति रह गये हैं उन सबको यहां इकट्ठा करेंगे?

रिबाकोव: नहीं... आप मुझे यह बतलाइये कि इस वक़्त सबसे ज़्यादा किस चीज़ की आपको ज़रूरत है?

ज़बेलिन: इन्जीनियरों, टेक्नीशियनों, ड्राफ़्ट्समैनों, सिद्धान्तकारों और वैज्ञानिकों की...

रिबाकोव: बहुत अच्छा। हम फ़ौरन उन्हें इकट्ठा करना शुरू कर देते हैं...

ज़बेलिन: आप क्या करेंगे—मशीनगन और अलार्म घड़ी लेकर सारे मास्को में घूमेंगे?

रिबाकोव: नहीं, इस मामले में मशीनगन से कोई काम नहीं बनेगा। तमाम अख़बारों में मैं यह घोषणा छपवा देता हूं कि अन्तोन इवानोविच ज़बेलिन ने काम करना शुरू कर दिया है।

ज़बेलिन: यह तो बड़ी सीधी-सी बात है।

रिबाकोव: मैं अभी जाकर पत्रकारों को सूचित करता हूं।

ज़बेलिन: पत्रकार? क्या अब भी वे मौजूद हैं? हां... मैं भूल गया था कि पत्रकार तो हो ही सकते हैं। लेकिन हम उन्हें बैठायेंगे कहां, हमारे पास कुर्सियां-उर्सियां तो हैं नहीं।

रिबाकोव: कोई बात नहीं, वे खड़े रह सकते हैं। तो मैं टेलीफ़ोन करता हूं। आप बैठकर अपनी रिपोर्ट तैयार कीजिये। हमें... यानी, आपको... व्यक्तिगत रूप से आपको तीन दिन के अन्दर साथी लेनिन के सामने रिपोर्ट देनी होगी। आपने यही वादा किया है।

ज़बेलिन: तीन दिन? तुम्हारा क्या मतलब?

रिबाकोव: हां, तीन दिन के अन्दर।

ज़बेलिन: तुम्हें कैसे मालूम?

रिबाकोव : मुझे मालूम है।

ज़बेलिन : भले आदमी, क्या तुम ठीक बात कर रहे हो?

रिबाकोव : एकदम ठीक।

ज़बेलिन : तब, जनाब, आपने पहले ही क्यों नहीं बतलाया था?

रिबाकोव (टेलीफ़ोन उठाते हुए) : आप तो मेरे ऊपर इस तरह टूट पड़े कि मेरी सिट्टी ही गुम हो गयी थी।

ज़बेलिन : तुम्हारी सिट्टी? तुम्हारी सिट्टी कौन गुम कर सकता है?

रिबाकोव (फ़ोन करते हुए) : बाईस-तेईस ... क्या आप 'इज़वेस्तिया' के दफ़्तर से बोल रहे हैं? मैं विशेष आयोग का सेक्रेटरी हूं। हम देश के विद्युतीकरण की एक विशाल योजना प्रस्तुत करने जा रहे हैं ... शायद आपको कोई ख़बर नहीं मिली है? क्यों, आपको ख़बर होनी ज़रूर चाहिए थी। जी हां ... जी हां ... अपने एक प्रतिनिधि को यहां — १७, सिव्त्सेव व्राजेक में भेज दीजिये।

ज़बेलिन (अपनी नोटबुक निकालते हुए) : लो, इन्जीनियर वोस्त्रेत्सोव का नम्बर यह है। हमारे बीच थोड़ी-सी ग़लतफ़हमी हो गयी थी ... दरहक़ीक़त, मेरे और उनके बीच थियेटर के सामने लड़ाई हो गयी थी ... विज्ञान अकादमी के लिए मैंने जो रिपोर्ट तैयार की थी उसकी एक प्रति उनके पास है और मुझे उसकी ज़रूरत है। तुम उन्हें टेलीफ़ोन कर दो।

रिबाकोव : चौदह-पैंतालिस।

ज़बेलिन : मेरी श्रीमती जी चली गयीं? उनसे जाने के लिए किसने कहा था? लीदिया मिख़ाइलोव्ना! उन्हें फ़ौरन वापिस बुलाओ ...

रिबाकोव : चौदह-पैंतालिस? क्या इंजीनियर वोस्त्रेत्सोव घर पर हैं? नहीं? तब फिर कहां हैं? आपको नहीं मालूम? आपका मतलब क्या है? क्या आप उनकी पत्नी हैं? वे कहां काम करते हैं? मैं विशेष आयोग की ओर से बोल रहा हूं ... शुक्रिया।

(ज़बेलिना और माशा तेज़ी से अन्दर आती हैं)

ज़बेलिना : माफ़ कीजियेगा ... हम लोग खाने के बर्तन यहीं भूल गयी थीं।

ज़बेलिन : खाने के बर्तन ... कैसे खाने के बर्तन! फ़ौरन घर जाओ और मेरा चमड़े का वह बैग भेज दो, जो मैं लन्दन से लाया था। मेरे

लेनिन: अपनी किताब।

अंग्रेज़: मिस्टर लेनिन, मैं समझ नहीं पाता कि दुनिया को आप अमीरों और ग़रीबों में कैसे बांट सकते हैं। यह तो बिल्कुल आदिमकालीन, भौंडी बात है। ईमानदार लोग ग़रीबों में भी होते हैं और अमीरों में भी। होना तो यह चाहिए कि अमीरों और ग़रीबों के बीच जो ईमानदार लोग हैं वे मिलकर बुद्धिसंगत समाजवाद का निर्माण करें। आपके चेहरे के भाव से ही ज़ाहिर हो जाता है कि आपको यह विचार पसन्द नहीं है।

लेनिन: उसमें ज़रा भी सार नहीं है।

अंग्रेज़: इस सवाल पर मैं बहस करने को तैयार हूं।

लेनिन: आपके समय को मैं बहुत क़ीमती मानता हूं—ऐसी चीज़ों पर बहस करके उसे ख़राब नहीं करना चाहता।

अंग्रेज़: एक ही विचार से—बोल्शेविक सोशलिज़्म के विचार से—चिपके रहना महज़ हठधर्मी है!

लेनिन: हमारे विचारों को ग़लत साबित करने के लिए आपकी सरकार ने तोपों का इस्तेमाल किया है। इस काम के लिए उसने बेतहाशा पैसा बहाया है।

अंग्रेज़: मैंने उसका विरोध किया था।

लेनिन: हां, हां, मैं जानता हूं। आप उन ईमानदार लोगों में से हैं। लेकिन आपके विरोध से कोई अन्तर नहीं पड़ा।

अंग्रेज़: कोई अन्तर नहीं पड़ा...

लेनिन: और ऐसा क्यों हुआ?

अंग्रेज़: क्योंकि सत्ता उनके हाथ में है।

लेनिन: उनके पास बैंकें हैं, तोपें हैं... और आपके पास है सिर्फ़ आपकी ईमानदारी... घटिया से घटिया तोप के सामने भी उसकी क्या क़ीमत है? ज्यों ही आप अपने बुद्धिसंगत समाजवाद को शुरू करने की बात सोचेंगे, त्यों ही वे अपनी वह घटिया तोप निकाल लायेंगे और आपके मधुर समाजवादी विचार साफ़ हो जायेंगे! इसे मज़ाक़ मत समझिये—ऐसा बहुत मज़े से हो सकता है... तब आप क्या करेंगे? आप भी गोली चलायेंगे? लेकिन वह तो बोल्शेविज़्म हो जायेगा! भाग खड़े होंगे? तब फिर आपके समाजवाद का क्या होगा?

अंग्रेज़: मिस्टर लेनिन, यह तो कम्युनिस्ट प्रचार है।

लेनिन: तो क्या मैं पक्का कम्युनिस्ट नहीं हूं?

अंग्रेज़: मिस्टर लेनिन, मुझे ताज्जुब है...

(क्रेमलिन की घड़ियों से 'इन्टरनेशनल' के कुछ स्वर बज उठते हैं)

लेनिन (स्वरों को ध्यान से सुनते हुए): किस बात पर?

अंग्रेज़: पश्चिम से आनेवाले हर निष्पक्ष पर्यवेक्षक को साफ़-साफ़ दिखलाई देता है कि आप विनाश के कगार पर खड़े हैं। फिर भी आप में मज़ाक़ करने की शक्ति बाक़ी है!

लेनिन (संजीदा होकर): कृपया मुझे बताइये कि यहां आपने क्या देखा है।

अंग्रेज़: यहां लोगों की दाढ़ियां ठीक से नहीं बनी हैं।

लेनिन: हां, यह ठीक है।

अंग्रेज़: इसके अलावा, उन सबके कपड़े फटे पुराने हैं... इस विषय पर बात करना शायद आपको अच्छा नहीं लग रहा?

लेनिन: नहीं, नहीं, कृपया बोलते जाइये। मैं आपकी बात सुनने को बहुत उत्सुक हूं।

अंग्रेज़: हर आदमी यहां एक बण्डल लेकर चलता है। शुरू में तो मेरी समझ में ही नहीं आया। फिर किसी ने मुझे बतलाया कि... उसमें उसका खाना रहता है, उसका राशन... उसे वे अख़बारों में लपेटकर अपने घर ले जाते हैं। सड़कों पर घूमता या टहलता कोई नज़र नहीं आता। हर आदमी कहीं जाने की जल्दी में दिखलाई देता है। मक्सिम गोर्की के पास भी केवल एक ही सूट है।

लेनिन: सचमुच? क्या उन्होंने ख़ुद आपको बतलाया है?

अंग्रेज़: उनके नज़दीक के लोगों ने मुझे बतलाया है।

लेनिन (चिन्तापूर्ण मुद्रा में, जैसे कि ख़ुद अपने से बातें कर रहे हों): हर एक को कठिन समय का सामना करना पड़ रहा है। गोर्की को भी। **(अचानक अपनी आंखें सीधे-सीधे अंग्रेज़ लेखक पर जमाकर उससे पूछते हैं)** आपके पास कितने सूट हैं?

अंग्रेज़: मुझे ठीक-ठीक याद नहीं... हर संभ्रान्त व्यक्ति की तरह... दस... बारह...

लेनिन: आपके पास बारह हैं और गोर्की के पास केवल एक... देखिये न, कितना फ़र्क़ है! कृपया अपनी बात आप जारी रखिये।

अंग्रेज़: मुझे ज़ुकाम हो गया तो दुकानदारों के पास मुझे कोई दवा नहीं मिल सकी।

लेनिन (कड़वाहट से भरते हुए): यह स्थिति सचमुच बुरी है... मैं जानता हूं, यह स्थिति भयंकर है।

अंग्रेज़: मैंने ऐसी रोटी खायी है जो कुत्तों तक के खाने योग्य नहीं थी, और मेरे सुनने में आया है कि वोल्गा क्षेत्र के किन्हीं स्थानों पर लोग एक दूसरे को खाये जा रहे हैं। क्या यह सच है?

लेनिन: सच है।

अंग्रेज़ (भावुकता से): सर्वनाश को रोक सकना मानव शक्ति से परे है! जल्दी ही देहातियों को छोड़कर रूस में कोई नहीं बचेगा। रेलों को ज़ंग लग जायेगी, क्योंकि आपके शहर ख़त्म हो चुके होंगे। मैं देख रहा हूं कि रूस का भविष्य अन्धकारमय है, विपत्ति, विनाश — इनके अलावा कुछ शेष नहीं रह जायेगा...

लेनिन (सरल भाव से, सोचते हुए): हां, शायद लोगों को ऐसी ही भयानक तस्वीर दिखलाई देती है... हम अन्धकार में... हां, परेशानियां हैं। मैं इससे इन्कार नहीं करता। और लोगों को सम्भवत: ऐसी ही तस्वीर दिखलायी देती है।

अंग्रेज़: मैंने सुना है कि आप रूस के विद्युतीकरण की कोई योजना बना रहे हैं।

लेनिन (आश्चर्य से): आपने यह कहां सुना?

अंग्रेज़: मेरी एक सज्जन से बातचीत हुई थी। वह...

लेनिन: मैं समझ सकता हूं वह कौन थे। उस सज्जन ने आपसे क्या कहा?

अंग्रेज़: वह एक हंसोड़ आदमी हैं, मज़ाक़ करते हैं। वह उसे बिजली की कपोल-कथा कहते हैं।

लेनिन: हां, एक हंसोड़ व्यक्ति!

अंग्रेज़: मिस्टर लेनिन, आप एक स्वप्न-द्रष्टा हैं। आपके सामने निस्सीम सपाट और बर्फ़ीला देश फैला हुआ है। इसकी आबादी यूरोपियाई कम है, एशियाई ज़्यादा। यह भारी-भरकम देश भूख, ठण्ड और पीड़ा से कराह रहा है... और आप उसे बिजली देने का, उसका विद्युतीकरण करने का स्वप्न देख रहे हैं! आप एक विचित्र स्वप्न-द्रष्टा हैं, मिस्टर लेनिन!

लेनिन: आप आज से दस वर्ष बाद आकर हमसे मिलियेगा।

अंग्रेज़: आज से दस वर्ष बाद भी क्या आप यहां रहेंगे?

लेनिन (चुहल के ढंग से): ज़रूर। आपको यक़ीन नहीं होता? आइयेगा और तब देखियेगा कि हम यहीं मौजूद हैं। हां, मैं एक स्वप्न-द्रष्टा हूं, और मेरा ख़याल है कि अब अनन्त काल तक हम यहीं रहेंगे।

अंग्रेज़: अगर आपका ऐसा विश्वास है, तो आप ज़रूर कोई चीज़ छिपा रहे होंगे।

लेनिन: बात बिल्कुल उल्टी है। हम तो सब कुछ साफ़-साफ़ कहते हैं... दरअसल, ज़रूरत से ज़्यादा साफ़-साफ़!

अंग्रेज़: अगर यह बात है तो कृपया मुझे बतलाइये कि ऐसा विश्वास करने और स्वप्न देखने का क्या आधार है?

लेनिन: अगर मैं आपको बतलाऊंगा तो आप नाराज़ हो जायेंगे। आप कहेंगे कि यह तो आम कम्युनिस्ट प्रचार है। मैं मज़दूर वर्ग में विश्वास रखता हूं, आपकी उसमें आस्था नहीं है। मैं रूसी जनता में विश्वास करता हूं, आप में उसे देखकर आतंक और घृणा पैदा होती है। आप पूंजीपतियों की ईमानदारी में विश्वास करते हैं, मेरा उसमें विश्वास नहीं है। आपने समाजवाद को एक साफ़-सुथरी, सुन्दर, बड़े दिन के ख़ुशनुमा दरख़्त जैसी वस्तु मान रखा है, मैं सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व में विश्वास रखता हूं। अधिनायकत्व शब्द सख़्त है, उससे ख़ून और दमन का आभास होता है। यह शब्द ऐसा नहीं है कि उसका हल्के-फुल्के ढंग से इस्तेमाल किया जाये, लेकिन उसके बिना कुछ हो नहीं सकता। न विद्युतीकरण का स्वप्न देखा जा सकता है, न सोशलिज़्म और न कम्युनिज़्म का... समय, इतिहास की गति ही बतलायेगी कि हममें से कौन सही है...

अंग्रेज़: आश्चर्यजनक है आपका विश्वास... उसे देखकर झुंझलाहट होती है। आपकी बात बुद्धि के परे है! यहां, आपके सामने विपत्तियों और विभीषिकाओं का एक अथाह कुआं है और आप विनाश के कगार पर विद्युतीकरण की बात कर रहे हैं... मैं इसे नहीं समझ सकता!

(क्रेमलिन की घन्टियों से फिर 'इन्टरनेशनल' की कुछ कड़ियां बज उठती हैं)

लेनिन : दस वर्ष बाद आकर देखियेगा...

अंग्रेज़ : नहीं, आप कोई चीज़ छिपा रहे हैं। आप ज़रूर कोई ऐसी चीज़ जानते हैं जिसे पश्चिम के हम लोग नहीं जानते, बस आप उसे बताना नहीं चाहते।

लेनिन : मैं आपसे सच्चे दिल से कहता हूं कि हम कोई चीज़ नहीं छिपा रहे हैं। सब चीज़ों को हम बिल्कुल साफ़-साफ़ सामने रख रहे हैं।

अंग्रेज़ : आप थके हुए हैं। यह बात जब आप अन्दर आये थे, तभी मैंने महसूस की थी... गुडबाई, मिस्टर लेनिन! इस भेंट के लिए धन्यवाद। हो सकता है, आप ही सही हों और मैं ग़लत। इसे सिर्फ़ भविष्य बतलायेगा। गुडबाई!

लेनिन : गुडबाई। और देखिये दस साल बाद आकर हमसे ज़रूर मिलियेगा।

(अंग्रेज़ लेखक चला जाता है)

(लेनिन विचारों में खोये हुए हैं। अचानक उन्हें हंसी आ जाती है)
कितना कूपमण्डूक है! कैसी अधकचरी बातें करता है!

(सेक्रेटरी अन्दर आती है)

क्या इन्जीनियर ज़बेलिन आ गये?

सेक्रेटरी : जी हां, व्लादीमिर इल्यीच, वह आ गये।

लेनिन : उन्हें अन्दर ले आओ।

(सेक्रेटरी बाहर जाती है। ज़बेलिन अन्दर प्रवेश करते हैं)

ज़बेलिन : नमस्ते, व्लादीमिर इल्यीच।

लेनिन : नमस्ते, अन्तोन इवानोविच। आपकी तबियत कैसी है?

ज़बेलिन : मैं बहुत अच्छा हूं, धन्यवाद। मेरी तबियत... ठीक हो रही है।

लेनिन : बहुत अच्छा! अच्छा, यह तो बतलाइये, आपको कभी किसी अधकचरे कूपमण्डूक से मिलने का मौक़ा मिला है?

ज़बेलिन : किस तरह के?

लेनिन : साधारण... असली, ठेठ अधकचरे कूपमण्डूक से। मक्सिम गोर्की उनका बहुत अच्छा चरित्र-चित्रण करते हैं...

ज़बेलिन: शायद... हां... मेरी मुलाक़ात ऐसे लोगों से हुई है।

लेनिन: अच्छा... हम सब सोचते थे कि ऐसा अधकचरा प्राणी जीवाश्म बन गया होगा या वह कहीं कोलोम्ना में, मलमल के पर्दों के पीछे रहता होगा और अपनी वास्कट में चेनदार चांदी की घड़ी लटकाये घूमता होगा। हम सबका ख़याल ग़लत था। यह अधकचरा प्राणी सारी दुनिया में पाया जाता है। अभी-अभी एक विश्वविख्यात लेखक के रूप में मैंने उसका एक बहुत बढ़िया नमूना देखा था। मज़े की बात यह है कि वह बिल्कुल हमारे रूसी अधकचरों के ही समान है। हमारे यहां तो समाज के हर अंग में ऐसे लोगों की भरमार है।

ज़बेलिन: हां, वे हमारे समाज के हर अंग में मौजूद हैं, लेकिन मैं यह कभी नहीं चाहूंगा कि मेरी भी गिनती उन्हीं में होने लगे! फिर मैं तो चेनदार घड़ी भी नहीं लगाता।

लेनिन: आप नहीं लगाते?

ज़बेलिन: मैं इस ख़याल तक को बर्दाश्त नहीं कर सकता कि मेरी सूरत-शक्ल उनकी जैसी हो।

लेनिन: नहीं, नहीं। हम सब में कुछ न कुछ दोष होते हैं, लेकिन आप में अधकचरोंवाला दोष नहीं है। कृपया बैठ जाइये। अच्छा, अब आपकी रिपोर्ट ले लें। **(इधर-उधर देखते हुए)** मैंने उसे रख कहां दिया? मैंने उसे पढ़ा था। बहुत मुश्किल चीज़ है। उसे तैयार करने में क्या आपको बहुत समय लगा था?

ज़बेलिन: बहुत समय तो आपने मुझे दिया नहीं था। लेकिन बात यह है कि एक बार किसी काम को करने की ज़िम्मेदारी ले लेने के बाद फिर मैं धीरे-धीरे काम नहीं कर पाता।

लेनिन: यह तो साफ़ दिखाई देता है।

ज़बेलिन: अच्छा? लेकिन किस तरह? क्या मेरी रिपोर्ट बुरी है?

लेनिन: नहीं, यह क्यों ज़रूरी है कि वह बुरी हो?

ज़बेलिन: व्लादीमिर इल्यीच, मुझे यह सब एक तरह की परीक्षा लग रहा है... बुढ़ापे में नये सिरे से...

लेनिन: अगर यह परीक्षा है तो हम कह सकते हैं कि आपने उसे सर्वोच्च नम्बरों से पास किया है। आपकी रिपोर्ट बहुत अच्छी है — वास्तव में शानदार! और उसे आपने तैयार भी किया है पूरे विश्वास के साथ।

ज़बेलिन: आपकी बात सुनकर मैं बहुत प्रसन्न हूं, और कृतज्ञ भी...

आप जानते हैं कि यह मेरा पेशा है, लेकिन ऐसा लगता है जैसे कि इसे नये सिरे से मैंने फिर सीखा हो! किन्तु इस बात को आम तौर पर बिजली का हर इंजीनियर — अगर वह रूस को प्यार करता है — स्वीकार करेगा कि पीटर महान के बाद इतनी साहसपूर्ण और शानदार योजना की कल्पना किसी भी व्यक्ति ने नहीं की थी। इसके बावजूद, एक सवाल है, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सवाल, जो मैं आपसे पूछना चाहूंगा।

लेनिन: पूछिये, पूछिये... एक मानी में आप भी अभी एक नौसिखुए ही हैं।

ज़बेलिन: हम लोगों को, यानी मुझे और मेरे उन साथियों को जो ईमानदारी से काम करने के लिए हमारे साथ आ रहे हैं, विद्युतीकरण की सफलता के सम्बन्ध में, उसके विजयी भविष्य के सम्बन्ध में ज़रा भी सन्देह नहीं है... लेकिन एक "चीज़" है।

लेनिन: वह क्या है? उसे जानने को मैं उत्सुक हूं।

ज़बेलिन: संक्षेप में कहें तो वह यह है — इस काम में क्या हम ज़रूरत से ज़्यादा जल्दी नहीं कर रहे हैं?

लेनिन: ज़रूरत से ज़्यादा जल्दी? विद्युतीकरण के कार्य को हाथ में लेने में बहुत जल्दी? आप क्या कह रहे हैं मैं यह समझ रहा हूं।

ज़बेलिन: सच बात यह है कि यह प्रश्न मुझे बहुत परेशान कर रहा है।

लेनिन: मुझे भी। लेकिन मुझे यह बेहद परेशानी होती है कि हम लोग कितने धीरे-धीरे, रेंगते हुए से आगे बढ़ रहे हैं। यह बहुत ही बड़ी समस्या है, हमारे विकास की मूल समस्या है। सारी सभ्य दुनिया से कम से कम तीन सौ साल हम लोग पीछे हैं। और हम सब, बूढ़े और नौजवान — सब, इस भयानक पिछड़ेपन की गिरफ़्त में हैं। ज्यों ही किसी भी प्रकार का कोई भी साहसपूर्ण विचार सामने आता है त्यों ही हर आदमी परेशान हो उठता है: यह चीज़ क़बलज़वक़्त तो नहीं? समय से बहुत पहले तो नहीं? नहीं, साथी, यह क़बलज़वक़्त नहीं है। अगर हमने सत्ता पर १९०५ में अधिकार कर लिया होता तो विद्युतीकरण का कार्य हमने उसी वक़्त शुरू कर दिया होता। सोचिये तो, अब तक सोवियत रूस कितना आगे बढ़ गया होता!

ज़बेलिन: जी हां, मैं समझ रहा हूं। अब मुझे भी राजनीति कुछ-कुछ समझ में आने लगी है।

लेनिन : और राजनीति है क्या? आर्थिक स्थिति की घनीभूत अभिव्यक्ति। और हमारी आर्थिक स्थिति ऐसी है कि जीवन के समस्त क्षेत्रों में मौलिक परिवर्तन लाने के लिए कई पीढ़ियों को अनगिन कुर्बानियां देनी होंगी। अच्छा, अन्तोन इवानोविच, यह तो बताइये कि अपने सहायक के रूप में एक नाविक — रिबाकोव को रखने में तो आपको कोई एतराज़ नहीं है? एक प्रसिद्ध इंजीनियर, प्रोफ़ेसर — और उनके बग़ल में एक नौसैनिक कमिसार!

ज़बेलिन : नहीं, व्लादीमिर इल्यीच! मुझे ज़रा भी आपत्ति नहीं है। वह एक कार्यदक्ष युवक है... मुझे वह शुरू से ही पसन्द आया है।

लेनिन : यह बहुत अच्छी बात है।

ज़बेलिन : वैसे किसी मार्क्सवादी सिद्धान्तकार को मेरे साथ रखना ज़्यादा ठीक होगा।

लेनिन : क्यों? सिद्धान्तकार की आपको किसलिए ज़रूरत है?

ज़बेलिन : मालूम होता है, आप मज़ाक़ कर रहे हैं।

लेनिन : मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा हूं। बतलाइये, सिद्धान्तकार आपको किसलिए चाहिए?

ज़बेलिन : आख़िर मैं एक पूंजीवादी विशेषज्ञ हूं न। क्या मुझे शिक्षित करना आवश्यक नहीं है?

लेनिन : लेकिन हम आपके पास इस आशा से तो नहीं आये थे कि आप मार्क्सवाद का पाठ्य-क्रम पढ़ेंगे। हम तो चाहते हैं कि आप काम करें — ख़ूब मेहनत से और जमकर काम करें। आपके और हमारे दोनों के लिए वही सबसे अच्छा मार्क्सवाद होगा। साशा रिबाकोव सिद्धान्तकार तो ख़ास नहीं है, लेकिन वह एक होशियार संगठनकर्त्ता है। मैंने उसे आपके पास इसलिए भेजा है कि आपके अधीन वह सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को लागू करे, क्योंकि सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के बिना विद्युतीकरण के लक्ष्य को हम कभी प्राप्त नहीं कर सकेंगे और आपका सारा काम व्यर्थ जायेगा... आप अपनी रिपोर्ट ले लीजिये, मैंने उसमें जो टिप्पणियां लिखी हैं, उन पर ग़ौर कर लीजिये और श्रम और सुरक्षा कौंसिल की बैठक के लिए तैयारी कर लीजिये। नमस्कार, साथी ज़बेलिन।

ज़बेलिन : नमस्कार, व्लादीमिर इल्यीच।

(सेक्रेटरी, द्ज़ेर्जिन्स्की, रिबाकोव तथा घड़ीसाज़ अन्दर आते हैं)

लेनिन : एक मिनट रुकिये ... बस एक मिनट! एक चीज़ और है ... अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और अत्यन्त सुखद ...

सेक्रेटरी : साथी लेनिन, आपने कहा था न कि क्रेमलिन की घड़ियां जिस समय बजती हैं ठीक उसी समय आप घड़ीसाज़ से मिलना चाहेंगे ...

घड़ीसाज़ : श ... मेहरबानी करके ...

द्ज़ेर्जिन्स्की : व्लादीमिर इल्यीच, इस अचानक धावे के लिए हमें माफ़ कीजियेगा; लेकिन आप तो जानते हैं, हमारे लिए यह एक काफ़ी बड़ी घटना है ... घण्टाघर की घड़ियां ...

घड़ीसाज़ (द्ज़ेर्जिन्स्की से) : कृपा कर ख़ामोश रहिये ... केवल एक सेकेण्ड बाक़ी है।

लेनिन : साशा, घड़ियां चलने लगीं?

रिबाकोव : हां ... लगता तो यही है ... ज़रा रुकिये ...

(घंटियों के बजने की आवाज़ आती है)

ज़बेलिन : यह क्या है? क्रेमलिन की घड़ी? हां, वही तो है!

द्ज़ेर्जिन्स्की : और आप ग़ुस्सा होकर हम लोगों के ख़िलाफ़ कहा करते थे — "ये बोल्शेविक! इनके राज्य में तो क्रेमलिन की घड़ी ने भी चलना बन्द कर दिया है!" ठीक है न?

ज़बेलिन : मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूं।

द्ज़ेर्जिन्स्की : आप बहुत ही सख़्त शब्दों का इस्तेमाल किया करते थे?

ज़बेलिन : कभी-कभी।

लेनिन : आप लोग सुन रहे हैं? घंटियां बजने लगीं ... यह बहुत बड़ी चीज़ है। जब वह सब पूरा हो जायेगा — वह सब जिसके बारे में आज हम केवल स्वप्न देख रहे हैं और आपस में बहसें कर रहे हैं — तब क्रेमलिन की घड़ी एक नये दिन की घंटी बजायेगी, और उस दिन विद्युतीकरण की नयी-नयी योजनाओं, नये-नये स्वप्नों तथा और भी नयी-नयी तथा साहसपूर्ण खोजों का सूत्रपात होगा।

(पर्दा गिरता है)

१९४०

व्सेवोलोद विश्नेव्स्की
बलिदान व्यर्थ न गया...
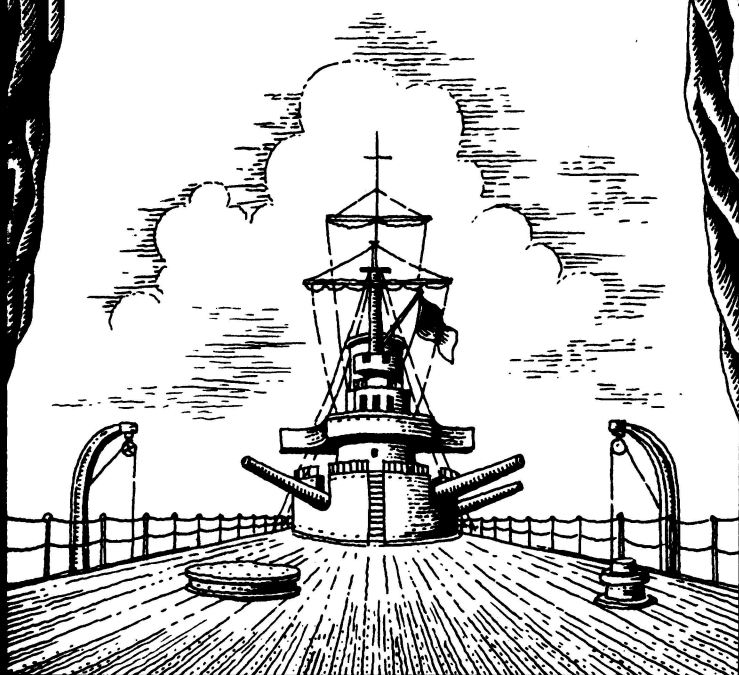
व्सेवोलोद विश्नेव्स्की (१९०० —१९५१) सोवियत संघ के राज्य पुरस्कार विजेता, ख्यातिलब्ध नाटककार और लेखक हैं। सन् १९२९ में प्रकाशित नाटक 'प्रथम अश्वारोही सेना' के बाद से उनकी गणना देश के प्रमुख नाटककारों में होने लगी। विषय की गहनता (लेखक प्रथम अश्वारोही सेना में मशीनगनर रह चुका है), क्रान्ति के जीवन्त आदर्शों के प्रति अटूट निष्ठा तथा मौलिक विशिष्टता के कारण यह नाटक सोवियत संघ के साहित्यिक जीवन में अपनी पहचान बना सका और मशहूर हुआ। इसके बाद के नाटक 'अन्तिम निर्णायक' (१९३०), 'पश्चिम के मोर्चे पर' (१९३१) फ़ासिस्टों के विरुद्ध हुए युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित हैं।

व्सेवोलोद विश्नेव्स्की के कथानक पर आधारित फ़िल्म 'क्रन्शतात के नौसैनिक' (१९३३) की गणना सोवियत सिनेमा की उत्कृष्ट फ़िल्मों में की जाती है। विश्व के प्राय: सभी देशों में यह फ़िल्म प्रदर्शित हुई जिसके द्वारा लाखों दर्शकों तक क्रान्ति के आदर्शों पर आधारित महान सत्य का उद्घाटन किया गया। विश्नेव्स्की के ही कथानक पर बनी एक और फ़िल्म 'हम रूसी लोग' काफ़ी मशहूर हुई।

नाटककार ने संगीतमय हास्य नाटिका 'दूर-दूर तक फैला सागर', 'लेनिनग्राद के घेरे के पास' और 'अविस्मरणीय उन्नीस सौ उन्नीसवां' आदि सहित गृहयुद्ध पर आधारित नाट्य-शृंखला का सृजन किया।

निस्संदेह सोवियत नाट्य-साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों

में व्सेवोलोद विश्नेव्स्की का नाटक 'बलिदान व्यर्थ न गया' (१९३२) एक उल्लेखनीय नाट्य-रचना है, जिसका सफल मंचन विश्व के अनेक देशों में किया जा चुका है। यह नाटक गृहयुद्ध के दिनों की एक प्रभावकारी घटना पर आधारित है।

नाटक में अराजकतावादी छापामार टुकड़ी के नौसैनिकों की नियति का चित्रण किया गया है, जो बाद में कर्तव्यनिष्ठ कम्युनिस्टों से प्रेरित होकर लाल सेना के अनुशासित, जुझारू अंग बन जाते हैं।

घटनाओं की नाटकीयता इस बात से गहन होती है कि अराजकता, उच्छृंखलता, ग़द्दारी और प्रतिक्रान्तिकारी ताकतों से जूझने का बोझ एक महिला-कमिसार पर पड़ता है, जो खुद अभी कम उम्र है।

नाटक पूर्ण दुखान्त होने के बावजूद (महिला-कमिसार की दुश्मनों द्वारा क्रूर हत्या) नाटक का अन्त इस रचना के आशावाद को मुखरित करता है तथा क्रान्ति विजय के उज्ज्वल आदर्शों के लिए संघर्ष जारी रखने का आवाहन करता है।

पात्र

पहला प्रवर्तक।
दूसरा प्रवर्तक।
वाइनोनेन, फ़िनलैण्ड का एक कम्युनिस्ट नौसैनिक।
चेचकरू।
अलेक्सेई, बाल्टिक युद्धपोत का वरिष्ठ नौसैनिक।
अराजकतावादियों के गुट का सरगना।
कमिसार*, बाल्टिक युद्धपोत पर कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा नौसैनिकों के साथ काम करने के लिए भेजी गयी एक युवती।
जहाज़ का कैप्टन, ज़ारशाही नौसेना का एक भूतपूर्व अफ़सर।
मेमियाहा।
पहला कनिष्ठ अधिकारी।
दूसरा कनिष्ठ अधिकारी।
डेकसारन।
बैण्ड मास्टर।
बूढ़ी औरत।
लम्बा नौसैनिक।
पहला अफ़सर, जो स्वदेश लौट रहा है।
दूसरा अफ़सर।
अराजकतावादियों के एक दूसरे गुट का सरगना।
ओदेसावासी।
दुश्मन अफ़सर।
पादरी।
बाल्टिक युद्धपोत के नौसैनिक, जहाज़ियों को विदा करने आयी स्त्रियां, श्वेत-गार्ड वाले तथा अन्य लोग।
युद्ध क्षेत्र और बाल्टिक युद्धपोत पर घटी गृहयुद्ध के ज़माने की घटनाएं।

---

* कमिसार — सोवियत सैनिक टुकड़ियों का एक अधिकारी, जिसका कार्य राजनीतिक निर्देशन है। उसका पद और उत्तरदायित्व टुकड़ी के कमाण्डर के समकक्ष होता है। — अनु०

पहला अंक

(दर्दभरा वेदनापूर्ण संगीत। दिल दहलानेवाले उल्लासपूर्ण ध्वनि विस्फोट। कोलाहल, मायूस चीख — "क्यों, क्यों?"। प्रश्नोत्तरों की अथक खोज और उनके समाधान।

हम ८५ हज़ार बाल्टिक बेड़े के नौसैनिक थे और ४० हज़ार काले सागरीय बेड़े के। हम भी उत्तरों की खोज में थे। ये रहे इन में से दो आदमी और उनकी बातचीत। इनकी बातों का जायज़ा लीजिये)

पहला प्रवर्तक (दर्शकों की ओर टकटकी लगाकर देखते हुए): ये कौन लोग हैं?

दूसरा प्रवर्तक: दर्शक। हमारे वंशज। हमारा भविष्य, जिसके लिए हम कभी जहाज़ पर तड़पा करते थे — याद है न?

पहला प्रवर्तक: साकार भविष्य! दिलचस्प होगा इसे देखना। ये हज़ार-डेढ़ हज़ार तो होंगे ही, सब हमें घूर रहे हैं... शायद नौसैनिकों को देखा नहीं होगा!

दूसरा प्रवर्तक: चुप हैं सब। सूरमाओं और उनके शौर्य को देखने आये हैं।

पहला प्रवर्तक: तब तो वे एक दूसरे को देखते रहें।

दूसरा प्रवर्तक: कितनी विनम्रता से चुप हैं ये! इनमें से उठकर क्या कोई कुछ बोल नहीं सकता? **(दर्शकों में से किसी को सम्बोधित करते हुए)** ए भाई! इस तरह खिन्न क्यों बैठे हैं? अरे, यह थियेटर है, कोई भरती दफ़्तर नहीं... भरती दफ़्तर और थियेटर के अलग-अलग काम होते हैं — कहिये, क्या ख़याल है आपका? नहीं? अच्छी बात है। फिर चलिये, हम शुरू करते हैं। **(जैसे कोई कविता सुना रहा हो)** आज शाम आप अपना काम रोक दें। नौसैनिकों के हमारे रेजीमेन्ट को, जो रक्त

की अन्तिम बूंद तक अपने मोर्चे पर अडिग रहा था, आपसे, हमारे वंशजों से, कुछ निवेदन करना है।

(धीरे-धीरे भारी गर्जना के साथ मजबूत बख़्तरबंद किवाड़ खुल जाते हैं। निरभ्र आकाश में आग्नेय लालिमा फैली है। उसकी चौंध आंखों को चुभ रही है। सम्पूर्ण पृथ्वी मण्डल सूर्य से आलोकित है। रेजीमेन्ट एक प्राचीन मार्ग पर आगे बढ़ रही है। नौसैनिकों की हिमशुभ्र वर्दियों की चमचमाहट और भी बढ़ जाती है। मार्च करते हुए ये नौसैनिक मंच की रोशनियों के पास आ जाते हैं। अब वे कोरस गायकों के एक विशाल समूह की तरह दर्शकों के सामने आकर खड़े हो गये हैं)

दूसरा प्रवर्तक (गायक मण्डली का मुखिया): इन में प्रत्येक का परिवार था। प्रत्येक की पत्नी थी। वे इन मर्दों से प्रेम करती थीं। इन में से अनेक के बच्चे थे। इनके बच्चे यहां उपस्थित हैं। इन में से प्रत्येक के पास मायावी-सी कोई चीज़ मंडराया करती थी: भावी पीढ़ी। पन्द्रह वर्ष पूर्व वह अस्पष्ट और अनिश्चित-सी थी। पर अब, यहां वह प्रत्यक्ष उपस्थित है। अभिनन्दन! आयी पीढ़ी के लोगो, तुम्हारा अभिनन्दन! हमारे साथी यह नहीं चाहते कि तुम उनके लिए शोक मनाओ। महान गृहयुद्ध के दिनों में अनेक सेनाएं नष्ट हो गयी थीं, किन्तु उसके कारण तुम्हारी धमनियों के रक्त का प्रवाह तो नहीं रुका था। जीवन कभी मरता नहीं। अपने प्रियजनों की कब्रों पर भी लोग हंस लेते हैं, खा लेते हैं। और यह एक अच्छी बात है! अपनी अन्तिम सांस तक ये नौसैनिक यही कहते थे, "ठुड्डियां ऊंची रखो! नज़रें ऊपर उठाओ, इन्क़लाब!" जैसा कि मैंने कहा था, हमारे वारिसो, ये बातें नौसैनिकों की हमारी रेजीमेन्ट तुमसे कह रही है। हमारे साथी तुमसे यह नहीं कहते कि उनकी पुण्य स्मृति में तुम शोक मनाओ। हां, सुचित्त होकर बैठो, सुनो और यह समझने की कोशिश करो कि लड़ने और मिट जाने का वास्तव में उनके लिए अर्थ क्या था। हां, तो प्रारम्भ इस प्रकार हुआ था...

(प्रकाश मद्धिम पड़ जाता है। सायंकाल के उष्ण वातावरण में लम्बी-लम्बी परछाइयां दिखलाई देने लगती हैं। गहरा सन्नाटा है। इस सन्नाटे में जैसे कोई अपरिमित चाह, कोई प्रबल उत्कण्ठा हिलोरें ले रही है। इस चाह और उत्कण्ठा की अभिव्यक्ति केवल संगीत ही कर

सकता है। एक के बाद एक नौसैनिक अपनी रेजीमेन्ट की कहानी बताने लगता है। आरम्भ करता है नन्हा फ़िन वाइनोनेन)

वाइनोनेन: चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा है। एक भी प्राणी ऐसा कहीं नहीं दिखता जो एकाकी नौसैनिक से दो शब्द भी सान्त्वना के कह सके।

(उसकी मायूसी, उसका स्वर, उसकी आंखें—जिनसे बिना किसी स्पष्ट कारण के आंसू बह रहे हैं—हृदय के टुकड़े-टुकड़े कर देती हैं)

धवनि: सावधान! ठीक! एड़ियां जोड़! बन्दूकें कन्धे पर!

(नन्हा फ़िन अपनी बात जारी रखता है)

वाइनोनेन: यह कौन बदमाश है? पुराने ज़माने का कोई मक्कार मालूम होता है। **(उठकर उस दिशा में क्रोधपूर्वक घूरने लगता है जिधर से ध्वनि आ रही है)** बस करो! तीन सौ साल तक तुम्हारी बातें सुनते-सुनते हमारा जी पक गया!

ध्वनि: सावधान!

वाइनोनेन: मैंने कहा न, बस करो!

(उसके बग़ल में खड़ा चेचकरू नौसैनिक उसे शान्त करने की चेष्टा करता है)

चेचकरू: उसकी तरफ़ ध्यान मत दो... उससे परेशान न हो... वह तो अलेक्सेई मनबहलाव के लिए अकेला ही कवायद कर रहा है।

ध्वनि: सावधान!

वाइनोनेन: ओफ़! जैसे इसके बिना परेशानी कम थी!

(वरिष्ठ नौसैनिक अलेक्सेई टहलता हुआ अन्दर आ जाता है)

अलेक्सेई: आह, वाइनोनेन, तुम हो... ऊब रहे हो? लो, मैं तुम्हें ढाढ़स बंधानेवाला था... पर तुम तो नाहक कुड़बुड़ा रहे हो!

(वाइनोनेन एक बड़े चाकू से मेज़ को कुरेदता जा रहा है)

वाइनोनेन : बिलकुल अनुचित है।

अलेक्सेई : क्या अनुचित है?

वाइनोनेन : अपने साथियों की खिल्ली उड़ाना और दुखी करना...

अलेक्सेई : उसमें अनुचित क्या है? और वास्तव में उचित है क्या? तुमने शायद सच्चाई को जान लिया है?

वाइनोनेन : ओहो! तुम तो दार्शनिक बन गये हो!

अलेक्सेई : नहीं, मैं सचमुच जानना चाहता हूं उचित क्या है? **(कटुता से)** पहले मेरे मस्तिष्क में सब कुछ साफ़ था। सब नियम-क़ायदे रटे हुए थे। देश की सेवा करना, मां-बाप की इज़्ज़त करना, प्रेयसी को प्यार करना और नियम से प्रार्थना करना — यह सब उचित है... दिन के प्रकाश की तरह सब स्पष्ट था। और हर वस्तु स्थिर और शान्त थी, मैं एक वरिष्ठ नौसैनिक था और वह भी उचित था। किन्तु अब? अब उचित क्या है?

चेचकरू : आख़िर चाहते क्या हो?

अलेक्सेई : मैं सत्य को तलाश रहा हूं।

चेचकरू : जैसे कि अकेले तुम्हीं उसको तलाश कर रहे हो!

अलेक्सेई : मैं भी यंत्रणा सहता हूं, चैन नहीं ले पाता, सोचता रहता हूं, थोड़ा पी लेता हूं और सब कुछ भूलने की चेष्टा करता हूं, किन्तु रात होते ही फिर मैं उन्हीं दुश्चिन्ताओं में उलझ जाता हूं... बोलो, तुम्हीं बताओ, अब उचित क्या है?

वाइनोनेन : अभी एकदम नहीं। कुछ वर्षों की देर है। तब हर चीज़ ठीक हो जायेगी। इसी को लेकर तो आज लोग आन्दोलित हैं।

अलेक्सेई : हो जायेगा? "वह दिन आयेगा" — इंजील के वायदे की तरह... जीवन में एक बार सुनना चाहता हूं कि — हो गया; होगा-होगा सुनते-सुनते थक गया हूं। समझ रहे हो? लोग हमेशा भविष्य की बात करते हैं... अच्छी बात है, मान लो कि भविष्य में सब कुछ सुन्दर ही होगा। पर उसके लिए भी जो मारे जाते हैं?

वाइनोनेन : उन्हें चिर सम्मान और गौरव प्राप्त होगा।

अलेक्सेई : सान्त्वना के लिए धन्यवाद।

वाइनोनेन : इसमें व्यंग की कोई बात नहीं है और तुम मूर्ख हो! जो मारे जाते हैं, वे इनसानों की तरह मरते हैं। पहले वे कीड़ों-मकोड़ों, भेड़-बकरियों की तरह टके-टके पर मरते थे...

अलेक्सेई : अब समझा। तो भविष्य में सब कुछ बढ़िया होनेवाला है?

वाइनोनेन : हां। **(वह किसी हद तक शान्त हो गया है, फिर भी उसके स्वर में अब भी रोष और उपेक्षा का पुट मौजूद है)**

अलेक्सेई : तो भविष्य में किसी भी चीज़ के लिए संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं रहेगी, यही न? मानवजाति निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच गई। यही उसका अन्तिम पड़ाव है। सब लोग उतर जाएं। भविष्य नामक स्टेशन आनेवाला है... आप लोग अपनी अंगुलियों से उसे छू सकते हैं क्या?

चेचकरू : यदि हम नहीं, तो दूसरे अवश्य वहां पहुंच जायेंगे।

अलेक्सेई : बकवास है! कोई कभी कहीं नहीं पहुंचता। न हम, न कोई और। चलते रहो, बस चलते रहो। यही है इस दुनिया का क्रम। अन्तिम लक्ष्य तक न आज तक कभी कोई पहुंचा है, न कभी पहुंचेगा। यह एक महान खोज है जिसे नौसैनिक अलेक्सेई ने किया है। इसे लिखकर रख लो। **(बाहर चला जाता है)**

चेचकरू : इससे भी कोई क्या बहस कर सकता है!

वाइनोनेन : कोई न कोई उसे ठीक करेगा।

चेचकरू : कहां से आ टपका है?

वाइनोनेन : प्रशान्त महासागर से। अमरीका हो आया है। बहुत घूमा है।

चेचकरू : वह जीवन के बारे में सोचता रहता है।

वाइनोनेन (उपेक्षा से) : अराजकतावादी है।

(नन्हा फ़िन चुप बैठा है। गोधूलि की बेला में नाविक उदास इधर-उधर आ-जा रहे हैं। कोई कोयला झोंकनेवालों का दर्द भरा एक गीत गाने लगता है: "एक खलासी दूसरे से कहता है: अब मुझ में और अधिक काम करने की शक्ति नहीं रह गयी है। मेरी भट्ठी में कोयला अब पहले की तरह नहीं जलता। बॉयलर भाप चाहते हैं..."
अलेक्सेई जोश से दौड़ता आता है। उसे देखकर सब ठिठक जाते हैं)

अलेक्सेई (क्रोध से) : ए, नौसैनिको! अराजकतावादियो! ख़तरा!

वाइनोनेन : क्यों? क्या हुआ?

लम्बा नौसैनिक : ख़तरा?

चेचकरू : ख़बरदार!

(लोगों में उत्तेजना फैल जाती है। वे सब अलेक्सेई को घेरकर पूछते हैं: "क्या बात है? क्या हुआ?")

अलेक्सेई (सभी की तरफ़ पीठ करके): हमारे लिए भी एक कमिसार आ गया।

लम्बा नौसैनिक: बहुत ज़रूरी था।

वाइनोनेन: अब वह बतलायेगा जीवन क्या है।

(नौसैनिकों में से एक अब क्रोध से चिल्ला उठता है: "तो उन्हें अब हमारे ऊपर विश्वास नहीं रहा?" वे जिन लोगों को दोषी समझते हैं उनकी ओर धमकी-भरी नज़र से देखते हैं। अचानक उत्तेजित कोलाहल थमने लगता है, लोगों में एक परिवर्तन आ जाता है, वे शान्त हो जाते हैं, वे पीछे की ओर हटकर उस लाल चेहरेवाले, चौड़े कन्धे के अक्खड़-से प्राणी की ओर देखने लगते हैं जो उनकी ओर एक-एक क़दम धीरे-धीरे बढ़ता आ रहा है। उसके सामने वे सब विनीत बन जाते हैं। वह उनका सरगना है। उसकी शान्त आवाज़ उस ख़ामोशी में प्रभावशाली ढंग से गूंज उठती है)

सरगना: यह शोर क्यों?

मेमियाहा: बोलते क्यों नहीं?

अलेक्सेई: हमारे लिए एक कमिसार भेजा गया है।

सरगना: इसके लिए इतने हंगामे की क्या ज़रूरत? उसे किस पार्टी ने भेजा है?

अलेक्सेई: सत्ता दल ने। बोल्शेविकों ने।

सरगना: आदी हो जायेगा। हम उसे सिखला देंगे।

(क्रोध से तने हुए ख़ामोश पुरुषों के इस समूह में अचानक एक स्त्री न जाने कहां से आ प्रकट होती है। इस स्थान पर उसकी उपस्थिति बड़ी विचित्र और अविश्वसनीय लगती है। यह सारे नियमों के विरुद्ध है। लगता है कि ये रूक्ष, उजड्ड लोग जो कुछ कहेंगे उससे उसे ऐसा धक्का लगेगा जिससे वह सम्भल नहीं पायेगी। वे आंखें फाड़-फाड़कर उसकी ओर देखते हैं, किन्तु बोलते कुछ नहीं)

अलेक्सेई: मैं सलाह दूंगा कि इस कमिसार को...

सरगना: मुझे सलाह देने की ज़रूरत नहीं!

(**ख़ामोशी**)

ज़रूरत से ज़्यादा शोर करते हो।

(स्त्री समझ जाती है कि प्रधान कौन है। वह सीधे उसके पास जाकर अपना परिचय-पत्र उसे देती है। सरगना पत्र को पढ़ता है, ऊपर नज़र उठाता है, फिर पढ़ने लगता है)

तो आपको हमारा कमिसार बनाकर भेजा गया है?

(स्त्री जिस प्रकार सिर हिलाकर स्वीकृति व्यक्त करती है उससे स्पष्ट हो जाता है कि यही बात है और इसमें अब शक या बहस की गुंजाइश नहीं है। इस बीच एक नौसैनिक इस आकस्मिक धक्के से कुछ-कुछ संभलने लगता है। उसके मुंह से एक आश्चर्य भरा "अ-हा!" निकल जाता है। सरगना धीरे से उसकी ओर घूमकर उसके मुंह पर अपना हाथ रख देता है)

सरगना: तो आप सोशल-डेमोक्रेट हैं? बोल्शेविक?

स्त्री: जी।

सरगना: बहुत दिनों से?

सत्री: १६१६ से।

सरगना: ठीक है। आप काम शुरू कर दें... **(नौसैनिकों से जो उसके समीप आते जा रहे हैं)** जाओ, भीड़ न लगाओ!

(धीरे-धीरे वे लोग वहां से हट जाते हैं, मुड़-मुड़कर वे स्त्री की ओर देखते जाते हैं)

आपका सामान... शायद कोई मदद?

चेचकरू: अब कुली नहीं रह गये हैं।

स्त्री: मैं ख़ुद उठा लाऊंगी।

(वह अकेली रह जाती है। चारों ओर निस्तब्धता और कौतूहल का वातावरण है। एक ओर से एक आदमी आता है। उसे देखकर स्पष्ट हो जाता है कि ज़ारशाही नौसेना का वह कोई भूतपूर्व अफ़सर है। वह भौंचक है—हो क्या गया है? वह स्त्री की सहायता के लिए आगे बढ़ता है)

अफ़सर: मैं पहुंचा देता हूं? **(वह आगे बढ़कर उसका छोटा-सा बैग**

उठा लेता है। यह जानने के लिए बेचैन है कि वह कौन है, कहां से आयी है, और यहां कैसे आ पहुंची अपनी आवाज़ धीमी करते हुए) क्या आप किसी अफ़सर से मिलने आयी हैं?

स्त्री: मैं...

अफ़सर (सम्मानपूर्वक झुककर): लेफ़्टीनेन्ट बैरिंग। **(आत्मीयता और हैरानी से)** मुझे इस जहाज़ का कैप्टन नियुक्त किया गया है। **(अपनी टोपी उतारकर उसके हाथ को जबरन ही पकड़कर वह अपने होंठों से लगाता है)**

स्त्री: मुझे कमिसार बनाकर आपके पास भेजा गया है। बेहतर हो, आप इन घिसी-पिटी आदतों को छोड़ दें।

(स्त्री ने आधिकारिक सादगी से कहा, पर अफ़सर को न तो उसकी बात से कोई आश्चर्य होता है, न इस परिस्थिति से परेशानी ही। वह शान्तिपूर्वक सीधा खड़ा हो जाता है, टोपी सिर पर रख लेता है और उसे सैलूट करता हुआ कहता है)

अफ़सर (अब उसकी वाणी में शिष्टता का वह पुट नहीं है जो शुरू-शुरू में उसने प्रदर्शित किया था): कैप्टन बैरिंग ड्यूटी पर हाज़िर है।

(कहीं से शोर-गुल भरी आवाज़ें सुनकर वे दोनों उसी दिशा में देखने लगते हैं। नन्हा फ़िन अपने चाकू को खोले हुए मंच पर आ जाता है। दूसरे नौसैनिक आगे बढ़ रहे हैं)

वाइनोनेन: ख़बरदार... ख़बरदार... **(स्त्री की ओर इशारा करते हुए)** तुम इस पर भी क़ब्ज़ा करना चाहते हो? कुत्ते कहीं के!

(अलेक्सेई और उसके साथी धमकाते हुए उसकी ओर बढ़ते हैं। चुपचाप, केवल अपनी आंखों और होंठों से वे उसे डराने की कोशिश करते हैं। वह खुला चाकू हाथ में लेकर स्त्री की रक्षा के लिए उसके सामने आ जाता है। वे लगभग आमने-सामने खड़े हो जाते हैं)

हम तुम्हें इन्हें हाथ नहीं लगाने देंगे!

(फ़िन मदद के लिए भाग दौड़ा। स्त्री स्वयं भी सतर्क है)

अफ़सर : क्या यह कोई राजनीतिक मामला है? शायद मेरी उपस्थिति की यहां ज़रूरत नहीं?

(अलेक्सेई अफ़सर की तरफ़ ध्यान ही नहीं देता। उसके लिए वह महत्त्वहीन है। वह आगे बढ़कर स्त्री के सामने आ जाता है)

अलेक्सेई : चलो, साथी, हम लोग शादी कर लें। तुम्हें इतनी हैरानी क्यों हो रही है? प्रेम बहुत बढ़िया चीज़ है। हम लोग मानवी नस्ल बढ़ाने में मदद देंगे और साथ ही कुछ मज़ा भी लूट लेंगे।

अफ़सर : यह सब क्या हो रहा है? **(नौसैनिक से)** सुनो, ए!

कमिसार : साथी कैप्टन, हम लोग ख़ुद ही निबट लेंगे। इस साथी की शादी की समस्या में दिलचस्पी है।

(अफ़सर की समझ में कुछ नहीं आता कि यह हो क्या रहा है। उसकी बात मानकर वह चुपचाप वहां से चला जाता है)

अलेक्सेई : चलो, सदर दफ़्तर से आयी हुई साथी डिप्टी, चलो, हम लोग थोड़ी प्यार-मुहब्बत करें। जल्दी करो, नहीं तो जो लोग मेरे पीछे क्यू लगाये खड़े हैं वे उतावले होने लगेंगे। हम लोगों की संख्या काफ़ी जो है।

(कमिसार की दिलचस्पी जो कुछ वह कह रहा है उसमें न होकर, जो कुछ हो रहा है उसमें है)

हां, तो?

(अराजकतावादी चारों तरफ़ से बाहर निकल आते हैं। उनकी हरेक हरकत पर कमिसार की नज़र है। वह पूर्णता सतर्क है)

दूसरा नौसैनिक (कमिसार से) : "सुगंधित बकाइन तले सारी रात हम आलिंगन करेंगे ..."

(लोगों के मुंह से दबी-सी हंसी फूट पड़ती है)

चलो, देवी जी, मर्दों को जीवनदान दो!

तीसरा नौसैनिक : यह क्या बकवास है! मैं तो समझ रहा था कि तुम लोग मज़े कर रहे हो **(हाथ में एक चादर लिए है)** फिर देर क्या है? लेट जाओ!

कमिसार : साथियो ...

अलेक्सेई (नक़ल करते हुए): पानी उबालकर पियो।

कमिसार: साथियो...

दूसरा नौसैनिक (धमकाते हुए): तुमने समझ क्या रखा था? तुम यहां किनके पास आयी हो?

(अचानक एक विशालकाय आदमी डेक के ऊपर आ जाता है। उसके अर्धनग्न शरीर पर बेशुमार गोदने गुदे हैं। ख़ामोशी छा गयी)

कमिसार: यह क्या मज़ाक़ है? आप लोग मेरे धैर्य की परीक्षा ले रहे हैं?

गोदनेवाला नौसैनिक: हम मज़ाक़ नहीं करते **(वह कमिसार पर कूद पड़ता है)**

कमिसार: और न हम करते हैं।

(कमिसार की रिवाल्वर से एक गोली निकलकर उस जानवर के पेट में घुस जाती है। भौंचक नौसैनिक एकदम पीछे हट जाते हैं)

बोलो, कमिसार के जिस्म को और कौन हाथ लगाना चाहता है? तुम? या शायद तुम? या तुम? **(तेज़ी से सोचते हुए कि आगे क्या करना है, वह रिवाल्वर हाथ में लिये हुए नौसैनिकों की भीड़ की तरफ़ बढ़ती है जिससे कि वे उस पर जवाबी हमला न कर सकें)** और कोई नहीं? क्यों, क्या हुआ? **(ज़ोर से धक-धक करते अपने दिल को शान्त करने के लिए थोड़ी देर रुककर वह अत्यन्त आत्म-नियंत्रण के साथ कहती है)** अब सुनो — मैं एक पूर्णतया सामान्य और स्वस्थ स्त्री हूं। मुझे जब पुरुष की आवश्यकता होगी तो मैं ख़ुद मामला तय करूंगी। घोड़ों की किसी घुड़साल की ज़रूरत मुझे नहीं है।

चेचकरू (ख़ुशामदी लहजे में): ठीक तो है...

(वाइनोनेन तेज़ी से दौड़ता हुआ आता है। उसके साथ एक लम्बा नौसैनिक, बुज़ुर्ग नौसैनिक और दो अन्य लोग हैं)

वाइनोनेन: डरना मत, कमिसार! ये आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे!

कमिसार: अब सब ठीक है।

(आहिस्ता से सरगना आ जाता है। सारे जहाज़ी उसकी ओर देखने लगते हैं। पूर्ण निस्तब्धता छा जाती है। लोग आंखों ही आंखों में कुछ

सवाल-जवाब देते हैं। निर्जीव शरीर सामने पड़ा है। बिना कोई टीका-टिप्पणी किये सरगना उसे एक लात मारता है। शरीर लुढ़ककर जहाज़ के विपट द्वार से नीचे गिर जाता है। उसके गिरने से सीढ़ियों पर धप-धप की आवाज़ होती है। सरगना कमिसार की ओर देखता है)

सरगना: माफ़ कीजियेगा—वह एकदम गुण्डा था।

अलेक्सेई: आओ, चलें।

कमिसार: कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य और हमदर्द रुक जायें।

मेमियाहा: रुक नहीं सकते। हम ख़ुद अपनी मीटिंग करने जा रहे हैं। **(बिना कुछ और कहे वह उन लोगों को चलने के लिए ढकेलता है जो कमिसार के शब्द सुनकर रुक गये हैं। वह लम्बे नौसैनिक को आगे की ओर ढकेलता है। लम्बे नौसैनिक के चेहरे पर घृणा और उपहास के भाव हैं)** तो एक हमदर्द मिल ही गया, क्यों जी?

लम्बा नौसैनिक: सिर्फ़ एक नहीं।

(मेमियाहा और उसका सहायक जहाज़ियों की भीड़ को वहां से भगा देते हैं। सिर्फ़ वह नन्हा फ़िन उनकी अवहेलना करके दृढ़ता से जमा रहता है। विशाल खाली डेक पर वह अकेला रह जाता है)

कमिसार: तुम अकेले हो?

वाइनोनेन: कमिसार, तुम भी तो अकेली हो, न?

कमिसार: पार्टी के साथ रहना क्या अकेले रहना होता है?

(रेजीमेन्ट के कनिष्ठ अफ़सर आते हैं)

पहला कनिष्ठ अफ़सर: अब मैं तुम में से हर एक से पूछता हूं: उन दिनों लाल सेना और नौसेना में कितने कम्युनिस्ट थे? याद करने की कोशिश करो। तुम लोगों ने तो उस वक़्त लड़ाई में हिस्सा लिया था!

(ख़ामोशी)

२ लाख ८० हज़ार। पार्टी के कुल सदस्यों की आधी संख्या। पार्टी के आधे सदस्य मोर्चे पर गोलियों का सामना कर रहे थे। गोलियों का सामना कर रहे थे। वे शहरों में, स्तेपी में और जंगलों में गोलियों का मुक़ाबला कर रहे थे, क्योंकि वर्ग-युद्ध में "पांतों के पीछे" जैसी कोई चीज़ नहीं होती। घायल कम्युनिस्टों की सूची में व्लादीमिर लेनिन का

नाम था और मृतकों की सूची में थे — वोलोदार्स्की और उरीत्स्की, २६ कमिसारों तथा स्थानीय पार्टी संगठनों के सारे नेताओं के नाम। किन्तु आघातों से पार्टी क्या कभी भी डगमगाई थी?

दूसरा कनिष्ठ अफ़सर : ऐसी जुझारू पार्टी को भला कौन रोक सकता है! यह बहादुर कर्मवीरों की एक ऐसी पार्टी है जो सम्पूर्ण मज़दूर वर्ग को आन्दोलित कर सकती है। ऐसी पार्टी जिसने एक नये देश का निर्माण किया है — मानवजाति के समस्त श्रेष्ठतम तत्त्वों का विशाल शिविर। यह एक ऐसी पार्टी है जिसने पुरानी दुनिया की ताक़तों के ख़िलाफ़ रक्त-रंजित और रक्तहीन, हिंसक और अहिंसक, हर तरह के संघर्ष में सर्वहारा वर्ग को एकजुट किया है।

(ख़ामोशी)

यदि कोई ऐसे लोग हैं जो इस तरह की पार्टी के विरुद्ध, हमारे देश के विरुद्ध हथियार उठाते हैं तो उनका सफ़ाया कर दिया जायेगा।

(मंच ख़ाली है। सरगना प्रवेश करता है। उसके साथ मेमियाहा और अलेक्सेई हैं। दारुण नीरवता छाई है। सब सतर्क प्रतीत होते हैं)

अलेक्सेई : उसके इर्द-गिर्द कुछ समर्थक इकट्ठे होने लगते हैं...

मेमियाहा : हम उन सबका सफ़ाया कर लेंगे... शि... फ़िन आ रहा है **(वहां से जाते हुए फ़िन से)** अबे, ओ पार्टी मेम्बर के बच्चे, इधर तो आ।

वाइनोनेन : फ़र्माइये। आपकी मीठी ज़बान मुझे बहुत प्यारी लगती है। "गाओ, प्यारे, डरना मत..."

मेमियाहा (क्रोध को पीते हुए) : तुमसे क्या कह रही थी वह?

वाइनोनेन (अवज्ञा से) : बहुत-सी बातें। **(मुस्कराता हुआ धीरे-धीरे वहां से चला जाता है। थोड़ी देर में उसकी पदचाप ख़ामोश पड़ जाती है)**

अलेक्सेई : छोकरी पागल है!

मेमियाहा : उसकी बोटी-बोटी काटके कुत्तों को खिला दो!

सरगना : अबे गधे, ज़बान संभाल!

(ख़ामोशी)

उसे जो भी हाथ लगाने की कोशिश करेगा उसका यही हाल होगा। **(हाथ**

से अपना गला काटने का अभिनय करता है) कुत्तों को खिला दो? उसकी जगह वे फिर किसी और को भेज देंगे। क्या इतनी अक्ल भी नहीं है? **(उधेड़बुन में पड़ जाता है)** उसे सब चाहने लगे हैं—मार्के की है यह औरत।

अलेक्सेई: यह राय तुम्हारी कब से बनी?

सरगना (उत्तर देने की परवाह किये बिना): वह बहुत होशियार है। उसकी आंखों से ही तुम देख सकते हो कि वह समझदार है। उसमें वह चीज़ ख़ूब है जिसकी अराजकतावादियों को सख़्त ज़रूरत है... इच्छा-शक्ति भी।

अलेक्सेई: मैं उसे रास्ते पर लाने की कोशिश करूंगा।

मेमियाहा (व्यंग से हंसता हुआ): बिलकुल ठीक! जाओ और क्रोपोतकिन का कोई पैम्फ़लेट उसे पढ़ाने की कोशिश करो।

कमिसार (आकर और वस्तुस्थिति को समझते हुए): साथियो, अपने मीटिंग में मुझे क्यों नहीं बुलाया? अब चूंकि सब यहां इकट्ठे हैं, नये कमाण्डर को भी यहीं बुलवा लीजिये। कौन बुलाने जा रहा है?

(ख़ामोशी)

(विपट द्वार में किसी को देखकर पूछती है) क्या नीचे कोई है? **(सफ़ेद बालों वाला एक भारी-सा आदमी ऊपर आता है)** यहां आओ। साथी, आप कौन हैं?

डेकसारन (बेमन से): डेकसारन।

(मेमियाहा ने मुस्करा दिया)

कमिसार: डेकसारन? लेकिन यह न तो डेकसारन की आवाज़ है और न उसका तरीक़ा। एक बार फिर—आप कौन हैं?

डेकसारन (उसकी आवाज़ में अधिकार का स्वर पहचानते हुए): साथी कमिसार, मैं "सम्राट पावेल प्रथम युद्धपोत" का एक भूतपूर्व डेकसारन हूं।

(अलेक्सेई आश्चर्य से कुछ बड़बड़ाने लगता है)

कमिसार: अब पता चला कि आप नौ अधिकारी हैं। कृपया नये कमाण्डर को बुला लाइये।

डेकसारन: जी। **(नज़र बचाकर सरगना की तरफ़ देखता है)**

कमिसार: तो?

(सरगना सिर हिलाता है जैसे कि कह रहा हो—इजाज़त है)

डेकसारन: अभी बुला लाता हूं। **(जाता है)**

मेमियाहा (कमिसार से): हमारी ज़रूर पटेगी।

कमिसार: हां।

मेमियाहा: स्त्री लिंग का हम पर नैतिक प्रभाव पड़ रहा है।

कमिसार: मैं भी यही देख रही हूं।

(कैप्टन प्रवेश करता है। वह कुछ सैलूट जैसा करता मालूम पड़ता है) साथियो, यही हमारे कैप्टन हैं। **(लोग एक दूसरे की ओर वैमनस्यता से देखते हैं। मन ही मन वे कुछ बुदबुदाते हैं, फिर अन्यमनस्क भाव से हाथ हिलाते हैं)** अब हम आज के काम को लें। **(कैप्टन से)** हमें जो आदेश मिला है उसे पढ़कर सुनाइये।

कैप्टन (जेब से एक छोटी-सी पुर्ज़ी निकालकर ज़ोर से उसे पढ़ते हुए): "आदेश: तथाकथित आज़ाद अराजकतावादी-क्रान्तिकारी टुकड़ी से सम्बन्धित नौसैनिकों के जत्थे को आज से ख़त्म किया जाता है। उसकी जगह तीन बटालियानों की एक रेजीमेंट क़ायम की जायेगी। इस रेजीमेंट का नाम होगा: 'नौसैनिकों की प्रथम रेजीमेंट'।" **(पुर्ज़ी को मोड़कर रख लेता है)** इस रेजीमेंट की कमान मेरे हाथ में होगी।

अलेक्सेई (आवेग से आगे की ओर बढ़कर): आपको पता है कि उराल के क्षेत्र में सम्राट निकोलाई द्वितीय का क्या हाल हुआ था?

कमिसार: वक़्त मिलते ही इसके बारे में विस्तार से मैं आपको बताऊंगी। **(कैप्टन से)** यह साथी बड़ा जिज्ञासु है। आपको याद होगा पिछली बार शादी की समस्या में इन्हें दिलचस्पी थी। **(अलेक्सेई से)** उस वक़्त आपको जो जवाब मिला था उससे आप सन्तुष्ट थे न?

(ख़ामोशी)

फ़िलहाल इतना ही काफ़ी होगा। टुकड़ी के अन्दर शक्ति और ऊर्जा की अत्यधिक प्रबलता दिखाई देती है—अब से हम इसे रेजीमेंट कहेंगे। **(अलेक्सेई से)** आप मुझसे सहमत हैं न? ऐसे समय में जबकि हमारा देश और हमारी क्रान्ति ख़तरे में हैं, यौन सम्बन्धी समस्याओं पर बहस करके समय ही बर्बाद करना होगा।

(ख़ामोशी)

कल हमें हमला करना है—यह इत्तिला उस आदेश के अलावा है जो अभी पढ़कर आपको सुनाया गया था। **(सरगना से)** मुझे आशा है कि आपका अनुभव मोर्चे पर काम आयेगा। **(कैप्टन से)** तैयारियां शुरू कर दीजिये। अब आप सब जा सकते हैं।

कैप्टन: जो आज्ञा।

कमिसार: डेकसारन, आप भी जा सकते हैं।

डेकसारन (सरगना की ओर देखते हुए): जो आज्ञा।

(ख़ामोशी। इन लोगों के चले जाने के बाद सरगना खड़ा हो जाता है और कमिसार के पास आ जाता है)

सरगना: अब हम थोड़ी बात कर लें?

कमिसार: आइये, बैठिये।

(जो चार आदमी रुक गये थे वे मेज़ के इर्द-गिर्द बैठ जाते हैं। सब चुप हैं। वातावरण में तनाव है)

अलेक्सेई: हम ने बात की है। आपकी केन्द्रीय समिति ने कमिसार के लिए ग़लत व्यक्ति का चुनाव किया है। नौसेना के लिए आप ठीक नहीं हैं। सेना की बात दूसरी है।

कमिसार: मैं सेना में भी काम कर चुकी हूं।

(सरगना, मेमियाह्रा और अलेक्सेई एक दूसरे की ओर देखते हैं)

मेमियाह्रा: तो यह बात है?

अलेक्सेई: आपकी उम्र अभी बहुत कम है। जिस समय आपकी धाय गोद में लेकर आपको खिलाती थी, उस समय **(सरगना की ओर घनिष्ठता तथा सम्मान से इंगित करते हुए)** ये सज्जन किसानों को भड़काने के जुर्म में जेल काट रहे थे...

(ख़ामोशी, जिसमें चारों व्यक्ति इस कथन के प्रभाव को समझने की चेष्टा कर रहे हैं)

बहुत कठिन है—कृपया मेरी बात का ग़लत अर्थ न लगायें, हमें ग़लत न समझें—लेकिन इस फ़र्क़ को न देखना बहुत ही कठिन है: तुम

(उसकी ओर इशारा करता है) और हम लोग। **(अपनी और अपने साथियों की तरफ़ इशारा करता है; फिर उठकर सीधा तनकर खड़ा हो जाता है। वह ऊंचा क़द्दावर आदमी है)** फ़र्क़ को देखो—मेरा मतलब है तुम्हारे और हमारे बीच जो फ़र्क़ है, उसे। हम लोग आवारा हैं, ख़ानाबदोश—अच्छे, सिर्फ़ नौसैनिकों के अर्थ में। हम लोग सारी दुनिया के चक्कर लगा आये हैं, जेलों से भाग चुके हैं, लड़ाइयों में जूझ चुके हैं, युद्धबन्दी बनाये जा चुके हैं...

मेमियाहा (कमिसार की बांह छूते हुए): दो-दो बार फिरंग रोग के शिकार हो चुके हैं...

कमिसार: इससे क्या हुआ? काम तो उन्हीं लोगों से लेना है जो हमारे पास हैं, न कि उनसे जो हमें अच्छे लग सकते हैं। लेकिन कुल मिलाकर हमारी रेजीमेन्ट में जो लोग हैं वे अच्छे हैं—अच्छे योद्धा... ऐसे लोग जिन्होंने...

अलेक्सेई: ... जिन्होंने चाटुकारी करना छोड़ दिया है, जो अब किसी को भी सलामी नहीं देंगे... **(नक़ल करते हुए)** "जी, साथी कमिसार"। "सब ठीक है, साथी कमिसार"। "माफ़ कीजियेगा, साथी कमिसार"। "हुर्रा, साथी कमिसार" ...हो सकता है, तुम यही सब चाहती हो?

मेमियाहा (घनिष्ठता से कमिसार की बांह को फिर स्पर्श करते हुए): हमारी ज़िन्दगियां टेढ़ी-मेढ़ी और कुचली हुई हैं। जेलों और बारिकों में वे पिस चुकी हैं... हमारे जिस्म गोलियों से छलनी हैं, हमारे पोर-पोर में शराब समा गयी है, और अब हमें आहार में आप भले लोगों की दलिए की खुराक दे रही हैं... देवी जी, अब आप हमें क्या सिखाने की कोशिश कर रही हैं? पृथ्वी पर ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसकी हम अपने मन-मुताबिक़ कोई अधिक ख़्वाहिश करते हों। हम चाहते हैं कि इसी तरह हम ज़िन्दगी काट लें। फिर जब वक़्त आये तो गोली हमारे सिर को पार कर जाये और हमारी आत्माओं को शान्ति मिले। **(क्षण भर के लिए वह चुप हो जाता है)** ठीक है, यहां **(अपने गले की हड्डी के नीचे छूते हुए)**, यहां एक छोटी-सी जगह है जिसकी यह कामना है कि लोग कुछ अच्छी तरह रह सकें, उनका शारीरिक और आत्मिक उत्थान हो सके। लेकिन जब हमारे मरने का वक़्त आया तो आप हमें सिखायेंगी, डांट-डपटकर रास्ते पर लगायेंगी।

कमिसार : आप लोग मुझे कुछ सिखा सकें तो मैं उसे सहर्ष सीखने के लिए तैयार हो जाऊंगी।

सरगना : यह बात बड़ी अच्छी है। शायद एक छोटी-सी चीज़ तुम हमें समझा दो। अपना जीवन क़ुर्बान करने के लिए हम तैयार हैं या नहीं? तैयार हैं। फिर क्या यह विचित्र बात नहीं कि तुम्हारी वह पार्टी जिसके हाथ में सत्ता आ गयी है, हमारे सामने अब शर्तें रखती है—लक्ष्य के लिए जो लोग कुर्बानियों के लिए तैयार हैं उनके सामने आपकी पार्टी शर्तें रखती है! आखिर इसे तुम क्या कहोगी?

कमिसार : मैं इसे स्वाभाविक चीज़ मानती हूं। हम जानते हैं कि हम कहां जा रहे हैं और कैसे वहां जाया जा सकता है। और यही वजह है कि जिससे हम शर्तों को रखते हैं और उन्हें लोग स्वीकार कर लेते हैं। यदि लोग उन्हें न मानें तो हम उन्हें जबरन नहीं मनवा सकते!

अलेक्सेई : शायद आप हमें यह भी सिखायेंगी कि मरा कैसे जाये?

कमिसार : अगर ज़रूरत हुई तो।

सरगना (बात का लहजा बदलते हुए) : हटाइये भी... मेरे आदमियों ने जिस तरह आपकी आवभगत की है उससे नाराज़ मत होना। आपको देखकर वे सकते में आ गये थे।

कमिसार : मुझे कोई शिकायत नहीं है। बीती ताहि बिसारिये...

अलेक्सेई (झटके से उठते हुए) : यहां सच कौन बोल रहा है? **(अपने साथियों को सम्बोधित करते हुए)** तुम लोग? **(कमिसार से)** या आप? या मैं? सब फ़रेब है! **(सरगना से)** आप झूठ बोल रहे हैं और **(कमिसार से)** और यही आप कर रही हैं... इधर सुनिये। ज्यों ही आप आयीं त्यों ही उसने **(सरगना की ओर इंगित करते हुए)** हमें बुलाया और कहा: "जाओ और उसके होश ठीक कर दो।"

सरगना (क्रोध को मुस्कराहट से छिपाते हुए) : छोड़िये, यह मज़ाक़ कर रहा है।

कमिसार : यह तो स्पष्ट है।

अलेक्सेई : मज़ाक़ कर रहा हूं? मेरी इच्छा है कि कोई बड़ा-सा चाकू मिल जाये तो मैं अपनी खोपड़ी को खोलकर दिमाग़ की अच्छी तरह सफ़ाई कर लूं... तुम लोग कूड़ा हो, तलछट हो, तुम्हारे बीच मुझे कौन भली चीज़ मिल सकती है! **(थोड़ी देर रुककर, कमिसार से)** और तुम, तुम भी किसी चालाक लौंडी से कम नहीं हो! तुम्हें और तुम्हारी

साज़िशों को मैं ख़ूब समझता हूं। कैसे मज़े से बैठी हुई हो—इतनी बुद्धिमान, इतनी शान्त! कहती हो, "मैं तुमसे सीखना चाहती हूं..." तुम्हारी चालों से हम परिचित हैं। तुम भी उतना ही झूठ बोलती हो जितना कि ये लोग! चालबाज़! हम अपनी आंखों से देख चुके हैं कि नौसैनिकों को तुम कैसे गोली मारती हो! धायं! और वह तड़पकर ठंडा हो गया।

कमिसार (सरगना से): बेचैन साथी। **(अलेक्सेई से)** क्या आप अराजकतावादी पार्टी के सदस्य हैं?

अलेक्सेई: मैं अपनी सहजबुद्धि की पार्टी का मेम्बर हूं। मेरी कोई पार्टी नहीं... **(हमलावर ढंग से आगे की ओर बढ़ते हुए)** आप अपने को समझती क्या हैं, क्यों? शीत प्रासाद पर जब हमने क़ब्ज़ा किया था तब क्या हमसे किसी ने पूछा था कि हम किस पार्टी के सदस्य हैं?

मेमियाहा (अलेक्सेई को एक तरफ़ को हटाते हुए): देवी जी, सारी बात एक दूसरे को जान लेने की है। देखिये, आप यहां यह सोचकर आयी थीं कि हम नौसैनिक फालतू आवारा हैं जो अपने सुथनों को फड़फड़ाते घूमते हैं। और वास्तव में इन चीज़ों को आजकल पहनता ही कौन है, सिर्फ़ दूधमुंहे बच्चे। लेकिन हम सब ख़ूसट बूढ़े हैं जो जापानी लड़ाई में हिस्सा ले चुके हैं, त्सुसीमा में लड़ चुके हैं...

कमिसार: यह तो और भी अच्छी बात है। **(उठते हुए)** मेरा ख़याल है कि हम लोगों की अच्छी तरह निभ जायेगी।

सरगना: यह आवश्यक है, क्यों? **(बड़े आदमी के ढंग से अपना हाथ आगे बढ़ाता है)**

कमिसार: हमारी ज़रूर पटेगी। शर्त सिर्फ़ एक है: हर चीज़ ईमानदारी से और साफ़-साफ़ की जाये।

(उसी तनावपूर्ण वातावरण में वे हाथ मिलाते हैं। उनकी नज़रें एक दूसरे के अनुभावों को समझने की कोशिश करती हैं। अलेक्सेई ध्यान से देखता है। कमिसार बाहर चली जाती है और वे तीनों उसकी तरफ़ देखते रहते हैं। थोड़ी देर में उसके पैरों की आहट भी बन्द हो जाती है)

मेमियाहा: पर यह चीज़ तो है न?

सरगना (अलेक्सेई से): जानते हो, जो आदमी किसी मूर्ख की तरह बहुत बोलता रहता है उसका हश्र क्या होता है?

अलेक्सेई: और तुम जानते हो, उस आदमी का हश्र क्या होता है जो धोखाधड़ी करता है? तुमने उससे हाथ मिलाया था, नहीं? कह रहे थे न कि उसके साथ मिलकर काम करोगे?

सरगना (अर्थपूर्ण ढंग से): चाल है। आज तुम्हें हो क्या गया है, अलेक्सेई? दोस्त, मेरे ऊपर भरोसा करो। मैं तुमसे अपने सगे भाई की तरह कहता हूं—अपने विचारों के लिए तुम और मैं अन्त तक साथ-साथ लड़ते रहेंगे! **(अलेक्सेई को छाती से लगाता है। चेहरा गम्भीर कर लेता है और उसका मुंह चूमता है)**

(अलेक्सेई उसकी तरफ़ देखता रहता है। वह समझ नहीं पाता कि उसका विश्वास करे या न करे। फिर वह सिर हिलाता हुआ बाहर चला जाता है। मेमियाहा कुछ क़दम उसके पीछे-पीछे जाता है, फिर रुक जाता है और जब तक स्पष्ट नहीं हो जाता कि वह चला गया है तब तक उसके पैरों की आहट सुनता रहता है)

इन दोनों में से किसी का विश्वास न करना—न उसका और न इसका। **(मुंह बनाता है जैसे उबकाई आ रही हो। फिर ओंठ पोंछकर)** छिः छिः! मैंने उस गन्दे ढेर को चूम लिया।

मेमियाहा: मैं किस पर भरोसा करूं?

(सरगना अपने कंधे उचकाता है)

सिर्फ़ तुम पर?

सरगना: मुझ पर? नहीं! हम सब झूठे दोग़ले हैं। हमारे अन्दर जहर भर गया है। ज़रूरत है कि सभी को जड़ से उखाड़ फेंका जाये—हम सबके अन्दर पुरानी दुनिया का नासूर बह रहा है।

(ख़ामोशी। गमगीन हालत में वे बाहर चले जाते हैं। कनिष्ठ अफ़सर प्रवेश करते हैं)

पहला कनिष्ठ अफ़सर: याद करने की कोशिश करो। अतीत को याद करने की कोशिश करो। कोशिश करो कि कोई चीज़ भूल न जाओ। हर चीज को याद करो और शीघ्र ही, इससे पहले कि अगला युद्ध तुम्हें दुबारा

दबोच ले, पिछले दिनों के सबक़ को अच्छी तरह समझ लो। दुश्मन की याद करो, प्रतिक्रान्ति की याद करो! याद है, हर छिद्र के पीछे प्रतिक्रान्ति खड़ी थी। दिन और रात हमारे साथ गद्दारी की जाती थी। हमें घेर लिया जाता था और बांधकर ले जाया जाता था। अराजकतावाद ने हमारी पांतों को छिन्न-भिन्न कर दिया था। श्वेत गार्ड पेत्रोग्राद से १० वेर्स्ता* के फ़ासले पर पड़ाव डाले पड़े थे। मास्को में बैठे अन्डरग्राउण्ड श्वेत गार्ड इशारे भर का इन्तज़ार कर रहे थे। फिर हमने "इशारा" भी कर दिया था...

दूसरा कनिष्ठ अफ़सर: हमने सारे दफ़्तर बन्द कर दिये थे। हमने यात्रियों का आवागमन रोक दिया था। हमने अपनी रिवाल्वरें उठा ली थीं, मज़दूर वर्ग के एक-एक आदमी को आन्दोलित कर दिया था, और प्रतिक्रान्ति के सिर को कुचल दिया था। हमारे प्रहार ठीक वक़्त पर होते थे और उनमें असीम शक्ति होती थी... इतिहास गवाह है। अगर कभी ऐसा दिन आये कि दुश्मन दुबारा हम पर हमला करने का दुस्साहस करे, तो उसकी फिर वही गत बनायी जायेगी। उसे ऐसा मुंहतोड़ जवाब दिया जायेगा जिसे दुनिया ने आज तक नहीं देखा...

(कैप्टन प्रवेश करता है। उसके पीछे-पीछे डेकसारन आता है)

कैप्टन: अच्छा, डेकसारन, अब देखें नये मालिकों के नेतृत्व में हम क्या कर पाते हैं। जीवन हमारे मालिकों में परिवर्तन ला रहा है।

डेकसारन (सावधानी से): आप ठीक कहते हैं। पता लगाना कठिन है कि कौन क्या है।

कैप्टन: डेकसारन, मेरी यह बात चाहे तुम्हें अटपटी लगे, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि अगर ये लोग नौसैनिक परम्पराओं को बनाये रखें तो मैं कोई शिकायत नहीं करता। यह तो अजीब ही तरह की नौसैनिक सेवा है! अपनी तरफ़ उनके रवैये को ही देख लो: क्या उनमें से कोई तुम्हारे अधिकार को स्वीकार करता है? उनमें से क्या कोई तुम्हारी उम्र का लिहाज़ करता है?

डेकसारन (ठंडी सांस लेते हुए): कोई नहीं!

---

* १ वेर्स्ता — १ किलोमीटर के बराबर है। — अनु०

कैप्टन: लेकिन एक वक़्त था जब नौसैनिक नौसैनिक होते थे और सेवा सेवा थी।

डेकसारन: उन दिनों का क्या कहना! उन दिनों सेवा क्या, साकार सौंदर्य था!

कैप्टन: इन चीज़ों को फिर कभी हम ठीक कर पायेंगे क्या?

डेकसारन (कैप्टन के लिए अप्रत्याशित): उन लोगों को मैं वह सिखला सकूं जो मैं जानता हूं तो मरते वक़्त मुझे सन्तोष होगा।

कैप्टन (रुख़ बदलते हुए): हुंह... डेकसारन, जाओ, अब नौसैनिकों को बुलाओ!

डेकसारन: जो आज्ञा! बिगुलची!

(बिगुलची ज़ोर से बिगुल बजाता है। उसकी आवाज़ सुनकर अनुशासन, फ़ुर्ती और चुस्ती की कल्पना सजीव हो उठती है)

सब लोग डेक पर जमा हो जायं!

(लम्बा नौसैनिक तेज़ी से क़दम बढ़ाता हुआ आता है। उसके पीछे-पीछे कुछ कम तेज़ी से चलता बुज़ुर्ग नौसैनिक आता है। फिर दूसरे नौसैनिक एक के बाद एक आते हैं। उनके बाद चेचकरू आता है। उसकी गति स्फूर्तिहीन और ढीली-ढाली है। उसे देखकर दूसरे कई लोग भी उसी की तरह आलस्य और अवसाद की निस्तेज मूर्ति बन जाते हैं)

बुज़ुर्ग नौसैनिक: ए, बागियो...

चेचकरू: क्यों, क्या बात है?

डेकसारन: तुमने आदेश नहीं सुना? भूल गये तुम्हें क्या करना है?

चेचकरू: यह तो भूल ही गया!

(बिगुलची फिर बिगुल बजाता है। कुछ लोग लाइन में खड़े हो जाते हैं। दूसरे यह दिखाते हुए आहिस्ता-आहिस्ता टहलते आते हैं कि उन्हें किसी की परवाह नहीं है। उनके हाथ जेबों में हैं। कमाण्डर के सामने खड़े होकर वे जम्हाई और अंगड़ाई लेते हुए हाथ-पैरों को सीधा करते हैं।

लेकिन सरगना आता है तो हमेशा की तरह वे सब यकायक ख़ामोश हो जाते हैं)

सरगना: यह शोर किस लिए हो रहा है?

कैप्टन (मुंहफट ढंग से): तुम्हारी जगह कहां है?

(भयपूर्ण ख़ामोशी)

सरगना (अपने को संभालते हुए): डेकसारन!

डेकसारन: जी, हुजूर!

सरगना: इस आदमी को बता दो कि नौसैनिक आराम करें।

डेकसारन (अनुनय-भरे स्वर में दोहराता है): आदेश यह है कि नौसैनिक आराम करें। आराम करना भी हमारे काम का एक हिस्सा है। कल फिर हम मोर्चे पर जा रहे हैं, है न? तब आज हमें ख़ुद को थकाना नहीं है। नाविकों को पूरा आराम करने दो।

डेकसारन फिर दोहराता है: "आदेश यह है कि नौसैनिक आराम करें"। बैंडमास्टर! कुछ गीत-संगीत सुनाओ, कुछ हल्का-फुल्का बढ़िया-सा, जिससे कि सबकी तबियत ख़ुश हो जाये!

बैंडमास्टर (दौड़ता आता है): जी, हुजूर!

सरगना: कुछ हल्का-फुल्का बढ़िया-सा सुनाओ, जो हमें ख़ुश कर दे!

(बैंडमास्टर जल्दी-जल्दी संगीत शुरू करता है)

चेचकरू (लापरवाही से अंगड़ाई लेते हुए): डेकसारन, आराम कर लो। आदेश है कि हम लोगों के आराम में किसी तरह का ख़लल न डाला जाये।

(डेकसारन खिझाया खड़ा है। तभी मेमियाहा आ जाता है। उसके पीछे कुछ और लोग हैं। वह अपने क्रोध को नहीं रोक पाता। हर आदमी को लगने लगता है कि कुछ गड़बड़ हो गयी है। सख़्ती से डांटते हुए मेमियाहा संगीत रुकवा देता है)

मेमियाहा: ख़ामोश! मुंह बन्द करो! जो कुछ अभी हुआ है उससे बदतर चीज़ क्रान्तिकारी नौसैनिकों के साथ हो नहीं सकती। **(विपट द्वार**

की तरफ़ चिल्लाते हुए) उस महिला को, उस घघरिया कमिसार को यहां आने मत देना।

(एक नौसैनिक आज्ञाकारी भाव से विपट द्वार पर पहरा देने लगता है)

एक वृद्धा का अपमान किया गया है। उसका बटुआ चुरा लिया गया है। उसे अन्दर आने दो।

(एक वृद्धा, जो काले वस्त्र पहने है तथा बुढ़ापे के कारण दोहरी हो गयी है, अन्दर आती है। एक नौसैनिक उसकी बांह थामे है)

सरगना: हां, माताजी, बोलो!

मेमियाहा: मां, तुम पहचानने की कोशिश करो। इनमें से किसने तुम्हारा बटुआ उड़ाया था?

(नाविक एक दूसरे की तरफ़ देखते हैं)

बोलो, मां, बताओ वह कौन था?

सरगना: सब एक लाइन में खड़े हो जाओ! न्याय होना चाहिए!

(वृद्धा नौसैनिकों की पांत की तरफ़ धीरे-धीरे बढ़ती है। उसकी बांह अब भी एक नौसैनिक थामे है। टेढ़े-मेढ़े और परेशान खड़े नाविकों के चेहरों को एक-एक कर ग़ौर से और काफ़ी देर-देर तक वह देखती है। कभी-कभी आगे बढ़ने से पहले वह अपना सिर हिलाती है। लम्बा नौसैनिक इस दृश्य को तिरस्कृर भाव से देखता है। उसके चेहरे पर एक विकृत हंसी है)

मेमियाहा (अचानक): मां, वह तो नहीं था?

(ख़ामोशी)

(औरत कोई जवाब नहीं देती तो लम्बे नौसैनिक को सम्बोधित करते हुए)

ुमने तो नहीं लिया था?

(ख़ामोशी)

ाबित करो कि तुमने नहीं चुराया।

लम्बा नौसैनिक: मुझे परेशान न करो!

मेमियाहा: तुम क़ानून तो जानते हो?

लम्बा नौसैनिक: किसका क़ानून?

मेमियाहा: अच्छा! **(सरगना की तरफ़ देखता है)**

सरगना: बढ़ो।

मेमियाहा (अपने साथियों से): बढ़ो।

(उसके साथी दौड़कर तुरन्त रस्सी और तिरपाल ले आते हैं। नौसैनिक आगे बढ़कर लम्बे नौसैनिक को घेर लेते हैं)

तुमसे आख़िरी बार कहा जाता है—साबित करो कि तुमने नहीं चुराया है।

लम्बा नौसैनिक: एक बार कह चुका हूं कि मैंने नहीं लिया—मैं दोहराना नहीं चाहता। मैं अराजकतावादियों की सत्ता को नहीं मानता।

मेमियाहा: हाथ उठाओ, अपनी-अपनी राय दो।

कैप्टन: इन चीज़ों के फ़ैसले के लिए हमारी एक अदालत है।

मेमियाहा: तुम अपना काम देखो, तुम्हारा काम तकनीकी है।

बुज़ुर्ग नौसैनिक: साथियो!

मेमियाहा: तुम्हारा काम राजनीतिक है—कमिसार की मदद करने का, पैम्फ़लेटों आदि को लाने-पहुंचाने का।

कैप्टन: लेकिन आप तो क़ानून तोड़ रहे हैं, क़ानून को अपने हाथ में ले रहे हैं! मैं इसकी इजाज़त नहीं दे सकता।

सरगना: ख़ामोश! अपनी ज़बान संभालो! हम लोगों के फ़ैसले सीधे और तात्कालिक होते हैं। उठाओ हाथ।

(कुछ हाथ उठते हैं, लेकिन वे काफ़ी नहीं हैं। मेमियाहा खड़े नौसैनिकों की पांत के पास जाता है और उनके बदन से अपनी रिवल्वर छुआकर उन्हें हाथ उठाने के लिए मजबूर करता है। इस भांति अपने प्रस्ताव के लिए वह बहुमत प्राप्त कर लेता है)

मेमियाहा: तय हो गया!

लम्बा नौसैनिक: लेकिन मैं...

मेमियाहा: ख़ामोश! सज़ा दे दी गयी। उसे बदला नहीं जा सकता।

नौसैनिक (मददगारों से): इसे जहाज़ से फेंक दो!

(लम्बे नौसैनिक की तरफ़ कई लोग झपटते हैं। वह उनमें से एक को गिरा देता है, फिर एक और को... थोड़ी देर की झपटा-झपटी के बाद वे उसे पकड़कर ले जाते हैं)

लम्बा नौसैनिक: साथियो! तुम लोग मेरे साथ अन्याय कर रहे हो!

(उसे पानी में फेंके जाने की छपाक सुनाई देती है)

नेपथ्य से ध्वनि: ख़त्म।

मेमियाहा: मां, न्याय हो गया।

बुज़ुर्ग नौसैनिक: तुम्हें इसकी सज़ा मिलेगी।

मेमियाहा: यह दूसरी बात है। संगीत शुरू करो! **(वृद्धा से)** मां, अब तुम जाओ। शिकायत पर अमल कर लिया गया।

चेचकरू: चलो, इसके लिए हम कुछ चन्दा कर दें।

(वृद्धा के दुर्बल हाथों में सिक्के रखे जाने लगते हैं। उसकी समझ में कुछ नहीं आता कि क्या हुआ और वह झुककर उन सबको धन्यवाद देती है। इसके बाद वह अपनी जेब में हाथ डालती है और वहां उसे खोया बटुआ मिल जाता है। वह उसे बाहर निकालती है। संगीत समाप्त हो जाता है। सन्नाटा छा जाता है। बूढ़ी औरत पहले तो आश्चर्य और विमूढ़ता से अपने बटुए की तरफ़ देखती है, फिर एकदम घबड़ा जाती है)

मेमियाहा: बटुआ।

चेचकरू: बटुआ?

(ख़ामोशी)

सरगना: देखो!

मेमियाहा: अराजकता ही सुव्यवस्था की जननी है... एक और तिरपाल लाओ।

चेचकरू (रास्ता रोकते हुए): ख़बरदार जो उसको हाथ लगाया!

नेपथ्य से ध्वनि: उसने जानकर झूठी रिपोर्ट नहीं की थी।

बुज़ुर्ग नौसैनिक: उससे भूल हो गयी।

बूढ़ी औरत: नेक लोगो... मेरे बेटो... मुझसे भूल हो गयी है...

मेमियाहा: न्याय!

(बूढ़ी औरत को ज़बर्दस्ती तिरपाल के बोरे में ठूंसकर उठा लिया जाता है)

सरगना (जाते हुए): देखना, फेंकते वक़्त वह जहाज़ से कहीं टकरा न जाये।

(उसी समय कमिसार, कैप्टन तथा डेकसारन आ जाते हैं)

कमिसार: आप लोगों ने काम शुरू कर दिया?

मेमियाहा: जी हां... जी हां... **(बूढ़ी औरत को जिस तरफ़ लोग ले गये हैं उस तरफ़ देखते हुए)** हम लोग मांस उतार रहे हैं। आप जब से आई हैं, नौसैनिक काम करने के लिए मतवाले हो रहे हैं।

बुज़ुर्ग नौसैनिक (आगे की ओर बढ़कर): साथी कमिसार, मैं अपना कर्त्तव्य समझकर आपको सूचित कर रहा हूं कि...

(लोग धक्का देकर उसे वहां से हटा देते हैं)

चेचकरू: भाई, यह क्या हो रहा है?

(अकार्डियन बाजे के स्वर सुनाई पड़ते हैं। तभी ज़ोरों से सीटी बजाते और नाचते अलेक्सेई और उसके मित्र रंगमंच पर आ जाते हैं)

अलेक्सेई (सामने आकर): नौसैनिकों की मांग है कि...

कमिसार: नौसैनिकों की प्रार्थना है।

अलेक्सेई: आइये, हम इस तरह कहें कि नौसैनिक चाहते हैं कि...

कमिसार: क्या?

अलेक्सेई: विदाई की एक पार्टी की जाये।

अलेक्सेई का एक दोस्त: आख़िर हम लोग कल मोर्चे पर जा रहे हैं।

कैप्टन (कमिसार से): देखता हूं कि नयी-नयी परम्पराएं क़ायम की जा रही हैं।

अलेक्सेई: हम लोग एक पुरानी परम्परा पर ही अमल करने की

कोशिश कर रहे हैं: ज़ारशाही अफ़सर जब भी मिल जायें उनकी ख़ूब धुनाई करो। **(अकार्डियन को ज़ोर से बजाकर आवाज़ करता है)**

डेकसारन: साथी कमिसार, वह... वह जो दूसरा कमिसार है... अराजकतावादियों का... उसने आर्डर दिया है कि नौसैनिकों को आराम करने दिया जाये।

अलेक्सेई: यह क्या है? क्या वह हम लोगों के ख़िलाफ़ काम करना चाहता है, क्यों? नौसैनिक जो चाहते हैं वही करो, समझे?

(ख़ामोशी। लगता है कि कमिसार परिस्थिति का मूल्यांकन और मन में कुछ निर्णय करने का प्रयत्न कर रही है। बात करने की अपेक्षा वह वस्तुस्थिति को समझने की सी कोशिश कर रही है, क्योंकि उसे बहुत कुछ करना है)

तो क्या अपने सवाल को मुझे फिर दोहराना पड़ेगा?

मेमियाहा (आगे आकर): आदेश यह है कि शोर न मचाया जाये।

(आकस्मिक सन्नाटा)

कमिसार: हम विदाई की पार्टी करेंगे।

डेकसारन: जो आज्ञा! **(भोंपू से चिल्लाकर)** विदाई की पार्टी के लिए सब लोग बाहर आयें।

(उसके आवाहन को दूसरे नौसैनिक भी दोहराने लगते हैं। अलेक्सेई मस्त होकर अकार्डियन बजाने लगता है। उसके यार-दोस्त तेज़ी से सीटियां बजाते हुए उन्मत्त होकर नाचने लगते हैं। किन्तु किसी अविश्लेष्य भावना के वशीभूत होकर वे सरगना को आता देखते ही हमेशा की तरह धीरे-धीरे ख़ामोश हो जाते हैं)

सरगना (डेकसारन के भोंपू को हाथ से रोकते हुए): इतना शोर किसलिए?

(अन्य भोंपू भी बन्द हो जाते हैं। अलेक्सेई भी अकार्डियन बजाना बन्द कर देता है)

कमिसार (कैप्टन को डांटती हुई): साथी कैप्टन, आदेश का पालन क्यों नहीं हो रहा है?

कैप्टन : डेकसारन! जो दोस्त और सम्बन्धी विदा करने आये हैं उन्हें जहाज़ पर आ जाने दो!

(अलेक्सेई के साथी फिर नृत्य करने लगते हैं। इस भांति, बिना लाग-लपेट के, किन्तु अपने हर काम की तरह, ख़ूब सोच-समझकर कमिसार सरगना को चुनौती देती है। यह एक ऐसी चीज़ है जिसे करने की आज तक किसी की हिम्मत नहीं हुई थी। उसके इस क़दम का कुछ लोग समर्थन करते प्रतीत होते हैं, कुछ दूसरे उससे भयभीत हैं)

कमिसार : और भी तेज़ी से! नाचो, गाओ, ख़ुशियां मनाओ!

(सरगना एकदम चुप है)

अलेक्सेई (सरगना के नज़दीक जाकर ठीक उसके मुंह के सामने अकार्डियन बजाते हुए) : उन्हें सबके बाद ही हंसना अच्छा लगता है।

कमिसार : इसका मतलब हुआ कि हम दोनों की पसन्द एक ही जैसी है।

(विदाई की पार्टी की तैयारियां होने लगती हैं)

प्रथम कनिष्ठ अफ़सर : ओह, पार्टी! जहाज़ पर विदाई की पार्टी! उन दिनों कितनी ऐसी पार्टियां हुआ करती थीं! एक टुकड़ी—तीन सौ नौसैनिकों की टुकड़ी कूच करती है। वे सब के सब देवदार के ऊंचे वृक्षों की तरह लम्बे और सीधे थे। बेसब्र और जोशीले क़दमों से मार्च करते हुए महाद्वीप के आर-पार चले गये थे। उनके नीले-नीले कॉलर, सफ़ेद और सुनहरी धारियोंवाली काली वर्दियां हवा में फरफरा रहे थे। उनके दिलों में उबलते ख़ून की उमंग थी। अलविदा, मेरे गांव, अलविदा! मेरे प्रिय नगर, अलविदा! लौटकर उनमें से विरला ही कोई आया था।

दूसरा कनिष्ठ अफ़सर : विरले ही लौटकर आये थे... लेकिन उनका स्थान दूसरे लोगों ने ले लिया था। और जहाज़ से फिर एक और टुकड़ी आगे बढ़ गयी थी। नीलाकाश आग उगलता रहता फिर भी हमारी ये टुकड़ियां निरन्तर आगे बढ़ती रहतीं; वे दुश्मन को पीछे हटने को मजबूर कर देतीं, विरोधियों को मैदान छोड़ने के लिए बाध्य कर देतीं... एक बार, उराल पर्वत के समीप उनकी मुठभेड़ ज़ारशाही अफ़सरों की

एक रेजीमेन्ट से हो गयी। रेजीमेन्ट का नाम था "अविजेय"। नौसैनिकों ने कहा, "इन्हें ठिकाने लगाने के लिए हमें बस एक रात दे दीजिये।" और सुबह तक रेजीमेन्ट का सफ़ाया हो चुका था।

प्रथम कनिष्ठ अफ़सर: नौसैनिकों ने इसी तरह उक्राइन को पार कर लिया था। उन्होंने क्राइमिया को पार कर लिया था। हवा में सागर और स्तेपी की ख़ुशबू बसी हुई थी। उनकी टोपियों के फीते हवा में फड़फड़ा रहे थे... उक्राइन के लिए उन्होंने अपनी ज़िन्दगियों की बाज़ी लगा दी थी! **(कनिष्ठ अफ़सर झटके से अपनी टोपी उतार लेता है)** लेकिन जब तक हमारा एक भी नौसैनिक ज़िन्दा रहा हमारा बेड़ा पराजित नहीं हुआ, हमारे सागर अविजित रहे।

(हवा में नृत्य-संगीत की लहरियां गूंज उठती हैं। वॉल्ज़ नृत्य की मायूस धुन बजती है। समुद्र से शाम की निलछौंह धुन्ध उठने फैलने लगती है। संगीत की लय में एक अव्यक्त, दबी हुई सी वेदना है। जब तक हाथ हाथ का स्पर्श करता है, शरीर शरीर से मिलता है, आंखें आंखों में सन्देश खोजती हैं तब तक यह वेदना भी बनी रहेगी। बीच-बीच में सशस्त्र नौसैनिक आ जाते हैं और लय में कुछ व्यवधान आ जाता है। प्रेम, घबड़ाहट, उदासीनता, अविचारशीलता, ईर्ष्या, सत्ता की भूख—सभी प्रकार की भावनाएं एक ही जगह मिलती प्रतीत होती हैं... अचानक एक ध्वनि संकेत मिलता है कि नौसैनिक पांतों में खड़े हो जायें। थिरकते जोड़े धीरे-धीरे अलग हो जाते हैं: विछोह का समय आ गया है। कुछ स्त्रियों के चेहरे फक पड़ गये हैं। कुछ विदा के समय अपने मर्दों से चिपकी रहने की कोशिश करती हैं। कुछ अपने बेटों या पतियों के ऊपर सलीब का चिन्ह बनाती हैं। कुछ घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करने लगती हैं। एक हृदय-विदारक क्रन्दन सुनाई पड़ता है। शत्रु से लोहा लेने के लिए जाते सैनिक विदा ले रहे हैं। वॉल्ज़ के स्वर ख़ामोश पड़ गये हैं। एक युवती एकदम हताश होकर आगे की तरफ़ दौड़ती है, कमिसार उसे आहिस्ता से रोक लेती है। नौसैनिक मार्च करते हुए चले जाते हैं। गहन स्तब्धता और ख़ामोशी छा जाती हैं। स्त्रियां अपने दिल थामकर जाते हुए नौसैनिकों को देखती हैं। पीतल के बाजों से ज़ोर से युद्ध की एक धुन बज उठती है। नौसैनिक ज़ोर-ज़ोर से फ़ौजी जोश के साथ गाने लगते हैं। गाते हुए चेहरों पर शाम के अंधेरे में आंखें चमचमा उठती

हैं, नौसैनिकों की टोपियों पर उनके युद्धपोतों के नाम चमक रहे हैं। किनारा, जहां स्त्रियां खड़ी हैं, धीरे-धीरे दूर होता जा रहा है। फ़ासला हर क्षण बढ़ता जा रहा है। अपने प्रिय नगर और अपने प्रियजनों को अन्तिम बार आंख भर देख लेने के लिए नौसैनिक बार-बार पीछे घूमकर नज़र डालते हैं, गोलियां दाग़कर वे उनसे विदा लेते हैं)

दूसरा अंक

(बेचैन सजग सन्नाटा। आकाश पर उड़ते बादल तेज़ी से भाग रहे हैं। क्षितिज की रेखाएं अस्पष्ट हैं। नौसैनिकों की पांतें निरन्तर आगे बढ़ रही हैं। संगीत युद्धारम्भ की घोषणा करता है। पांतों में स्थान ख़ाली होने लगते हैं। नौसैनिक कट-कटकर गिर रहे हैं। घबड़ाकर वे अधैर्य से भागने के लिए मुड़ते हैं। उनके पास कुमुक आ जाती है। "नाविको, तुम ग़लत दिशा में हमला कर रहे हो!" कमिसार का यह सीधा-सादा कथन उन्हें, भागते अलेक्सेई को रोक देता है। वह आज्ञा देती है: "लेट जाओ!" नौसैनिक लेट जाते हैं। शत्रु सैनिक जलते लावा के प्रचण्ड नद की तरह आगे बढ़ते आ रहे हैं। कैप्टन कूदकर खड़ा हो जाता है और "आगे बढ़ो!" का रण-नाद करता हुआ दुश्मनों पर टूट पड़ता है। इधर-उधर, चारों तरफ़ से आगे बढ़ने और दुश्मन पर हमला करने की हुंकार सुनाई देती है। समस्त वातावरण रण के एक जोशीले आवाहन से गूंज उठता है। दुश्मन को रौंदने के लिए रेजीमेन्ट तेज़ी से आगे बढ़ती है। धीरे-धीरे, फ़ासले की वजह से उसकी ललकार धीमी सुनाई पड़ती है। यह रात का हमला था। संगीत से पता चलता है कि युद्ध का मोर्चा दूर होता जा रहा है। फिर संगीत से ही अहसास होता है कि सागर के किनारे सुबह की किरणें फूट रही हैं। ध्वनियों के सम्मिलन से एक स्पष्ट अवर्णनीय संगीत की सृष्टि होती है।

मर्मभेदी संगीत दर्शकों के हृदय को आलोड़ित कर देता है।

रेजीमेन्ट का सदर दफ़्तर। कमिसार अकेली बैठी है। वह कुछ लिख रही है)

कमिसार (जो कुछ उसने लिखा है उसे ज़ोर-ज़ोर से पढ़ते हुए): "प्रिय, लगता है कि हम लोग निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच गये हैं। यहां की

जलवायु बहुत अच्छी है। इससे मेरे फेफड़ों का भला हो सकता है। मैं नहीं जानती कि इन नौसैनिकों को मैं कभी संभाल भी सकूंगी या नहीं। ये काफ़ी उलझे हुए लोग हैं। मैं तुमसे छिपाऊंगी नहीं कि मैं एक रात भी नहीं सो सकी... आशा है कि ऊपर के लोग मेरी स्थिति को समझेंगे और मदद के लिए कम से कम एक व्यक्ति और भेजेंगे..."

(दरवाज़े पर दस्तक। कमिसार कहती है, "आ जाइये" और डेकसारन अन्दर आ जाता है। खंखारकर वह गला साफ़ करता है और सिर से टोपी उतार लेता है)

डेकसारन: साथी कमिसार, मैं रिपोर्ट देने आया हूं।

कमिसार: बताइये।

डेकसारन (पहले एक, फिर दूसरा काग़ज़ निकालते हुए): नयी रेजीमेन्ट के लोगों के लिए गोला-बारूद तथा दूसरी चीज़ें चाहिए। उन्हें मंगाने के लिए आपके दस्तख़तों की ज़रूरत है। **(हाथ से जगह बताते हुए)** यहां, इस ख़ाली रेखा पर दस्तख़त कर दीजिये — नहीं-नहीं, माफ़ कीजियेगा, यह सही काग़ज़ नहीं है। यह तो खाने के सामान का आर्डर है।

कमिसार: ज़रा देखूं। **(उस पर नज़र डालते हुए)** आप लोगों ने किस चीज़ का आर्डर दिया है? मक्खन का? अरे, मक्खन तो बच्चों तक के लिए नहीं है! बेहतर हो कि आप लोग राइफ़िल में लगाने की ग्रीज़ के लिए आर्डर भेजें।

डेकसारन: ज़ारशाही के ख़ात्मे से पहले, पच्चीस साल तक मैं यही करता रहा था।

कमिसार (काग़ज़ों की ओर इशारा करते हुए): इसे दुरुस्त कीजिये। हमारे स्टॉफ़ की लिस्ट दीजिये। **(चेक करती है)** ठीक है... **(दस्तख़त करती है)** लीजिये, अब ले जाइये।

डेकसारन: मुझे जाने की इजाज़त है, साथी कमिसार?

कमिसार: हां।

डेकसारन (जाता है, लौट आता है, फिर धीरे-से पूछता है): क्या सचमुच रूस में फिर कभी व्यवस्था क़ायम होगी?

कमिसार: धैर्य रखें। बुनियाद पड़ चुकी है।

डेकसारन: क्या सेना और नौसेना में भी? कम से कम थोड़ी-सी तो

क़ायम ही हो जानी चाहिए, जिससे कि सैन्य भावना बनी रहे और फ़ौजी की तरह रह सकें। आखिर तो हमारा एक महान देश है और इसमें इतनी क्षमता होनी चाहिए कि इसकी तरफ़ जो भी टेढ़ी नज़र से देखने की हिम्मत करे उसकी आंखें निकाल ली जायें।

कमिसार: डेकसारन, चिन्ता न करें। हम दुश्मनों के छक्के अवश्य छुड़ायेंगे—इस तरह कि वे फिर कभी भूल न सकें।

डेकसारन: इस सेवा-कार्य में हाथ बंटाने में मुझे खुशी है। **(सैलूट करके बाहर चला जाता है)**

कमिसार (फिर अपने पत्र को पढ़ती है): "...बस, आज इतना ही काफ़ी है। सिर्फ़ अपने परमप्रिय पेत्रोग्राद को सलाम कर लेना चाहती हूं... मैंने पढ़ा था कि वहां टाइफ़ॉइड का ज़ोर है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना..."

(वाइनोनेन बिना दस्तक दिये ही अन्दर आ जाता है। उसके चेहरे पर मुस्कराहट है)

वाइनोनेन: नमस्ते, साथी कमिसार।

कमिसार: नमस्ते, वाइनोनेन।

वाइनोनेन: आप अब भी लिखने में जुटी हैं? थोड़ा आराम कीजिये, आपका सिर फट जायेगा। रिपोर्ट भेज रही हैं क्या?

कमिसार: ऐसी ही कोई चीज़... मैं लिख रही हूं कि हमारी रेजीमेन्ट में लड़नेवाले तो अच्छे हैं—कम से कम कामचलाऊ तो हैं ही, लेकिन जोश दूसरी टुकड़ियों के बराबर नहीं है, क्योंकि नौसैनिक तीन संदिग्ध व्यक्तियों से प्रभावित हैं।

वाइनोनेन: अराजकतावादी शैतान! वे हरामज़ादे हैं!

कमिसार: यही तो बात है। लेकिन यह तो बताओ कि इन शैतानों का हमारे बीच असर क्यों है? उसे रोकने के लिए तुमने कुछ किया है?

वाइनोनेन: मैंने? मैं... यानी... आप जानती हैं...

कमिसार: यह तो कोई बात न हुई।

वाइनोनेन: रूसी में मैं अपनी बात अच्छी तरह नहीं कह पाता। आदमी क्या कर सकता है? **(दार्शनिक ढंग से)** समझ में नहीं आता—ऐसा क्यों होता है कि एक आदमी दूसरे को अत्यधिक प्रभावित कर लेता है, जबकि दूसरा रत्ती-भर भी नहीं? इसका क्या कारण है?

कमिसार : छोड़ो भी इसे, काम की बात है। **(उठकर खड़ी हो जाती है)** हमारी रेजीमेन्ट में कुछ अच्छे लोग हैं। तुम देख चुके हो वे कितनी वीरता से लड़े थे... अगर हम सावधानी से सोचें कि हमें क्या करना है तो सारी रेजीमेन्ट को हम अपनी तरफ़ कर सकते हैं।

वाइनोनेन : बहुत ठीक, लेकिन किया क्या जाये?

कमिसार : किया क्या जाये? सबसे पहले पार्टी के तमाम सदस्यों को हम एक करें। फिर सरगना को और उसको—क्या नाम है उसका?—आपस में भिड़ा दें।

वाइनोनेन : अलेक्सेई।

कमिसार : हां, फिर हमें उस अफ़सर से बात करनी चाहिए।

वाइनोनेन : क्या कहा—सरगना और अलेक्सेई को एक दूसरे से लड़ा दें? तो आपका ख़याल है कि ऐसा करना सही होगा?

कमिसार : ज़रूरी है, और इसलिए सही भी होगा।

वाइनोनेन (खड़े होते हुए) : इस तरह तो किसी भी चीज़ को सही सिद्ध किया जा सकता है... उसके जैसे आदमियों को हमें ठुकरा नहीं देना चाहिए। आख़िर तो ज़ारशाही सरकार ने उसे कालापानी की सज़ा दी थी। और फिर अपनी टुकड़ी में फूट हम क्यों डालें?

कमिसार : रेजीमेन्ट में, वाइनोनेन—टुकड़ी में नहीं; और फूट नहीं डालना, सफ़ाई करना है। और एक बात मत भूलना : पार्टी के लिए मैं कुछ भी कर सकती हूं, और तुम भी ऐसा ही करोगे। अच्छे लोगों को बचाने के लिए सड़े-गले तत्वों को साफ़ करना होगा तो वह भी हम करेंगे। समझे?

वाइनोनेन (क्षण-भर विचार करने के बाद) : उस सरगना को... आप उसे जानती नहीं... उसकी बड़ी ताक़त है। वह बहुत चालाक और कुटिल है...

कमिसार : इसमें सन्देह नहीं।

वाइनोनेन : और वह अफ़सर? फांसी का फंदा बेताबी से उसका इन्तज़ार कर रहा है। बेताबी से! मैं उसके क्वार्टर की तलाशी लूंगा।

कमिसार : तुम रुको। इस मामले को मैं ख़ुद संभालूंगी।

वाइनोनेन : उससे राज़ की बातें निकलवाइये।

कमिसार : अब जाओ। वह आने ही वाला है।

वाइनोनेन : अगर वह क्रान्ति-विरोधी है, ग़द्दार है तो आप उसे

गोली से उड़वा सकती हैं। उसके बाद उसकी सारी बदमाशियां खत्म हो जायेंगी।

कमिसार: अच्छा, अब तुम जाओ। मैं देखती हूं।

(नन्हा फ़िन बाहर चला गया। उसके निकलते ही कैप्टन अन्दर आता दिखाई देता है। फ़िन सशंकित दृष्टि से उसको घूरता है)

आ जाइये। आप समय के बहुत पाबन्द हैं।

कैप्टन: पुरानी जहाज़ी आदत है।

कमिसार (मुस्कराते हुए): आप नौसेना के लोग भी ख़ूब ही होते हैं—सारे अच्छे गुण जहाज़ियों में ही होते हैं!

कैप्टन (उसी के लहजे में): सब नहीं, अधिकतर तो अवश्य।

कमिसार: नौसेना में आपको कितने दिन हो गये?

कैप्टन (किंचित अभिमानपूर्वक): बीस साल। दस वर्ष की उम्र से हूं। यह भी कहा जा सकता है कि दो सौ साल बीत गये।

कमिसार: दो सौ साल?

कैप्टन: हां, हम लोग—यानी मेरे खानदान के लोग—पीटर महान के दिनों से नौसेना में ही काम करते आ रहे हैं।

कमिसार: सचमुच?

कैप्टन: सचमुच। हम लोगों ने सम्राट पीटर की सेवा की थी... इस तरह के और भी कई नौसैनिक परिवार हैं।

(ख़ामोशी)

कमिसार: कल की लड़ाई में तो आपने बहुत दिलेरी दिखाई थी।

कैप्टन: अपने पेशे से अधिक नहीं। **(हल्की मुस्कराहट के साथ)** और फिर एक महिला की भी तो उपस्थिति थी...

(ख़ामोशी)

कमिसार: क्या आप मुझे सच-सच बता सकते हैं कि हम लोगों के बारे में, सोवियत सरकार के बारे में आप क्या सोचते हैं?

कैप्टन (आहिस्ता से, बिना किसी उत्साह के): फिलहाल शान्ति के बारे में।

(ख़ामोशी)

लेकिन आप यह मुझसे क्यों पूछती हैं? आप लोग तो प्रसिद्ध हैं इसके लिए कि लोगों के, पूरे के पूरे वर्ग के गहरे से गहरे विचारों को भी आप जान लेते हैं। पर सचमुच, यह काम इतना कठिन भी नहीं है। आदमी के लिए आवश्यक है कि वह रूसी साहित्य के पृष्ठ भर उलट जाये। उसे मालूम हो जायेगा कि...

कमिसार (कविता की कुछ पंक्तियां सुनाती है): कि "जब जन-समुदाय अपनी मुक्ति के लिए आगे बढ़ा तो तड़पकर उसने अपनी बंदूक निकाल ली जिससे उसकी कोमल कलाई पर लहराती गोटों का स्वर्ण निकलकर छितरा गया..." ठीक?

कैप्टन (आश्चर्यचकित होकर): विचित्र बात है कि आप गुमिल्योव जैसे व्यक्ति की कविता की पंक्तियां भी सुना सकती हैं, किन्तु रूसी अफ़सरों के बारे में केवल गुमिल्योव ने ही नहीं लिखा है। उनके बारे में लेरमोन्तोव ने भी लिखा था, और तोलस्तोय ने भी...

कमिसार: आपको मानना पड़ेगा कि लेरमोन्तोव और तोलस्तोय की आप लोगों से अधिक नहीं पटती थी। हमने ही उनकी कृतियों को संभालकर रखा है, उनका हम बहुत सम्मान करते हैं। इस बात में मुझे शक है कि सर्वहारा कला के साथ आप लोग भी इसी तरह का व्यवहार करेंगे।

कैप्टन: आपका शक ठीक है। लेकिन हां, अगर सर्वहारा वर्ग भी एक द्वितीय नवजागरण की सृष्टि कर सकता, एक द्वितीय इटली, एक द्वितीय तोलस्तोय की अभिसृष्टि कर सकता...

कमिसार: हम लोग किसी भी द्वितीय चीज़ की सृष्टि नहीं करना चाहते... हम लोग जिस चीज़ की सृष्टि करेंगे वह हमारी अपनी होगी, और मौलिक होगी। और उसमें हमें आप लोगों की तरह दो सौ साल नहीं लगेंगे।

कैप्टन: आप लोग शायद तीव्र तरीक़ों का इस्तेमाल करेंगे, कन्वेयर प्रणाली का इस्तेमाल करेंगे?

कमिसार: मैं आपसे कुछ संजीदगी की आशा करती हूं, और साधारण शिष्टाचार की भी।

कैप्टन: आपने ही बड़े कठिन काम का बीड़ा उठाया है—वयस्कों को प्रशिक्षित करने का। आपसे मुझे पूरी सहानुभूति है। किसी समय मुझे भी रंगरूटों के प्रशिक्षण का काम मिला था। मैं उन्हें बताता था

(उसके हाव-भाव व्यंगपूर्ण हैं) कि यही तुम्हारा धर्म है, यही तुम्हारे सम्राट हैं, यद्यपि वे अत्यधिक आरामतलब थे और यही तुम्हारा रूस है। तुम्हारी मातृभूमि है। एक-दो शब्द भविष्य के बारे में भी कह देता था। सुन्दर, जाज्वल्यमान भविष्य के बारे में। आपको भी वही करना पड़ रहा है: यह हमारा कार्यक्रम है, और यह हमारा सुन्दर जाज्वल्यमान भविष्य... मेरी आपसे पूर्ण हमदर्दी है। **(चहलक़दमी करने लगता है)**

कमिसार (मुस्कराती हुई): अगर तब और अब में कोई फ़र्क़ नहीं है तो आप इतने परेशान क्यों हैं?

कैप्टन (कटुता से, किंचित चिड़चिड़ाता हुआ): मानवजाति के सुख और कल्याण के लिए! सम्भवत: मेरे और मेरे परिवार के उन सदस्यों के भी सुख और कल्याण के लिए जिन्हें लापरवाही से आपने ही गोली मरवा दी है? आपकी चिन्ता का विषय जब सम्पूर्ण मानवजाति है तब किसी एक व्यक्ति की क़िस्मत की आपको क्या फ़िक्र हो सकती है?

(अकार्डियन के बजने की आवाज़ सुनाई देती है। शायद अलेक्सेई बजा रहा है)

आपकी इजाज़त हो तो...

कमिसार (टेलीफ़ोन रिसीवर हाथ में लेते हुए): वाइनोनेन को भेज दीजिये।

कैप्टन (तनकर खड़े होते हुए): मतलब यह कि आप मुझे गिरफ़्तार कर रही हैं?

कमिसार (थोड़ी देर रुककर): मुझे ख़ुशी है कि आपने इतनी साफ़-साफ़ और ईमानदारी से बातें कीं। **(उठकर उसके पास जाती है और हाथ मिलाती है)**

कैप्टन (परेशानी से): धन्यवाद।

(कमिसार की ओर देखता हुआ कैप्टन आहिस्ते-आहिस्ते चला जाता है। नन्हा फ़िन अन्दर आता है)

वाइनोनेन: क्यों, इसका विश्वास नहीं करना है न?

कमिसार: उसे हाथ न लगाना, सुन रहे हो मेरी बात?

वाइनोनेन: तो आपने यकीन कर ही लिया? ज़रा होशियार रहना।

कमिसार: वाइनोनेन, तुम जानते हो कि उसके बारे में मेरा क्या

ख़याल है? वह घबड़ा गया है, वह साहसी बनने का दिखावा कर रहा है। वह अपने सर को पानी से ऊपर रखने की ज़बर्दस्त कोशिश कर रहा है। लेकिन हम लोगों की वह सच्चाई से सेवा करेगा। वह आदमी हमारे विदेशी दुश्मनों से कभी सांठ-गांठ नहीं करेगा...

वाइनोनेन: मेरी समझ से बाहर है। आप कहीं ग़लती तो नहीं कर रही हैं?

कमिसार: कम से कम उन तीन अराजकतावादियों के खिलाफ़ संघर्ष में तो तुम उसके समर्थन का भरोसा कर ही सकते हो। और यदि वह कोई ऐसी चीज़ करने की ठान लेता है जो उसे नहीं करनी चाहिए, तो उन तीनों का समर्थन लिया जा सकता... समझे?

वाइनोनेन: बहुत नहीं। मैं अच्छी तरह रूसी नहीं समझता।

कमिसार (आवाज़ को ज़रा ऊंचा करते हुए): "मैं नहीं समझता, मैं बोल नहीं सकता" का पचड़ा छोड़ो, नहीं तो... **(उसकी ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखती है)**

वाइनोनेन (क्रोध से): बात क्या है? क्या आप आज सबकी परीक्षा ले रही हैं, हरेक को सिखा रही हैं? **(थोड़ी देर रुककर मुस्कराता है)** पर ठीक है... "ज्ञान ही प्रकाश है, अज्ञान... अन्धकार है"—आप रूसी लोग यही तो कहते हैं न?

कमिसार: हां, कुछ इसी तरह की चीज़। लेकिन, वाइनोनेन, तुम तो रूसी कहावतें तक जानते हो। अलेक्सेई को बुलाया तुमने?

वाइनोनेन: जी। यह रहा...

(जिधर से अकार्डियन का संगीत आ रहा है उस तरफ़ इशारा करता है)

कमिसार: कहना कि मैं उसका इन्तज़ार कर रही हूं।

(फ़िन चला जाता है। अकार्डियन लेकर टहलता हुआ अलेक्सेई अन्दर आता है। वह अब भी एक धुन बजाने में व्यस्त है। बीच-बीच में रुककर कुछ कहता है)

अलेक्सेई: यह अकार्डियन है। कभी-कभी इसे हार्मोनियम भी कहते हैं। लोक-वाद्य है। बड़े काम की चीज़ है, ख़ास तौर से उस समय जब आदमी का मन उदास हो।

कमिसार : मैं आपसे कुछ बात करना चाहती थी। मैंने ग़लत समय पर तो आपको नहीं बुलाया?

अलेक्सेई (बैठते हुए) : ओफ़, कोई हर्ज़ नहीं। आइये, बातें कर लें। ज़िन्दगी के बारे में औरतों से बातें करने में मुझे बहुत लुत्फ़ आता है।

कमिसार : यह विषय तो बहुत बढ़िया है। लेकिन पहले यह तो बताइये कि कल मोर्चे से आप कहां भाग खड़े हुए थे? दुश्मन को लुभाकर अपने पीछे ले जाना चाहते थे?

अलेक्सेई (हड़बड़ाकर खड़ा हो जाता है) : मैं ... मैं ...

कमिसार : या शायद वर्गीय घृणा का ऐसा उबाल आपके अन्दर आ गया था कि उन श्वेत-गार्डों को देखने में भी आपको तकलीफ़ होने लगी थी? इसीलिए पीठ दिखाकर भाग लिये थे?

अलेक्सेई : ओफ़, ख़त्म भी कीजिये! ठीक है ... मानता हूं। हम सब कभी-कभी कमज़ोरी दिखा जाते हैं।

कमिसार : ज़रूर। **(उसके नज़दीक पहुंचकर)** आइये, अब हम ज़रा बातें कर लें। मुझे अपने बारे में कुछ और जानकारी देने की कृपा कीजिये। आप कहां से आये हैं?

अलेक्सेई (सावधानी से, पर व्यंगपूर्ण ढंग से शुरू करता है) : तो यह बात है! मेरा घर-परिवार कहां है? मैं किस वर्ग में पैदा हुआ? श्रमजीवी मध्यम वर्ग में। देख लीजिये **(अपनी हथेलियां फैलाता है)** घट्ठे पड़ गये हैं। मध्यम वर्ग मेरे परिचय-पत्र में लिखा है। मध्यम वर्ग ही मेरी रूह पर अंकित है। जहां तक मेरे विचारों की बात है, उन पर रोक है - यानी सरकारी तौर पर ग़ैर-क़ानूनी हैं वे।

कमिसार : ओहो, आप तो असाधारण व्यक्ति हैं? अराजकतावादी?

अलेक्सेई : हां-आं ... शायद। अब आप और क्या मेरे बारे में जानना चाहती हैं? श्रमजीवी मध्यम वर्ग का सदस्य होने के नाते मैं ख़ुद अपने हितों के लिए लड़ रहा हूं। जहां तक रूस के अन्य नागरिकों का सवाल है, मुझे उनसे कोई प्रेम नहीं है। पर आप — मेरा ख़याल है कि आपको दूसरे ही प्रकार की भावनाएं पसन्द हैं — जोशीली, सर्वहारा वर्गीय, सबको एकताबद्ध करनेवाली। और आप की शायद यह भी इच्छा होगी कि मेरे जैसे लोग आपके ख़िलाफ़ न जायें।

कमिसार: ऐसा ख़याल आपको कैसे हो गया? बहुत-से लोग हमारे खिलाफ़ चले जाते हैं। आप भी कोशिश कर सकते हैं।

अलेक्सेई: हुंह! श्वेत-गार्ड उसकी कोशिश कर रहे हैं। मित्रराष्ट्र भी इसी में जुटे हुए हैं। उनकी ताक़त थोड़ी नहीं है, लेकिन रूस उन सबके परखचे उड़ा रहा है—उन सबको धुने दे रहा है।

(ख़ामोशी)

कमिसार: एक प्रश्न और: पिछले चुनाव में किस राजनीतिक दल को आपने वोट दिया था?

(ख़ामोशी)

अलेक्सेई (अन्यमनस्क भाव से): आप लोगों को। सूची नम्बर पांच के समर्थन में। आप लोग कम से कम दूसरों से तो कुछ अच्छे हैं... गोकि इसकी भी जांच ज़रूरी है...

कमिसार: जांच कर लीजिये। आप हर बात को इसी तरह की शाब्दिक धमकियों से शुरू करते हैं? किस लिए? रोब डालने के लिए?

अलेक्सेई: यह आप ख़ुद तय कर लीजिये। **(कमिसार के चेहरे पर दृष्टि गड़ाकर एकटक देखता है। यह कहना कठिन है कि उसने जो बात कही है वह संजीदा है या मज़ाक़ बनाने के लिए कही गयी है। वह फिर अकार्डियन बजाने लगता है— इस बार कोमल, उदासी-भरी धुन बजती है)**

कमिसार: नये कैप्टन के बारे में क्या ख़याल है आपका? क्या उसका विश्वास किया जा सकता है?

अलेक्सेई: उस भले आदमी से व्यवहार करते समय आप को सतर्क रहना है। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं।

कमिसार: और वह आपको जानते हैं। और सरगना महाशय के क्या हाल-चाल हैं?

अलेक्सेई (यकायक अकार्डियन बजाना बन्द कर देता है): क्या मतलब?

कमिसार: आप लोग दोस्त हैं?

अलेक्सेई: यह कह सकना कठिन है। तय नहीं कर पाता। जनरल

कालेदिन के ख़िलाफ़ वह और मैं साथ-साथ लड़े थे। हम लोगों की दोस्ती तो है, किन्तु कुछ अजीब-सी ...

कमिसार: यही मेरा ख़याल था। वह आपको जिधर चाहता है उधर घुमा देता है।

अलेक्सेई: किसे, मुझे? आपका ख़याल है मैं उस बैल से डरता हूं?

कमिसार: मैं तो ज़रूर ऐसा ही सोचती हूं... असल में ज़रूरत इस बात की है कि आपकी ज़िन्दगी में थोड़ी व्यवस्था आ जाये।

अलेक्सेई (कूदकर खड़ा हो जाता है): व्यवस्था? उन लोगों ने आपको यही सिखाया है, क्यों? आपको बड़ा आसान लगता है यह शब्द, पर मुझसे उसका नाम न लो। अरे, वही तो चीज़ है जिसे लोग नहीं चाहते: पुरानी "व्यवस्था" के इतने वर्षों के बाद वे तरस रहे हैं आज़ादी के लिए, आज़ादी न मिले तो उसकी जैसी ही कोई चीज़ मिल जाये। "व्यवस्था" की इतनी घुट्टी उनको पिलाई गयी है कि अब वे उसका नाम तक नहीं सुन सकते... दस वर्ष की "व्यवस्था" के बाद वे बोलना तक भूल गये!

कमिसार: लेकिन कम से कम आपके बारे में तो यह बात नहीं कही जा सकती।

अलेक्सेई (मुस्कराते हुए): ठीक कहती हैं आप। जो चीज़ दूसरे कहते हैं उसी को मैं दोहराता हूं: "निजी सम्पत्ति ख़त्म हो जाये तो सब कुछ बढ़िया हो जायेगा"... हो जायेगा, समझीं? "हो जायेगा"—देखिये, आप भी ख़ूब अच्छी तरह जानती हैं कि पुराने विचार लोगों के दिलों में कितनी गहराई तक जमे हुए हैं। एकमात्र चीज़ जिसकी आदमी को फ़िक्र है वह है कि धनी कैसे बना जाये, घर कुछ कैसे ले जाया जाये, दूसरे के हाथ से कुछ कैसे झपट लिया जाये। अपनी नींद तक में हम अपनी चीज़ों से चिपके रहते हैं! मेरी अकार्डियन, मेरी बिरजिस, मेरी औरत, मेरी मछली। अरे, अभी ही तो सिर्फ़ एक बटुए को लेकर उन्होंने एक इनसान को ज़िन्दा समुद्र में फेंक दिया था। एक को नहीं, दो इनसानों को। आपका ख़याल है क्या लोग बदल सकते हैं? मनुष्य स्वयं अपने स्वभाव पर क़ाबू पा सकता है? वह छोटी-सी चीज़ है, वह शब्द "मेरा", लेकिन यही वह नन्ही-सी चीज़

है जिसकी वजह से हमारे सारे मनसूबे चकनाचूर हो सकते हैं। काफ़ी लुत्फ़ आनेवाला है! **(वह ज़ोरों से अपने कालर को खींचता है)**

कमिसार: संभालकर, वर्ना कोट फट जायेगा... आप सोचते हैं, हम लोग इस सबको नहीं समझते? हम लोग अन्धे हैं? हम अन्धे नहीं हैं, लेकिन हमारा जनता में विश्वास है। इस "मेरे" शब्द का विचार लोगों के बीच रोटी के एक टुकड़े की तरह फेंक दिया गया था। धूर्त धन्नासेठ—वे जानते थे कि इस तरह का ज़हर जब वे बो रहे थे तो वे क्या कर रहे थे। मरियल चूज़े को देखते ही लोग सब कुछ भूल गये। देखते हैं आप, कितनी भयंकर बात है? इसलिए, आवश्यक है कि लोगों से हम कहें कि "चूज़ा ही सब कुछ नहीं है। मानवजाति को लूट लिया गया है।" अगर आदमी इस पर भी नहीं समझता तो उसे, कीड़ों से भरे इस प्यारे इनसान को उसके बाल पकड़कर हम दलदल से निकाल लायेंगे और कहेंगे: क्या तुम ज़िन्दगी में पहली बार अच्छी तरह स्नान करके स्वच्छ बनना चाहते हो, बेहतर जीवन बिताना चाहते हो, खाने के लिए पर्याप्त भोजन प्राप्त करना चाहते हो? क्या तुम चाहते हो कि तुम आनन्दपूर्वक नाच-गा सको, बच्चों को जन्म दे सको, उन्हें प्यार कर सको, गाते हुए ख़ुशी-ख़ुशी अपना काम कर सको? क्या तुम अपने मस्तिष्क और अपनी प्रतिभा का विकास करना चाहते हो? तब फिर अपना सिर ऊपर उठाओ! इन कीड़ों को निकाल फेंको। दलदल से निकलकर अपने दुश्मनों पर टूट पड़ो! लड़कर स्वच्छ हवा और सुहानी धूपभरी दुनिया का निर्माण करो! धरती पर अभिमान से चलो—वह तुम्हारी है—सारी की सारी तुम्हारी है! पशु जीवन का काल समाप्त हो गया। निजी सम्पत्ति ख़त्म कर दी गयी। सूर्य और प्रकाश से भरे जीवन के, तुम्हारे नाम और काम के अनुरूप उदात्त जीवन के द्वार खुल गये—नये जीवन का अभिनन्दन करो! तुम हर तरह से असाधारण हो, किन्तु तुम्हारे दिमाग़ में न जाने कितना कूड़ा भर दिया गया है।

अलेक्सेई (दुष्टता से): हो सकता है, मैं सिर्फ़ मज़ाक़ कर रहा था?

(कमिसार खड़ी हुई है—सुदृढ़, सीधी और सुन्दर)

इस सारे वक़्त जब आप अधिकारों और सिद्धांतों पर भाषण दे रही थीं मैं आपको देख रहा था और सोच रहा था—और इस बात को स्वीकार

करने में मुझे कोई शर्म नहीं है—कि इस तरह की स्त्री मेरी क्यों नहीं होनी चाहिए? मेरे सामने से दूर हट जाओ, वर्ना...

कमिसार: फिर शादी की समस्या पर लौट आये, क्यों?

अलेक्सेई: छोड़ो ये बातें। मैं तुम्हें हासिल करके रहूंगा। समझीं, मैं तुम्हें मन की बात बता रहा हूं। **(उसके समीप आकर)** सुनो, सुनो भी!

कमिसार (एक गिलास में पानी भरकर आगे बढ़ाती है): लो, पानी पी लो!

अलेक्सेई (पानी को वोद्का की तरह एक ही घूंट में पी जाता है): शायद मैं यों ही बकवास करता रहा? शायद मैं तुम्हारे मन की टोह ले रहा था?

(डेकसारन और कैप्टन द्वार पर दिखायी पड़ते हैं। क्षण-भर के लिए वे ठिठक जाते हैं, फिर कैप्टन दृढ़ क़दम बढ़ाता हुआ अन्दर आ जाता है। अलेक्सेई आहट सुनकर दरवाज़े की तरफ़ घूमता है, अफ़सर को देखता है। आंखें मिचमिचाते हुए तिरस्कार के लहजे में एक मूर्खतापूर्ण गीत की धुन छेड़ देता है)

कैप्टन (क्रोध से भड़ककर): बन्द करो! ख़ामोश!

(अलेक्सेई बाजा बजाता रहता है। फिर कमिसार के कहने पर बन्द कर देता है। सब ख़ामोश हैं)

कैप्टन (पढ़ते हुए): फ़ौजी क़ानून कहता है, "सेना में एक ही आदमी का हुक्म चलना चाहिए। रेजीमेन्ट में अधिकार बंट गये हैं। कई-कई लोगों के हुक्म चलते हैं। हालत इतनी ख़राब हो गयी है कि..."

कमिसार: आप चाहते क्या हैं?

कैप्टन: पूर्ण अधिकार।

(अलेक्सेई हल्के से सीटी बजा देता है। कमिसार सतर्क है)

कमिसार: पूर्ण अधिकार? वह काग़ज़ क्यों पढ़ रहे हैं? रेजीमेन्टों के नाम जारी किया गया सामान्य निर्देश है। क्या वह कोई सरकारी दस्तावेज़ है?

कैप्टन: मैं पढ़ इसलिए रहा हूं कि नौसैनिक अकादमी में मुझे सिखाया गया था कि फ़ौजी मामलों में हमेशा कम से कम शब्दों का

इस्तेमाल किया जाना चाहिए। फ़ौजी सेवा में आदमी बात नहीं करता, काम करता है। पर आजकल, देखता हूं, बेकार के शब्द बहुत इस्तेमाल किये जाते हैं। **(अलेक्सेई की तरफ़ देखता है)**

अलेक्सेई (धमकी भरे ढंग से): बेकार के, क्यों? श्वेत-गार्ड का बच्चा!

(उसकी आंखें कैप्टन के सफ़ेद कालर पर जम जाती हैं। इसी समय हमेशा की तरह टहलता हुआ सरगना आ पहुंचता है। उसके साथ मेमियाहा है। एकत्रित लोगों को मेमियाहा सम्बोधित करता है)

मेमियाहा: हमारी टुकड़ी में...

कमिसार: रेजीमेन्ट में।

मेमियाहा: कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। बात यह है कि हम क्रान्तिकारी नौसैनिकों के बीच जिनके काम में आज तक धब्बा नहीं लगा ज़ारशाही के कुछ दलाल घुस आये हैं। **(पहले कैप्टन की तरफ़ देखता है, फिर डेकसारन की तरफ़)** टोड़ी कहीं के! ज़हरीले सांप! टुकड़ी को पता लग गया है कि वे क्या चाहते हैं... वे हमें बेवकूफ़ नहीं बना सकते! **(कमिसार से)** हमें टुकड़ी को बचाना पड़ेगा, फ़ौरन कुछ करना पड़ेगा। हमारी स्वयं अपनी भावनाएं हैं, स्वस्थ भावनाएं हैं, किसी को क्रान्ति को धक्का पहुंचाने का मौक़ा हम नहीं देंगे...

कैप्टन: स्वस्थ? तुम, फ़िरंग के रोगी!

मेमियाहा: मेरे जैसा फ़िरंग का रोगी स्वस्थ क्रान्ति-विरोधी से कहीं अच्छा है। **(अधीरता से अपने एक हाथ को दूसरे हाथ पर मारता हुआ)** बताइये, कमिसार, आपका क्या जवाब है!

कमिसार: मैं...

कैप्टन: आपका उत्तर, कमिसार!

अलेक्सेई: बोलिये, बताइये!

सरगना: आप किसकी तरफ़ हैं?

कमिसार (कुछ सोचने के बाद): नाविकों की तरफ़।

मेमियाहा: सच कहती हैं?

कमिसार: मेरे शब्द एक कम्युनिस्ट के शब्द हैं।

सरगना: इन शब्दों को आपको सबके सामने दोहराना होगा। **(कैप्टन के हाथ से काग़ज़ छीन लेता है, गुड़मुड़ करके उसे ज़मीन पर**

फेंक देता है, फिर कमिसार से कहता है) इसने जो कूड़ा लिखा था उसके बजाय मैं ख़ुद अपना आदेश आपके पास भेज दूंगा। आप उस पर दस्तख़त करेंगी **(मेमियाहा से कैप्टन और डेकसारन की तरफ़ इशारा करते हुए)** इन पर कड़ी नज़र रखना! इनके साथ क्या करना है इसे मैं बाद में तय करूंगा।

(सब बाहर चले जाते हैं। मेमियाहा कैप्टन की रखवाली करता हुआ जाता है)

कमिसार: यह बात है...

वाइनोनेन (आते हुए): कमिसार, हालत अच्छी नहीं लगती।

कमिसार: वाइनोनेन, हमारे लोगों को बुला लो।

वाइनोनेन (ख़यालों में खोया हुआ): हां, यह अफ़सर... कुलीन घरानेवाला...

कमिसार: वाइनोनेन, पार्टी मीटिंग के लिए लोगों को बुला लो।

वाइनोनेन: क्या सरगना के ख़िलाफ़? क्या लड़ाई शुरू कर रहे हैं?

(नन्हा फ़िन तेज़ी से बाहर चला जाता है)

कमिसार (चारों तरफ़ देखते हुए): इसी तरह आदमी को तजुर्बा होता है, साथी कमिसार!

(एक-एक कर बुज़ुर्ग नौसैनिक, चेचकरू और कुछ दूसरे लोग अन्दर आते हैं)

बुज़ुर्ग नौसैनिक: आपने बुलाया है, कमिसार?

कमिसार: आपने सुना, क्या हुआ है?

बुज़ुर्ग नौसैनिक: थोड़ा-बहुत।

कमिसार: आपकी क्या राय है कैप्टन के बारे में?

चेचकरू: वह दोग़ला है।

वाइनोनेन: मैंने कहा न था कि मौत उसका इन्तज़ार कर रही है!

कमिसार: वाइनोनेन, थोड़ी देर चुप नहीं रह सकते?

वाइनोनेन (पीछे की ओर मुड़ते हुए): मैं बिल्कुल ही चला जा सकता हूं।

कमिसार: यहीं बैठो!

(नन्हा फ़िन बैठ जाता है। अन्य लोग भी उसका अनुकरण करते है)

चेचकरू: काम की बात करो! किसकी अक्ल ठिकाने लगानी है?

कमिसार: सूचना मिली है कि सरगना ने अराजकतावादियों की एक और टुकड़ी को बुलवा भेजा है। वह आती ही होगी। कोई और वक़्त होता तो हम सरगना से बात करते और उसे समझाने की कोशिश करते... युद्ध का उसका रिकार्ड अच्छा है... लेकिन इस समय "शिक्षात्मक कार्य" करने के लिए हमारे पास समय नहीं है।

चेचकरू: सबकी खाल खींचकर भूसा भर दूं...

कमिसार: "सबकी" से तुम्हारा क्या मतलब?

(अलेक्सेई प्रवेश करता है। ख़ामोशी छा जाती है)

अलेक्सेई: खिचड़ी पका रहे हैं? मेरे आ जाने से विघ्न पड़ गया? **(शिकायती लहजे में बाहर चला जाता है। जाते-जाते अपनी चिर-संगिनी अकार्डियन पर हाथ मारकर ज़ोर से उदासी भरी आवाज़ बिखेर देता है)**

बुज़ुर्ग नौसैनिक (जाते हुए अलेक्सेई की तरफ़ देखते हुए): अकेला ही घूमता है।

दूसरा नौसैनिक: उसी का क़सूर है।

वाइनोनेन: क्या मैं बता सकता हूं कि कैप्टन के बारे में मेरा क्या ख़याल है?

कमिसार: तुम्हारी खोपड़ी पर तो सिर्फ़ कैप्टन सवार है! उसका कोई महत्त्व नहीं। महत्त्व हमारा है, पार्टी संगठन का है, और इस सम्बन्ध में सचमुच तुम लोगों ने बहुत ढील की है।

चेचकरू: हम हैं ही यहां कितने? हमारी संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है।

वाइनोनेन: हम कितने हैं? आधी दुनिया आगे है, पूरी दुनिया पीछे है, और साथी लेनिन बीचोंबीच हैं। क्या इतना काफ़ी नहीं है?

चेचकरू: आपकी इजाज़त हो तो मैं ज़रा उन लोगों से कुछ बात कर लूं? **(उठकर खड़ा हो जाता है, उसका हाथ रिवाल्वर पर है)**

(मेमियाहा प्रवेश करता है। चेचकरू रुक जाता है)

मेमियाह्रा (एकत्रित लोगों पर एक नज़र डालते हुए): टुकड़ी के सरगना ने हुक्म दिया है कि तेज़ी से काम किया जाये... **(कमिसार से)** यह रहा आदेश—दस्तख़त कर दीजिये... आप देख क्या रही हैं? यह उसके बारे में है—उस कैप्टन के बारे में। शेडी की टुकड़ी को आदेश दिया गया है... कि वहां, ज़मीन के नीचे... **(आदेश कमिसार को थमा देता है। दूसरों से कहता है)** तुम लोग क्यों हमसे अलग हुए जा रहे हो? दोस्तो, साथ ही रहना अच्छा होगा... **(कम्युनिस्टों पर उसकी अपील का कोई असर नहीं पड़ता)** अच्छी बात है, बहुत देर न करना... **(जाता है)**

कमिसार (सरगना के आदेश को पढ़ती है, उसे मोड़ती है, फिर फाड़ देती है): जान की बाज़ी लगाने के लिए कौन तैयार है?

(ख़ामोशी)

वाइनोनेन: किसलिए?

कमिसार: कुछ वक़्त ऐसे होते हैं जब पार्टी से यह नहीं पूछा जाता कि किसलिए। **(दूसरों को सम्बोधित करते हुए)** बताइये?

(लोगों के बीच हलचल)

बुज़ुर्ग नौसैनिक (खड़ा होकर): मैं।

कमिसार: आप पेत्रोग्राद के हैं?

बुज़ुर्ग नौसैनिक: हां।

कमिसार: हम स्थितियों को ठीक करने जा रहे हैं... ठीक किये बिना अब निस्तार नहीं है **(बुज़ुर्ग नौसैनिक से)** दूसरों की बनिस्बत आप ज़्यादा हिम्मती हैं। रेजीमेन्ट से आपको ही बात करनी होगी। यदि वे आपको मार देते हैं तो आपके बाद **(लोगों की तरफ़ देखती है)** वाइनोनेन तैयार रहेगा...

वाइनोनेन: बात साफ़ है। लेकिन लिखकर दे दीजिये मुझे क्या कहना होगा।

कमिसार: लिखकर न दिया जाये तो तुम्हें मालूम नहीं क्या कहना है? असलियत क्या है—तुम्हें मालूम नहीं?

चेचकरू: बात स्पष्ट है। वे उसे मार देते हैं, उसके बाद अगले आदमी को भी मार देते हैं... तब आपका क्या होगा?

कमिसार: मेरा? सबसे पहले मैं ख़ुद बोलूंगी।

(कनिष्ठ अफ़सर प्रवेश करते हैं)

दूसरा कनिष्ठ अफ़सर: "मास्को। आदेश संख्या १२५० : अगर कोई छापामार दस्ता ऊपर के आदेशों को मानने से इनकार कर देता है, उसके सदस्य बाग़ी और अनुशासनहीन हो जाते हैं, अथवा वे सेना के अन्दर फूट के बीज बोने की कोशिश करने लगते हैं, तो इस दस्ते को सख़्त से सख़्त सज़ा दी जानी चाहिए। ऐसी परिस्थिति में उच्च कमान का फ़र्ज़ हो जाता है कि वह सख़्त से सख़्त क़दम उठाये। कम से कम समय के अन्दर — २४ घन्टे से अधिक नहीं बाग़ी सैनिकों के हथियार वापस ले लिये जायें और उनके दस्ते को तोड़ दिया जाये।"

पहला कनिष्ठ अफ़सर: यह सब ठीक है, परन्तु रेजीमेन्ट में अधिक से अधिक छह या सात पार्टी के सच्चे, वफ़ादार और विश्वस्त सदस्य होंगे। उन्हें गोली मार दी जायेगी।

दूसरा कनिष्ठ अफ़सर: परिस्थितियां चाहे जैसी हों, कमिसार और पार्टी सदस्यों के लिए ज़रूरी हो गया है कि वे दृढ़ता से काम लें, और अपनी जान तक पर खेलकर दूसरों के सामने आदर्श प्रस्तुत करें।

(सरगना, मेमियाहा तथा उनके कुछ अनुयायी प्रवेश करते हैं। सरगना असंतुष्ट भाव से एक क्रान्तिकारी गीत गुनगुना रहा है। मेमियाहा अपनी बन्दूक साफ़ कर रहा है — बीच-बीच में वह उसके घोड़े को चलाता है। उसके चलने की आवाज़ स्पष्ट, कठोर और अर्थपूर्ण लगती है)

सरगना: चलो, एकाध घूंट पी आयें?

मेमियाहा: मुझे अपनी तन्दुरुस्ती का ख़याल रखना चाहिए।

सरगना: धत्! चारों तरफ़ जो हो रहा है उसे देखकर भी? मेरा तो दिल जल उठता है... न ईश्वर, न कोई भले लोग। **(अपने अनुयायियों की ओर इशारा करते हुए)** इन्हें आदमी कहते हो? कुछ है ही नहीं।

मेमियाहा: लेकिन उस महिला को तो देखो जो हमारे यहां भेजी गयी है! यह सब हंगामा समाप्त हो जाये तो इसी तरह की एक सुन्दरी से ब्याह कर लूं।

सरगना (हंसते हुए): उससे मिलकर अपने गुनाहों से मुक्ति पा

लोगे। याद है उस आदमी की जिसे तुमने समुद्र में उछाल दिया था, और उस बुढ़िया की भी जिसे तुमने लहरों के जबड़े में फेंक दिया था? वाह रे, ख़ूनी अराजकतावादी!

(एक नौसैनिक सरगना के पास आकर कहता है: "उन लोगों ने दो आदमियों को गिरफ़्तार कर लिया।" इशारे से सरगना उससे कहता है कि उन्हें ले आओ। दोनों क़ैदियों को ले आया जाता है। नौसैनिक उन्हें घेर लेते हैं, क़ैदी हर चीज़ को गहरी चिन्ता से देखते हैं। किसी भी तरफ़ उन्हें सहानुभूति नहीं दिखती)

मेमियाहा: तुम कौन हो?

पहला क़ैदी: एक आदमी।

मेमियाहा: कहो—नश्वर प्राणी।

पहला क़ैदी: ठीक तुम्हारी ही तरह।

मेमियाहा: तुम हमें क्या बता सकते हो?

पहला क़ैदी: मेरा दोस्त और मैं...

मेमियाहा: सिर्फ़ अपनी बात करो।

पहला क़ैदी: मैं फिर कहता हूं: मेरा दोस्त और मैं भागे हुए युद्ध बन्दी हैं। हम श्लैज़विग के कैम्प से आ रहे हैं। पोलैण्ड और उक्राइन को हमने पैदल पार किया है... हमें अपने घर जाना है। तुम्हारे सैनिकों ने हमारे काग़ज़ात ज़ब्त कर लिये हैं।

(जिन लोगों के पास उनके काग़ज़ात हैं उनकी तरफ़ इशारा करता है। काग़ज़ात पहले मेमियाहा को, फिर सरगना को दिखाये जाते हैं)

सरगना: आपका पद क्या है?

पहला क़ैदी: हम दोनों अफ़सर हैं।

(नौसैनिकों के मुंह से आश्चर्य से निकल पड़ता है: "ओहो!")

मेमियाहा: आपको पता है रूस में क्या हो रहा है?

पहला अफ़सर: सारी दुनिया को पता है। आप हम लोगों की तरफ़ दुश्मनों की तरह क्यों देखते हैं? मेरे पास कोई निजी सम्पत्ति नहीं है—आजकल लोगों को सबसे ज़्यादा चिढ़ इसी से लगती मालूम पड़ती है। मुझे फ़ौज में भरती कर लिया गया था।

सरगना : बोलते जाओ।

पहला अफ़सर : मैं सोचता था ... मेरी उत्तेजित अवस्था को माफ़ कीजिये। वहां मैं बहुत-सी चीज़ें सोचता था ... मुझे बोलने की इजाज़त है?

(एक नौसैनिक उठकर अफ़सर के पास पहुंच जाता है)

इनकी नज़र तो देखिये ... मेरी तरफ़ इस तरह मत देखिये। मुझे बोलने की इजाज़त है?

मेमियाहा : बोलते जाओ।

(नौसैनिक फिर बैठ जाता है)

पहला अफ़सर : मैं सोचता था कि हमारी रूसी क्रान्ति दयावान होगी, मानवीय होगी ... यहां, रूस में, जहां इतने कष्टों और आपदाओं के बाद अब हम लोग लौटे हैं, हमें अन्धकार को चीरती हुई मनुष्यत्व की प्रथम रश्मियों के दर्शन हुए ... ठीक है न? मनुष्यत्व ...

सरगना (किंचित सख़्ती से) : मैं भूल गया हूं कि इस शब्द का क्या अर्थ है ... और मैं सलाह दूंगा कि तुम भी उसे भूल जाओ!

पहला अफ़सर : भूल जाऊं? नहीं, कभी नहीं ... मनुष्यत्व हर जगह होना चाहिए ... इतने लोगों के बीच और जब वे मेरी ओर इस तरह घूर रहे हों ... मेरे लिए बात करना कठिन हो रहा है ... फिर भी मैं अपनी बात कहूंगा! अवश्य ... मैं अवश्य ... आप ख़ुद लड़ाई देख चुके हैं, आप जानते हैं कि पुरानी सेना में काम करने का अर्थ क्या होता था ... हमारे साथ इनसानों जैसा व्यवहार कीजिये। हम पर विश्वास कीजिये। मुझे भरोसा है कि आप हमारी बात पर यक़ीन करेंगे।

मेमियाहा : इतना अधिक भरोसा न करो।

(कुछ नाविक हंस पड़ते हैं)

पहला अफ़सर : हम लोग मामूली अफ़सर हैं ... अभी ख़ंदकों से निकलकर आये हैं। हम सोवियत सत्ता को समझना चाहते हैं।

सरगना : अब काफ़ी हो गया। अब तर्क से काम लिया जाये, तर्कशास्त्र तो तुमने पढ़ा होगा?

पहला अफ़सर : हां।

सरगना: वह क्यों नहीं कुछ बोलता? **(दूसरे अफ़सर की तरफ़ संकेत करता है)**

पहला अफ़सर: वह बहरा है। एक दुर्घटना के कारण उसकी श्रवण-शक्ति लुप्त हो गयी है।

(नौसैनिक एक दूसरे की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हैं। उनमें से कुछ के चेहरों का भाव बदल जाता है)

सरगना: तो तुम लोग भागे हुए युद्धबन्दी हो? घर वापिस जा रहे हो?

पहला अफ़सर: हां।

सरगना (दूसरे क़ैदी से): और तुम?

(दूसरा अफ़सर चकित-सा मुस्कराता है। पहला उसे "हां" कहने के लिए कहता है और वह सिर हिलाकर "हां" कहता है)

हुंह। इसका मतलब हुआ कि तुम लोग घर जाओगे और फिर जाकर हमारे देश के दुश्मन, श्वेत-गार्डों से मिल जाओगे, यही न?

पहला अफ़सर: हम लोग कहीं नहीं जायेंगे। कहीं भी नहीं।

सरगना: तुम लोग अगर ख़ुद अपनी मर्ज़ी से नहीं जाओगे, तो तुम्हें ज़बर्दस्ती ले जाया जायेगा। इतना तो अब तक तुम्हें समझ ही जाना चाहिए। यही तर्कपूर्ण है, क्यों?

पहला अफ़सर: लेकिन वह तो बहरा है और जहां तक मेरी बात है... **(गले से बंधी पट्टी से लटकते अपने ज़ख़्मी हाथ को दिखाता है)** फिर यह क्यों ज़रूरी है कि हम लोग श्वेत-गार्डों के साथ शामिल हो जायेंगे? कुछ लोग आपके साथ भी तो शामिल हो जाते हैं **(वह बैरिंग की तरफ़ इशारा करता है। उस पर अभी ही उसकी नज़र पड़ी है)**

सरगना: हमारे साथ? इसकी कोई सम्भावना नहीं। इस तरह का एक नमूना हमारे पास है **(उसकी आंखें भीड़ में कैप्टन को ढूंढ़ती हैं जिसे उसका एक आदमी गिरफ़्तार किये हुए है)** लेकिन अब अधिक दिन वह हमारे साथ नहीं रहेगा।

(कुछ लोग नज़र बचाकर कैप्टन को देखते हैं)

तुम्हारी पूरी क़ौम को, एक-एक आदमी को हमें ख़त्म करना होगा। ऐसा नहीं करेंगे, तो क्रान्ति विफल हो जायेगी। यह तो सीधा तर्क है, है न?

(ख़ामोशी)

दूसरा अफ़सर (अचानक): क्या वे हमें घर जाने दे रहे हैं?

पहला अफ़सर (निराशा के आंसुओं को गटकते हुए): एक मिनट, सुन लीजिये... मैं इतना उत्सुक था... वहां हम लोग... नये रूस के बारे में, लेनिन के बारे में पढ़ते थे... आप लोग इतने बेरहम क्यों हैं?

सरगना: बेरहम? **(हंसता है)** मुझसे और उससे अधिक रहमदार आदमी तुम्हें दूसरा नहीं मिलेगा। **(मेमियाह्ना की तरफ़ इशारा करके कहता है)**

पहला अफ़सर: एक... अन्तिम शब्द... और मुझे कह लेने दीजिये... मैं आपसे विनती करता हूं...

सरगना: ये सब चोंचले पूंजीवादी अदालतों में चलते हैं—हमारे यहां नहीं। ये सब बच्चों को बहलाने की बातें हैं। यहां वह कुछ नहीं चलेगा। **(अपने एक आदमी से)** ले जाओ इन्हें!

पहला अफ़सर (तनकर सीधे खड़े होते हुए): ऐसी हालत में... मैं आपसे विदा लेता हूं। मौत के मुंह में भेजने के पहले अभी जो लेक्चर आपने हमारे सामने दिया है उसके लिए धन्यवाद।

दूसरा अफ़सर (पहले अफ़सर से): उन्होंने हमें घर जाने की इजाज़त दे दी? तुम जवाब क्यों नहीं देते?

सरगना: इन्हें ले जाओ!

दूसरा अफ़सर: उन्होंने हमें घर जाने की इजाज़त दे दी? जी? ओह, शुक्रिया... घर पर मेरा इन्तिज़ार हो रहा है।

बुज़ुर्ग नौसैनिक (भीड़ को चीरकर आगे आते हुए): आप उनके साथ इस तरह का बर्ताव क्यों कर रहे हैं?

(नौसैनिकों के बीच हलचल)

एक आवाज़: ख़बरदार जो उनको हाथ लगाया!

अलेक्सेई (सरगना के पास जाकर और पहले अफ़सर की ओर संकेत करते हुए): मुझे वह आदमी पसन्द है!

सरगना: इन्हें ले जाओ!

अलेक्सेई: ख़बरदार जो इन्हें हाथ लगाया!

सरगना (भीड़ में घुसकर क़ैदियों को अपनी पीठ से ढकेलता हुआ): होशियार हो जाओ, जो लोग इनका साथ देंगे उनका भी यही हश्र होगा! **(अपने आदमियों से)** ले जाओ इन्हें!

(दोनों अफ़सरों को ले जाया जाता है)

अलेक्सेई (सरगना से): ख़बरदार! तुम्हें इसकी सज़ा मिलेगी!

(कमिसार, नन्हा फ़िन, चेचकरू तथा दो और लोग प्रवेश करते हैं)

सरगना: आपने आदेश पर दस्तख़त कर दिये?

कमिसार (थोड़ी देर रुककर): हां...

सरगना: लाइये। अलेक्सेई, देखा न?

कमिसार: क्या हुआ?

मेमियाहा: घबड़ा रहा है, है न? हम लोग दो की सफ़ाई कर रहे हैं।

बुज़ुर्ग नौसैनिक: वे युद्ध-बन्दी हैं!

अलेक्सेई: आप अपने को कमिसार भी कहती हैं!

कमिसार: रोको उन्हें!

(यही क्षण है जिसमें रेजीमेन्ट की क़िस्मत का फ़ैसला हो जाता है। कमिसार पूरी स्थिति का मूल्यांकन करती है। वह जानती है कि ख़ुद उसकी क़िस्मत, पार्टी सदस्यों की क़िस्मत, सारी रेजीमेन्ट की क़िस्मत का फ़ैसला इसी क्षण में होना है। अलेक्सेई, डेकसारन, बुज़ुर्ग नौसैनिक, वाइनोनेन तथा थोड़े से और लोग क़ैदियों को मौत से बचाने के लिए तेज़ी से दौड़ते हैं। लोगों की ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें सुनाई दे रही हैं। "रोको... ठहरो!" एक-दो सेकेण्ड तीव्र प्रतीक्षा में बीतते हैं। फिर दो गोलियों के चलने की आवाज़ सुनाई देती है। ख़ामोशी)

(सरगना से) लाल सेना युद्ध-बन्दियों को गोली नहीं मारती। क्या इसे आप नहीं जानते थे?

सरगना: व्यर्थ की नम्रता। सिर्फ़ दो ही पक्ष हैं: उनका या हमारा।

कमिसार: हो सकता है कि वे हमारे पक्ष में रहे हों। इस तरह

के लोग निश्चित रूप से हमारे साथ आ जायेंगे। इस वक़्त भी २२,००० पुराने अफ़सर लाल सेना में काम कर रहे हैं।

सरगना: २२,००० ग़द्दार हैं।

(वह अपनी नज़र कैप्टन की तरफ़ उठाता है। और भी कई लोग उसकी तरफ़ फीकी नज़रों से देखने लगते हैं। कैप्टन चुपचाप उनकी ओर देखता रहता है)

कमिसार: लेनिन ने कहा है...

सरगना: इसकी मुझे कोई परवाह नहीं।

बुज़ुर्ग नौसैनिक: तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि तुम सोवियत सरकार द्वारा जारी किये गये आदेशों की परवाह करना सीख लो।

सरगना: मेरे पास ख़ुद अपने आदेशों की परवाह करने का वक़्त नहीं है!

(सरगना के आदेश को पूरा करके उसके अनुचर लौट आये)

अनुचर (आहिस्ता से): उनमें से एक ने नारा लगाया था: "क्रान्ति ज़िन्दाबाद!"

सरगना: तो क्या हुआ? डर गया था।

अलेक्सेई (भयंकर क्रोध से): और अगर सचमुच उसकी यही भावना रही हो?

कमिसार (अलेक्सेई तथा कुछ और लोगों को शान्त करती हुई): शान्तिपूर्वक बात कर ली जाये...

मेमियाहा: मुझे भी समझदार लोग ही पसन्द हैं। बैठ जाओ।

सरगना: ठीक है—बैठकर बात कर ली जाये। मैं हमेशा आम राय को सुनता हूं।

(प्रत्येक व्यक्ति इधर-उधर जगह ढूंढ़कर बैठ जाता है)

तो, शुरू करो।

(लोग एक दूसरे की तरफ़ देखते हैं। बातचीत शुरू करने के लिए कोई उत्सुकता नहीं दिखाता)

एक आवाज़: अपने मन की बात बताना यहां इतना आसान नहीं है।

कमिसार (सरगना से): हुज़ूर की इतनी इज़्ज़त है कि ये लोग अपना मुंह खोलने की जुर्रत ही नहीं कर सकते।

बुज़ुर्ग नौसैनिक (उठकर सामने आता है): मैं कह नहीं सकता कि आखिर सच क्या है...

अलेक्सेई (बुज़ुर्ग नौसैनिक की बात को बीच में काटता हुआ): किसकी इज़्ज़त करने की बात हो रही है? **(सरगना की ओर इशारा करते हुए)** इसकी **(सरगना से)** तो हमें बात करने की "इजाज़त" है, क्यों साहब? क्या आप से फ़रियाद करें कि हमें क्या कहना है? आपके सामने हमारी ज़बानें नहीं खुलतीं, क्यों **(सरगना की आवाज़ की अपमानजनक ढंग से नक़ल करते हुए)**, यह शोर क्यों हो रहा है?

सरगना (मेमियाहा से): लगता है कि इसका दिमाग़ ख़राब हो गया है।

अलेक्सेई (मेमियाहा की ओर इंगित करते हुए): दिमाग़ इसका ख़राब हुआ है—तुम्हारे इस फ़िरंगे के रोगी चाकर का! और अब मैं तुम्हारे मुंह पर, तुम्हारे उस बदशक्ल थूथने के सामने कहता हूं: तुम बेईमान और ग़द्दार हो!

सरगना: ये बढ़िया-बढ़िया शब्द तुम्हें किसने सिखला दिये हैं? **(ग़ौर से वह कमिसार, बुज़ुर्ग नौसैनिक और वाइनोनेन की तरफ़ देखता है)**

बुज़ुर्ग नौसैनिक (सरगना से): देख ले, ख़ूब अच्छी तरह देख ले, गुण्डा कहीं का! हम लोग तुम्हें अच्छी तरह से देख चुके हैं।

सरगना: अच्छा, अच्छा...

वाइनोनेन (अभी तक चुपचाप खड़े नाविकों के एक दल में शामिल होते हुए): तुम लोग अपने को नौसैनिक भी कहते हो? और मुंह खोलने में डर लगता है? छि:! **(घृणा से थूकता है)**

(उन लोगों को बुरा लगता है)

उनके दल से कई आवाज़ें: हां! हम लोग अपने को ऐसा ही कहते हैं।

चेचकरू: किसका अपमान किया जा रहा है? हमारा?

एक आवाज़: तुम्हारा ख़याल है कि हम पेत्रोग्राद के नाविक इस से डरते हैं? **(सरगना की ओर इशारा करते हुए कहता है)**

अलेक्सेई (सरगना से): जिस वक़्त उस बटुए के पीछे उस छोकरे

को तुमने लहरों में फिंकवा दिया था उस वक़्त क्या तुमने हमारी बात सुनी थी! बताओ!

एक आवाज़: नहीं।

(सरगना बुत की तरह खड़ा है)

अलेक्सेई: क्या उस समय तुमने हमारी राय मांगी थी जिस वक़्त उस बुढ़िया को समुद्र में ज़िन्दा डुबो दिया था?

एक आवाज़: नहीं।

अलेक्सेई: क्या तुमने हमारी यह बात मानी थी कि इनको **(कमिसार की तरफ़ इशारा करता है)** न परेशान करना?

एक आवाज़: नहीं।

डेकसारन (कैप्टन की तरफ़ इंगित करता हुआ): और इसको भी? और मेरे बारे में तो बात ही करना फ़िज़ूल है।

अलेक्सेई: बिल्कुल ठीक। क्या तुमने उस वक़्त कमिसार की और हम लोगों की राय पूछी थी जिस वक़्त तुमने कहा था कि इसका **(कैप्टन की तरफ़ संकेत करता है)** सफ़ाया कर दिया जाये? और उन दो घायल बन्दियों को मरवाने की इजाज़त तुम्हें किसने दी थी? किसकी अनुमति से तुमने उन्हें मरवा डाला है?

(भीड़ से धीरे-धीरे बहुत-सी आवाज़ें गूंजने लगती हैं)

सरगना: बकवास बन्द करो! तुम लोग ख़ाक नहीं जानते! **(खड़ा हो जाता है)** एक साज़िश हो रही है। अभी तुम्हें सब कुछ मालूम हो जायेगा। कमिसार, उस काग़ज़ को पढ़िये!

(सरगना पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कमिसार के बग़ल में आकर खड़ा हो जाता है। सबकी नज़रें कमिसार के चेहरे पर केन्द्रित हो जाती हैं। सब आश्चर्यचकित हैं)

कमिसार (पढ़ते-पढ़ते स्वयं मसौदा बनाती जाती है): "सर्वहारा क्रान्ति के नाम रेजीमेन्ट की कमिसार और उसके द्वारा नियुक्त किये गये व्यक्तियों की रेजीमेन्टल फ़ौजी अदालत की तरफ़ से..."

मेमियाहा: नियुक्त किये गये किन लोगों की तरफ़ से?

बुज़ुर्ग नौसैनिक: टोको मत!

कमिसार: "भूतपूर्व...

(सबकी नज़रें कैप्टन की तरफ़ घूम जाती हैं)

"...टुकड़ी के भूतपूर्व सरगना...

(हलचल)

के मामले की जांच-पड़ताल के इस नतीजे पर पहुंचने के बाद कि सरगना बिना मुक़दमा चलाये रेजीमेन्ट के नौसैनिक, बूढ़ी औरत और दो युद्ध-बन्दियों को मरवाने का अपराधी है, और इस नतीजे पर पहुंचने के बाद कि वह सोवियत सत्ता का प्रतिनिधित्व करनेवाली कमिसार की हुक्म-उदूली करने का भी अपराधी है, उसे, यानी सरगना को सबसे कड़ी सज़ा देने का फ़ैसला किया जाता है..."

(जिस समय कमिसार आदेश पढ़ती है उस समय मेमियाहा घबराहट से अपने आस-पास के तमाम लोगों के चेहरों को देखने लगता है और फिर धीरे-धीरे सरगना के पास से खिसक जाता है। यानी, एक तरह से, डूबते हुए जहाज़ को वह भी तिलांजलि दे देता है)

सरगना (अपनी रिवाल्वर हाथ में लेते हुए): धोखा! ग़द्दारी!

(छह नौसैनिक सरगना को पकड़ लेते हैं। वह उन्हें ढकेलकर दूर कर देता है। इसी बीच उसकी रिवाल्वर उसके हाथ से छीन ली जाती है)

(मेमियाहा से) तुम कहां जा रहे हो?

मेमियाहा (जिसे अलेक्सेई ज़ोर से पकड़े हुए है): मैं... मैं... इन्होंने मुझसे जबरन काम कराया है!

सरगना: उस काग़ज़ को पढ़ो—जिसे वह हाथ में लिये हुए है! वहां तो बिल्कुल दूसरी चीज़ है... मेरे साथ ग़द्दारी की गयी है!

(ख़ामोशी। अलेक्सेई कमिसार के हाथ से काग़ज़ के सादे टुकड़े को ले लेता है। वह उलट-पुलटकर कभी एक तरफ़ देखता है, कभी दूसरी तरफ़। स्थिति को समझकर वह भी फ़ैसला करता है)

अलेक्सेई: वही चीज़ तो इस में लिखी हुई है... वही जो कमिसार ने अभी पढ़ी थी। तुमने पहले ही मानने का वचन दे दिया था। क्या तुमने

नहीं कहा था कि आम राय को तुम हमेशा सुनते हो? **(मेमियाहा को अपने साथ खींचते हुए वह सरगना के सामने जाकर खड़ा हो जाता है)** तुम क्या कहा करते थे?

मेमियाहा (सरगना के सामने चुनौती के स्वर में): फ़ैसला अन्तिम है, इसे बदला नहीं जा सकता।

अलेक्सेई (कमिसार तथा अन्य लोगों को सम्बोधित करते हुए): ठीक है?

कमिसार: ठीक।

(ख़ामोशी)

वाइनोनेन (अपनी रिवाल्वर को भरता है): मैं पूरा कर दूं?

कमिसार: बेहतर हो कि साथी अलेक्सेई उचित क़दम उठायें।

(अचानक सौंपी गई इस ज़िम्मेदारी से चौंककर अलेक्सेई ने घूमकर देखा)

सरगना (छह नाविकों की पकड़ से छूटने की कोशिश करता है): मेरी एक आख़िरी बात सुन लो! अलेक्सेई! भाई मेरे!

अलेक्सेई (सरगना के पास जाकर और नाविकों की गिरफ़्त से उसे मुक्त करके): आख़िरी बात? ये चोंचले पूंजीवादी अदालतों में चलते हैं, हमारे यहां नहीं। वे बच्चों को फुसलाने की तरकीबें हैं। हम लोग उन्हें नहीं मानते। **(अपनी रिवाल्वर निकालते हुए)** चलो!

सरगना: इंकलाब ज़िन्दाबाद!

अलेक्सेई (अधीरता से सरगना को अपने कन्धे से ढकेलता है): ओह, चलो भी तो!

(अलेक्सेई सरगना को लेकर चला जाता है। नाविक बेसब्री से इन्तज़ार करते हैं। गोली चलने की आवाज़ सुनाई देती है)

डेकसारन: ख़ुदा उसकी आत्मा पर रहम करे!

वाइनोनेन (कमिसार से, जोकि ख़यालों में खोई खड़ी है): अब आप क्या सोच रही हैं? आपका सिर फट जायेगा।

कमिसार: वाइनोनेन, तुम्हें इससे क्या मतलब? **(कैप्टन से)** साथी कैप्टन, आप आज़ाद हैं। जाइये, कमान संभालिये।

कैप्टन (तनकर सीधा खड़ा होकर): जो आज्ञा।

(अचानक लोगों के गाने की आवाज़ सुनाई देती है। उनकी आवाज़ें बराबर नज़दीक आती जा रही हैं। एक आवाज़: "अराजकतावादियों की कुमुक आ गयी!" हमेशा की तरह शोरगुल और गड़बड़ी मचाता हुआ अराजकतावादियों का एक नया दल मौक़े पर आ जाता है। अपने सामान और हथियारों को वे लोग मनमाने और अव्यवस्थित ढंग से जहां चाहे लटकाये हुए हैं)

अराजकतावादियों की कुमुक का नेता: जुझारू साथियो, अभिवादन! इन ख़ुशदिल लोगों को हम आपकी मदद के लिए भर्ती कर लाये हैं। हम एक बार फिर सन्त बार्थोलेम्यू की रात मनायेंगे! अपने सम्मानित सरगना की सहायता के लिए! **(कमिसार और कैप्टन पर यकायक नज़र पड़ने पर)** यह ख़ूबसूरत जोड़ी कहां से ले आये? **(उनकी ओर विचित्र कुतूहल की दृष्टि से देखता है। स्थिति को समझ नहीं पाता)** कोई अफ़सर और उसकी पत्नी? पकड़े गये, क्यों? अच्छा, इसके बारे में बात होगी। **(मेमियाहा से)** अरे भाई! सरगना कहां हैं? उनसे मिले हज़ार वर्ष हो गये! उनका क्या हाल है? मेदे की जलन की शिकायत किया करते थे। अब ठीक हैं?

मेमियाहा: अब बिल्कुल ठीक हैं।

कुमुक का नेता: आप लोग कुछ बोलते क्यों नहीं?

कमिसार: इन्हें बता दो। संक्षेप में।

मेमियाहा: हुंह... तुम्हारे उस सरगना को साफ़ कर दिया गया है। उसका खेल ख़त्म हो गया! एकदम नीच आदमी निकला।

कुमुक का नेता: तुम्हारा कोढ़ यहां भी पहुंच गया? **(मेमियाहा के माथे पर अंगुली से टकटक करते हुए कहता है)**

मेमियाहा (झटके से उसके हाथ को दूर करता हुआ): बकवास बन्द करो। तुमसे कोई मतलब नहीं कि वह कहां पहुंच गया है...

(अलेक्सेई लौट आता है। सरगना का टोप, पेटी और रिवाल्वर का खोल वह ज़मीन पर फेंक देता है)

(नेता से) पहचानते हो?

(कुमुक का नेता उन्हें घूरता है। फिर विक्षिप्त-सा अपने सिर को ज़ोर से झटका देकर)

कुमुक का नेता (अपने लोगों से): भाइयो, ग़द्दारी हुई...

(नवागन्तुकों के अन्दर हलचल पैदा होती है)

वाइनोनेन: चुप रह! समझे! तुम्हारे भी दिन ख़त्म हो गये। अब चलो, काम करो। अगर यह पसन्द नहीं है तो तुम्हारी खोपड़ी में एक और छेद कर दिया जायेगा!

(नवागन्तुकों को नई शक्ति का, रेजीमेन्ट का, एहसास होता है)

कमिसार: डेकसारन, इन लोगों को व्यवस्थित करो!

डेकसारन: जो आज्ञा। **(नवागन्तुकों से)** लाइन में खड़े हो जाओ! सावधान! आंखें—सामने! ख़ामोश! सावधान!

(अराजकतावादियों का दल सावधान खड़ा हो जाता है। कमिसार उनके पास जाकर आधिकारिक रूप से दल का अभिनन्दन करती है)

कुमुक का नेता: हैलो!

कमिसार (उसके नज़दीक आकर और सख़्ती से बोलते हुए): मैं तमीज़ से जवाब चाहती हूं।

(जवाब एकसाथ नहीं, अलग-अलग आते हैं। रेजीमेन्ट के सदस्य उन लोगों की तरफ़ घूरते हुए उन्हें बार-बार चेतावनी देते हैं: "संभलकर!"

(नवागन्तुकों से) नहीं, उससे काम नहीं चलेगा। एक बार फिर बोलो।

(स्थिति को भांपकर वे एकसाथ ठीक से जवाब देने लगते हैं)

अब कुछ ठीक है। मैं आपको बधाई देती हूं, आज से आप लोग लाल सेना की प्रथम नौसैनिक रेजीमेन्ट के सदस्य बन गये!

नवागन्तुक (एक स्वर से निर्धारित उत्तर देते हुए): हम श्रमिक जनता के सेवक हैं!

डेकसारन: बहुत ख़ूब! एकदम याद आ गया!

कैप्टन (कमिसार से): आश्चर्य! ये तो तुरंत बदल गये!

कमिसार: मैंने कहा न था, उन्हें बदलने में सदियां नहीं लगेंगी!

मेमियाहा (कैप्टन से—लापरवाही से): अभी आप हमें जानते नहीं! हमें ज़रूरत है इनकी तरह के सिर्फ़ कुछ और कम्युनिस्टों की! **(कमिसार की पीठ सराहना से थपथपाता है)**

डेकसारन (मेमियाहा की ओर देखते हुए): ए! अपने पंजे दूर रख!

कमिसार: साथियो! चलिये, अब हमें मोर्चा बुला रहा है।

(रेजीमेन्ट सावधानी की मुद्रा में खड़ी हो जाती है। वह अब एक सुगठित शक्ति बन गयी है। मार्च करती है तो उसकी पदचापों की गूंज से एक अद्‌भुत गति का अहसास होता है)

साथियो! देखें तो, लाल सेना के बाक़ायदा सैनिकों के रूप में अब आप किस प्रकार सलामी देते हैं!

(रेजीमेन्ट की सलामी से वातावरण गूंज उठता है। एक सशक्त सेना की यह पहली ललकार है। उसके बढ़ाव को देखकर हृदय आनन्द-विभोर हो उठता है)

तीसरा अंक

(सायंकाल। डेकसारन, बुज़ुर्ग नौसैनिक और वाइनोनेन कमिसार के पास बैठे हैं)

कमिसार (टेलीफ़ोन पर बात ख़त्म करते हुए): हां ... ठीक है ... हम ऐसा ही करेंगे ... **(टेलीफ़ोन का रिसीवर रखती है)** साथियो, असल बात यह है कि हम बात बहुत करते हैं, किन्तु काम कम। अब लड़ाई का वक़्त आ गया। वक़्त क़ीमती है। मार्च के दौरान कैप्टन से मैंने बहुतेरी बातें कर ली हैं। **(बुज़ुर्ग नौसैनिक से)** अब आपको एक बटालियन की ज़िम्मेदारी संभालनी होगी।

बुज़ुर्ग नौसैनिक: मैं तो ख़ूब बढ़िया कमाण्डर बनूंगा! मैं सिर्फ़ कोयला भोंकने का काम कर सकता हूं।

कमिसार: इस बारे में अब और कहने की ज़रूरत नहीं। किसी न किसी वक़्त तो हम सबको ज़िम्मेदारियां लेनी ही पड़ेंगी!

डेकसारन: थल पर लड़ने का हमें ज़रा भी अनुभव नहीं। पैदल सेना को हमेशा हम तिरस्कार की नज़र से देखते आये हैं।

कमिसार: लेकिन अब ऐसा नहीं करेंगे।

डेकसारन: जी।

(कैप्टन प्रवेश करता है)

कैप्टन: मैं आपको कुछ ख़बर देना चाहता हूं।

कमिसार: बताइये।

(कैप्टन बुज़ुर्ग नौसैनिक की तरफ़ संदेह से देखता है। सामान्य सैनिकों के सामने उसे बोलने में हिचकिचाहट होती है)

इनके सामने बोलने में आप हिचकिचा रहे हैं? आइये, परिचय करा दूं। जिस नये बटालियन कमाण्डर के बारे में हमने बातें की थीं यही है वह—आपका प्रथम सहायक।

(दोनों हाथ मिलाते हैं)

वाइनोनेन: एकाध छोटा बटालियन मुझे नहीं आप दे सकतीं?

कमिसार: धीरज रखो, वाइनोनेन, तुम्हारे लिए भी हम कुछ न कुछ करेंगे। ज़रा तुम और तैयार हो जाओ। हां, साथी कैप्टन, आप कुछ कहना चाहते थे न?

कैप्टन (कमिसार से): बात छोटी-सी है, लेकिन है महत्त्वपूर्ण। दुश्मन ने पैदल सेना के एक शाही ब्रिगेड को पश्चिमी मोर्चे से इधर भेजा है। वह हमारी तरफ़ बढ़ता आ रहा है।

डेकसारन: शाही ब्रिगेड। १६०८ में मैंने एक देखा था। उन दिनों हम लोग विदेशों में थे।

कैप्टन: बिल्कुल ठीक।

कमिसार: फिर आप का क्या ख़याल है, साथी कैप्टन?

(वाइनोनेन और बुज़ुर्ग नौसैनिक कैप्टन के और नज़दीक आ जाते हैं)

कैप्टन: मेरा सुझाव यह है। **(नक़्शे पर जगह दिखाता हुआ)** इस वक़्त हम यहां हैं। हमारे पास तीन बटालियन हैं। मेरा कहना है कि दो को हम आगे भेज दें—देखिये, उन्हें इस जगह तैनात किया जा सकता है। एक बटालियन को हम रिज़र्व रखेंगे... नया कमाण्डर उसी के साथ यहां रह सकता है।

(ख़ामोशी)

कमिसार (कैप्टन के प्रस्ताव को दोहराते और मन में तौलते हुए): दो बटालियनों को आगे भेज दें। एक को रिज़र्व में रखें। हुंह। क़ायदे-क़ानून और पुराने तौर-तरीक़ों के हिसाब से बिल्कुल ठीक है। लेकिन वर्तमान स्थितियों में?

(अलेक्सेई प्रवेश करता है)

अलेक्सेई (उन सबको ध्यान से देखते हुए): क्या मैं फिर आप लोगों की बातचीत में खलल डाल रहा हूं?

कमिसार: नहीं। बैठिये। सैनिकों का क्या हाल है?

अलेक्सेई: काफ़ी ठीक हैं... ताज़ी हवा खा रहे हैं... औरतों को घूर-घूरकर देखते हैं। **(संजीदगी से)** अफ़वाह है कि कुछ होने जा रहा है?

कमिसार: अफ़वाहों को गोली मारिये। दुश्मन की प्रशिक्षित सेना का एक ब्रिगेड हमारी तरफ़ बढ़ता आ रहा है।

अलेक्सेई (आवेशपूर्वक): अक्ल ठिकाने लगा दी जाये!

बुज़ुर्ग नौसैनिक: किसकी अक्ल? कहां? कैसे? **(व्यंग से)** "अक्ल ठिकाने लगा दी जाये!"

अलेक्सेई (धप से बैठते हुए): रणनीति आदि मैं क्या जानूं। **(कैप्टन की ओर संकेत करते हुए)** विशेषज्ञ तो यह हैं।

कमिसार: साथी कैप्टन ने अपना सुझाव रख दिया है: अपनी सेनाओं को एक सुविधाजनक जगह पर तैनात कर दिया जाये और दुश्मन का इन्तज़ार किया जाये। आपका क्या ख़याल है?

(सब लोग ख़ामोश हैं)

मेरी राय में, इससे काम नहीं चलेगा। **(कैप्टन से)** बुरा न मानियेगा, लेकिन मुझे लगता है कि अगर हम निश्चित रूप से जानते हैं कि दुश्मन हमारी तरफ़ बढ़ा आ रहा है तो हमें चाहिए कि हम लोग आगे जाकर उससे भिड़ जायें और इससे पहले कि वह जान सके कि क्या हो रहा है उसका सफ़ाया कर दें।

अलेक्सेई: मैं आपसे सहमत हूं।

डेकसारन: अब नौसैनिकों जैसी बात हुई!

कमिसार: खेतों में छिपकर इन्तज़ार करने, कीचड़ में पेट के बल लेटने और थोड़ी-सी रिज़र्व शक्ति पीछे रखकर इस बात का इन्तज़ार करने कि दायें-बायें से, अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ दुश्मन बढ़े और जो चाहे करे—मुझे लगता है कि इस पुराने रूसी तरीक़े को हम बहुत देख चुके हैं। जी भर गया है। इसलिए मेरा सुझाव है—ध्यान रखियेगा, मैं सिर्फ़ सुझाव दे रही हूं—कि हम ख़ुद आगे बढ़कर दुश्मन को घेर लें।

अलेक्सेई: ओ-हो!

कमिसार: आपकी क्या राय है?

कैप्टन (रुखाई से): आप बहुत उग्र उपाय बता रही हैं। लेकिन व्यक्तिगत रूप से... परन्तु अगर पार्टी का यही फ़ैसला है तो...

कमिसार: तो ठीक रहा। हम लोग इस दूसरे तरीक़े को ही अपनायेंगे। अपनी सेनाओं को आप अब किस तरह तैनात करेंगे?

कैप्टन: ज़रा ठहरिये... **(नक़्शे का अध्ययन करते हुए)** डेढ़ मील का पैमाना है? अच्छा... बस, एक क्षण... समझा... **(मन में हिसाब लगाते हुए)** उस हालत में पहला बटालियन यहीं रहेगा, दुश्मन के आने की सूचना देगा, और एक इंच भी पीछे हटे बिना पूरी ताक़त से उसका मुक़ाबला करेगा। दूसरे दोनों बटालियन चुपचाप आगे बढ़ेंगे... हां... वे दुश्मन के पीछे... लगभग १५ मील पीछे, पहुंच जायेंगे और यकायक उस पर हमला बोल देंगे, यहां — इस जगह पर **(नक़्शे पर जगह बताता है)**

कमिसार: हमको बहुत मज़बूत नेता चुनना चाहिए।

कैप्टन (रुखाई से): निस्सन्देह। इसका फ़ैसला आपको करना है।

कमिसार: मेरा ख़याल है कि जिन दो बटालियनों को हमला करना है उनका नेतृत्व आप ख़ुद संभालें। नये कमाण्डर को अपने सहायक के रूप में ले लें। जहां तक पहले बटालियन की बात है उसके साथ... मैं ख़ुद यहां रहूंगी और डेकसारन तथा अलेक्सेई मेरे साथ रहेंगे।

वाइनोनेन: और मैं... **(कमिसार से)** मुझे भी उस अफ़सर के साथ भेज दीजिये...

कमिसार: वाइनोनेन, तुम मेरे साथ रहोगे?

वाइनोनेन: जी।

कमिसार (वाइनोनेन से): देखो, कोई सुन तो नहीं रहा है?

(वाइनोनेन दरवाज़े के पास जाता है, वहां से इशारे से बताता है कि कोई नहीं है)

कैप्टन: हमें निम्न प्रकार से आक्रमण करना होगा: पहली बटालियन सामने से हमला करेगी, दूसरी और तीसरी पीछे से। हमले का समय सूर्योदय से ठीक पहले पांच बजे होगा। अपनी घड़ियां मिला लो। इस समय रात के ठीक साढ़े ग्यारह बजे हैं।

(कैप्टन और अन्य लोग अपनी-अपनी घड़ियां निकालकर मिलाते हैं)

बुज़ुर्ग नौसैनिक: पांच बजे सुबह।
कमिसार: पांच बजे सुबह।

(घड़ियां मिलाई जाती हैं)

कैप्टन: ब्योरे की बातें, मार्ग, रुकने की जगहों वग़ैरा की सूचना बाद में दी जायेगी।

कमिसार: मैं एक बात की तरफ़ आप सबका ध्यान दिलाना चाहती हूं: रेजीमेन्ट की यह पहली बड़ी परीक्षा है... इस अभियान के भेद को आपको दिल में छिपाकर रखना होगा। यदि हममें से कोई दुश्मन के हाथों में पड़ जाता है तो चाहे उसे मरना ही क्यों न पड़े, इस भेद को वह न बताये। दुश्मन पर अप्रत्याशित हमला करना है।

वाइनोनेन: एक शब्द भी नहीं। उससे पहले ही मौत का दामन थाम लेंगे।

कमिसार: आपका क्या ख़याल है: इस परीक्षा में रेजीमेन्ट पास हो जायेगी?

कैप्टन: दुर्भाग्य से मुझ में भविष्यवाणी करने की शक्ति नहीं है। मैं आपको सलाह दूंगा कि फ़ौरन काम शुरू कर दें। हमारे पास वक़्त बिल्कुल नहीं है।

(आदेश दिये जाते हैं। रात में लोगों के इधर-उधर चलने-दौड़ने की आवाज़ें सुनाई देती हैं। बटालियनों का अभियान शुरू हो गया है)

पहला कनिष्ठ अफ़सर: वे लोग रवाना हो गये, वे रवाना हो गये... **(क्षणभर सुनता है, फिर धीरे-धीरे कहता है)** बायें, दायें! बाक़ायदा फ़ौज के रूप में उनके ये पहले क़दम हैं... यह एक ऐसा फ़ौजी अभियान है जिसका हर सैनिक जानता है कि वह कहां और किसलिए जा रहा है... आह, वह भी कैसा रोमांचक समय था! लाल सेना—हमारी तरुणाई के वे दिन! हम १८ वर्ष के थे। सारी दुनिया को सम्बोधित करते हुए हमने कहा था: "सुनो, सारी दुनियावालो, सुनो!" अपने उन हमलों को जो हमने किये थे, हम कभी नहीं भूलेंगे। हमारी ललकार थी: "उस संकटपूर्ण अन्तिम क्षण में, बाल्टिक नौसैनिक बेड़े के नाविक अपनी

आवाज़ें बुलन्द करेंगे!" हमारे साथियों, पैदल सेना के डिवीजनों और घुड़सवार कोरों ने जो लम्बा और कठिन मार्ग तय किया था उसकी हमें याद है... हमें हर चीज़ याद है... और जब भी हममें से कोई मैदाने जंग में गिरता तो ऐसा लगता कि अपने ही शरीर का कोई हिस्सा कटकर गिर गया है...

दूसरा कनिष्ठ अफ़सर: ...हम मार्च कर रहे थे। साल-दर-साल, दिन और रात, ४५-५० मील प्रतिदिन के हिसाब से हम मार्च करते जा रहे थे... विश्चुला से आमूर तक सारी नदियों को हमने पार किया था। और जहां से भी हम गुज़रते थे वहां अपने पीछे एक चौकी, एक मोर्चा क़ायम करते जाते थे।

(सैनिक अपने मुकामों पर पहुंच जाते हैं। नमक, आयोडीन, मछली और नागदौन की गंध फैलाती हवा खुले मैदानों में अठखेलियां कर रही है। रात गहरी है। मेमियाहा और वाइनोनेन पहरे पर तैनात हैं)

मेमियाहा: वाइनोनेन, आंखें खोले रहना।

वाइनोनेन: अच्छी तरह खोले हूं।

मेमियाहा: पीछे भी देखते रहना।

वाइनोनेन: पीछे भी।

मेमियाहा: हमारा एक सच्चा साथी खोया जा चुका है... रेजीमेन्ट में कहीं ग़द्दारी है।

वाइनोनेन: क्या यह सच है? वह अफ़सर... भगवान जाने...

मेमियाहा: अफ़सर के एवज़ में कैसे अच्छे आदमी को हम खो बैठे हैं! छोकरे चमगादड़ों की तरह अन्धे हैं... अतीत को वे भूल गये। उसे भी भुगतना पड़ेगा—वह समझती नहीं।

वाइनोनेन: उस जैसी स्त्री का कोई नुक़सान नहीं हो सकता। लेकिन अब बात बन्द करो। होशियार रहने की ज़रूरत है। दुश्मन किसी भी क्षण हमला कर सकता है।

मेमियाहा: होशियार रहो चाहे न रहो, मेरी बात गांठ-बांधकर रख लो: रेजीमेन्ट का दु:खद अन्त नज़दीक है...

वाइनोनेन: ख़ामोश!

मेमियाहा: वाइनोनेन, छोड़ो इस बवाल को। चलो, भाग चलें—स्टेपी के मैदानों की तरफ़, समुद्र की तरफ़... तैरकर निकल

जायेंगे, दौड़कर भाग जायेंगे... हम असली लोगों को ढूंढ़ निकालेंगे। सत्य की खोज करेंगे।

वाइनोनेन: वह मुझे यहां मिल जायेगा। कल पार्टी की मीटिंग है। हमारे सदस्यों की संख्या बढ़ गयी है और हमदर्दों की भी। यह सब कमिसार की ही देन है। वह हमें ऐसी राह दे चुकी है जहां से अब लौटा नहीं जा सकता।

मेमियाहा: आखिर वह चाहती क्या है? वह पिछली मीटिंग किसलिए की थी उसने?

वाइनोनेन: मुझे नहीं मालूम।

मेमियाहा (दांत किटकिटाते हुए): नहीं मालूम? एक पुराने साथी पर विश्वास नहीं करते? जो आदमी १९०५ में लड़ा था उस पर विश्वास नहीं करते?

वाइनोनेन: १९०५ वाले, अब खामोश हो जाओ। चुपचाप बैठो, वरना मैं...

मेमियाहा: सिगरेट पियोगे?

(वाइनोनेन की सिगरेट जलाने के लिए मेमियाहा उसके कंधे पर झुक जाता है। उसकी पेटी में वह बड़ी छुरी लटकती देखता है, तेजी से उसे खींचकर वाइनोनेन की पीठ में घुसेड़ देता है जिससे वह वहीं पसर जाता है। वह उस पर एक और वार करता है)

(वाइनोनेन के फैले शरीर पर खड़े होकर) तुम किसे फुसलाने की कोशिश कर रहे थे? इस आज़ाद पृथ्वी पर जब तक एक भी आज़ाद इनसान मौजूद है तब तक तुम्हारे जैसों को हम ठिकाने लगाते रहेंगे! **(छुरी की फलक को अपनी अंगुलियों से पोंछता है)**

(जाते हुए वह वाइनोनेन पर नज़र डालता है। लौटकर उसके जिस्म को वह टिकाकर बैठा देता है। पर निर्जीव शरीर लुढ़क जाता है, उसका सिर एक पत्थर से टकराता है। मेमियाहा धैर्य के साथ, बमुश्किल उसे फिर बैठाने की कोशिश करता है। जब उसे बैठी हुई मुद्रा में रखने में वह सफल हो जाता है तो अपने राइफ़िल को कन्धे पर डालकर और कारतूसों की जांच करके दबे पांव वहां से चल देता है। उसके दिमाग़ में एक ही विचार है जिसे बड़बड़ाता हुआ वह जाता है)

(धीरे-धीरे वाइनोनेन का शरीर अकड़ जाता है। अचानक जिस दिशा मेमियाहा गया था उधर से चीत्कार की एक तीव्र आवाज़ आती है। स्तब्धता। पेट के बल खिसकते लोगों की गति की स्पष्ट सरसराहट। एक आदमी काला कनटोप पहने हुए चुपचाप पहरेदार के पास जा पहुंचता है। गहरी नीरवता। अंधेरे में कनटोपवाला आदमी तेज़ी से प्रहरी के पेट में छुरा भोंक देता है। परिणाम से चकित होकर वह प्रहरी के शरीर की जांच करता है। उसके अन्य साथी भी आ जाते हैं। प्रहरी के प्राण-पखेरू उड़ चुके हैं, लोग चुपचाप तेज़ी से आगे बढ़ते हैं।

थोड़ी दूरी पर आवाज़ें सुनाई देती हैं। गोलियों के चलने की आवाज़ आती है। कोई चिल्लाता है: "ख़बरदार!" लोगों को सतर्क करने के लिए बिगुल बजने लगती है, किन्तु तुरन्त उसे बन्द कर दिया जाता है। लोग तेज़ी से इधर-उधर दौड़ रहे हैं। उन्हें धोखे से घेर लिया गया है। वे दिखाई नहीं पड़ते, लेकिन हमें दर्दभरा एहसास हो रहा है कि वे भारी विपत्ति में फंस गये हैं। मंच पर कुछ आकृतियां सुरक्षित स्थान की तलाश में दौड़ती दिखाई देती हैं। उनमें कमिसार तथा थोड़े-से दूसरे सैनिक हैं)

कमिसार: लेट जाओ!

(टार्च की तेज़ रोशनी चारों तरफ़ ढूंढ़ती हुई दिखाई देती है। पहली बटालियन के जो अवशेष रह गये थे उन पर पहली गोली दाग़ी जाती है)

अलेक्सेई (जिस दिशा से गोली आयी है उसी ओर मुंह करके): ए! तुम लोग आपसी सम्बन्ध ख़राब करना चाहते हो?

कमिसार: अलेक्सेई! यहां आओ!

अलेक्सेई (पेट के बल खिसककर आते हुए): क्या बात है?

कमिसार: अपना अकार्डियन लिये हो?

अलेक्सेई: ज़रूर।

कमिसार: क्या तुम "उठो, जागो, बन्दियो..." की धुन बजा सकते हो?

अलेक्सेई: नहीं, मुझे तो प्रेम के गीत अधिक अच्छे लगते हैं। क्यों?

12 386

कमिसार : मैं चाहती हूं कि उसी गीत को सुनाओ।

डेकसारन : वे बढ़ते आ रहे हैं!

(पहली बटालियन के बचे-खुचे लोग मुक़ाबले की तैयारी करते हैं। वे ज़मीन से चिपक जाते हैं, जैसे उसी का अंग बन जाते हैं। अलेक्सेई अकार्डियन बजाने लगता है)

अलेक्सेई : नौसैनिको, इधर ध्यान दो!

(दुश्मन की तरफ़ से गोलियां आती हैं। ख़तरा और उत्साह अलेक्सेई को एक शोला बना देते हैं)

डेकसारन : वे बढ़ते आ रहे हैं!

(दुश्मन बढ़ता आ रहा है। भयंकर गोलाबारी)

अलेक्सेई : डटे रहना, साथियो! पीठ न दिखाना! कार्यक्रम का पहला गीत हमारे शानदार जहाज़ "वर्याग" की वीरतापूर्ण कहानी के बारे में होगा...

(दुश्मन बढ़ता आ रहा है। नाविकों के कारतूस ख़त्म हो जाते हैं)

डेकसारन : गोला-बारूद ख़त्म हो गया!

अलेक्सेई : सावधान!

(नाविक खाइयों से बाहर निकल आते हैं। अलेक्सेई क्रोधोन्मत्त होकर ज़ोरों से अकार्डियन बजा रहा है। नाविक अपनी बन्दूकें दुश्मन की तरफ़ किये खड़े हैं। अलेक्सेई अपनी अकार्डियन फेंककर उनके मुंह पर प्रहार करता है। अपनी कमीज़ फाड़कर उतार लेता है। पसीने से भीगी हुई कमीज़ को मरोड़कर वह उसे एक हन्टर की तरह बना लेता है और उससे हमला करनेवाले दुश्मन के सिपाहियों को मारता है। नाविक आख़िरी वक़्त तक जो कुछ भी उन्हें मिल जाता है उससे शत्रु का मुक़ाबला करते हैं, लेकिन अन्त में उनके प्रतिरोध को कुचल दिया जाता है। हमारे मित्र पकड़ लिये जाते हैं)

अलेक्सेई (जो आदमी उसे पकड़े हुए है उसे धक्का देकर दूर करता

हुआ): तुम लोग घूर क्यों रहे हो? मुझे ले चलो, दोग़लो, उठाओ, ले चलो मुझे! मैं ख़ुद चलकर नहीं जाऊंगा! **(व्यंग्यपूर्ण चुनौती की मुद्रा में वह ज़मीन पर पड़ जाता है)**

कमिसार: लाल सेना ज़िन्दा...

(दुश्मन के आदमी उसके गले में कपड़ा ठूंसकर उसका मुंह बन्द कर देते हैं। कमिसार के जोशीले नारे के उत्तर में दूसरे बन्दी भी नारे लगाते हैं। उनके भी गलों को दबा दिया जाता है, फिर भी उनकी आवाज़ें दबती नहीं। फिर ख़ामोशी छा जाती है। कनिष्ठ अफ़सर प्रवेश करते हैं। वे एक दूसरे की तरफ़ देखते हैं)

दूसरा कनिष्ठ अफ़सर: हमारे साथियों को बन्दी बना लिया गया!

पहला कनिष्ठ अफ़सर। (दर्शकों से): आप क्या सोचते हैं—क्या उनकी हार हो गयी?

दूसरा कनिष्ठ अफ़सर: मेरी बात अच्छी तरह सुन लीजिये। कम्युनिस्ट अपनी अन्तिम सांस तक लड़ता रहेगा, वह तब तक लड़ता रहेगा जब तक हाथ हिला सकता है। हाथ हिलाने में असमर्थ होने पर वह अपनी ज़बान से लड़ेगा, अपनी ज़बान से दूसरों को समझायेगा, प्रोत्साहित करेगा, आगे बढ़ने के लिए ललकारेगा... जब ज़बान से भी बोलने में वह असमर्थ हो जायेगा तब वह अपनी आंखों से बोलेगा। जब उसे पकड़कर ले जायेंगे तो वह हिम्मत नहीं हारेगा! जब उसे ज़ंजीरों मे जकड़कर उसका मुंह बन्द कर दिया जायेगा तब वह अपने हत्यारों के मुंह पर उस गुदड़े को ही थूककर मारेगा जिससे उसका मुंह बन्द किया गया है। गर्दन पर आरी चलते भी उसका अन्तिम लक्ष्य क्रान्ति होगा। स्वयं मृत्यु भी पार्टी का एक काम हो सकती है।

(संगीत की स्वर लहरियां गूंज रही हैं। संगीत तेज़ है, उत्तेजक और आनेवाली मृत्यु तथा भाग्य की पूर्व-सूचना देता प्रतीत हो रहा है। स्टेपी मैदानों से रात्रि पक्षियों के बोलने-रोने की आवाज़ आ रही है। बन्दी नाविक ज़मीन पर सो रहे हैं। उनमें से चार तेज़ी से चहलकदमी कर रहे हैं जैसे पिंजड़े में बन्द जानवर हों। प्रहरी उसी तरह उदास और निर्जीव हैं जिस तरह कि ध्वस्त साम्राज्य। अलेक्सेई अन्तिम संघर्ष का स्वप्न देखता प्रतीत होता है। सोते-सोते वह बीच में चिल्ला उठता है,

"उठाओ, दोग़लो, ले चलो मुझे!" उसकी नींद खुलती है तो वह कमिसार को देखता है। वह चुप बैठी है, सर्वथा अविजित)

अलेक्सेई: मैं कहां हूं? हुंह। कैसी अजब-अजब चीज़ें होती हैं जीवन में। (**कमिसार से**) पहरा दे रही हो क्या?

कमिसार: सोच रही हूं... आख़िर क्या हुआ था? पहरे पर कौन था?

डेकसारन: वाइनोनेन।

कमिसार: वाइनोनेन। उस पर क्या गुज़र रही होगी?

कुमुक का भूतपूर्व नेता: हो सकता है आपके साथ ग़द्दारी की गयी हो? क्या ख़याल है, डेकसारन? हो सकता है वह श्वेत-गार्ड ग़द्दारों से मिल गया हो? आपके साथ भी विश्वासघात किया गया हो! क्यों नहीं? आख़िर आपने उस सरगना को साफ़ करवा दिया था और उस अफ़सर को छुट्टा छोड़ दिया था।

अलेक्सेई (उसे ढकेलकर दूर हटाता हुआ): चुप रह...

ओदेसावासी: सब कुछ गुपचुप ढंग से किया गया।

डेकसारन (ओदेसावासी को सम्बोधित करते हुए): बकवास बन्द करो। यह न भूलो कि ज़मीन अब भी सरकार की है।

ओदेसावासी: जहन्नुम में जाओ, नौकरशाह कहीं के! (**कमिसार की तरफ़ देखते हुए**) कुछ नहीं कहतीं! बैठी-बैठी सिर्फ़ सोच रही हैं!

कमिसार: मजबूरी है—मुझे ख़ुद सोचना पड़ता है, उन लोगों के लिए भी, जो सोचना ही नहीं जानते।

ओदेसावासी: सोचना नहीं जानते! मैं अभी आपको बता दूंगा कि कौन सोचना नहीं जानता!

चेचकरू (ओदेसावासी को ढकेलकर): चुप भी रह, पिल्ला कहीं का!

अलेक्सेई: काश, हमारी रेजीमेन्ट वक़्त से यहां आ जाती!

कमिसार: श-श!

(अलेक्सेई अपना होंठ काट लेता है और अपने इर्द-गिर्द देखने लगता है)

भावावेश में नहीं बहना, अलेक्सेई। धीरज रखो।

अलेक्सेई: नौसैनिकों के झण्डे को ऊंचा रखना?

कमिसार: हां, नौसैनिकों के झण्डे को ऊंचा रखना।

डेकसारन: अब सैनिकों को जगा देना चाहिए।

कमिसार: आप बिल्कुल ठीक कहते हैं। यहां भी आप क़ायदे-क़ानूनों का पालन करते हैं।

डेकसारन: यहां तो ख़ास तौर से—इस चीज़ को देखकर कि थल सेना हमारी दुश्मन है, और वह भी विदेशी। थल सेना के जाहिलों के हुक्म बजाने से तो मर जाना बेहतर है!

कमिसार: उसका हुक्म हम पर नहीं चलेगा। यह पुण्य-भूमि हमारी है।

अलेक्सेई: हमारे जीवित रहते इसे कोई हाथ नहीं लगा सकता।

कमिसार: उठो, जगाओ लोगों को!

(नौसेना में बिताये अपने अनेक वर्षों की याद करते हुए डेकसारन बिगुल बजाने की नक़ल करता है। धीरे-धीरे सीटी बजाकर वह रणभेरी के स्वर निकालता है)

डेकसारन: उठो, उठो! बहुत सो लिये। कोको तैयार है। कोको।

(दर्द से चूर पड़े लोगों के शरीर हिलने लगते हैं। उनमें से कुछ सीटी से तुरही की धुन बजाने लगते हैं। यहां भी नौ-अधिकारी अपने को उनके लिए उत्तरदायी समझता हुआ उन्हें आलोचनात्मक ढंग से देखता है। फिर कमिसार के पास जाकर कहता है, "नौसैनिक जाग गये")

कमिसार: नमस्ते, साथियो। **(रेजीमेन्ट के बचे-खुचे नौसैनिकों द्वारा धीरे से अभिवादन का उत्तर दिया जाता है)**

ओदेसावासी: ओह! तो आपकी "नमस्ते" के चक्कर में हम अपनी जान ही गंवा दें?

कमिसार: ख़ामोश! **(अन्य लोगों से)** क्या पता हमारे साथी हम तक पहुंच पायेंगे या नहीं, लेकिन एक बात हमें अच्छी तरह याद रखनी चाहिए कि हमारे मुंह एकदम बन्द रहें! हमारी दो अन्य बटालियनें कहां गयी हैं इस बारे में एक शब्द भी कहीं न कहा जाये...

अलेक्सेई: चाहे हम मर जायें, लेकिन मुंह न खुलें! समझे?

नेपथ्य से आवाज़: क्या यह ठीक न होगा कि हम झूठ बोल दें ताकि दुश्मन गुमराह हो जाये? **(प्रहरियों की दिशा में देखकर इशारा करते हुए)**

अलेक्सेई: भूठ बोलें, और फिर जिरह में पकड़े जायें? फिर हममें से कोई नहीं बचेगा। आदेश यह है कि चाहे मर जाओ, लेकिन ज़बान से कुछ न निकले। बस! और सब लोग साथ रहना। इस समय मुख्य लक्ष्य वक़्त हासिल करना है।

कमिसार: ठीक कहते हैं।

अलेक्सेई: जितना वक़्त खींच सको—खींचो। हर कोई दुश्मन को उलझाने की कोशिश करो। कम से कम पांच बजे तक मामले को ज़रूर खींचा जाये—उसके बाद ... हम आशा ही कर सकते हैं, और क्या कहें।

ओदेसावासी: ओह! मूर्खों के ऐसे जमघट से पहली ही बार मेरा साबका पड़ा है... तुम लोग भी ख़ूब हो—तुमने एक अफ़सर को छुट्टा छोड़ दिया और अब उम्मीद करते हो कि वह तुम्हारी ख़ातिर जान गंवा देगा? **(प्रहरियों की तरफ़ देखता हुआ)** यक़ीन मानो, वह कभी का भाग चुका है!

(नौसैनिक कमिसार की तरफ़ देखते हैं)

नेपथ्य से आवाज़: हो सकता है उसका ख़याल सही हो?

(प्रहरियों के साथ शत्रु की सेना का एक अफ़सर अन्दर प्रवेश करता है)

अफ़सर: अख़्तुंग।* तो अब कौन गवाही देगा?

(क्रोधोन्मत्त और क्रूर ख़ामोशी)

तुम्हें नहीं मालूम हालत क्या है? तुम्हारा खेल ख़त्म हो गया। जो गवाही देगा, बच जायेगा। कौन बोलना चाहता है?

(ख़ामोशी)

तुम को बोलना ही होगा!

(प्रहरी मेमियाहा को पकड़कर लाते हैं। वह नौसैनिकों को देखकर रुक जाता है। नौसैनिक उसे देखकर आश्चर्य प्रकट करते हैं)

तुम लोग इस आदमी को जानते हो?

---

* सावधान। (जर्मन)

(तनावपूर्ण ख़ामोशी)

ओदेसावासी: पहली बार इसका चेहरा देख रहा हूं।

अफ़सर (मेमियाहा से): बोलो, तुम्हारी रेजीमेन्ट का हालत कैसा है?

(मेमियाहा चुप रहता है)

चलो, बोलो! नहीं बोलेगा तो तुम को भी मार दिया जायेगा। मेरी रूसी समझता है? बोलो! जल्दी!

मेमियाहा: डराने की कोशिश किसी और के साथ करो, समझे! "मारना?" छि:! **(कमिसार की तरफ़ इशारा करते हुए)** और इस घघरिया पर भी मैं थूकता हूं। मैं किसी के भी आदेश नहीं मानता।

अफ़सर (मेमियाहा से): तब तुम हमारे तरफ़ क्यों आये? अपने लोगों के साथ ग़द्दारी क्यों किया? ख़ुद अपने फ़ौजी का छुरा क्यों भोंका?

(इसे सुनकर नौसैनिक मेमियाहा की ओर टूट पड़ते हैं। प्रहरियों की संगीनें उन्हें रोक देती हैं)

कमिसार: वाइनोनेन कहां है?

मेमियाहा: अपने पुरखों के पास चला गया।

(नौसैनिक फिर उसकी तरफ़ बढ़ते हैं)

मेरे नज़दीक जो भी आयेगा उसका गला मैं दांतों से काट डालूंगा!

अफ़सर: इसे यहीं छोड़ दो!

(प्रहरी उसे नौसैनिकों के बीच ले जाते हैं)

मेमियाहा: ये मुझे मार डालेंगे। **(अफ़सर से)** मैं कुछ नहीं जानता। आप तो इनसे—कमिसार से पूछताछ कीजिये। इन्हें सब कुछ मालूम है।

अफ़सर: आबफ़ुर्न।*

(सिपाही मेमियाहा को बाहर ले जाते हैं)

कमिसार कौन है?

---

* ले जाओ यहां से। (जर्मन)

(तनावपूर्ण सन्नाटा। कुछ जहाज़ी कमिसार को आड़ में लेने की कोशिश करते हैं)

कमिसार : मैं हूं कमिसार।

अफ़सर : आप? मेरे साथ आओ।

(कमिसार उठ खड़ी होती है और अफ़सर के पास पहुंच जाती है)

अलेक्सेई : हम सब को ले चलो!

कमिसार : साथियो, आप शान्त रहें। शायद यह अच्छा ही है कि हम लोग कुछ बात करने जा रहे हैं। **(जिस ढंग से वह बोलती है उससे साफ़ हो जाता है कि वह उनसे कह रही है कि बातचीत में समय खींचने में मदद मिलेगी)**

(सिपाही कमिसार को ले जाते हैं)

अफ़सर : मैं तुम लोगों को पांच मिनट देता हूं।

अलेक्सेई : माफ़ कीजियेगा, इस वक़्त क्या बजा है?

अफ़सर : पांच बजने में पन्द्रह मिनट बाक़ी हैं। **(बाहर चला जाता है)**

अलेक्सेई : भाई ...

ओदेसावासी : हे भगवान ... हे भगवान! पांच मिनट। **(अलेक्सेई से)** फांसी चढ़ायेंगे हमें। कुछ न कुछ कहना तो है।

अलेक्सेई : चुप रहो!

एक आवाज़ : चुप रहो!

ओदेसावासी : हे भगवान, कितनी तेज़ी से वक़्त गुज़रता है! एक मिनट। दो मिनट। और ज़िन्दगी ख़त्म हो गयी। सेकेन्ड कैसे भागते हैं ... एक, दो, तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ, दस ... मौत, मौत आ गयी है। **(लोगों की तरफ़ देखता है, उसे घबराहट का दौरा आ जाता है। हंसने लगता है — हंसी का ज़ोर अधिकाधिक तेज़ होता जाता है। पागलों की तरह, उन्मत्त होकर वह भयंकर अट्टहास करने लगता है। उसके होंठ सूख जाते हैं, मुंह पर फेन निकल आता है, वह गिर जाता है, उसका बदन अकड़ जाता है ...)**

नेपथ्य से आवाज़ : तो एक गया। इसका दिमाग़ ख़राब हो गया।

डेकसारन (ओदेसावासी को ध्यानपूर्वक देखते हुए) : हां, हां, कुछ

और करतब दिखाओ। शाबाश, छोकरे! तुम्हारी तरह के और भी बहुतेरों को मैंने देखा है। तुम्हारे जैसे मक्कारों से कैसे निपटना चाहिए इसे मैं बख़ूबी जानता हूं। पच्चीस वर्ष से यही कर रहा हूं।

ओदेसावासी (उठकर इस तरह बैठते हुए जैसे कुछ हुआ ही न था): चला नहीं! कोई पागल हो जाता है तो वे उसे गोली नहीं मारते। मूर्ख कहीं के! तुम भी क्यों नहीं ऐसा ही स्वांग करते?

अलेक्सेई (ओदेसावासी का कॉलर पकड़कर ढकेलता है): स्त्री तक उनका सामना कर सकती है, लेकिन तुम, नाबदान के कीड़े, तुम! **(उसे धकियाकर एक तरफ़ करते हुए)** इस कमबख़्त पर नज़र रखना!

(अफ़सर और प्रहरी वापिस आ जाते हैं)

अफ़सर: वक़्त पूरा हो गया। तुम लोगों ने सोचा? कौन गवाही देगा?

(नौसैनिक एक दूसरे की तरफ़ देखते हुए इशारे करते हैं। वे सब एकसाथ बैठ जाते हैं। अलेक्सेई अफ़सर के पैरों पर थूक देता है। दो और नौसैनिक भी ऐसा ही करते हैं। अफ़सर कूदकर पीछे को हटता है)

अलेक्सेई: मरने के लिए तैयार हो जाओ, भाई! तुम्हारी क्या राय है, डेकसारन? वह अफ़सर हमें धोखा तो नहीं देगा? समय पर यहां आयेगा न?

डेकसारन: मैं उसकी तरफ़ से क्या कह सकता हूं...

(द्वार पर एक व्यक्ति आता दिखाई देता है। उसे देखते ही नौसैनिकों के बीच सन्नाटा छा जाता है। वह दुश्मन की फ़ौज का पादरी है। वह अन्तिम क्रिया कराने आया है। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। चलते-चलते नौसैनिकों के ऊपर सलीब का निशान बनाता जाता है)

अलेक्सेई: शि...

पादरी: वे लोग फ़ौजी सख़्ती के साथ, बिना एक शब्द बोले, मामला ख़त्म करना चाहते और उनकी बात सही भी है। वे बहादुर लोग हैं और आप जैसे बहादुरों से कहने के लिए उनके पास कुछ है ही नहीं। **(डेकसारन के क़रीब जाते हुए)** तुम्हारा पद क्या है?

डेकसारन: डेकसारन।

पादरी: ईश्वर में विश्वास करते हो?

डेकसारन: सर्वशक्तिमान ईश्वर में...

पादरी: तुमने फ़ौज में बहुत दिन काम किया है और तुम्हें आसानी से माफ़ करके तुम्हारा फिर विश्वास किया जा सकता है।

(नौसैनिक ध्यान से सुनते हैं)

डेकसारन: बहुत-बहुत शुक्रिया। मुझे आपकी मेहरबानी की ज़रूरत नहीं। मैंने अपने देश के प्रति वफ़ादारी की शपथ ली है।

पादरी: उससे पहले तुमने अपने बादशाह के प्रति भी वफ़ादारी की शपथ ली थी।

डेकसारन: हां... लेकिन १९१७ की फ़रवरी में जिस तरह उन्होंने गद्दी छोड़ी है उसके बाद उस शपथ का कोई महत्त्व नहीं रह जाता।

पादरी: जो ठीक समझो। मैं तो तुम्हारी मदद करना चाहता था। मैंने सोचा था कि शायद मैं तुम्हारी ज़िन्दगी बचा लूं, लेकिन मैं देखता हूं कि तुम्हें मौत ही पसन्द है। **(अलेक्सेई के पास जाकर)** तुम को पता है कि मौत कैसी होती है? शरीर अकड़ जाता है, उसका सड़ना शुरू हो जाता है। कीड़े गले से नाक तक घुस जाते हैं। आंखें पथरा जाती हैं। ख़ामोशी के सिवा कुछ नहीं रह जाता... बेहतर हो कि एक बार फिर सोच लो। इनसान की बस एक ही ज़िन्दगी होती है—सिर्फ़ यही, जो है। **(अलेक्सेई से, धीरे-से)** केवल एक शब्द कह देने से तुम बच जाओगे... अपनी भूल मान लो, पश्चात्ताप कर लो, फिर हम लोग तुम्हारी सहायता करेंगे।

(क्षणभर सोचने की मुद्रा बनाये रखकर, अलेक्सेई स्वांग करने लगता है: पादरी की बात को वह ध्यानपूर्वक सुनता है और यह दिखाने की चेष्टा करता है कि वह अत्यधिक प्रभावित हुआ है। प्रार्थना की मुद्रा में वह हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है और अपने साथियों को इशारा करता है कि वे ध्यान दें)

अलेक्सेई: हां, पिता जी, आप ठीक कहते हैं! हम लोगों को गुमराह किया गया है। हम कुछ नहीं समझते। यही तो कठिनाई है।

(वह हल्का-सा इशारा करता है, दो अन्य उसके इस स्वांग में शामिल हो जाते हैं)

नेपथ्य से आवाज़ें: सच है, सच है... हमारी समझ में कुछ नहीं आता... यही कठिनाई है... हम लोग निपट मूर्ख हैं...

पादरी (यह देखकर कि आख़िर वे उसकी शरण में आ रहे हैं) जहाज़ियो, मैं किस प्रकार तुम्हारी मदद करूं? तुम्हारे होंठ कुछ दूसरे शब्द कह सकते हैं—साधारण मानवी शब्द... याद है तुम्हें? **(वह अलेक्सेई को जोकि ऐसा लगता है कि एक ज़बर्दस्त मानसिक संघर्ष से गुज़र रहा है, सांत्वना देने की कोशिश करता है)** तुम उन शब्दों को जानते हो न? संसार की हर भाषा में वे एक ही जैसे लगते हैं।

अलेक्सेई: हां पिता जी, एक ही जैसे।

पादरी: उन्हें मेरे साथ दोहराओ: "हमारे पिता जो आकाश में निवास करते हैं..."

अलेक्सेई (अपने पड़ोसी को कोहनी से कोंचते हुए): तुम भी दोहराओ... "हमारे पिता जो आकाश में निवास करते हैं..."

(नौसैनिक पूरे मन से पादरी के शब्दों को दोहराने की चेष्टा करते हैं। तभी दूर से धमाके का शोर सुनाई देने लगता है। नौसैनिक कान लगाकर सुनते हैं... ख़तरे का बिगुल बजने लगता है, प्रहरी दौड़कर भाग गये। गोलाबारी की आवाज़ अधिकाधिक तेज़ और नज़दीक आती जा रही है)

अलेक्सेई (जो घुटनों के बल बैठा हुआ था एकदम खड़ा हो जाता है और पादरी का कालर पकड़कर डांटते हुए कहता है): लोगों के दिमाग़ों को ख़राब करना बन्द करो! **(पादरी को एक तरफ़ हटाकर उत्तेजित-सा आगे दौड़ पड़ता है)** कमिसार को छुड़ाने के लिए आगे बढ़ो!

(सिपाही उन्हें रोकने की कोशिश करते हैं। पहला सिपाही धक्का खाकर तुरन्त वहीं गिर जाता है और हवा में हिलती उसकी टांगों के अलावा कुछ और नहीं दिखाई देता। नौसैनिक प्रहरियों पर टूट पड़ते हैं। गोलियां चलने लगती हैं। एक जहाज़ी घायल होकर गिर पड़ता है। फिर एक और धराशायी हो जाता है। अलेक्सेई घेरे को तोड़कर बाहर निकल जाता है। उसके पीछे-पीछे और भी लोग निकल जाते हैं। पर्दे के पीछे से लोगों के गिरने, भागने और जूझने की आवाज़ें सुनाई देती हैं। भाग निकलने की कोशिश में मेमियाहा नौसैनिकों पर टूट पड़ता है। मौत! प्रहरी भाग

खड़े होते हैं। रात में घबराहट फैली हुई है। रेजीमेन्ट के मार्च करने की आवाज़ से रात का सन्नाटा भंग होता है। नौसैनिक कमिसार को लिये हुए अन्दर आते हैं। कमिसार का शरीर लहू-लुहान है। वे उसे ज़मीन पर रख देते हैं। जो बटालियनें मदद के लिए आनेवाली थीं वे शोर-गुल करती अन्दर आ जाती हैं)

अलेक्सेई (हाथ उठाकर): ख़ामोश!

(दूसरी बटालियनों के नौसैनिक भी कैप्टन और बुज़ुर्ग नौसैनिक के नेतृत्व में अन्दर दौड़ आते हैं। वे अत्यन्त उत्तेजित हैं। अलेक्सेई और डेकसारन का इशारा पाते ही वे ख़ामोश हो जाते हैं। कई लोग कमिसार के ऊपर झुके हुए हैं। ख़ामोशी गहरी होती जाती है)

अन्त तक भी उनके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला। उन्होंने हमारा साथ नहीं छोड़ा।

कैप्टन: अभियान को कामयाबी के साथ पूरा कर लिया गया है। **(कमिसार के ऊपर झुकते हुए)** आप मेरी बात सुन रही हैं?

(ख़ामोशी)

डेकसारन: काश, आप दस मिनट पहले यहां आ गये होते।

कैप्टन: मैंने अपने भरसक सब कुछ किया...

अलेक्सेई (कमिसार के पास बैठकर): नेक साथी, यह कैसे... हमसे कौन बिछुड़ रहा है, भाई! सुन रही हो, क्या?

(कमिसार धीरे से सिर हिला देती है)

हमने उनका मलीदा बना दिया है... मुझे मेरी अकार्डियन वापिस मिल गयी है!

(कमिसार संकेत करती है कि वह कुछ कहना चाहती है। गहन निस्तब्धता छा जाती है)

कमिसार (बमुश्किल सुनाई पड़ता): क्रान्तिकारी युद्ध परिषद को रिपोर्ट भेज दो कि... नौसैनिक बेड़े की प्रथम रेजीमेन्ट की स्थापना हो गई है... और उसने... दुश्मन को मार भगाया है।

(ख़ामोशी। लोग बुत बने खड़े हैं। उनकी वेदना असह्य है)

आप लोग इतने ख़ामोश क्यों हैं? **(मृत्यु के गहराते धुंधलके में कैप्टन, डेकसारन, बुज़ुर्ग नौसैनिक तथा हाथ में अकार्डियन थामे हुए अलेक्सेई की तरफ़ देखती है)** अलेक्सेई, तुम्हें अपनी अकार्डियन मिल गई?

अलेक्सेई: हां, कमिसार, यह रही वह।

(दुःख और असह्य पीड़ा से विचलित होकर अलेक्सेई अविस्मरणीय १६०५ की क्रान्ति की एक पुरानी धुन आहिस्ता-आहिस्ता बजाने लगता है। तमाम नौसैनिक कमिसार के इर्द-गिर्द खड़े हैं। अलेक्सेई बेसुध होकर धुन बजा रहा है। धीरे-धीरे यह धुन मन्द पड़ जाती है। आखिरी बार कमिसार अपने मित्रों को एक नज़र देखने की कोशिश करती है)

कमिसार (अन्तिम सांस लेते हुए): झण्डे को ऊंचा रखना...

(संगीत सुप्त हो जाता है। गहरी निस्तब्धता छा जाती है। कमिसार के प्राण-पखेरू उड़ गये। नौसैनिक टोपियां उतार लेते हैं। वे अडिग खड़े हैं, यद्यपि उनकी तंत्रियां टूटी जा रही हैं और जान जैसे निकली जा रही है। उनकी आंखों में नयी सुबह का सूर्य प्रतिबिम्बित हो रहा है। सूर्य की किरणें उनकी टोपियों के रिबन पर स्वर्णाक्षरों में अंकित उनके जहाज़ों के नामों पर चमक रही हैं। अचानक रणभेरी बजती है और सन्नाटा भंग हो जाता है। फिर सैनिकों के मार्च करने की आवाज़ सुनाई देने लगती है। वे युद्ध के लिए ललकार रहे हैं। वे जाग उठे हैं। वे सशक्त हैं। वे अडिग हैं। विजय और जीवनोल्लास की राह पर एक विराट लहर उन्हें आगे बहाये ले जा रही है। तभी छह तोपों के एकसाथ छूटने की सलामी जैसी आवाज़ गूंज उठती है। आल्पस और पिरीनीज़ पर्वत शृंखलाओं और मैदानों को पार करती हुई यह आवाज़ दूर-दूर तक गूंजती है। हर चीज़ सजीव हो उठती है। बालरवि की किरणों में धूल के कण जगमगा उठते हैं। जीवित प्राणियों की संख्या अनगिनत है! चारों तरफ़ अदम्य जीवन की सरसराहट, उसका स्पन्दन और उसकी गति है। इस सुंदर संसार को देखकर, जिसमें शौर्यवान लोग मृत्युभय के जर्जर झूठ पर थूकते चलते हैं, इनसान का हृदय ख़ुशी से रोमांचित हो उठता है। इनसानों की धमनियों में ख़ून दौड़ रहा है। तीव्र प्रकाश से आलोकित

विशाल सरित प्रवाह् की तरह्, नैसर्गिक शक्तियों के दुर्दमनीय वेग की तरह्, संगीत के स्वर गूंज उठते हैं। और अब उनमें लय नहीं है, बल्कि विप्लवी जोश है, प्रलयकारी गर्जन है तथा जिजीविषा का ठेठ, शुद्ध और विराट तुमुलनाद है)

(पर्दा गिरता है)

१९३२-१९३३

अलेक्सेई अर्बूज़ोव
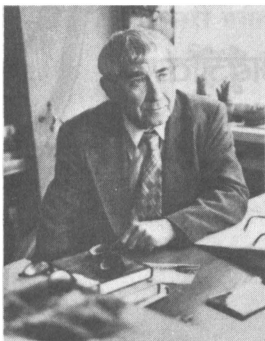
सच्चा प्रेम

अलेक्सेई अर्बूज़ोव (जन्म १६०८) सोवियत राज्य पुरस्कार से अलंकृत पुरानी पीढ़ी के यशस्वी नाटककार हैं। उनकी प्रारंभिक रचनाओं में तरुण जीवन के उत्कृष्ट पहलुओं को दर्शाया गया है: 'तान्या' (१६३३), 'ऊषाकालीन नगर' (१६४०), 'किनारेवाला मकान' (१६४५), 'सफ़र के वर्ष' (१६५४) तथा 'सच्चा प्रेम' (१६५६)। इन नाटकों के साथ-साथ उनकी अनेक अन्य रचनायें भी सोवियत नाट्य-साहित्य की उत्कृष्ट निधि बन चुकी हैं।

हमारे समसामयिक जीवन की आन्तरिक गहराइयों का वृत्तिकार ने बड़ी दिलचस्पी से चित्रण किया है। इस संदर्भ में अलेक्सेई अर्बूज़ोव के सृजन का आठवां दशक विशेष उल्लेखनीय है: 'पुराने अर्बात की कहानियां' (१६७०), 'चुनाव' (१६७१), 'पुराने फ़ैशन की कॉमेडी' (१६७५), 'प्रतीक्षा' (१६७६), 'ख़ौफ़नाक तमाशे' (१६७८) और अन्य नाटक।

लेखक ने वीरता-प्रधान नाटकों से लेकर गीतिका-प्रधान हास्य नाटिकाओं तक की विभिन्न नाट्य-विधाओं का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। लेखक अपनी रचनाओं में दृढ़ता से इस विचार की पुष्टि करता है कि जीवन की अत्यन्त नाज़ुक स्थिति में, यहां तक कि मृत्यु के अन्तिम क्षणों में भी मनुष्य अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकता है, उसे अभिनव नैतिक सौन्दर्य से आलोकित कर सकता है।

मानव हृदय की दो महान शक्तियों का नाम है—प्रेम

और श्रम। 'सच्चा प्रेम' का केन्द्रीय भाव यही है। नाटक में नायिका वाल्या के मानसिक विकास का क्रमिक चित्रण किया गया है। प्रारंभ में वह एक छिछोरी लड़की है, जो आत्मिक भलमनसाहत, मानवीय नि:स्वार्थता और मानवीय सुख की संभावना में विश्वास खो चुकी है और सतही जीवन जीती है। लेकिन आकस्मात उसके जीवन में युवक सेर्गेई का प्रवेश होता है, जिसने न केवल उसे अकेलेपन से छुटकारा दिलाया, बल्कि उसके सम्पूर्ण जीवन का रुख ही मोड़ दिया। उसने गृहस्थी का सुख जाना, मातृत्व की गरिमा और अपने मानवोचित अस्तित्व को पहचाना।

जीवन की बलि देकर डूबते बालक को बचाने के प्रयत्न में सेर्गेई की दु:खद मृत्यु का धक्का वाल्या के व्यक्तित्व को झकझोर देता है। उसे अपने नये व्यक्तित्व का पूर्ण अहसास होता है।

इस तरह दैनंदिन मानवीय जीवन की नाटकीयता आधुनिक सोवियत युवा वर्ग के उदात्त नैतिक सिद्धांतों के बारे में गहन मनन-चिन्तन का रूप ग्रहण करती है।

पात्र

कोरस।

वाल्या, दुकान की कैशियर, २५ साल।

लारीसा, सैल्स मैनेजर, ३४ साल।

सेर्द्यूक स्तेपान येगोरोविच, एक्सकेवेटर
का टोली नायक, ५१ साल।

सेर्योगिन सेर्गेई, शिफ़्ट इंचार्ज, २६ साल।

बोइत्सोव विक्टर, पहला असिस्टेंट,
बिजली-मिस्त्री, २५ साल।

रोदिक, दूसरा असिस्टेंट, २४ साल।

देनीस, फ़िटर आयलमैन, २५ साल।

लापचेन्को, सहायक मज़दूर, २० साल।

ज़िन्का, देनीस की पत्नी, कामगार लड़की,
२० साल।

माया, रोदिक की बहिन, मास्को
के एक स्कूल की विद्यार्थिनी, १७ साल।

न्यूरा, इलेक्ट्रीशियन।

एक शराबी।

छोटी लड़की।

नर्स।

पहला नौजवान।

दूसरा नौजवान।

अन्तोन, लड़का, ६ साल।

लेरा, लड़की, ६ साल।

यात्री।

पहला अंक

(कोरस तथा नाटक के पात्र मंच पर आते हैं। अच्छा हो यदि इन सबको मंच पर मन-मुताबिक अपनी-अपनी जगह बैठने दिया जाय, क्योंकि उनमें से हरेक अपनी ख़्याली दुनिया में खोया है। संभव है उनमें से कोई ख़्यालों में खोया हुआ अपने गिटार पर हल्की-हल्की धुन बजाने की कोशिश कर रहा है जैसे कोई सुर मिला रहा हो। अगर कहीं दूर से एक लोरी की अस्पष्ट ध्वनि सुनाई पड़े तो अच्छा होगा। बाद में वह कई बार सुनने को मिलेगी। मैं फिर कहना चाहता हूं कि संगीत का यह सारा इन्तज़ाम बेफ़िक्री के माहौल में होना चाहिए। थोड़ी देर तक सभी अपने विचारों में खोये-से ख़ामोश रहते हैं। फिर बातचीत आरम्भ हो जाती है)

पहला नौजवान: क्या यह सच है कि प्यार से प्रेमीजन उसी तरह खिल उठते हैं, जैसे उजली धूप में फूल?

लड़की (विचारपूर्वक): ऐसा भी हो सकता है।

दूसरा नौजवान (लड़की का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे देखते हुए): क्या मेरा प्यार तुम्हें बदल नहीं सकता, क्या वह तुम्हें ऐसी अलौकिक सुन्दरी नहीं बना सकता कि मैं ख़ुद भी तुम्हें न पहचान सकूं?

लड़की: कौन जाने...

कोरस: यह कहानी तीन युवा-प्राणियों की है।

—उनकी मुलाक़ात इर्कुत्स्क नगर के करीब अंगारा नदी के तट पर हुई थी। बीसवीं शताब्दी के मध्य में वहां एक विशाल जल-विद्युत केन्द्र का निर्माण हो रहा था। वहीं वे मिले थे।

—ये तीन लोग अच्छे या बुरे किस तरह के थे इसका फ़ैसला

हम आप ही लोगों पर छोड़ते हैं। आपके फ़ैसले पर हमें पूर्ण विश्वास है, इसलिए कोई हल ढूंढने की हम ख़ुद कोशिश नहीं करेंगे।

—कहानी जिसकी यहां चर्चा हो रही है यह...

वाल्या : मेरे जीवन की कहानी है।

सेर्गेई : और मेरे जीवन की...

विक्टर (किंचित चुनौती के स्वर में): और मेरे जीवन की भी।

वाल्या : मेरा नाम वाल्या है।

विक्टर : मेरा विक्टर।

सेर्गेई (विचारपूर्वक): और मुझे लोग सेर्गेई कहते थे।

लारीसा (वाल्या के कन्धों पर हाथ रखकर): मेरा नाम लारीसा है। मैं इसकी दोस्त हूं, लेकिन यह कहानी मेरे बारे में नहीं है। मुझे यह कहते हुए खेद है कि इसमें मेरी हिस्सेदारी मात्र आकस्मिक है।

सेर्द्यूक : मेरा नाम सेर्द्यूक है। मैं पचास पार कर चुका हूं। इसी का अफ़सोस है। **(क्षण भर सोचने के बाद)** इस कहानी में और भी कई लोग हैं, लेकिन उनके बारे में आपको बाद में मालूम होगा।

कोरस : कहानी का अन्त इस तरह होता है। वसन्त ऋतु की एक संध्या है। हल्की-हल्की फुहार पड़ रही है। अंगारा के पास लकड़ी के एक छोटे-से पुल पर वाल्या खड़ी है। वह भविष्य के बारे में सोच रही है।

(लकड़ी के एक छोटे-से पुल की आकृति उभरकर सामने आती है। वहां मशाल की मद्धिम रोशनी में वाल्या चिन्ता-मग्न खड़ी दिखलायी पड़ रही है)

कोरस : और अब यहां विक्टर आयेगा।...

—लो वह आ भी गया।

विक्टर : वाल्या! **(उसके पास जाता है)** देखो तो, पानी बरस रहा है!

वाल्या : बरसने दो ... **(संक्षिप्त मौन के बाद)** बांध की रोशनियों को तो देखो। वे कितनी सुन्दर लग रही हैं।

विक्टर : लोग कहते हैं कि दो हफ़्ते में बांध बनकर तैयार हो जायेगा।

वाल्या (सिर हिलाती है) : हां, और फिर यह क़िस्सा ख़त्म हो जायेगा।

विक्टर : क्या तुम घर जा रही हो?

वाल्या : हां।

विक्टर : चलो, तुम्हें छोड़ आऊं?

वाल्या : नहीं।

विक्टर : क्यों?

वाल्या : इसकी ज़रूरत नहीं।

विक्टर : लेकिन तुम भीग जाओगी...

वाल्या : कोई हर्ज नहीं। **(उसकी तरफ़ देखती है)** विक्टर... मेरे अज़ीज़ दोस्त, धन्यवाद।

विक्टर : किसलिए?

वाल्या : देखो... **(हाथ खोलकर नोटों की एक गड्डी उसे दिखाती है)**

विक्टर : तुम्हारी तनख़्वाह?

वाल्या : हां, मेरी पहली तनख़्वाह... **(उसकी आंखों में आंसू डबडबा आते हैं)** काश, वह इसे जान पाता... कितना ख़ुश होता!

विक्टर : हां।

वाल्या (उसकी बांह पर अपना सिर रख देती है) : धन्यवाद।

विक्टर (सहृदयता से) : मूर्ख लड़की।

वाल्या (अचानक मुस्कराकर) : कहते हैं कि वोल्गा के बांध पर एक लड़की है, जो एक्सकेवेटर पर शिफ़्ट इन्चार्ज है। क्या ऐसा संभव है?

विक्टर : क्यों नहीं?

वाल्या : ओह!

विक्टर : क्या हुआ?

वाल्या (मुस्कराते हुए) : पानी की एक बूंद मेरी गर्दन पर पड़कर अन्दर चली गयी।

विक्टर : सुना है कि हमारा एक्सकेवेटर ब्रात्स्क जा रहा है। क्या तुमने भी सुना है?

वाल्या (शीघ्रता से): अच्छा, मैं चली। मुझे नर्सरी जाना है। बच्चे इन्तज़ार कर रहे होंगे।

विक्टर: वाल्या, प्रियतमे!

वाल्या: नहीं, नहीं... ऐसा मत कहो।

विक्टर: कभी नहीं?

वाल्या: अलविदा। **(भाग जाती है)**

विक्टर: वह दौड़कर चली गयी। वह ख़ुश है। उसकी आंखों में आंसू चमक रहे हैं। और मैं अकेला का अकेला रह गया।

कोरस: क्या तुम उसे बहुत प्यार करते हो?

विक्टर (विचारमग्नता से): मुझे अब याद नहीं कि यह शामत कब आयी थी!

कोरस: शायद शामत नहीं, ख़ुशी?

विक्टर: शायद... अब मैं वही विक्टर तो नहीं हूं, जो कभी यहां आया।

कोरस: शायद इस कहानी की शुरूआत दो साल पहले उस दिन शाम को हुई थी जब तुम और सेर्गेई किराने की दुकान पर कुछ ख़रीदने गये थे... तुम्हें याद है? वह दुकान उस होस्टल से अधिक दूर नहीं थी, जहां उस समय तुम लोग रह रहे थे।

—देखो वह दुकान वहां है, उस छोटी पहाड़ी के ऊपर, निर्माण-स्थल से बिलकुल क़रीब।

—और देखो, वाल्या भी यहां है। दुकान की वह कैशियर है।

—और यह है इसकी सहेली—लारीसा। सात बज चुके हैं। उनकी छुट्टी हो रही है।

विक्टर: उस वक़्त सेर्गेई और मैं कैन्टीन में खाना खा रहे थे। और यहां आनेवाले ही थे।

कोरस: हां। तुम तब तक वहां पहुंचे नहीं थे।

(वाल्या और लारीसा दुकान को बन्द करती दिखलायी पड़ रही हैं। आकाश स्वच्छ है। थोड़ी देर में ही सूर्यास्त होगा)

वाल्या: अंधेरा आजकल बहुत देर में होता है। है न, लारीसा?

लारीसा: हां, वसन्त आ रहा है... मुझसे यह ताला नहीं लग रहा—कड़ी बहुत छोटी है।

वाल्या: लकड़ी से ज़रा ठोक दो। लाओ, मुझे दो... **(ताले को लकड़ी से ठोकती है)** लो, लग ही गया।

लारीसा: हो गया!

वाल्या (चारों तरफ़ देखते हुए): हर तरफ़ खुशियाली छाई है। वसन्त मुझे बहुत प्रिय है।

(शराब के नशे में झूमता हुआ एक आदमी दुकान के पास आता है)

आदमी: लड़कियो ठहरो! अभी से दुकान बन्द करने लगीं? ज़रा वोद्का की एक बोतल तो ले लूं, फिर दुकान बन्द कर देना।

लारीसा: सात बज गये। दुकान तो बन्द हो गयी।

आदमी (धिक्कारने के ढंग से): हाय लड़कियो, लड़कियो... **(थोड़ा सोचकर)** क्या करेंगे, लड़कियो? एक बोतल की ज़रूरत है।

वाल्या: हमने कह दिया न, दुकान बंद है।

आदमी: हो सकता है तुम सोचती हो कि मैं शराबी हूं? ऐं? बिलकुल नहीं! पांच महीने से एक बूंद भी नहीं पी। बड़े दिन के बाद से छुई तक नहीं।

वाल्या: अच्छा, लेकिन अब क्यों नशे में धुत्त हो?

आदमी: मेरी बीवी के अभी-अभी लड़का हुआ है। ज़्लातोउस्त नगर में। लड़कियो, खुशी कैसे मनायेंगे?

वाल्या: तो चलो, हम नाचें। **(उसे पकड़कर थिरकने लगती है। धीरे-धीरे एक गीत भी गुनगुनाती जाती है)** अच्छा, पिताजी, अब जाकर सो जाइये।

आदमी: सुनो, कैशियर हो? तुम्हारा नाम क्या है?

वाल्या: वाल्या।

आदमी: धन्यवाद, वाल्या। मेरे लिए आज महान खुशी का दिन है! समझीं? चलो, हम लोग शहर चलें और आज की रात खूब खुशियां मनायें!

वाल्या (उसे पकड़कर फिर नचाते हुए): अच्छा, अब जाओ। तुम्हारे लिए यही सबसे अच्छी बात है।

आदमी: धन्यवाद, वाल्या। अपनी बीवी की तरफ़ से मैं तुम्हें शुक्रिया अदा करता हूं। **(जाता है और फिर मुड़कर देखता है)** अगर मुझे कोई मिल नहीं जाता तो ठीक है, वरना... गोली मारो! **(चला जाता है)**

लारीसा : शरारत क्यों करती हो?

वाल्या : मज़ा लेने के लिए। क्या यह जानकर अच्छा नहीं लगता कि दुनिया में एक और लड़का पैदा हो गया? **(ठहाका मारकर हंसती है)**

(सेर्गेई और विक्टर आते हैं)

विक्टर : नमस्ते देवियो... क्या आपका सुपर मार्केट बन्द हो गया?

वाल्या : हंसी न उड़ाओ! हमारी आज की बिक्री शहर की किसी भी सुपर मार्केट के बराबर होगी। आज हमारे यहां हैरिंग मछलियां आयी थीं। देखते, क्या गज़ब की भीड़ थी।

विक्टर : अच्छा, तो सेर्गेई से मिलो। यह मेरा अध्यक्ष है। इसके बारे में मैं तुम्हें बता चुका हूं।

वाल्या (जिसकी सेर्गेई पर अभी नज़र पड़ी है): आपसे मिलकर ख़ुशी हुई।

विक्टर (सेर्गेई से): यह रही कैश की रानी वाल्या। और यह है लारीसा पेत्रोव्ना, सेल्स मैनेजर। दोनों बढ़िया लड़कियां हैं।

वाल्या : तो आप ही सेर्गेई हैं?

विक्टर (वाल्या से): क्या तुम इसे जानती हो?

वाल्या : हां, मैंने इन्हें देखा है। कभी-कभी हमारी दुकान पर आते हैं।

सेर्गेई : हां, कभी-कभी। सच पूछें तो ख़स्ता और ख़ूब सिंकी हुई रोटियां मुझे अच्छी लगती हैं, आप लोग तो पीली-पीली रोटियां यहां बेचती हैं।

वाल्या : ख़स्ता रोटियां तो सभी को अच्छी लगती हैं। लेकिन आप इस विचित्र ढंग से क्यों मुझे बराबर घूर रहे हैं? जैसे मेरी किसी बात से आप नाराज़ हैं?...

सेर्गेई : नहीं, नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। **(सहज भाव से)** आप देखने में बहुत अच्छी लगती हैं, इसीलिए मैं देख रहा हूं।

(क्षणिक ख़ामोशी)

विक्टर : शाबाश, सेर्गेई! हर कोई थोड़े ही इसे इस तरह लजा सकता है।

(शॉल में लिपटी हुई तेरह वर्ष की एक लड़की दुकान के पास आती है)

लड़की : ओह! क्या दुकान बन्द हो गयी?

वाल्या : तुम क्या सोचती हो—दिन-रात हम लोग यहीं बैठे रहा करें? आठ घंटे तक काउण्टर पर बैठना पड़े तब तुम कुछ समझो!

लड़की : मुझे सिर्फ़ एक पाव-रोटी चाहिए, साठ कोपेकवाली। कटलेट बनाना है।

लारीसा (किंचित क्रोध से) : लो! दुकान बन्द करते ही कोई न कोई ज़रूर आ धमकता है।

लड़की : आज हमारी दादी खाना खाने आ रही हैं। मुझे सिर्फ़ एक पाव-रोटी की ज़रूरत है।

वाल्या : लो, तुम मेरी रोटी ले जाओ। **(अपने थैले से रोटी निकालकर बच्ची के हाथ पर रख देती है)**

लड़की : लेकिन फिर तुम क्या करोगी?

वाल्या : मेरा काम चल जायेगा—मेरा वज़न नहीं बढ़ना चाहिए। मोटी हो जाऊंगी तो लड़के फिर मुझे पसन्द नहीं करेंगे। समझी?

लड़की : समझी। **(रोटी ले लेती है)** आपको साठ कोपेक दूं?

वाल्या : अवश्य। साठ कोपेक में मुझे सोडा के दो गिलास मिल जायेंगे।

लड़की (उसे एक रूबल देते हुए) : कृपया चालीस कोपेक वापिस कर दीजिए।

वाल्या : ये लो, मेरे पास तीस ही हैं। दस कोपेक कमीशन हो गया। **(विक्टर की तरफ़ मुख़ातिब होकर)** देखा तुमने, सहकारी समितियां किस तरह पैसे कमाती हैं!

लड़की : धन्यवाद, आण्टी... **(दौड़कर चली जाती है)**

वाल्या (उसे आवाज़ देती हुई) : आण्टी तू ही होगी! **(सेर्गेई से)** अच्छा तो एक्सकेवेटर के सिलसिले में आप ही की इतनी शोहरत है?

सेर्गेई : मेरी शोहरत तो नहीं। शोहरत तो सेर्द्यूक की है। वही हमारी टोली का नायक है। मैं तो बस शिफ़्ट इंचार्ज हूं, सीनियर ऑपरेटर।

लारीसा : आप देखने में तो इतने सीनियर नहीं लगते।

सेर्गेई: आप लोगों ने हमारे एक्सकेवेटर को पास से देखा है? किसी दिन आकर उसे पास से देखिए। सौंदर्य की प्रतिमा है।

लारीसा: कम से कम आपका तो यही ख़याल है।

सेर्गेई: हम सब का यही ख़याल है।

विक्टर: तूफ़ानी चीज़ है। चौदह हज़ार आदमियों के बराबर वह अकेला काम करता है।

वाल्या: सीनियर ऑपरेटर रुपया भी ख़ूब कमाते होंगे—हज़ार से अधिक। ठीक है न?

सेर्गेई (किंचित हिचकिचाहट के साथ): कभी-कभी।

वाल्या: सवाल पूछने के लिए माफ़ कीजिएगा, क्या आपकी शादी हो गयी?

सेर्गेई: नहीं।

वाल्या: लारीसा, सुना तुमने? रईस मंगेतर हाज़िर हैं। **(फिर नाचती हुई कोई गीत गुनगुनाती है)** कृपया अपनी पसन्दगी की इजाज़त दीजिये।

सेर्गेई (उसकी ओर देखते हुए): आपको नाचना बहुत पसन्द है, है न?

वाल्या: तो क्या हुआ?

सेर्गेई: आप बहुत अच्छा नाचती हैं।

वाल्या: कहीं मैं आपको पसन्द तो नहीं आ गयी हूं, क्यों? विक्टर थोड़ा हट जाओ, अब से हमारी दोस्ती ख़त्म!

विक्टर (हंसते हुए): इसे तुम्हारी कमी है बस। यह तो बड़ा महंगा लड़का है। सारी दुनिया में अनोखा है, चाहे चिराग लेकर ढूंढ़ लो।

सेर्गेई: अच्छा आओ, अब हम लोग चलें। बाई-बाई, लड़कियो!

वाल्या (शेख़ी भरे अन्दाज़ में): टा-टा। मस्त रहो, नेक बन्दो!

विक्टर (वाल्या से, धीरे से): आज शाम को नाच के लिए ज़रूर आना। उसके बाद हम सिनेमा चलेंगे। आख़िरी शो में...

वाल्या (आंख मारकर): अच्छा। ठीक है।

(सेर्गेई और विक्टर चले जाते हैं)

वाल्या (थोड़ी देर के बाद): चलो, अब हम भी चलें। **(घूमकर दुकान की तरफ़ देखते हुए)** अच्छा, दुकान, अब कल मिलेंगे। लारीसा,

मेरा तो सर घूम रहा है... **(एक पेड़ के सहारे टिक जाती है)** मछलियों की बिक्री ने आज कितना परेशान कर दिया... मैं बिलकुल थक गयी हूं।

लारीसा : तुम ज़बान बहुत चलाती हो।

वाल्या : तुम्हें क्या एतराज़? कुंवारा जीवन बड़ा छोटा है। वह ऑपरेटर तो मज़ेदार आदमी है।

लारीसा : देखो, कहीं दिल न दे बैठना।

वाल्या : हरगिज़ नहीं। अपने विक्टर को मैं किसी से नहीं बदल सकती।

लारीसा : वह सुन्दर जो है।

(वाल्या, लारीसा, दुकान, पेड़—सब दृष्टि से ओझल हो जाते हैं)

कोरस : देखो! रोदिक आता है, वह ऑपरेटर का दूसरा असिस्टेंट है। बढ़िया नौजवान है।

—तुम क्या सोच रहे हो, रोदिक? मास्को की याद आ रही है क्या?

रोदिक : हां, कभी-कभी घर की याद सताने लगती है। आखिर मैं मास्को में ही पैदा हुआ था और वहीं बड़ा हुआ था। मेरी मां और दो छोटी बहिनें वहीं हैं। वे मेरी कितनी देख-भाल करती थीं! दरअसल, मेरे मास्को छोड़ने का यही एक कारण था। मैं चाहता था कि अपनी देख-भाल ख़ुद करूं, ख़ुद अपने पैरों पर खड़ा होऊं।

कोरस : तुम भी क्या कहते हो!..

रोदिक : अपनी सालाना छुट्टी मैं हमेशा नये साल के आस-पास लेता हूं, क्योंकि मास्को मुझे जनवरी में सबसे अच्छा लगता है। उस एक महीने में मास्को की आबोहवा को मैं अपने रोएं-रोएं में इस तरह भर लेता हूं कि फिर मेरा बाक़ी साल आसानी से गुज़र जाता है। बाक़ी ग्यारह महीने यहां मन माफ़िक जीता हूं। **(चारों तरफ़ नज़र दौड़ाता है)** हमारी शिफ़्ट में पांच लोग हैं। हम पांचों एक ही बैरक में रहते हैं। देखिए, अंगारा के किनारे उस टीले पर है मेरा शिविर।

कोरस : बेंच पर वह कौन पैर फैलाये पड़ा है?

रोदिक : अभी देखता हूं। **(मुस्कराता है)** ओह, वह तो हमारा सहायक लापचेन्को है। अफ़ानासी लापचेन्को ज़रा काहिल है। **(लापचेन्को के पास जाता है)** अरे, भले आदमी, तुम यहां क्यों पड़े हो?

लापचेन्को : मुझे अच्छा लगता है। समझे!

(कोरस अन्तर्धान हो चुका है। फिर रोदिक और लापचेन्को बैरक के सामने दिखायी पड़ते हैं। तभी दरवाज़े पर विक्टर आ जाता है)

विक्टर: मौसम साफ़ हो गया है... **(उसकी नज़र लापचेन्को पर पड़ती है)** तुम क्यों पड़े हो?

लापचेन्को: मुझे अच्छा लगता है, क्यों?

(सड़क की ओर से देनीस आता है। उसके हाथ में एक पत्र है)

रोदिक: कहां से आया है पत्र?

देनीस: पुराने फ़ौजी दोस्तों ने भेजा है। वे मुझे भूले नहीं हैं। **(हंसते हुए)** हमारे कैप्टन की तरक़्क़ी हो गयी है—उसे मेजर बना दिया गया। वह बहुत मेधावी है। उससे अधिक अक़्लमन्द आदमी होना मुश्किल है।

रोदिक: ऐसा न कहो। अक़्ल की कोई सीमा नहीं होती।

(सेर्गेई बैरक से बाहर आता है)

सेर्गेई (लापचेन्को को देखकर उसके पास जाता है): अफ़ानासी, तुम अब तक लेटे हुए हो?

लापचेन्को: मैं सोच रहा हूं।

देनीस: सेर्गेई, मेरे कैप्टन को प्रोमोशन मिल गया है। अब वह मेजर हो गया।

सेर्गेई: बधाई... चीफ़ आज बहुत गुस्से में था, है न, रोदिक?

रोदिक: अब वह हम सबकी ख़बर लेने जा रहा है।

देनीस: ज़िन्का कहां रह गयी? इस ख़बर को सुनकर तो वह ख़ुश होगी।

विक्टर (बाहर के वाश-बेसिन में अपने दांत साफ़ करते हुए): कौन-सी ख़बर?

देनीस: तुमने सुना नहीं? **(पत्र दिखाते हुए)** मेरा कैप्टन मेजर बन गया है।

(रोदिक ने खीसें निपोड़ीं)

मेरी ज़िन्का सब समझती है!

रोदिक: जानते हो कि तुम्हारी जोड़ी इतनी ख़ुश क्यों रहती है? क्योंकि तुम लोग अलग-अलग बैरकों में रहते हो। ज़रा तुम्हें अलग कमरा मिल जाने दो फिर देखना, सारा पारिवारिक सुख कहां फुर्र हो जाता है!

सेर्गेई: रोदिक, तुम तो मास्कोवाले हो! एक भले आदमी भी। तुम जैसे आदमी के मुंह से औरत के बारे में इस तरह की बात अच्छी नहीं लगती।

(सड़क की ओर से सेर्द्यूक आ जाता है। वह भयंकर क्रोध में है)

सेर्द्यूक: सब लोग इकट्ठा हो गये? लापचेन्को कहां है? **(उस पर उसकी नज़र पड़ती है)** फिर लोट रहा है! **(लापचेन्को से)** उठो, चलो, चलो! तुम इस तरह पड़े रहोगे तो तुम्हारी पीठ में फोड़े हो जायेंगे। **(मेज़ पर ज़ोर से घूंसा पटकता है)** तुम्हारा क्या ख़याल है? यहां हो क्या रहा है? यह अपाहिजों का विश्रामगृह है या कम्युनिस्ट निर्माण-स्थल? काम करना यहां बड़े सम्मान की बात मानी जाती है... ख़ामोश! सेर्गेई, हमारे एक्सकेवेटर पर काम करने के लिए इस आदमी को कौन मूर्ख ले आया था? बोलो, इसे यहां कौन लाया था?

सेर्गेई: इसे तो आप ख़ुद ही लाये थे, चीफ़।

सेर्द्यूक (लापचेन्को से): सुना तुमने? तुम्हारी कृपा से मेरा सहायक सबके सामने मुझे मूर्ख कह रहा है।

सेर्गेई: यह आप क्या कह रहे हैं, चीफ़? यह तो आपने ख़ुद ही इस तरह कहलवाया।

सेर्द्यूक (लापचेन्को से): सिर्फ़ इसीलिए कि मैं तुम्हारी भलाई करना चाहता हूं, मैं सबके सामने अपने को मूर्ख कहलवा रहा हूं **(ठंडी सांस लेता है)** मैं नाराज़ क्यों हो रहा हूं? इसलिए कि यह शिफ़्ट मेरे लिए बहुत महत्व रखती है। पिछले साल तक मैं ख़ुद इसमें ऑपरेटर था। फिर मुझे टोली नायक बना दिया गया और यहां मेरी जगह नौजवान सेर्गेई की नियुक्ति कर दी गयी। विक्टर उस वक़्त सिर्फ़ फ़िटर-आयलमैन था, लेकिन उसने बिजली-मैकेनिक का कोर्स पास कर लिया और अब वह प्रथम सहायक के पद पर पहुंच गया है। फिर देनीस को देखो। छः महीने पहले फ़ौज से मुक्त हुआ यह महज़ एक टैंक-चालक था। अब वह फ़िटर-आयलमैन बन गया है। इसी को मैं तरक़्क़ी करना कहता हूं। हमारे

महान कार्य के अनुकूल है। अब तुम समझे, लापचेन्को, कि मेरा क्या मतलब है? अब ज़रा खुद को देखो। कुछ फ़र्क़ दिखायी देता है? इस मशीन पर, चलते-फिरते एक्सकेवेटर जैसी आधुनिक मशीन पर काम करनेवाले आदमी को खुद भी कुछ चमत्कारी होना चाहिए! लेकिन तुम क्या कर रहे हो? ईवनिंग क्लासों में जाते हो? पढ़ते हो? अपने मस्तिष्क का विकास करने की कोशिश करते हो? तुम कुछ नहीं करते! सिर्फ़ वक़्त गुज़ार रहे हो, किसी भी दिशा में आगे नहीं हो। **(थोड़ी देर के लिए रुक जाता है)** क्यों, समझ में आया?

लापचेन्को: अपनी तरफ़ से तो मैं पूरी कोशिश कर रहा हूं।

सेर्द्यूक: अच्छी बात है। अब अगली बात सुनो। आज सुबह दस बजे एक्सकेवेटर के कन्ट्रोल-पैनेल पर कौन बैठा था?

विक्टर: मैं।

सेर्द्यूक (सेर्गेइ से): तुम कहां थे?

सेर्गेई: मुझे कोमसोमोल कमेटी में बुलाया गया था।

सेर्द्यूक (विक्टर से): अच्छा तो बाबकिन के सिर पर ढेर सारी मिट्टी गिराने की बदमाशी तुम्हीं ने की थी?

(लापचेन्को अपनी हंसी नहीं रोक पाता)

हां, लापचेन्को, हंसो। वास्तव में, तुम्हें रोना चाहिए **(विक्टर से)** हां तो बोलो?

विक्टर: चीफ़, असल बात यह है कि बाबकिन के साथ हम लोग होड़ कर रहे हैं। हमने उसे चारों खाने चित्त कर दिया है। इसीलिए अब वह हमारे यहां खुफ़ियागीरी करने लगा है।

सेर्द्यूक: खुफ़ियागीरी का क्या मतलब है तुम्हारा? कैसा बकवास है!

विक्टर: हम लोगों का काम इतना अच्छा क्यों होता है? क्योंकि हमारी शिफ़्ट खूब होशियारी से काम करती है। क्रेन की भुजा को मोड़ते समय हर बार हम कई सेकण्ड बचा लेते हैं। नतीजा यह होता है कि हर महीने हम एक हज़ार घन मीटर मिट्टी अधिक निकाल लेते हैं।

सेर्द्यूक (उसकी बात को जल्दी से काट देता है): मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि तुम हमें एक लेक्चर दे दो। मैं जो पूछ रहा हूं उसका जवाब दो।

विक्टर: बात यह है कि वह बाबकिन इस चीज़ का पता लगाना चाहता है कि हम लोग ऐसा कैसे कर लेते हैं। इसलिए वह बराबर इधर-उधर सूंघता हुआ घूमता रहता है। मक्कार ने एक शक्तिशाली दूरबीन भी मंगा ली है। आज सुबह जब मैं कन्ट्रोल-पैनेल में बैठा हुआ था मेरी उस पर नज़र पड़ गयी। मिट्टी के ढेर के पीछे छिपकर वह हमारे काम को देख रहा था। इसलिए संयोगवश मैंने डोल के मुंह को ज़रा जल्दी खोल दिया और मिट्टी कामरेड बाबकिन के ऊपर गिर गयी। बस, इतनी ही सी बात थी।

सेर्द्यूक (सेर्गेई से): तुम्हें इसका पता था?

सेर्गेई (क्षण भर हिचकिचाने के बाद): हां।

सेर्द्यूक: फिर तुमने क्या किया?

सेर्गेई: कुछ नहीं।

सेर्द्यूक: बुरी बात है, सेर्गेई।

विक्टर: यह सच नहीं बोल रहा है। इसे उसके बारे में कुछ नहीं मालूम था।

सेर्द्यूक: अच्छा तो तुमने मुझसे झूठ बोलना शुरू कर दिया, क्यों सेर्गेई? अपने साथियों का बचाव कर रहे हो? प्रतियोगिता — स्वच्छ और निष्कलंक काम है। **(विक्टर से)** अगर बड़े चीफ़ तुम्हें तलब करते हैं तो यह उम्मीद न करना कि मैं तुम्हें बचाऊंगा। **(थोड़ा रुककर)** कम से कम, अधिक तो नहीं ही करूंगा। और ए, बेकार के आदमी, तुम किसलिए दांत निकाल रहे हो? कल तुम बाबकिन को बुलाकर अपने साथ ले जाना और काम के सारे भेद उसे बतला देना। नोटबुक में उसे सब कुछ लिखवा देना। समझे? हम लोग इतने ग़रीब नहीं हैं कि दूसरों को कुछ नहीं दे सकते। **(इसी बीच आ गयी ज़िन्का पर उसकी नज़र पड़ती है। वह देनीस को इशारा करती है)** तुम इशारे मत करो। देखती नहीं कि यहां मर्द-लोग बातें कर रहे हैं। जाकर उधर बैठ जाओ, पति का वहां इंतज़ार करो।

देनीस (ख़बर सुनाने के लिए बेचैन हो रहा हूं): ज़िन्का... मेरे कैप्टन को मेजर बना दिया गया है!

ज़िन्का: वाह-वाह! शाबाश!

सेर्द्यूक: अच्छा, मेरी मैना, अब चुप करो। चुपचाप बैठो और देखो कि मैं तुम्हारे पतिदेव की कैसी ख़बर लेता हूं।

देनीस: मेरी? क्या किया है, चीफ़?

सेर्द्यूक: दियासलाई की डिबियों से कल वह सर्कस किसने दिखाया था?

(लापचेन्को बमुश्किल से अपनी हंसी रोक पाता है)

तुम्हें रोना चाहिए, हंसना नहीं, समझे लापचेन्को! देनीस, जवाब दो!

रोदिक: स्तेपान येगोरोविच, कृपया, जवाब मुझे देने दीजिए। शुरूआत तो मैंने ही की थी। दरअसल जब हम लोग काम के लिए पहुंचे तो स्थल तैयार नहीं था। हमारे पास क़रीब दस मिनट का समय था। उसी में मैंने देनीस को चुनौती दी कि वह कंट्रोल-पैनेल संभाले और उत्खनक के डोल से दियासलाई की एक डिबिया ज़मीन से उठाकर दिखाए। शर्त यह थी कि डिबिया के साथ मिट्टी का एक कण भी डोल में न आये।

सेर्द्यूक: एक कण भी नहीं, क्या कहा तुमने?

रोदिक: छोटे से छोटा कण भी नहीं। सिर्फ़ दियासलाई की डिबिया! पहले मैंने ख़ुद उसे उठाकर दिखा दिया था।

सेर्गेई: चीफ़, रोदिक उसे बड़ी सफ़ाई से उठा लेता है।

सेर्द्यूक (दिलचस्पी लेते हुए): तो क्या देनीस उठा नहीं पाया?

देनीस: नहीं, एक बार भी नहीं। चीफ़, वह बहुत मुश्किल काम है।

रोदिक: यह तो उत्खनन कला का एक उच्चतम स्तर है।

सेर्द्यूक: ऐसी कला के लिए मुझे तुम्हारी अच्छी तरह ख़बर लेनी चाहिए। **(देनीस से)** और तम्हारी भी।

ज़िन्का (चपलता से): उसकी क्यों? वह तो कुछ नहीं कर पाया।

सेर्द्यूक: मुन्नी, तू चुप रह!

ज़िन्का: चीफ़, आप बहुत चिड़चिड़े होते जा रहे हैं। आवश्यक है कि अब आपकी शादी कर दी जाये।

सेर्द्यूक: यह सब नहीं चलने का। इस तरह की कोशिशें पहले भी बहुत की जा चुकी हैं। **(रोदिक से)** आख़िर तुम किस वजह से बचते रहे हो ? यह तुम्हारे प्रति मेरी कमज़ोरी है, क्योंकि तुम एक सभ्य व्यक्ति हो। **(विक्टर की तरफ़ घूमकर)** विक्टर, दौड़कर एक्सकेवेटर के पास जाओ। व्यात्किन को बुलाकर रेक्टिफ़ायर को दिखा दो। वह ठीक से नहीं काम कर रहा है।

विक्टर : चीफ़, मैं कल करूंगा। आज रात मैंने सिनेमा जाने का वादा कर लिया है।

सेर्द्यूक : किससे वादा कर लिया है?

लापचेन्को : वाल्या से, दुकान की उस कैशियर लड़की से। उसके साथ कौन न चला जाता।

सेर्गेई (सख़्ती से) : चुप रह, लापचेन्को! **(थोड़ी देर रुकने के बाद)** वाल्या एक भली लड़की है, सहृदय है।

लापचेन्को : हां, ज़रूरत से ज़्यादा दयालु-हृदय! इसीलिए तो सब लोग उसे "सस्ता माल" कहते हैं!

सेर्द्यूक : सुनो, लापचेन्को! मैं तुमसे आख़िरी बार पूछता हूं, कब बनोगे तुम भले आदमी?

लापचेन्को : स्तेपान येगोरोविच, मैं कर ही क्या सकता हूं! थियेटर मरम्मत के लिए बन्द पड़ा है, क्लब में आडिट चल रहा है, अब आदमी सभ्य होने कहां जाये?

सेर्द्यूक (क्रोध से भरकर) : क्लब! तुमने कभी कोई अच्छी किताब पढ़ने की कोशिश की है? और तो और स्वयं अपने बारे में कभी सोचा है? कभी चमकते सितारों को देखा है? कभी किसी विदेशी भाषा को सीखने का प्रयत्न भी किया है? **(विक्टर से)** तो तुम एक्सकेवेटर को देखने जा रहे हो न?

विक्टर : अच्छी बात है।

सेर्द्यूक (चुपके से) : सुनो, रोदिक। तुम्हें जब कुछ फ़ुर्सत मिले तो मुझे बुला लेना, हम लोग दियासलाई की डिबिया उठाने का करतब दिखायेंगे। **(लापचेन्को से)** और देखो, लापचेन्को! ख़ुद को संभालने की कोशिश करो। **(तेज़ी से चल देता है)**

ज़िन्का (दौड़कर देनीस के पास जाती है और उसका आलिंगन करती है) : तुम्हें आज खाने को क्या मिला था?

देनीस : गोभी का शोरबा।

ज़िन्का : नूडल का सूप बेहतर होता है।

विक्टर : वह ख़ुद भी कोई विदेशी भाषा जानते हैं?

रोदिक : मुझे सन्देह है, गोकि एक दिन मैंने उन्हें फ़्रांसीसी व्याकरण की किताब ख़रीदते देखा था।

ज़िन्का (देनीस से): चलो, हम लोग टहलने चलें, ठीक है न? ख़ूब दूर चलेंगे।

देनीस (मुस्कराता हुआ प्यार से उसकी ओर देखता है): मेरी नन्ही ज़िन्का... **(बांह में बांह डालकर वे नदी की तरफ़ चल देते हैं)**

लापचेन्को (उन्हें आवाज़ देता हुआ): होशियार रहना, कहीं भालू न उठा ले जाये तुम्हें! **(सहज गति से चल देता है)**

रोदिक: बाइकाल झील की तरफ़ से हवा आ रही है। **(थोड़ी देर चुप रहने के बाद)** मैं मां को चिट्ठी लिखने जा रहा हूं। **(ख़्यालों में खोया हुआ)** मास्को में...

(विक्टर और सेर्गेई अकेले रह जाते हैं)

विक्टर: पत्र, पत्र... **(ख़ामोशी)**

सेर्गेई: लेनिनग्राद से कोई ख़बर नहीं आयी?

विक्टर: नहीं।

सेर्गेई (कोमल स्वर में): विक्टर, इतने दुखी न हो।

विक्टर (एक कड़वाहट भरी मुस्कान के साथ): सांत्वना देते हो... क्या ख़ूब!

सेर्गेई: तुम अपने पिताजी को बहुत चाहते थे?

विक्टर: वह बहुत ही बढ़िया आदमी थे—दयालु और ख़ुशमिज़ाज... मेरी मां भी ख़ुशमिज़ाज थीं... पिताजी हमेशा उन्हें कहानियां सुनाते और हंसाते रहते थे। अब भी मुझे कभी-कभी उनके ठहाके सुनाई दे जाते हैं। **(कुछ क्षणों के लिए वह ख़ामोश हो जाता है)** जब मां की मृत्यु हुई तो मुझे लगा कि पिताजी पागल हो जायेंगे... लेकिन बाद में उनकी मुलाक़ात उस औरत से हो गयी और बस उसी वक़्त से मेरे लिए वह मर गये। उसके आने के बाद वह बिल्कुल बदल गये। वह दुखी रहते हैं, हमेशा सहमे-सहमे रहते हैं और उनका स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो गया है। प्रेम आदमी को बिलकुल बदल सकता है।

सेर्गेई: छि: छि:, विक्टर! यह एक ग़लत विचार है, इसे दिमाग़ से निकाल दो।

विक्टर: हां, यह कोई सुखद विचार नहीं है, **(सेर्गेई की तरफ़ देखता है)** संतोष के लिए और कह ही क्या सकते हो!

सेर्गेई (मुस्कराता है, अपनी जेब से बिसकुटों का एक पैकेट निकालता है): लो खाओ, स्वादिष्ट हैं।

विक्टर: शुक्रिया।

(दोनों बिसकुट खाते हैं। इस क्षण वे एक दूसरे के बहुत नज़दीक महसूस करते हैं)

सेर्गेई: नहीं, बुरे बिलकुल नहीं हैं... दिलचस्प बात है कि इनके अन्दर लोग इतनी चीज़ों को कैसे भर देते हैं। काफ़ी जटिल काम होगा। ऐसी चीज़ों के विषय में बचपन से ही मुझे बहुत हैरानी होती रही है। यहां तक कि छाते को देखकर भी मैं परेशान हो उठता था — इसे किसने बनाया, कैसे बनाया?

विक्टर: अब थोड़ा सोडा पानी मिल जाए तो अच्छा हो... ठीक है, अब मैं चला। चीफ़ की बात नहीं टाल सकता। **(जेब से सिनेमा के टिकट निकालकर सेर्गेई को सौंपता है)** इतनी मेहरबानी करना, इन्हें ले जाकर वाल्या को दे देना। सिनेमा के बाहर वह मेरा इन्तज़ार करती होगी। ये पौने नौवाले शो के हैं। तुम उसे परिस्थिति समझा देना। वास्तव में, अच्छा तो यह होगा कि तुम ख़ुद उसे सिनेमा दिखा दो। तुम्हें अफ़सोस नहीं होगा। वह एक अच्छी लड़की है।

सेर्गेई (कुछ सोचते हुए): शायद रोदिक जाये तो और अच्छा हो?

विक्टर: मुझे उसका भरोसा नहीं है... **(आंख मारता है)** यह न भूलो कि रोदिक बड़े शहर से आया एक रसिया है। **(सेर्गेई की तरफ़ देखता है)** मैं चाहूंगा कि तुम्हीं चले जाओ। **(जाता है)**

(सेर्गेई टिकटों की तरफ़ ध्यान से देखता है, फिर मुस्कराता है)

कोरस: इटली के एक मज़दूर की साइकिल चोरी हो गयी है। ख़तरा है कि साइकिल न रहने से उसकी नौकरी चली जायेगी।

— उस इतालवी के घर पर पत्नी और एक छोटा बच्चा है। अगर उसकी साइकिल नहीं मिली तो वे भूखे मर जायेंगे। इसलिए अपनी साइकिल की तलाश में वह रोम की सड़कों पर दर-दर भटकता है।

— अंगारा के तट पर स्थित छोटे से सिनेमाघर में यही विदेशी फ़िल्म दिखायी जा रही है। सिनेमाघर के बाहर हज़ारों लोग स्वयं अपने

लिए विशाल निर्माण-कार्य में जुटे हैं—और यहां पर्दे पर पराये लोगों की मुसीबतें और तकलीफ़ें दिखायी जा रही हैं। वे उन्हें बहुत दूर की चीज़ें मालूम पड़ती हैं। ऐसी दूर की कि उनके लिए उन पर विश्वास करना भी कठिन है।

—सेर्गेई फ़िल्म को देखता है। अंधेरे का फ़ायदा उठाकर वह वाल्या के हाथ को अपने हाथ में लेने या उसे दबाने की कोशिश नहीं करता जबकि वह ऐसी हरकतों की अभ्यस्त हो चुकी है।

—इतालवी मज़दूर को उसकी साइकिल नहीं मिली। पिक्चर ख़त्म हो गयी।

—बेचारा इतालवी मज़दूर! कितना दुखमय तुम्हारा जीवन है!

(सिनेमा घर के बाहर एक छोटा-सा बगीचा। शो अभी-अभी ख़त्म हुआ है। लाउड-स्पीकर से कोई आवाज़ आ रही है। पब्लिक अपने घरों को चल देती है। वाल्या और सेर्गेई एक बेंच के क़रीब खड़े हैं)

वाल्या: अच्छा, बहुत-बहुत धन्यवाद, और विक्टर को मेरा सलाम कह दीजियेगा। पिक्चर बुरी तो नहीं थी।

सेर्गेई: मैं तुम्हें घर पहुंचा जाऊं?

वाल्या: नहीं, धन्यवाद। अगर मेरे अहाते के लड़के आपको देखेंगे तो वे मज़ाक़ बनायेंगे।

सेर्गेई: अगर विक्टर तुम्हें छोड़ने जाता तो क्या उसका भी वे मज़ाक़ बनाते?

वाल्या: नहीं, अब वे विक्टर को मेरे साथ देखने के आदी हो गये हैं। आप नये हैं। उन्हें यह पसन्द नहीं है कि मैं नये-नये लोगों के साथ कहीं जाऊं।

सेर्गेई: क्या तुम्हें यह पसन्द है?

वाल्या: क्यों नहीं। इसमें कहीं ज़्यादा मज़ा आता है। **(थोड़ी देर के लिए वह ख़ामोश हो जाती है)** मैं लोगों से बहुत जल्दी ऊब जाती हूं।

सेर्गेई: ऐसा क्यों?

वाल्या: मैं ख़ुद नहीं जानती। लेकिन सचाई यही है। एक बार यहां साहित्यशास्त्र का एक लेक्चरर आया था। उसने हम लोगों से साहित्य के बारे में बातें की थीं। उसने कहा था कि हमें अपना जीवन नायकों के अनुकूल ढालना चाहिए। हरेक को अपना एक नायक चुन लेना और

फिर निजी जीवन में उसी का अनुसरण करना चाहिए। सो मैंने भी अपना पात्र चुन लिया है।

सेर्गेई: वह पात्र कौन है?

वाल्या: आपने कभी 'कार्मेन' नाम के ऑपेरा* के बारे में सुना है? मैंने तो उसी की नायिका को चुन लिया है।

सेर्गेई: मेरा ख़याल है कि लेक्चरर के दिमाग़ में अच्छे पात्रों की बात थी।

वाल्या: आप 'कार्मेन' को बुरा समझते हैं? आप बिल्कुल ग़लत समझते हैं। अगर वह बुरी होती तो संगीतकार इतनी अच्छी संगीत रचना न दे पाते। **(सेर्गेई की तरफ़ नापसंदगी से देखती है)** अच्छा, गुडबाई, अब मैं जाती हूं।

सेर्गेई: गुडबाई। **(बेंच पर बैठ जाता है)**

वाल्या (कुछ क़दम जाती है, फिर पीछे मुड़कर सेर्गेई की तरफ़ देखती है): आप घर क्यों नहीं जा रहे हैं?

सेर्गेई: थोड़ी देर मैं यहीं बैठना चाहता हूं।

वाल्या: यहां बहुत अच्छा है। यहां से आदमी इर्कुत्स्क के पुल को देख सकता है... और शहरवाले पार्क को भी। **(थोड़ी देर रुकने के बाद)** आपको पिक्चर पसन्द आयी?

सेर्गेई: हां, बहुत। मुझे इतालवी फ़िल्में अच्छी लगती हैं। उनमें वहां के आम लोगों की ग़रीबी और तकलीफ़ों का सच्चा फ़िल्मांकन देखने को मिलता है। उसे देखकर जो चीज़ें हमें प्राप्त हैं उनकी आदमी और अधिक क़द्र करने लगता है।

वाल्या: ओह, तो सोवियत पिक्चरों को आप अधिक पसन्द नहीं करते, ऐं?

सेर्गेई: ऐसा तो मैं नहीं कहूंगा। हमारी कुछ अच्छी पिक्चरें भी हैं। लेकिन बहुत नहीं। उनमें से अधिकांश मुझे उन चीज़ों की अच्छाई के बारे में क़ायल करने की कोशिश करती हैं जिनके बारे में मैं बहुत पहले ही क़ायल हो चुका हूं! और यह चीज़ बोर करती है। उनके बारे में मुझे क़ायल करने की ज़रूरत नहीं है — मैं ख़ुद दूसरों को क़ायल कर सकता हूं।

---

* जार्ज बिज़े (१८३८—१८७५)—फ़्रांसीसी संगीतकार, 'कार्मेन' ऑपेरा के रचयिता (१८७४)।

वाल्या : यह तो आपने इतनी दिलचस्प बात कही, कि मैं कुछ समझा ही नहीं। अच्छा, यह तो बताइये कि आपकी उम्र क्या है?

सेर्गेई : ओह, काफ़ी बुड्ढा हो गया हूं। जल्दी ही तीस का हो जाऊंगा। चार ही साल बाक़ी हैं।

वाल्या : छब्बीस साल के? पर मैं आपको बाईस से बड़ा न मानती!

सेर्गेई : हां, मेरी उम्र मालूम नहीं पड़ती।

वाल्या : मेरे पास एक टॉफ़ी बची है। आइये, आधी-आधी बांट लें? आधी मैं काट लेती हूं, बाक़ी आपके हवाले।

सेर्गेई : धन्यवाद, यह मेरी अत्यन्त प्रिय टॉफ़ी है।

वाल्या : क्या बात है? आप इसे घूर क्यों रहे हैं?

सेर्गेई : इस पर लिपस्टिक लगी है।

वाल्या : क्या आपको लिपस्टिक अच्छी नहीं लगती?

सेर्गेई : अधिक नहीं। आख़िर तो वह रंग ही है।

वाल्या : आप मर्दों को ख़ुश करने की कोशिश के बदले में हम औरतों को यही एहसान मिलता है! तो क्या आप इसे नहीं खाएंगे?

सेर्गेई : खाऊंगा क्यों नहीं। **(मिठाई को मुंह में रख लेता है)**

वाल्या : आप तो सचमुच बड़े बहादुर हैं!

सेर्गेई : इसमें भी कोई शक है!

वाल्या : आपको मैं कभी क्लब में नहीं देखती।

सेर्गेई : मैं हमेशा बहुत व्यस्त रहता हूं। आख़िर मैं कोमसोमोल का संगठनकर्त्ता हूं और उसी में व्यस्त रहता हूं। कुछ पढ़ने की भी कोशिश करता हूं।

वाल्या : हां, आप मेरे दूसरे सभी दोस्तों से अधिक गंभीर हैं। **(मुस्कराती है)** आप के माता-पिता हैं?

सेर्गेई : हां। वे नज़दीक ही रहते हैं। पिता जी एक खान में फ़ोरमैन हैं, मां... मां बहुत अच्छी हैं। हर दूसरे इतवार को मैं उनके पास जाता हूं।

वाल्या (अचानक अशिष्टता से): मेरा बाप मल्लाह था।

सेर्गेई : था?

वाल्या : हां।

सेर्गेई : और तुम्हारी मां, वह ज़िंदा हैं?

वाल्या : मुझे नहीं मालूम। अब इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

सेर्गेई (उसकी तरफ़ देखता है): तो दुनिया में तुम एकदम अकेली हो?

वाल्या: एकदम अकेली? हरगिज़ नहीं। **(हंसती है)** अगर आप जानना ही चाहते हैं तो जान लीजिए कि मेरी एक नन्ही बेटी है।

सेर्गेई: बेटी?

वाल्या: हां, वह एक शिशु-गृह में रहती है तो अब आप को असलियत मालूम हो गयी। क्या आपको मेरे ऊपर तरस आ रहा है?

सेर्गेई: नहीं, नहीं। **(थोड़ी देर रुकने के बाद)** लेकिन तुम दुकान में क्यों काम करती हो? तुम्हें कैशियर का काम अच्छा लगता है?

वाल्या: मेरे लिए सब बराबर है। मैंने हर तरह की चीज़ कर देखी है। दुकान के काम में भी कुछ अच्छाइयां हैं।

सेर्गेई: जैसे?

वाल्या: ओह! आप तो ज़रूरत से ज़्यादा जानना चाहते हैं। **(कुछ देर तक वह ख़ामोश रहती है)** समझ में नहीं आता कि आज मुझे हो क्या गया है। आज मैं हमेशा की तरह ज़िंदादिल नहीं हूं, क्यों?

सेर्गेई: हमेशा तुम कैसी रहती हो, इसका मुझे क्या पता!

वाल्या: आपको कैसे पता हो सकता है। लेकिन मुझे अपना स्वभाव पसन्द है। मैं चाहती हूं कि मुझे अपने ही जैसा कोई युवक मिल जाए। मैं उसे जी-जान से प्यार करूंगी। **(सेर्गेई की तरफ़ देखती है)** आपकी कभी शादी हुई थी?

सेर्गेई: हां, एक बार। तुम हंसती क्यों हो?

वाल्या: मैं नहीं जानती क्यों... आपकी पत्नी को क्या हुआ?

सेर्गेई: हम लोग अलग हो गये।

वाल्या: क्यों?

सेर्गेई (कुछ सोचते हुए): क्योंकि शायद हम लोगों को एक दूसरे की ज़रूरत नहीं थी। **(अनुनय के स्वर में)** मतलब यह कि हम लोग सचमुच एक दूसरे से प्रेम नहीं करते थे।

वाल्या (कोमल स्वर में): क्या आप समझते हैं कि ऐसी भी कोई चीज़ होती है?

सेर्गेई: क्या?

वाल्या: सच्चा प्रेम?

सेर्गेई (एक क्षण के बाद): ज़रूर होता है।

वाल्या (कोमल स्वर में): यह जानकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई।

सेर्गेई (उसे उसकी बात सुनाई नहीं पड़ी): क्या कहा तुमने?

वाल्या: कभी-कभी अकेलेपन से डर लगने लगता है।

सेर्गेई (थोड़ी देर रुकने के बाद): लेकिन विक्टर तो है?

वाल्या (तीक्ष्णता से): विक्टर को छोड़िये। **(थोड़ी देर रुकने के बाद)** मुझे अपने बारे में भी बताइये। मैं सब कुछ जानना चाहती हूं। आपने कोई बात ही नहीं की। अरे, सिर्फ़ मैं ही बकती जा रही हूं।

सेर्गेई: बात करने को अधिक कुछ नहीं है। मेरे पास ऐसी कोई चीज़ नहीं कि जिसका ज़िक्र किया जाए—सिवाय इसके कि मेरा जन्म साइबेरिया में हुआ था। हंसो मत! बीसवीं शताब्दी का सम्पूर्ण उत्तरार्द्ध हम साइबेरियावासियों का ही होने जा रहा है। रूस का हृदय इधर ही चला आ रहा है, मेरी बात का विश्वास करो। दो सौ साल पहले लोमोनोसोव* ने कहा था: "रूसी शक्ति साइबेरिया के माध्यम से बढ़ेगी।" और उनकी यह भविष्यवाणी आज हमारी आंखों के सामने सच साबित हो रही है।

वाल्या: मुझे अपने बारे में बताइये, सेर्गेई। साइबेरिया के बारे में तो मैं बहुत कुछ सुन चुकी हूं। निर्माण-कार्य में लगे आपको बहुत दिन हो गये?

सेर्गेई: यह मेरा तीसरा साल है। इसका मतलब हुआ कि बिलकुल शुरू से मैं यहां हूं। टेकनिकल स्कूल का अध्ययन मैंने जल्द ही समाप्त कर लिया और फ़ौरन बाद एक्सकेवेटर पर काम करने लगा। जल्द ही मुझे इस काम के आठ साल पूरे हो जायेंगे। यह सही है कि शुरू में मैंने चेल्याबिन्स्क नगर में बनाये गये एक्सकेवेटरों पर काम किया था। हमारी अत्याधुनिक दस घनमीटरवाली मशीनों की तुलना में वे बिल्कुल मामूली थे। यहीं मेरी मुलाक़ात विक्टर से हुई और हमारी दोस्ती हो गयी। मेरा ख़याल है कि तुम्हें पता होगा कि उसका घरेलू जीवन कितना दुखपूर्ण था। उसकी मां मर गयी थी और उसके पिता ने दुबारा शादी कर ली है। बेचारा! उसकी सौतेली मां ख़राब औरत निकली। युद्ध के बाद उनका परिवार लेनिनग्राद लौट गया। लेकिन वह यहीं रह गया। वह साइबेरियावासी बन गया। अपने पिता की याद उसे बहुत सताती है,

---

* लोमोनोसोव मि० व० (१७११—१७६५)—विश्वव्यापी महत्त्व के प्रथम रूसी वैज्ञानिक, जो कवि, चित्रकार और इतिहासकार के रूप में भी प्रसिद्ध थे।

लेकिन उस स्त्री को वह माफ़ नहीं कर सकता... **(क्षणिक ख़ामोशी के बाद)** तुम्हें मालूम है कि कभी-कभी स्वप्न में वह तुम्हारा नाम लेता है? सच कहता हूं। वाल्या, तुम्हें उसका ख़याल रखना चाहिए, वह भी बिलकुल अकेला है। कोई नहीं है... तुम्हारे अलावा उसके और कोई नहीं। और कभी अगर वह अक्खड़पन दिखाता है तो तुम्हें उसे माफ़ कर देना चाहिए...

(दो नौजवान बेंच के पास आते हैं)

पहला नौजवान: बेंच पर यह कौन है? शर्त लगा लो अगर वाल्या न हो—हमारी नन्ही-मुन्नी वाल्या!

दूसरा नौजवान: इस बार वह किसे फंसा लायी है? कोई एकदम नया प्रेमी है! शाबाश, "सस्ता माल"!

पहला नौजवान (सेर्गेई से): ए, मूर्खाधिराज, बातें करके तुम बेकार अपनी शक्ति गंवा रहे हो। उसे बातें-वातें नहीं पसन्द हैं। उसे कुछ और ही चाहिए।

दूसरा नौजवान: भले आदमी, उसे उधर झाड़ियों में ले जाओ। उसे कोई एतराज़ नहीं होगा।

(सेर्गेई धीरे-धीरे उठकर खड़ा हो जाता है और दूसरे नौजवान को उठाकर पटक देता है)

दूसरा नौजवान (खड़े होते हुए): आओ यार, यहां से चलते बनो।

पहला नौजवान: इसके दिमाग़ का कोई पेंच ढीला है।

(चले जाते हैं)

वाल्या (एक लम्बी ख़ामोशी के बाद): सेर्गेई, मुझे अफ़सोस है। **(भागकर चली जाती है)**

(सेर्गेई उसको देखता रहता है)

कोरस: धीरे-धीरे रात अंगारा नदी के किनारे फैलती गयी है।
—एक-एक करके बस्ती की बत्तियां गुम होती जाती हैं।
—और नदी पर रात की ठंडी बयार बहने लगती है।

—काफ़ी रात बीत गयी है, लेकिन वाल्या अभी तक घर नहीं पहुंची। शायद यही वजह है जिससे लारीसा सो नहीं पा रही है।

लारीसा (कोरस में): चौंतीस... क्या मेरी उम्र बहुत हो गयी? क्या सचमुच मेरी ज़िन्दगी समाप्त हो गयी?

कोरस: लेकिन जब वाल्या लौटकर आयेगी तो लारीसा उससे कोई सवाल नहीं पूछेगी और उसके कमरे की खिड़की की रोशनी फ़ौरन बुझ जाएगी।

—लेकिन क्या लारीसा सो जाएगी? गर्मी की यह रात कितनी गर्म है...

लारीसा: क्या चौंतीस साल सचमुच बहुत होते हैं?

कोरस: और कुछ ही दिनों में शनिवार की किसी शाम को वे दोनों अंगारा के किनारे उस जगह पहुंच जाएंगी जहां जंगल एकदम पानी के पास तक फैला है।

(लारीसा और वाल्या अंगारा के किनारे एक पेड़ के नीचे लेटी हुई हैं। तीसरे पहर का समय है)

लारीसा: वाल्या और मैं अंगारा के तट पर पड़ी अपने-अपने विचारों में खोई हैं। वाल्या विक्टर के बारे में सोच रही होगी। मैं अपने बचपन और जवानी की याद कर रही हूं। २२ जून, १९४१ को इतवार का दिन था। उस दिन सुबह आकाश कितना नीला था...

वाल्या: लारीसा, चलो एक और डुबकी लगा आयें।

लारीसा (अपनी जगह से हिले बिना): अच्छी बात है।

वाल्या: आज तुम इतनी चुप क्यों हो?

लारीसा: मैं सपने देख रही हूं।

वाल्या: किस चीज़ के बारे में?

लारीसा: एक ऐसी चीज़ के बारे में जो हमेशा के लिए छूट गयी।

वाल्या: वह क्या है?

लारीसा: मेरा बचपन।

वाल्या: इससे क्या फ़ायदा है?

लारीसा: मैं फिर से सब कुछ शुरू करना चाहती हूं।

वाल्या: क्या फिर से स्कूल जाया जाए?.. मैं तो नहीं जाऊंगी!

लारीसा: तुम पागल हो!

वाल्या : मैं क्यों पागल हूं?

लारीसा : मेरा जीवन समाप्त हो गया। तुम्हारे लिए ठीक है, तुम अभी सिर्फ़ पच्चीस वर्ष की हो।

वाल्या : इससे क्या हुआ?

लारीसा : अब वक़्त आ गया कि तुम भी अपना घर बसा लो — गोकि आजकल पति का मिलना आसान नहीं है।

वाल्या : नहीं, आसान नहीं, और ख़ासकर मेरे लिए तो और भी आसान नहीं है। मेरी शोहरत जो फैल गयी है! **(चिड़चिड़ाकर)** फिर भी अगर मैं चाहूं तो बेशक शादी कर सकती हूं। यहां बेवकूफ़ों की कमी नहीं है। लेकिन शादी इतनी नीरस चीज़ है। **(हंसती है)** ख़ुद ही शादी कर लो, मेरी शादी क्यों करवाती हो?

लारीसा : मेरी उम्र तो ढल गयी है। मेरा जोड़ीदार शायद बर्लिन के क़रीब किसी क़ब्र में पड़ा होगा...

वाल्या : तो तुम्हारा जोड़ीदार था भी?

लारीसा : ज़रूर रहा होगा। बस इतना ही है कि हमारी मुलाक़ात नहीं हुई थी।

वाल्या (ठंडी सांस लेते हुए): हां, युद्ध... लारीसा, आओ, थोड़ी बियर पियें। आख़िर कल तो हमारी छुट्टी है। **(एक बोतल खोलती है)** तुम गिलास ले लो। मैं सीधे बोतल से ही पी लूंगी। आओ दोस्त, जामे सेहत उठाओ।

लारीसा (पीते हुए): यह अब भी ठंडी है।

वाल्या : मैंने इसे पानी में रख दिया था।

लारीसा (यकायक): क्या तुम्हें मालूम है कि मेरे सारे घरवाले २२ जून को मिंस्क में मारे गये थे?

वाल्या (धीमी आवाज़ में): तुम्हें थोड़ी और दूं?

लारीसा : हां, लाओ।

वाल्या : लो, ये आख़िरी बूंदें हैं।

लारीसा : लीज़ा कल प्रसूति-गृह से लौट आयी।

वाल्या : वह तो पागल है। इस बार क्या हुआ?

लारीसा : लड़का। मैंने उसे देखा। एकदम बदशक्ल है। लेकिन आंखें काले-काले जामुनों जैसी हैं...

वाल्या : मेरे पास बियर की एक और बोतल है।

लारीसा : अब काफ़ी हो गया।

वाल्या (थोड़ी देर रुकने के बाद): अब शायद उन्हें एक अलग कमरा मिल जाएगा?

लारीसा : मिल जाना चाहिए। उसका प्योत्र अपना काम बहुत अच्छी तरह कर रहा है।

वाल्या : ईर्ष्या मत करो। वहां है ही क्या? लंगोट, गन्दे कपड़े, पोतड़े!

लारीसा : दोस्त! लगता है तुम्हें डाह हो रही है क्योंकि तुम्हारे लिए यह अगम्य ख़ुशी है।

वाल्या (अपने सिर को ज़ोर से झटकते हुए): धत्त! मैं चाहूं तो अब भी बच्चा पैदा कर सकती हूं। प्रश्न यह नहीं है। लारीसा, जानती हो मैंने क्या किया? मैंने यहां एक सनकी से कह दिया कि मेरे एक बच्ची है।

लारीसा : अरी, मूर्ख! यह तुमने कहा ही क्यों?

वाल्या : मैं देखना चाहती थी कि उसकी क्या प्रतिक्रिया है।

लारीसा : ज़बान में लगाम नहीं है तुम्हारे।

वाल्या : आख़िर ज़िन्दगी कटे भी तो कैसे? **(अपनी घड़ी देखती है)** आठ बज रहे हैं। मेरा विक्टर आता होगा।

लारीसा (सुस्ती के लहजे में): इंतज़ार कर रही हो?

वाल्या : उसके साथ बड़ा मज़ा आता है।

(दोनों ख़ामोश हो जाती हैं)

लारीसा (अचानक): हे भगवान, मैं ख़ुद से ऊब गयी हूं।

वाल्या : कोई हर्ज नहीं, 'यहां के नौजवान ही न तुमसे ऊब जाएं।

लारीसा : मैं छोटे मन की और ईर्ष्यालु होती जा रही हूं।

वाल्या : लारीसा, यह बकवास बन्द करो। सुनो, मेरे पास आज एक चिट्ठी आयी है। किसी अज्ञात प्रशंसक के पास से। **(एक लिफ़ाफ़ा निकालती है)** देखो!

लारीसा : इसमें क्या है?

वाल्या (पढ़ती है): "वाल्या, इस दुनिया में मनुष्य कोई लक्ष्य लेकर पैदा होता है। और अगर वह अपने आस-पास की दुनिया को सुन्दर बनाने के लिए कुछ करने में सफल हो जाता है, तो समझो कि उसका जीवन

सफल हो गया। यही कारण है कि अकेले कोई कभी सुखी नहीं हो सकता। शुभेच्छाओं के साथ, तुम्हारा..."

लारीसा: बस?

वाल्या: इतना काफ़ी नहीं है?

लारीसा: किसने लिखा है? तुम्हें कोई अन्दाज़ है?

वाल्या: कौन जाने लिखा है किसने, अरी, मैं मूरख पढ़े जा रही हूं... **(थोड़ी ख़ामोशी के बाद)** लेकिन यह सब बकवास है। **(चिट्ठी को फाड़ डालती है)** जाओ, काग़ज़ की नन्ही-नन्ही चिड़ियो, छू हो जाओ!

लारीसा: तुमने यह क्यों किया?

वाल्या: मैं जानती हूं उसे किसने लिखा था।

लारीसा: किसने?

वाल्या: ओह, एक... सनकी ने।

(विक्टर सामने दिखायी देता है। धीरे-धीरे वह युवतियों के पास आ जाता है)

विक्टर: यशस्वी दुकानदारिनों को सलाम, लारीसा पेत्रोव्ना, आज तुम्हारी तबीयत कैसी है?

लारीसा: शुक्रिया, मुझे कोई शिकायत नहीं है। **(उठ खड़ी होती है और धीरे-धीरे नदी के तट की ओर चली जाती है)**

वाल्या: तुम जा कहां रही हो?

लारीसा: नदी के किनारे ज़रा देर घूमूंगी। **(जाती है)**

विक्टर: वह चली क्यों गयी?

वाल्या: व्यवहार-कुशलता बरत रही है। **(थोड़ी देर रुककर)** बीयर पीओगे?

विक्टर: हो, तो लाओ।

वाल्या: कोई नयी बात?

विक्टर: आज हमें एक नयी योजना दी गयी है। जल्दी ही बांध पर बड़ी-बड़ी चीज़ें बननी शुरू हो जाएंगी। अब हमें तूफ़ान की गति से काम करना होगा।

वाल्या (हंसती है): तो अब सारी मौज-मस्ती को सलाम कर लेना चाहिए।

विक्टर: तुम्हारा ख़याल ग़लत है। सेर्गेई कोई न कोई रास्ता सोच निकालेगा, तुम देखना। जब तक वह हमारे साथ है हमें कोई परेशानी नहीं होगी।

वाल्या: हमेशा सेर्गेई, सेर्गेई! कोई सोचेगा तुम सब दूध पीते बच्चे हो। अपनी आया के बिना क्या तुम कुछ नहीं कर सकते?

विक्टर: आज तुम बड़े झगड़ालू मूड में हो, हो न? हमारी खुशमिज़ाज वाल्या को आज हो क्या गया है?

वाल्या: ख़ैर, यह सब छोड़ो। लो, यह भुनी हुई मछलियां खाओ। लारीसा और मैं आज बाज़ार से इन्हें ख़रीद लाये थे।

विक्टर (खाते हुए): मेरी मां इस मछली का बहुत ही स्वादिष्ट सूप बनाती थीं।

वाल्या: तुम्हें अपने पिता की बहुत याद आती है?

विक्टर (फ़ौरन जवाब नहीं देता): मेरी याद के बिना भी वे बड़े मज़े में रह सकते हैं।

वाल्या: तुम्हें कभी लेनिनग्राद की याद नहीं सताती?

विक्टर: मेरा घर यहां है, अंगारा के किनारे।

वाल्या: तो तुम उससे बहुत नफ़रत करते हो, है न?.. मेरा मतलब, तुम्हारी सौतेली मां से है?

विक्टर (फ़ौरन जवाब नहीं देता): तुम्हें किसने बताया?

वाल्या: मैं सब कुछ जानती हूं।

विक्टर: मुझे पापा के लिए अफ़सोस है।

वाल्या: क्या यह सच है कि नींद में भी तुम मेरा नाम पुकारते हो?

विक्टर: यही कसर रह गयी थी।

वाल्या (कुछ मौन के बाद): चलो, नाव पर सैर करने चलें।

विक्टर: मुमकिन नहीं। रात को आठ बजे चीफ़ ने सारी टोली की एक मीटिंग बुलायी है। मीटिंग का मुद्दा है कि काम को अधिक चुस्ती-फुर्ती के साथ कैसे किया जाये?

वाल्या: तो फिर आज की शाम की छुट्टी?

विक्टर: आज की कसर हम कभी और पूरी कर लेंगे।

(वे आलिंगन करते हैं)

वाल्या (थोड़ी देर बाद खिलखिलाकर हंसने लगती है): विक्टर, तुम जानते हो में शादी करने जा रही हूं।

विक्टर: जाओ भी... वह कौन ख़ुशक़िस्मत आदमी है?

वाल्या (चुनौती के ढंग से): क्या पता तुम्ही हो?

विक्टर: मैं? यह बहुत बढ़िया मज़ाक़ होगा!

वाल्या: मज़ाक़ की इसमें क्या बात है?

विक्टर: ओह! मूर्खता की बातें न करो। इसकी ज़रूरत भी क्या है? क्या हम शादी के बिना मज़े नहीं करते? **(उसे छाती से लगाता है)** मीटिंग के बाद मैं तुम्हारे पास आऊंगा... अपनी साथिन को सिनेमा देखने भेज देना—आख़िरी शो में।

वाल्या: अच्छी बात है!

विक्टर: उससे कहना कि बड़ी दिलचस्प पिक्चर है... कहोगी न?

वाल्या: कहूंगी।

विक्टर: तो ठीक है। **(उसके गाल थपथपाता है)** मैं चलूं, नहीं तो चीफ़ की डांट सुननी पड़ेगी। **(जाता है)**

वाल्या (अकेले में): "यह बहुत बढ़िया मज़ाक़ होगा!"

(नदी किनारे लारीसा आती है)

लारीसा: ख़ूब बातें कीं?

वाल्या (यंत्रवत): बेशक।

लारीसा: देखो, सूरज डूब गया।

(ख़ामोशी)

वाल्या: विक्टर भी ख़ूब मज़ाक़िया है... कहने लगा कि मुझसे शादी करना चाहता है!

लारीसा: झूठ बोल रही हो!

वाल्या: सचमुच, वह कह रहा था। लारीसा, आज तुम कहां जाना चाहती थीं?

लारीसा: सिनेमा देखने। सोच रही थी कि आख़िरी शो के लिए टिकट ले आऊं।

वाल्या: मत जाओ।

लारीसा: क्यों?

वाल्या: मैंने सुना है कि वह एकदम बण्डल पिक्चर है।

(रोशनी सिर्फ़ कोरस पर पड़ती है)

कोरस: तुम्हारे घर के सामने नन्हे-नन्हे बच्चे खेल रहे हैं। वे कैसे विचित्र लगते हैं। उनमें से एक की अंगुली में फांस चुभ गयी है, दूसरा एक गुबरैले को बड़े ध्यान से देख रहा है, तीसरे ने अपने साथ के बच्चे को चांटा जड़ दिया है। तुम उनके पास से निकलती हो तो उनमें से एक भी "मम्मी!" कहकर तुम्हें नहीं बुलाता!

—तुम अकेली घर लौटती हो। ऐसा कोई नहीं जो तुम्हें सुबह जगा दे।

—तुम्हारे पड़ोसी का रेडियो बिगड़ गया है। वास्या काम से लौटकर आता है और उसकी मरम्मत में जुट जाता है। सारे घर को वह उलट-पलट देता है, लेकिन उसकी बीवी ख़ुश है। वह कहती है: "मेरा वास्या कोई भी चीज़ ठीक कर सकता है..." बहुत रात बीते जब घूमकर वे घर आते हैं तो झगड़ा कर लेते हैं, थोड़ी देर तक मुंह लटकाये रहते हैं, और फिर उनकी दोस्ती हो जाती है... हाय राम, वे तो फिर बंध गये आलिंगन में!

—तुम अकेली ही घर आयी हो। सवेरे तुम्हें कोई नहीं जगायेगा।

(होस्टल में लड़कियों का कमरा। आज इतवार है। लारीसा और वाल्या मेज़ सजा रही हैं)

लारीसा: विक्टर जानता है कि तुमने सेर्गेई को दावत पर बुलाया है?

वाल्या: नहीं, मैं उसे अचम्भे में डालकर छकाना चाहती हूं। आज मेरा जन्म-दिन जो है—मैं जिसे भी चाहूं निमन्त्रित कर सकती हूं।

लारीसा: मालूम होता है, तुम फिर कोई शरारत करनेवाली हो!

वाल्या: तुम नाराज़ न हो। मेरी शादी होनेवाली है।

लारीसा: पागलपन की बातें न करो।

वाल्या: अजब बात है, उसे कोई किसी से भी यह बात कहे मज़ाक़ लगता है। मुझे कोई परवाह नहीं, तुम जितना चाहो हंसो। मैं अकेले रहते-रहते ऊब गयी हूं। बोलो न, मैं किसी से कम अच्छी हूं क्या?

लारीसा: क्या ... क्या विक्टर ने सचमुच शादी का प्रस्ताव किया है?

वाल्या: अभी तक नहीं, लेकिन वह करेगा। बात सिर्फ़ यह है कि मैं शायद किसी और को ही चुन लूं!

लारीसा: लेकिन तुम किसी को प्यार तो करती नहीं!

वाल्या: और तुम्हें मालूम है प्यार क्या होता है!

लारीसा: मालूम है। मुझे सिर्फ़ यह याद नहीं कि वह सच था या कोरा सपना।

वाल्या: देखो, मैं कहती थी न! **(उसे छाती से लगाती है)** अच्छा, अब रसोई घर में जाओ और सब चाकू-छुरी धो डालो।

लारीसा: अच्छी बात है... **(वाल्या के हाथ से तश्तरियां लेकर चली जाती है)**

वाल्या (शीशे के पास जाकर अपने प्रतिबिम्ब को ग़ौर से देखती है): आह, वाल्या, वाल्या... तुम भी एक बार अच्छी तरह उन्हें दिखा दो।

(दरवाज़े पर कोई दस्तक देता है)

आ जाइये।

(सेर्गेई अन्दर आता है)

सेर्गेई: नमस्ते, वाल्या। तुमने मुझे चिट भेजी थी... आने के लिए?

वाल्या: हां।

सेर्गेई: सच कहूं तो मुझे बहुत ताज्जुब हुआ था... उस दिन सिनेमा देखने के बाद से हमारी मुलाक़ात तक नहीं हुई थी।

वाल्या: आज मेरा जन्म-दिन है।

सेर्गेई: यह लो! तुमने मुझे बताया क्यों नहीं?

वाल्या: मैं नहीं चाहती थी कि आप मेरे ऊपर फ़िज़ूल पैसा ख़र्च करें।

सेर्गेई: क्यों नहीं? **(मुस्कराता है)** तुम तो जानती हो कि मैं काफ़ी कमा लेता हूं।

वाल्या: इसीलिए तो और भी नहीं चाहती थी क्योंकि आपके लिए उसका कोई महत्व न होता।

सेर्गेई : लेकिन तुम विक्टर के ज़रिए मुझसे कहलवा सकती थीं?

वाल्या : ओह, मैं तो उसे भी आज अचम्भे में डालना चाहती हूं। आप उनके सबसे गहरे दोस्त हैं, है न?

सेर्गेई : हां।

वाल्या : आपने कहा था कि वह मुझसे अत्यधिक प्रेम करता है। है न?

सेर्गेई : हां।

वाल्या : क्या आप क़सम खा सकते हैं कि आपने यह सब अपने मन से गढ़कर नहीं कहा था? हां, तो अब आप चुप हैं! सुनाइये अब कोई और गप!

सेर्गेई (आहिस्ता): वाल्या, मेरा ख़याल है कि वह तुमसे प्रेम करता है।

वाल्या (कड़ुवाहट से): और क्या ख़याल है आपका? **(एक क्षण वह चुप रहती है, फिर हंसने लगती है)** अच्छी बात है... अब मैं रसोई में जाकर लारीसा की मदद करूं। **(दौड़ जाती है)**

(युवतियों के कमरे को सेर्गेई अत्यन्त दिलचस्पी से देखता है। दरवाज़े पर कोई दस्तक देता है। विक्टर अन्दर आ जाता है)

विक्टर : अरे, सेर्गेई! तुम यहां क्या कर रहे हो?

सेर्गेई : वाल्या ने मुझे निमंत्रण भेजा था। वह तुम्हें चकित करना चाहती थी।

विक्टर (हंसते हुए): ओह, यह भी कितनी बढ़िया लड़की है! मैं चिन्ता कर रहा था कि दो लड़कियों को लेकर सारी शाम मैं क्या करूंगा। और अब देखो तुम आ गये। वाल्या ग़ज़ब की लड़की है!

सेर्गेई (थोड़ी देर रुककर): विक्टर, एक चीज़ मैं तुमसे बहुत दिनों से पूछना चाहता हूं।

विक्टर : अच्छा?

सेर्गेई : मैं अभी तक समझ नहीं पाया कि तुम्हारा वाल्या के साथ कैसा सम्बन्ध है?

विक्टर : इसमें समझने को है ही क्या? मुझे वह अच्छी लगती है। बहुत अच्छी।

सेर्गेई : अच्छी लगती है, है न?

विक्टर: हां, वह बहुत मज़ेदार है! फिर वह नाचती भी ग़ज़ब का है। दूसरी चीज़ों के बारे में मैं चुप ही रहूंगा।

सेर्गेई (विक्टर के हाथ में पैकेट को देखकर): वाल्या के लिए भेंट है?

विक्टर: कुछ समय पहले एक फ़ोटोग्राफ़र उसके इर्द-गिर्द चक्कर लगाता रहा। विश्वास करो या न करो मैं एकदम पागल हो उठा था। **(रूखी हंसी हंसता है)** मैं बस रोया ही नहीं।

सेर्गेई: उससे शादी क्यों नहीं करते हो?

विक्टर: मैं अपने को बांध क्यों लूं? फिर वक़्त नहीं आया। **(रुक जाता है)** इसके अलावा, वाल्या के बारे में यहां तरह-तरह की बातें फैली हुई हैं। निस्संदेह, मैं उनकी तरफ़ अधिक ध्यान नहीं देता। वाल्या ज़रूर एक अच्छी लड़की है, लेकिन... आम तौर पर, सेर्गेई, मैं इन लोगों का अधिक विश्वास नहीं करता। मेरा मतलब है, औरतों का। ये लोग मन से बहुत कमीनी होती हैं। वे दयालु होने का सिर्फ़ दिखावा करती हैं। कुछ थोड़ी बेहतर होती हैं, कुछ अधिक ख़राब — पर ज़्यादा फ़र्क नहीं है। अगर तुम देख सकते कि उस औरत ने मेरे पिता का क्या हाल कर दिया है! **(दीवार पर टंगा गिटार उतार लेता है)**

सेर्गेई (मुस्कराता है): और मुझे जब मां की याद आती है सभी महिलाएं अद्‌भुत लगती हैं।

विक्टर: तुम ख़ुशक़िस्मत हो... **(गिटार को बजाते हुए आहिस्ता-आहिस्ता कुछ गाता है)**

(वाल्या और लारीसा आ जाती हैं। जब वे विक्टर को गाता हुआ सुनती हैं तो दरवाज़े पर ही रुक जाती हैं)

लारीसा (धीरे से): तुम कितना अच्छा गाते हो, विक्टर!

विक्टर: शुक्रिया, लारीसा पेत्रोव्ना। **(वाल्या से)** मुबारक हो, वाल्या। **(पैकेट उसके हाथों पर रखता है)** यह मेरी एक छोटी-सी भेंट है।

वाल्या (पैकेट खोलती है और उसमें से सुन्दर-सा एक रंगीन स्कार्फ़ निकालती है): ओह, विक्टर, कितना सुन्दर है! **(स्कार्फ़ को अपने गले में बांधती है)**

सेर्गेई: तुम्हें ख़ूब फबता है, वाल्या।

वाल्या: और सेर्गेई मेरे लिए कुछ नहीं लाये।

सेर्गेई: लेकिन मुझे...

लारीसा: कोई बात नहीं, सेर्गेई। इस चीज़ को भूल गाओ... **(थोड़ी देर रुककर)** कहिये, अब क्या करें? तो हो जाये एक बाज़ी ताश की?

सेर्गेई: मेरी समझ में ताश मूर्खों का खेल है।

लारीसा: क्यों?

सेर्गेई: क्योंकि जीवन बहुत छोटा होता है—ताश में बर्बाद करने का समय उसमें नहीं रहता।

वाल्या: शायद आप अन्तर्राष्ट्रीय मसले पर कोई भाषण देना पसंद करेंगे? आपको यह काम आता ही होगा?

सेर्गेई (मुस्कराता है): मैं अपना दोष स्वीकार करता हूं! पिछले दिन महिलाओं के होस्टल में मैंने फ़ान्स की परिस्थिति पर एक भाषण दिया था। मुझे याद है कि मेरे पास किसी ने एक पर्चा भी भेजा था। उसमें यह पूछा गया था कि फ़ान्स में बच्चे कम क्यों पैदा होते हैं। वाल्या, मेरा ख़याल है कि वह पर्चा तुम्हीं ने भेजा था।

वाल्या: उसका आपने जवाब क्यों नहीं दिया था?

सेर्गेई (सामान्य भाव से): दरअसल मैं बच्चों की जन्म-दर जैसे विषय पर महिला-छात्रावास में विस्तार से कुछ कहना नहीं चाहता था।

वाल्या: मतलब है आप डर गये थे।

सेर्गेई (हंसते हुए): डर गया था।

वाल्या: बहरहाल, आपको इस बात से फूलकर कुप्पा न होना चाहिए कि आपके पास पर्चे आते हैं। मेरे पास भी पर्चे आते हैं।

विक्टर (हंसते हुए): कृतज्ञ ग्राहकों से?

वाल्या: शायद! तुम्हें मेरी बात का यक़ीन नहीं? लो, मैं एक पर्चा पढ़कर तुम्हें सुनाती हूं। क्यों, सेर्गेई, आप क्या कहते हैं? **(चिट्ठियों का एक पुलिन्दा बाहर निकालती है)** मैं इसे पढ़ूं?

सेर्गेई: ज़रूर।

विक्टर: चलो पढ़ो। कुछ हंसने का मसाला ही मिलेगा।

वाल्या (पढ़ती है): "मैं हर समय तुम्हारे बारे में सोचता रहता हूं, यद्यपि तुम्हें यह भी नहीं मालूम कि मैं कौन हूं। वाल्या, मैं सोचता हूं कि तुम्हारी ज़िंदगी का ढंग सही नहीं है। तुम्हें न तो ख़ुद में दिलचस्पी है और न अपने आस-पास के लोगों में। हमारे युग और हमारी अवस्था

में इस तरह जीवन बिताना लज्जाजनक है। सोचो तो, अगर इस बात को तुमने तब समझा जब समय बीत जायेगा तो कितना बुरा होगा!" **(सिर ऊपर करके देखती है)** है न हृदय-बेधक? नहीं?

विक्टर: इसे किसने लिखा है?

वाल्या: मेरी भलाई चाहनेवाले किसी अज्ञात व्यक्ति ने!

लारीसा: तुम सब अपने मन से गढ़-गढ़कर सुना रही हो...

वाल्या: हरगिज़ नहीं! अच्छा, आगे सुनो... **(एक दूसरा पत्र पढ़ती है)** "मैं तुम्हें फिर लिख रहा हूं, कृपया नाराज़ न होना। मुझे लगता है कि तुम बहुत एकाकी हो। वाल्या, तुम्हें अपने जीवन का तरीक़ा बदल देना चाहिए। उसे बदलो, उसे ज़रूर बदलो। काश, मैं तुम्हारी मदद कर सकता!" **(सेर्गेई की तरफ़ देखती है)** कितना करुण है, है न, सेर्गेई?

(सेर्गेई कोई उत्तर नहीं देता)

विक्टर: हो सकता है, इन्हें किसी पागल पादरी ने लिखा हो?

वाल्या: और इस आख़िरी पत्र को भी सुनो। **(पढ़ती है)** "वाल्या, मेरी प्रियतमा, अपने विक्टर को लात मारकर अलग करो और मेरे साथ शादी कर लो..."

सेर्गेई: यह सच नहीं है... इस तरह का कोई पत्र नहीं था।

वाल्या: आपको क्या मालूम? **(विक्टर की तरफ़ देखकर)** तुमने सुना, तुम्हारे बारे में मुझे कैसी सलाह दी जाती है? लेकिन मैं उससे नहीं, तुम्हीं से शादी करने जा रही हूं, है न, विक्टर?

विक्टर: यह कैसा मज़ाक़ है?

लारीसा: वाल्या, अब बहुत हो चुका।

वाल्या: सेर्गेई ने मुझे बताया कि तुम अपनी नींद में भी मेरा नाम लेकर पुकारते हो।

विक्टर: बेवक़ूफ़ी की बातें न करो।

वाल्या: शायद तुम्हारे दोस्त मुझे झूठ-मूठ बहला रहे थे? **(विक्टर की तरफ़ देखती है)** सेर्गेई, क्या आप जानना चाहते हैं कि अब यह क्यों पीछे हट रहा है? क्योंकि इसे ऐसी पत्नी नहीं चाहिए जिसकी मेरी जैसी शोहरत हो! याद है उस दिन सिनेमा के पास उन लोगों ने क्या कहा था?

सेर्गेई : यह सच नहीं है... विक्टर, इनसे कह दो कि यह सच नहीं है...

वाल्या : अच्छा, आप इसकी तरफ़दारी कर रहे हैं? यह भलमनसाहत है कि आप अपने दोस्त की तरफ़दारी कर रहे हैं। लेकिन आपका दोस्त ख़ुद कुछ नहीं बोलता? अच्छा, अब आप लोग यहां से तशरीफ़ ले जाइये। आप सब लोग। पार्टी ख़त्म हो गयी। इसके अलावा, आज मेरा जन्म-दिन है भी नहीं। मैंने झूठ-मूठ कह दिया था। मेरा जन्म-दिन अगस्त में है। मैंने तो मज़ाक किया था।

सेर्गेई : विक्टर, ये पत्र मेरे हैं।

विक्टर : तुम्हारे?

सेर्गेई (सामान्य भाव से) : हां। मैं वाल्या से प्रेम करता हूं, मैं उससे बहुत प्रेम करता हूं। मैं उससे शादी करना चाहता हूं। **(वाल्या से)** मैं नहीं जानता कि तुम इनकार कर दोगी तो मैं ज़िन्दगी कैसे गुज़ारूंगा।

लारीसा : ओ बाबा! मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा।

सेर्गेई (विक्टर से) : विक्टर, अगर तुमने ख़ुद वाल्या से इनकार न कर दिया होता तो मैं कभी यह बात ज़बान पर न लाता।

वाल्या (विक्टर से) : सुना? अब यहां से तुम जाओ। मैं तुम्हें अब और यहां नहीं देखना चाहती, निकलो!

विक्टर : क्या तुम... क्या तुम संजीदगी से यह कह रही हो?

वाल्या (दृढ़ता से) : हां। यहां से जाओ, विक्टर।

विक्टर : अच्छी बात है। इसे मैं कभी नहीं भूलूंगा। **(धीरे-धीरे बाहर निकल जाता है)**

(वाल्या सेर्गेई के पास जाती है और उसे बड़े ग़ौर से देखती है)

लारीसा : उसे छोड़ दो। सुनती हो, वाल्या?

वाल्या (आहिस्ता से) : क्यों?

लारीसा : क्योंकि तुम उससे प्रेम नहीं करतीं।

वाल्या : तुमने फ़ैसला क्यों किया? **(हंसी उड़ाने के अन्दाज़ में)** इसका पता मैं शादी हो जाने के बाद लगाऊंगी। यह अच्छा पैसा कमाता है, इसके साथ मौज-मस्ती से जीवन बिताया जा सकता है।

लारीसा : मैं यहां से चली जा रही हूं। मैं तमारा के साथ रहूंगी...

तुम्हारी बातों से मुझे डर लगता है, वाल्या। **(तेज़ी से बाहर चली जाती है)**

वाल्या (थोड़ी देर की ख़ामोशी के बाद): अब तुम क्या कहते हो?

सेर्गेई: हम लोग तुम्हारी नन्ही बेटी को शिशु-गृह से ले आयेंगे और फिर हम एक साथ रहेंगे।

वाल्या: मेरे कोई बेटी-वेटी नहीं है। मैंने उसका क़िस्सा योंही गढ़ लिया था। समझे? पूरा का पूरा क़िस्सा! और अब जाओ, मैं एकान्त चाहती हूं।

सेर्गेई (कोमल स्वर में): मैं तुम्हारे बिना जी नहीं सकता। बिलकुल नहीं।

वाल्या: मेहरबानी करके... अब जाइये।

(धीरे-धीरे क़दम उठाता हुआ सेर्गेई कमरे से बाहर निकल जाता है। कटे वृक्ष की तरह वाल्या बिस्तर पर गिर जाती है और फूट-फूटकर रोने लगती है।

धीरे-धीरे कमरा दृष्टि से ओझल हो जाता है और उसकी जगह सेर्द्यूक और कोरस नज़र आने लगते हैं)

सेर्द्यूक: मेरा नाम उक्राइनी है, लेकिन मेरा रोम-रोम साइबेरियाई है।

कोरस: स्तेपान सेर्द्यूक, तुम किस तरह के आदमी हो?

सेर्द्यूक (कुछ देर सोचने के बाद): कुल मिलाकर, मैं एक सुखी आदमी हूं।

कोरस: तुम्हारे सुख का कारण?

सेर्द्यूक (ठहरकर, तीक्ष्ण स्वर में): मैंने जीवन में अपना स्थान पा लिया है और मैं सन्तुष्ट हूं।

कोरस (मानो झिड़कते हुए): तिस पर भी तुम अकेले ही रहते हो।

सेर्द्यूक: स्त्रियां मेरी ओर आकर्षित नहीं होतीं।

कोरस: यह बताओ, दोस्त—क्या कभी किसी से तुमने प्रेम किया है?

सेर्द्यूक: हां। उसे ज़माना गुज़र गया।

कोरस: किससे प्रेम किया था?

एक स्त्री की आवाज़: मुझसे... हमारी मुलाक़ात मैगनीतोगोर्स्क में हुई थी। यह प्रथम पंचवर्षीय योजना के दिनों की बात है। इस्पात के एक बड़े कारख़ाने का निर्माण हो रहा था। हम लोग जब वहां पहुंचे तब काम शुरू ही हुआ था। ज़िंदगी सख़्त थी इतनी कि मैं बयान नहीं कर सकती। हम लोग एक दूसरे से प्रेम करते थे, लेकिन दो साल बाद मेरी मुलाक़ात एक और लड़के — अन्द्रेई — से हो गयी। वह सब से अच्छा था। और मैंने उसके साथ शादी कर ली। मैंने उसके तीन बच्चे जने। स्तेपान, मैं जानती हूं कि तुम्हारा दिल टूट गया था, लेकिन मैं विवश थी। अब मैं बूढ़ी हो चली हूं। मेरे नाती-पोते हो गये हैं। फिर भी कभी-कभी जब शाम के समय मैं अकेली होती हूं तब मुझे अपने प्रथम प्रेम की याद आती है।

सेर्द्यूक (कुछ सोचते हुए): शायद मैं स्नेह शून्य था या फिर मुझ में कोमलता की कमी थी?

कोरस: एक और भी थी... क्या तुम उसे भूल गये?

सेर्द्यूक: नहीं, मैं भूला नहीं हूं।

एक लड़की की आवाज़: वह मैं थी। मेरा नाम क्साना था। लड़ाई शुरू हुई तो मैंने नर्स के काम के लिए अपना नाम लिखा दिया। तब मैं बहुत छोटी थी । हमारी मुलाक़ात १९४३ में हुई थी। वह स्नेहशील और बहादुर था। युद्ध ने हमें एक ही जगह ला पटका था और दस दिन तक हम एक खंदक़ में अकेले साथ रहे थे... जब हम जुदा हुए तो मैंने वादा किया कि मैं उसे चिट्ठी लिखूंगी। मुझे याद है, वह रोने लगा था। लेकिन मैंने कभी उसे एक पंक्ति तक नहीं लिखी, क्योंकि हमारे विछोह के दो घंटे बाद ही मुझे मार दिया गया था। उसका ख़याल है कि मैं उसे भूल गयी थी, उसके प्रति वफ़ादार नहीं रही। लेकिन ऐसी बात बिल्कुल नहीं थी। मैं मारी गयी थी। एक गोला आया और मेरे पास ही फट पड़ा — और काम तमाम हो गया!

सेर्द्यूक: हां, बिरादर, स्त्रियों में कभी भी मैं बहुत लोकप्रिय नहीं था। फिर भी मैं अकेला नहीं रहा। एक्सकेवेटर पर काम करनेवाले तरुण सब मेरे अपने बेटों जैसे हैं। ख़ास तौर से सेर्योगिन की शिफ़्ट के लड़के।...

(मंच पर पुरुषों का होस्टल आ जाता है। रात हो चुकी है। रोदिक और

देनीस एक मेज़ के सामने बैठे हैं। खिड़की पर लापचेन्को दिखाई पड़ता है)

कोरस: देखो, स्तेपान। रात हो गयी, लेकिन वे लोग सोये नहीं...

—शायद कहीं कुछ गड़बड़ है?

—सेर्गेई कहां है? विक्टर कहां है?

सेर्द्यूक: मुझे नहीं मालूम। मैं अपने पिता से मिलने स्ल्यूद्यानका बस्ती आया हुआ हूं। लेकिन मैं जल्द ही लौट जाऊंगा।... क्या कोई विशेष बात हो गयी है?

(धीरे-धीरे कोरस और सेर्द्यूक दृष्टिपथ से ओझल हो जाते हैं)

लापचेन्को: दोस्तो, क्या ख़बर है?

देनीस: कुछ नहीं।

लापचेन्को: विक्टर लौट आया?

देनीस: नहीं।

लापचेन्को: सेर्गेई भी वापिस नहीं लौटा?

देनीस: नहीं।

लापचेन्को: हम लोग मारे गये, यार।

रोदिक: सोलह आने मारे गये।

लापचेन्को: चीफ़ कहां हैं?

देनीस: स्ल्यूद्यानका गये हुए हैं... आते ही होंगे तो हमारी ख़ूब अच्छी तरह ख़बर लेंगे।

लापचेन्को: क्या इसमें भी कोई शक है! **(इधर-उधर देखता है)** लो, विक्टर आ गया!

(विक्टर अन्दर आता है, बिना किसी की तरफ़ देखे वह चुपचाप बिस्तर पर जा पड़ता है)

देनीस: तुम कहां चले गये थे?

विक्टर (रुखाई से): तुम्हें क्या मतलब?

देनीस: जानते हो इस तरह की हरकत के लिए फ़ौज में तुम्हें क्या मज़ा मिलती?

विक्टर: भाड़ में जाये तुम्हारी फ़ौज!

देनीस: मेरा मेजर तुम्हारी अक़्ल दुरुस्त कर देता!

लापचेन्को: चीफ़ आ रहे हैं!

(दरवाज़े पर सेर्द्यूक की आकृति प्रकट होती है)

सेर्द्यूक (ग़ुस्से से सब को घूरता है और एक स्टूल पर बैठ जाता है): हां, मेरे लाड़लो, क्या ख़ूब किया तुम लोगों ने!

(उनमें से कोई नहीं बोलता, सब एक दूसरे से नज़र बचाने की कोशिश करते हैं)

यह आदर्श-शिफ़्ट कहलाती है! साल भर में इसके रिकार्ड पर एक भी धब्बा नहीं लगा! **(मेज़ पर ज़ोर से घूंसा मारता है)** एक्सकेवेटर कितनी देर बेकार खड़ा रहा?

रोदिक: दो घन्टे।

सेर्द्यूक: दो घन्टे! **(क्रोध से भरा कमरे में टहलता है)** तुम्हारी मूर्खता की वजह से १४ हज़ार आदमी १२० मिनट तक बेकार खड़े रहे! मशीन क्यों टूटी? बोलो! साफ़-साफ़ बोलो!

रोदिक: रेक्टिफ़ायर फट गया था।

सेर्द्यूक: अच्छा! तो बिजली-मिस्त्री की मेहरबानी है!

विक्टर (सिर झुकाये हुए): चीफ़!

सेर्द्यूक: हमारे महान इलेक्ट्रीशियन साहब इस वक़्त क्या कर रहे हैं? वे बिस्तर पर आराम फ़रमा रहे हैं? मेरी तरफ़ देखो, नाकारा कहीं के!

(विक्टर उठकर फिर बैठ जाता है और सेर्द्यूक की तरफ़ देखता है)

सेर्द्यूक: यह क्या! आंसू? ग़लती से कहीं मैं ज़नाने होस्टल में तो नहीं पहुंच गया? मुझे बताओ, यह सब क्या है? यह कैसे टूटा?

विक्टर: मैं थोड़े नशे में था।

सेर्द्यूक: यह झूठ है। इस तरह के आदमी तुम नहीं हो। ठीक-ठीक बताओ, तुम्हें क्या हुआ था?

विक्टर: मुझ से कुछ मत पूछिए, चीफ़! मैं आपको कुछ नहीं बता सकूंगा।

सेर्द्यूक: सेर्गेई कहां है?

लापचेन्को (वह दरवाज़े के पास दीवार से टिका खड़ा है): वह कैशियर वाल्या के साथ अंगारा के किनारे सैर कर रहा है।

विक्टर (क्रोध से परिपूर्ण): चुप रह, नाकारा कहीं का!

सेर्द्यूक: तुम सब खामोश हो जाओ! रोदिक, ज़रा शांति से बताओ यह सब हो क्या रहा है?

रोदिक: बताने को बहुत कुछ नहीं है। सेर्गेई और विक्टर एक लड़की को लेकर लड़ पड़े हैं। लड़की वही, वह कैशियर वाल्या है। वह यहां काफ़ी बदनाम है। पर इस बात का ब्योरा देने की ज़रूरत नहीं है। विक्टर को गुस्सा आ गया, और उसके और सेर्गेई के बीच कल खासी कहा-सुनी हो गयी। आज सुबह जब वह आया तो, तो — उसकी हालत ठिकाने नहीं थी। उसने आवश्यक सावधानी नहीं बरती, नतीजा यह हुआ। **(विक्टर से)** मैं ठीक कहता हूं न?

विक्टर: हां।

रोदिक: मैं यह बताना चाहता हूं कि हमारी टीम बहुत अच्छी थी। हम सब मिल-जुलकर खूब अच्छी तरह काम कर रहे थे। और अब एक औरत आ गयी और उसने सबको चौपट कर दिया! मां की बात ही छोड़िए, मुझे अपनी बहिनों से भी स्नेह है, लेकिन औरतों को मैं अपने से दो हाथ दूर ही रखता हूं। और यह देखकर मुझे खुशी हुई है कि केन्द्र की बनिस्बत यहां, साइबेरिया में औरतें कम तंग करती हैं।

देनीस: रोदिक, खत्म करो बकबक। मैं औरत के संबंध में ऐसी बकवास सुनने को तैयार नहीं हूं।

(दरवाज़े पर सेर्गेई दिखायी देता है)

लापचेन्को: सेर्गेई!

सेर्द्यूक: चुप रहो! बड़े चीफ़ पधार रहे हैं!

सेर्गेई (उसे अपने आस-पास के वातावरण का ज़रा भी एहसास नहीं है): हां...हां... **(अपने बिस्तर पर जाकर बैठ जाता है और खोया-खोया-सा शून्य की ओर देखता हुआ मुस्कराता है। उसकी मुस्कराहट में गहरे सुख का भाव है)** हां... हां...

सेर्द्यूक: हज़रत, यह क्या है?

सेर्गेई (अब भी मुस्करा रहा है): हां, हां।

सेर्द्यूक: इसे देखो तो! सचमुच यह तो पागल हो गया है! **(सेर्गेई**

को पकड़कर ज़ोर से झिंझोड़ता है) सेर्गेई, तुम सीनियर ऑपरेटर हो या चांद के निवासी?

सेर्गेई : अरे, चीफ़! आप स्ल्यूद्यान्का से लौट आये?

सेर्द्यूक : अरे, सिड़ी आदमी, तुम खीसें किसलिए दिखा रहे हो?

सेर्गेई : मैं आप से प्रार्थना करता हूं, मुझे और विक्टर को आप माफ़ कर दें। मैं क़सम खाता हूं, फिर कभी ऐसा नहीं होगा।

विक्टर : तुम मेरी बात मत करो।

सेर्द्यूक : जी नहीं, चीफ़ साहब! इतनी आसानी से आप नहीं छूट सकते।

सेर्गेई : नहीं, नहीं। आसान बात बिल्कुल नहीं है ... सम्भव है कि अभी वह मुझसे प्रेम न करे, किन्तु कालान्तर में मैं कोशिश करूंगा ताकि उसे पता चल जाये कि उसे मेरी ज़रूरत है ... आख़िर वह राज़ी हो ही गयी ... १५ जुलाई को, इतवार के दिन हम लोग शादी करने जा रहे हैं। दस दिन और हैं। दोस्तो, शादी में आप अभी से आमंत्रित हैं।

रोदिक : अच्छा!

विक्टर (सेर्गेई के पास जाकर) : सेर्गेई, चले जाओ यहां से ... वाल्या को छोड़ दो ... मैं संजीदगी से कह रहा हूं ... तुम हमारे बीच से हट जाओ।

सेर्गेई : नहीं, अब मैं कहीं नहीं जा सकता। मेरी अन्तरात्मा बिल्कुल साफ़ है। विक्टर, उसे तुमने ख़ुद ठुकरा दिया था। ठुकरा दिया था न? तुम्हारे पास कोई जवाब नहीं है। चीफ़, आप देख रहे हैं—वह चुप है। **(विक्टर के पास जाता है)** विक्टर, अब इस क़िस्से को भूल जाओ। हम सबकी ख़ातिर, आओ, फिर पहले की तरह दोस्त बन जायें।

(विक्टर कोई उत्तर नहीं देता)

इतवार के दिन, १५ तारीख़ को मैं आप सबको दावत देता हूं। हम सब मिलकर उस दिन को उसके लिए ख़ुशी का एक दिन बना दें ... बस, सिर्फ़ एक दिन। **(एकाएक उन सबकी तरफ़ अत्यन्त क्रोध से देखता है)** लेकिन अगर आप में से किसी ने उसके बारे में एक भी अभद्र शब्द कहा तो ... ख़बरदार! जब तक मैं ज़िंदा रहूंगा तब तक मैं कभी ऐसी बात के लिए आपको माफ़ नहीं करूंगा ... अच्छी तरह याद रखिएगा!

(दृश्य ओझल हो जाता है। हल्का-हल्का संगीत सुनाई पड़ता है। शायद छत पर बूंदों की टपटपाहट सुनाई दे रही है। धीरे-धीरे वाल्या की आकृति आंखों के सामने उभरती है। वह बिस्तर पर बैठी है। उसके इर्द-गिर्द कोरस एकत्रित हो जाता है)

कोरस: वाल्या, नींद नहीं आ रही? कल सारी रात पानी बरसता रहा। बाइकाल झील पर ग्रीष्म ऋतु की हवाएं बहने लगी हैं। बादलों को उड़ाकर वे इधर भेज रही हैं।

—जल्दी ही सुबह हो जायेगी, वाल्या। इतवार, १५ जुलाई की सुबह...

—इस कमरे में अकेले यह तुम्हारी आख़िरी रात है!

—कल से जो नयी ज़िंदगी शुरू होनेवाली है वह कैसी होगी?

वाल्या (आहिस्ता से): मैं नहीं जानती।

कोरस: तुम क्या करने जा रही हो? अब भी समय है, निर्णय बदल दो। तुम तो उससे प्रेम भी नहीं करतीं!

वाल्या (कोमल स्वर में): नहीं करती? कौन जाने? पक्के तौर से मैं ख़ुद नहीं जानती। प्रेम! प्रेम आखिर है क्या? वह किस तरह का होता है? यह मुझे कौन बता सकता है? **(उद्विग्नता से)** मुझे बार-बार उस दिन की याद क्यों आती है जिस दिन सेर्गेई से मैं पहली बार मिली थी? वह मेरे पास आया और दियासलाई की एक डिब्बी लेकर उसने मुझे २० कोपेक चुका दिये... और पहली बार जब हम लोगों की बात हुई तो न जाने क्यों मुझे लगा कि वह ज़रूर कोई बहुत बढ़िया बात कहेगा।

कोरस: कितनी विचित्र बात है!..

वाल्या: उन दिनों मैं वक़्त काटने के लिए विक्टर के साथ ही जाती थी, लेकिन हर क्षण मैं सेर्गेई के बारे में सोचती रहती थी। उसका अहसास मेरे मन में बना रहता था। उसके पत्रों की मैं अत्यन्त उत्सुकता से राह देखती थी। मैं जानती थी कि वे पत्र उसी के थे...

कोरस: तब तो तुम उससे प्रेम करती रही हो?

वाल्या: हो सकता है। नहीं... मैं नहीं जानती।

कोरस: तुम जानती नहीं? फिर भी तुम उसकी पत्नी बनना चाहती हो?

वाल्या (तेज़ी से): हां, बनना चाहती हूं। इसमें ग़लत क्या है? वह

इतना सहृदय है... मैं बराबर अकेले रहते-रहते ऊब गयी हूं। मैं इतनी थक गयी हूं, इतनी थक गयी हूं... और वे सब गन्दे मज़ाक़... दूसरों से मैं किस तरह अधिक बुरी हूं? लेकिन उसके साथ मैं सुखी रहूंगी, है न?

कोरस: और विक्टर?

(पृष्ठभूमि में विक्टर की धुंधली-सी आकृति उभरती है)

विक्टर: याद करो, मैं कल शाम तुम्हारे यहां आया था। और तुम्हें यक़ीन नहीं हुआ जब तुमसे कहा... **(उसके पास जाकर आहिस्ता)** वाल्या, मुझे माफ़ कर दो।...

वाल्या: मैं नाराज़ नहीं हूं।

विक्टर: मुझे नहीं मालूम कि तुम्हारे बिना मैं क्या करूंगा, मेरा क्या हाल होगा... चलो, हम दोनों यहां से कहीं और चले जायें। तुम ज़िद करती हो तो हम लोग शादी कर लें। अगर तुम यही चाहती हो तो मैं राज़ी हूं।

वाल्या: अब देर हो गयी, विक्टर! हमारी कहानी ख़त्म हो गयी। अलविदा...

(वह फिर अकेली रह जाती है)

कोरस: जल्दी ही पौ फटनेवाली है, वाल्या... खिड़की के बाहर देखो, यह कैसी वर्षा-भरी सुबह है।

—इतवार, १५ जुलाई की सुबह।

वाल्या: मुझे इतना डर क्यों? मुझे डर लग रहा है... उसके दोस्त मुझे कभी नहीं माफ़ करेंगे। वे हम लोगों को छोड़कर चले जायेंगे। हम अकेले सड़क पर निकलेंगे, लोग हमें देखकर हंसेंगे। नहीं, मुझे यहां से भाग जाना चाहिए। मैं भाग जाऊंगी।

कोरस: अब बहुत देर हो गयी। सुना तुमने, दरवाज़े पर कोई दस्तक दे रहा है। यह सेर्गेई है। वाल्या, अगर तुमने फ़ैसला कर लिया है तो दरवाज़ा खोल दो और अपना हाथ उसके हाथ में दे दो।

वाल्या: मैंने फ़ैसला कर लिया है। **(खनकती, प्रसन्नता-भरी आवाज़ में)** सेर्गेई, तुम हो?

(सेर्गेई की आवाज़ : हां, मैं आ गया!)

(वाद्ययंत्रों के स्वर सुनाई पड़ने लगते हैं। कोरस के लोग वाल्या को शादी के श्वेत वस्त्र पहनाते हैं)

वाल्या : अन्दर आ जाओ, सेर्गेई।

(सुबह की रोशनी में सेर्गेई द्वार पर खड़ा है)

सेर्गेई : मैं तुम्हें लेने आया हूं!

वाल्या : देखो, सूरज चमक रहा है।

सेर्गेई : हां, वर्षा ख़त्म हो गयी।

वाल्या : तो हम लोग चलें?

सेर्गेई : वाल्या, मैं अकेला नहीं हूं।

(वाद्ययंत्रों का संगीत रुक जाता है। उसकी जगह अकार्डियन के स्पष्ट स्वर हवा में गूंजने लगते हैं। सेर्गेई के साथ-साथ देनीस और उसकी ज़िन्का, सेर्द्यूक, लापचेन्को, रोदिक, उसकी बहिन माया और एक्सकेवेटर की टोली के दो-चार अन्य नवयुवक दिखाई पड़ रहे हैं। उनमें से एक के हाथ में अकार्डियन है। दूसरा एक युवक गिटार बजा रहा है। उन सबके हाथों में फूलों के गुलदस्ते हैं)

सेर्गेई : मेरे दोस्तों से मिलो, वाल्या... ये सब मेरे साथ एक्सकेवेटर पर काम करते हैं।

माया : और मेरा नाम माया है। मैं रोदिक की बहिन हूं। मैं कल ही मास्को से आयी हूं। मैं दसवीं कक्षा में पढ़ती हूं। यहां मैं योंही घूमने आयी हूं। मैंने कभी कोई शादी नहीं देखी... इसलिए मैं बहुत खुश हूं। क्या मैं आपका चुम्बन ले सकती हूं? **(वाल्या का चुम्बन लेती है)**

सेर्गेई : चलो, चलें।

(बिजली कड़कने की आवाज़)

देखो, धूप और वर्षा साथ-साथ! कैसा विचित्र संयोग है!

सेर्द्यूक : छाते खोल लेना!

मूक दृश्य

(संगीत जारी है। उसी के साथ-साथ बरात ख़ुशी-ख़ुशी शहर आ रही है। सभी बराती छाते लिये हैं। बीच-बीच में पानी से भरे छोटे डबरे मिलते हैं जिन्हें वे कूदकर लांघ जाते हैं)

कोरस: ये सब कितने ख़ुश हैं!

—ये जा कहां रहे हैं?

—और बारिश के वक़्त भी...

—भले लोगो! क्या आपको मालूम नहीं कि इर्कुत्स्क नगर की सरहद पर एक बहुत बढ़िया मकान है? उसमें आदमी कुंवारा प्रवेश करता है और जब वह बाहर निकलता है तो शादीशुदा हो जाता है! बिल्कुल परियों जैसी है यह कथा, है न?

—हां, है तो! इसमें सन्देह नहीं। यही एक संस्था है जो रबर स्टैम्प के साथ एक काग़ज़ पर यह लिख कर देती है कि फ़लां दिन, फ़लां महीने और फ़लां साल से आप का जीवन सुखमय बन गया है।...

—दिक़्क़त यह है कि कुछ लोग इस बात को भूल जाते हैं कि वह मकान दो चीज़ों को पसन्द नहीं करता: एक तो जल्दबाज़ी के फ़ैसलों को, और दूसरे, बहुत ज़्यादा संजीदगी से किये जानेवाले हिसाब-किताब को!

—हां, अगर इस बात को आपने अनदेखा किया तो इसकी फ़ौरन आपको सज़ा मिल जाती है। महिला की बांह में बांह डाले आप जब उस घर से बाहर निकलते हैं तो शंकित भी नहीं होते कि आप अभागे हो चुके हैं।

—कितना अफ़सोस है कि मैं कोई आविष्कर्त्ता न हुआ। आविष्कर्त्ता होता तो मैं एक ऐसी मशीन ईजाद करता जो इस बात का पता लगा लेती कि इस तरह के जोड़े एक दूसरे को वास्तव में कितना प्यार करते हैं। उसके बाद ही फ़ैसला किया जाता कि उन्हें शादी करने दी जाये या नहीं।

—ओह, क्या इस तरह की मशीन कोई नहीं बना सकता? दोस्तो, ऐसी मशीन की हमें सख़्त ज़रूरत है।

—लेकिन अब देर न करो। चलो, हम लोग शादी की दावत में चलें—वहां, उस नये कमरे में, जिसमें वाल्या और सेर्गेई रहनेवाले

हैं। वहां बहुत शोरगुल सुनाई दे रहा है। मालूम होता है कि वहां लोगों ने इतना खा-पी लिया है कि हमारे-तुम्हारे लिए खाना ही न बचा होगा।

(शादी का दृश्य सामने आता है। एक व्यक्ति अकार्डियन बजा रहा है और मेहमान एक साइबेरियाई गीत गा रहे हैं। उनकी आवाज़ों से यह नहीं लगता कि वे नशे में हैं, वे साफ़-साफ़ और संयत स्वर में गा रहे हैं। गीत समाप्त हो जाता है तो वे चुपचाप बैठ जाते हैं। शायद वे विचारों की उस दुनिया में खो गये हैं जिसकी उनके गीत ने सृष्टि कर दी है)

सेर्द्यूक: पुरानी स्मृतियों को कुरेदकर जगा देने के लिए गीत से अधिक कारगर चीज़ दूसरी नहीं होती।

माया: वह भविष्य के बारे में सोचने की भी प्रेरणा देता है।

देनीस: यह एक अच्छा गीत है। सोच-विचार करने के लिए आपको काफ़ी सामग्री दे देता है।

(ख़ामोशी)

लापचेन्को: गीत तो ठीक है, लेकिन इस बढ़िया खाने के साथ भी तो हमें कुछ और न्याय करना चाहिए।

रोदिक: प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो गया।

(सब लोग ख़ुशी-ख़ुशी फिर अपनी प्लेटों के पास वापिस आ जाते हैं। हंसी और कहकहे गूंजने लगते हैं और ज़ोर-ज़ोर से बातें होने लगती हैं)

ज़िन्का: ख़ामोश! ख़ामोश! मैं एक निवेदन करना चाहती हूं!

(शोरगुल थोड़ा थमता है)

(गम्भीरता से) साथियो! हम सहयोगी लड़कियां एक्सकेवेटर पर काम करनेवाले अपने साथियों के काम को बड़े गौर से देखती आयी हैं। हम जानती हैं कि उस विशालकाय मशीन को चलाना कोई आसान काम नहीं है। हम यह भी जानती हैं कि आप लोगों के लिए उचित आराम और भोजन की व्यवस्था का कितना महत्व है। यहीं पत्नी की भूमिका आ जाती है। इन "चीज़ों" की देख-भाल करना उसका काम है। और इसीलिए,

वाल्या, मैं तुमसे कहती हूं कि इस चीज़ का ध्यान रखना और सेर्गेई के प्रति अपने दायित्व का भली प्रकार निर्वाह करते रहना।

रोदिक: आइये, बेहतरीन भोजन और तीमारदारी के लिए जाम उठायें! सभी पकवानों की जय! जय!

(सब लोग हंस पड़ते हैं। गिलासों के एक दूसरे से टकराने की आवाज़ सुनाई देती है)

लापचेन्को: बाहर कोई खटखटा रहा है।

(सब शान्त हो जाते हैं)

वाल्या: अन्दर आ जाइये।

लारीसा (दरवाज़े से ही): मुझे आने की इजाज़त है?

वाल्या (दौड़कर उसके पास जाते हुए): लारीसा, मेरी सखी... तुम आ गयीं!

लारीसा: तुम मुझसे नाराज़ तो नहीं हो?

वाल्या: नाराज़ तो दरअसल तुम्हें होना चाहिए। मुझे माफ़ कर दो। मेरे सम्बन्ध में अब कोई बुरी बात न सोचना।

लारीसा: बीती ताहि बिसार दे।

(वे एक दूसरे का चुम्बन लेती हैं)

वाल्या: आइये, मैं आप लोगों का परिचय करा दूं। यह मेरी मित्र लारीसा है।

सेर्द्यूक (खुशी-खुशी): देर से आनेवालों के लिए सज़ा **(एक पूरा गिलास भरकर उसे देता है। वह उसे एक ही घूंट में खाली कर देती है)** शाबाश! **(अपना परिचय देते हुए)** स्तेपान येगोरोविच सेर्द्यूक। आइये और मेरे पास बैठिए।

लापचेन्को: अब कोई और दरवाज़ा खटखटा रहा है। मालूम होता है कुछ और मेहमान आ गये।

(सब लोग फिर एकदम चुप हो जाते हैं)

वाल्या: अन्दर आ जाइये।

(विक्टर अन्दर प्रवेश करता है। धीरे-धीरे वह तमाम लोगों पर नज़र

डालता है। फिर उसकी आंखें वाल्या पर टिक जाती हैं। वह उसके नज़दीक जाता है)

विक्टर (क्षीण आवाज़ में): मैं हृदय से तुम्हारे सुख की कामना करता हूं।

वाल्या (कोमल स्वर में): विक्टर...

विक्टर: यह लो... स्मरणार्थ।

वाल्या: धन्यवाद।

विक्टर (सेर्गेई के पास जाकर उसे छाती से लगाता है, उसका चुम्बन लेता है, और फिर उसकी पीठ पर ज़ोर से एक धौल जमाता है): और अब पिछली सारी बातें ख़त्म हुईं।

(अकार्डियन पर एक रूसी लोक-नृत्य की धुन बजने लगती है)

सेर्द्यूक: कौन-कौन नाचना चाहता है?

वाल्या: लारीसा... लोक-नृत्य में यह बहुत निपुण है। उठो लारीसा, ज़रा अपना जौहर दिखाओ।

(लारीसा उठकर बीचोंबीच आ जाती है और तल्लीन होकर ज़ोरों से नाचने लगती है)

विक्टर (भर्राई आवाज़ में): अच्छा, अब मुझे ज़रा रास्ता दो! ल्योशा, तुम अब एक नृत्य दिखाओ।

(विक्टर धीरे-धीरे नाचना शुरू करता है, फिर अपने सिर को झटककर ख़ूब तेज़ी से नाचने लगता है। उसके ताण्डव में लोगों को निराशा का एक पुट दिखायी देता है। लोगों के उल्लास तथा उनकी तालियों और शोर-गुल से संगीत का स्वर दब जाता है। एक अद्‌भुत समां बंध जाता है। अन्त में विक्टर और लारीसा जब नृत्य समाप्त करते हैं तो ऐसा लगता है कि तालियों की तड़तड़ाहट से पूरी छत ही नीचे बैठ जायेगी)

ज़िन्का: अद्‌भुत, लारीसा! अद्‌भुत!

देनीस: और हमारा विक्टर! उसने भी कैसा कमाल दिखा दिया!

लापचेन्को: शाबाश!

विक्टर (दूसरों से अलग होकर मन ही मन कहता है): विदा, वाल्या।

सेर्द्यूक (लारीसा से): आपके लिए जाम उठाना चाहिए। क्या गज़ब का नाचा है आपने, लपलपाती लपट की तरह!

लारीसा: अजी, अब तो कोयले ही बचे हैं।

सेर्द्यूक: अब तो पचास हो गये मेरे! पहले कहां थीं आप?

लारीसा: जहां थी, वहां थी, अब क्या होना है, कामरेड सेर्द्यूक!

माया: प्रिय वाल्या, इस दिन को मैं ज़िन्दगी भर न भूलूंगी... मैं मास्को के एक स्कूल की विद्यार्थिनी हूं। मैं सदैव जिज्ञासु रही हूं कि रोदिक यहां किस तरह रहते हैं और कौन उनके दोस्त हैं। हमारी मां भी चाहती थीं कि मैं यहां आकर सब कुछ पता लगाऊं। माफ़ कीजिये कि मैं ज़रूरत से ज़्यादा बोल रही हूं। मैंने कुछ पी ली है... लेकिन यह चीज़ हम लोग किसी को बतायेंगे नहीं, है न? मैं आपको देखकर सोचती हूं कि शा-दी भी क्या ख़ुशनुमा चीज़ है! सचमुच यह ख़ुशी की बात नहीं कि जिसे तुम प्यार करती हो उसके लिए तुमने ख़ुद को हमेशा पवित्र बनाये रखा— उतना ही पवित्र और सुन्दर जितनी कि तुम्हारी शादी की यह पोशाक। आप रो क्यों रही हैं? रोइये नहीं, वाल्या। ऐसा न कीजिये। सेर्गेई को देखिये। आपके लिए प्यार से उनकी आंखें किस तरह चमक रही हैं! आप कितनी सुखी हैं! मुझे आपसे सुखद ईर्ष्या हो रही है। **(वाल्या को छाती से लगा लेती है)**

(अकार्डियन से वाल्स नृत्य की एक पुरानी धुन बजती है। तुरन्त कुछ जोड़ियां नाचने के लिए उठ जाती हैं)

सेर्गेई (वाल्या के पास जाकर): रोओ मत, वाल्या। बिल्कुल नहीं, क्या हो गया तुम्हें?

वाल्या: काश! मैं यह कह सकी होती!

सेर्गेई: सब कुछ ठीक हो जायेगा।

वाल्या: सचमुच? तुम सच कहते हो?

सेर्गेई: हां, देख लेना।

वाल्या: धन्यवाद, सेगेई। **(उसकी छाती से चिपक जाती है)**

(वे साथ-साथ नाचने लगते हैं)

सेर्द्यूक: अच्छा, दोस्तो! अब आप लोग हट जाइये, अब नवविवाहितों की बारी है!

(सभी नाचनेवाले पीछे हट जाते हैं। वर-वधू अकेले नृत्य करते रह जाते हैं। वाल्या का हाथ प्यार से सेर्गेई के कन्धे पर है। सर पीछे किये हुए स्नेह और प्रेम विभोर होकर नाचती वाल्या हर मोड़ पर मानो निःशक्त झूल जाती है)

कोरस : विवाह का यह नृत्य ... क्या इसे ये लोग कभी भूल सकेंगे? साल गुज़र जायेंगे, स्मृति-पटल से बहुत-सी चीज़ें मिट जायेंगी, लेकिन आज का यह सीधा-सादा संगीत और उसकी लय में किया गया इनका यह नृत्य इन्हें हमेशा-हमेशा के लिए इस शाम की याद दिलाता रहेगा ...

—वे एक दूसरे से अलग हो जा सकते हैं, वे एक दूसरे को खो दे सकते हैं—अथवा, हो सकता है कि किसी नये प्रेम की लौ उनके पथ को रोशन कर दे—किन्तु आज के इस नृत्य को वे दोनों कभी नहीं भूल सकेंगे। जब भी कहीं यह धुन बजेगी वे एक दूसरे के बारे में सोचने लगेंगे और आह्लाद से भर जायेंगे।

(एक-एक करके सारे मेहमान कमरे से बाहर चले जाते हैं)

—लेकिन आज यह वाल्स नृत्य एक याद में परिणत नहीं हुआ है, इसलिए अभी तुम्हारे लिए सिर्फ़ आज की शाम और रात बची है, जिसे तुम दोनों साथ बिताओगे।

(वाल्स का संगीत थम रहा है)

—वाल्या! सेर्गेई! सुन रहे हो! दरवाज़ा बन्द हो गया—आख़िरी मेहमान भी चला गया। अब तुम अकेले हो। एकदम अकेले ...

(रात गहरी हो गयी है। सेर्गेई और वाल्या कमरे में अकेले हैं)

वाल्या : क्या बजा होगा? मेरा सिर चकरा रहा है।

सेर्गेई : डेढ़ बज गया।

वाल्या : डेढ़? डेढ़? **(हंसती है)** मैं भी भला मूर्खता का सवाल पूछती हूं। **(कुछ क्षण ख़ामोश रहती है)** सेर्गेई ... सेर्गेई, तुम्हारी मां का नाम क्या है?

सेर्गेई : पालीना।

वाल्या : मैं उन्हें बहुत प्यार करूंगी... तुम इजाज़त देते हो न?

सेर्गेई : हां, हां, क्यों नहीं।

वाल्या : और तुम्हारी बहिनों को भी। तुम्हारे दो बहिनें हैं न?

सेर्गेई : हां।

वाल्या : मैं उन दोनों को ख़ूब प्यार करूंगी। तुम्हारा क्या ख़याल है, सेर्गेई—क्या वे मुझे पसन्द करेंगी?

सेर्गेई : तुम उन्हें बहुत अच्छी लगोगी।

वाल्या : मैंने आज बहुत पी है—इसीलिए इतनी बकवास कर रही हूं। मेरी तबियत बात करने की हो रही है। करूं न?

सेर्गेई : करो, वाल्या।

वाल्या : मुझे बराबर ख़याल आ रहा है कि अभी तक तुमने मुझे प्यार नहीं किया, क्यों?

सेर्गेई (फुसफुसाते हुए) : करूंगा।

वाल्या (फुसफुसाते हुए) : कब?

सेर्गेई : जब तुम जाग उठोगी।

वाल्या : 'स्लीपिंग ब्यूटी' की तरह? चाइकोव्स्की के बैले संगीत के साथ...

सेर्गेई : हां।

वाल्या : मैंने उसे रेडियो पर सुना था। **(आराम-कुर्सी पर बैठी-बैठी कांप रही है)** सचमुच मुझे बहुत नींद आ रही है। अफ़सोस की बात! नहीं, नहीं, मेरे प्रिय, बोलो मत, अब एक शब्द भी तुम न बोलना। मैं बहुत ख़ुश हूं, बहुत ख़ुश क्योंकि मैं तुम्हारी पत्नी हूं। सच, हूं न? तुम्हारे मित्र कितने अच्छे हैं। अब मैं सो जाऊं? तुम नाराज़ तो नहीं होगे, क्यों सेर्गेई?

(वह उसे अपनी बांहों में उठा लेता है)

काश, सुबह जल्दी हो जाती—तब तुम मुझे प्यार करोगे, मेरा चुम्बन लोगे। लोगे न? लाओ, मुझे अपना रूमाल दे दो।

सेर्गेई : रूमाल का क्या करोगी?

वाल्या : देखो, मैंने होंठ पोंछ डाले हैं... अब लिपस्टिक का कहीं निशान तक नहीं रह गया। सुबह डरो नहीं, समझे?

सेर्गेई (उसे चारपाई पर लिटा देता है) : अब तुम सो जाओ।

वाल्या : मैं तो पहले ही सो चुकी हूं... लो, मैं तो स्वप्न भी देखने

लगी कि तुम एक नाव में बैठे मेरी तरफ़ चले आ रहे हो। **(कोमल स्वर में)** हम लोग आजीवन साथ रहेंगे, है न, सेर्गेई?

सेर्गेई: बेशक, अन्तिम क्षणों तक।

वाल्या: यह कितनी अच्छी बात है...

(कहीं दूर फिर अकार्डियन बजने लगता है। वाल्या सो जाती है। सेर्गेई उसके पास घुटनों के बल बैठ जाता है और उसे गौर से देखने लगता है। कोरस धीरे से पर्दा खींच देता है— हल्का, हिमशुभ्र, परिणय-परिधान की तरह)

कोरस (बहुत कोमल स्वर में): मूसलाधार पानी बरस रहा है। लगता है कि पूरी पृथ्वी पर ही बाढ़ आ जायेगी!

—छोटी-छोटी जलधाराएं मकानों के पास से बह निकली हैं। पिछले दिनों के सारे कूड़े-करकट और गन्दगी को वे बहाये लिये जा रही हैं।

—वर्षा पृथ्वी की धुलाई कर रही है।...

दूसरा अंक

(मधुर संगीत के स्वर उठ रहे हैं। कुछ-कुछ वे लोरी की तरह के स्वर मालूम पड़ते हैं। सेर्गेई सामने आता है। उस पर प्रकाश पड़ रहा है। वह ख़ामोश खड़ा रहता है। उसके हाथ जेबों में हैं और वह किन्हीं विचारों में खोया लगता है। उससे थोड़ी दूरी पर कोरस मौजूद है)

कोरस (श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए): सेर्गेई, याद है उस दिन तुम्हें कैसा लगा था? वे लोग आकर सुबह सवेरे ही उसे ले गये थे। फिर बाक़ी सारा दिन तुम्हारे लिए कितना कष्टदायक था?

—काम में तुम्हारा मन नहीं लगता था। तुम बराबर उसी के बारे में सोचते रहते थे। उसका हाल जानने के लिए तुम बार-बार अस्पताल फ़ोन कर रहे थे।

—काम के बाद तुम झपटकर सीधे अस्पताल पहुंच गये थे और सहमे-सहमे, लजाये हुए खिड़की के पास जा खड़े हुए थे। और सैकड़ों बार तुम दौड़-दौड़कर नर्स से उसका हाल पूछ रहे थे।

सेर्गेई (दबी हुई आवाज़ में): वह कैसी है? कोई ख़बर नहीं?

कोरस: याद है न, सेर्गेई, सब इस तरह हुआ न?

(सेर्गेई सड़क पर चला जाता है, फिर एक दरवाज़े के पास जाकर रुक जाता है और खिड़कियों के अन्दर झांकने की कोशिश करता है। थोड़ी देर बाद वह वहीं एक बेंच पर बैठ जाता है और दूर कहीं शून्य में देखने लगता है। तभी दसेक वर्ष का एक लड़का उसके पास आता है)

लड़का (कुछ देर तक उसकी तरफ़ देखने के बाद): क्या तुम्हारे लड़का होनेवाला है?

सेर्गेई : अच्छा होता ...

लड़का : मैं वहां, सामने के उस मकान में रहता हूं। तुम्हारे जैसे लोगों को अक्सर मैं इस बेंच पर बैठा देखा करता हूं। इस चीज़ का मैं आदी हो गया हूं। कुछ लोग मुझे मिठाइयां भी देते हैं।

सेर्गेई : अफ़सोस है कि इस समय मेरे पास मिठाई नहीं है।

लड़का : नहीं, उसकी कोई बात नहीं। क्या आप जानते हैं कि यहां कितने बच्चे पैदा हुए हैं? हज़ारों!

सेर्गेई : यह तो अच्छी बात है।

लड़का : पर क्या यह एक अजीब बात नहीं है?.. मिनट भर पहले तक कहीं कोई नहीं है और फिर अचानक कोई आ जाता है—एक लड़का या लड़की!

सेर्गेई (उसकी समझ में नहीं आता कि क्या कहे) : हां, मेरे भाई, ऐसा ही होता है। तुम्हारा नाम क्या है?

लड़का : अन्तोन। मैं चेल्याबिन्स्क का रहनेवाला हूं।

सेर्गेई : अन्तोन, बड़े होकर तुम क्या बनना चाहते हो?

लड़का : मैं डाक्टर बनना चाहता हूं।

सेर्गेई : तय कर चुके?

लड़का : हां, पिछले शनिवार को ही। उससे पहले मैं टूरिस्ट बनना चाहता था ताकि दूर-दूर तक सैर सकूं। आप जानते हैं हमारे अहाते में एक ऐसी भी लड़की रहती है जो यह जानती ही नहीं कि चार्ली चापलिन जैसा भी कोई आदमी है!

सेर्गेई (बिना अधिक ध्यान दिये) : अरे!

लड़का : अच्छा, मैं चाहता हूं कि आपकी कामना पूरी हो। **(हाथ मिलाने के लिए सेर्गेई की तरफ़ अपना हाथ बढ़ाता है)**

सेर्गेई : ऐसा कहना तुम्हें किसने सिखाया है?

लड़का : मेरी दादी ने। वह कहती हैं कि अगर तुम बेंच पर किसी को बैठा देखो तो तुम्हें उसके प्रति शुभकामना प्रकट करनी चाहिए।

सेर्गेई : अपनी दादी से मेरा सलाम कह देना।

लड़का : ठीक है। कह दूंगा। **(चला जाता है)**

(सेर्गेई उठ खड़ा होता है और फिर खिड़की के पास जाता है। तभी दरवाज़े पर एक नर्स प्रकट होती है)

नर्स : सेर्योगिन!

सेर्गेई : जी?

नर्स : अन्दर आओ... वे आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं...

सेर्गेई : सब कुछ ठीक है न?

नर्स : अनुपम भेंट तुम्हें... अन्दर आओ। **(चली जाती है)**

(उसके पीछे-पीछे सेर्गेई तेज़ी से इमारत के अन्दर जाता है)

कोरस : इंसान पैदा हुआ!

(कोमल, प्रसन्नतापूर्ण नन्ही-नन्ही घंटियों के बजने की आवाज़ सुनाई देती है, उस तरह की घंटियों की जैसी कि बच्चों के खिलौनों में लगी होती हैं)

इंसान पैदा हुआ... एक नहीं, दो छोटे इंसान।

—एक लड़की और एक लड़का। इनके मां-बाप इन्हें फ़्योदोर और येलेना कहेंगे।

—सेर्योगिन के जुड़वां बच्चे। इन दोनों के कपड़े भी एक ही जैसे होंगे... उनके मां-बाप तक को यह बताने में कठिनाई होगी कि कौन-कौन है।

—एक दिन एक दूसरे का हाथ पकड़कर ये दोनों नन्हे प्राणी स्कूल जायेंगे। उनके हाथों में फूलों के गुलदस्ते होंगे...

—आओ, हम उनकी सफलता की कामना करें। येलेना और फ़्योदोर, तुम लोग खुश रहो, फूलो-फलो, खूब बड़े हो। लेकिन तुम्हारे लिए हम आसान , सीधे-सादे सपाट जीवन की कामना नहीं करते।

(सेर्गेई इमारत से बाहर निकल आता है। यह कहना कठिन है कि वह किस हद तक खुश है)

सेर्गेई : भला सोचो तो, वाल्या, मेरी प्यारी वाल्या ने क्या कमाल कर दिखाया! **(जो पहला आदमी उसके सामने आता है सेर्गेई उसी को चूम लेता है। फिर दौड़कर चला जाता है)**

(कहीं से वायलीन और मैंडोलीन की एक सीधी-सी स्वर-लहरी उठती है)

कोरस : आख़िर वह दिन आ ही गया जिसका तुम इतनी व्यग्रता

से इन्तज़ार कर रहे थे... वह दिन जिस दिन तुम अपने परिवार को घर वापस लेने जाओगे।

—अब तो तुम अकेले नहीं रह गये: अब दो और सेर्योगिन पैदा हो गये।

—अब तुम जाओ, तुम्हारे यार-दोस्त तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं।

मूक दृश्य

(एक्सकेवेटर की पूरी टोली अस्पताल की ओर जा रही है। हरेक के हाथ में एक-एक पैकेट है। आगे-आगे एक दोहरी प्रैम ढकेलता हुआ सेर्गेई चल रहा है। मोड़ पर लारीसा और ज़िन्का भी आकर इस जुलूस में शामिल हो जाती हैं। बर्फ़ पड़ रही है, यह जाड़े का अन्तिम हिमपात है। अप्रैल की फाहे जैसी हल्की बर्फ़।

अस्पताल के बाहर बेंच के पास जुलूस रुक जाता है। बेंच पर शान से अन्तोन बैठा हुआ है। सेर्गेई उसके पास जाकर मिठाई का एक डिब्बा उसे देता है। द्वार पर वाल्या आती है। उसके साथ एक नर्स है। वाल्या के चेहरे पर एक लजीली उज्जवल मुस्कान है। सेर्गेई उसे फूलों का एक गुलदस्ता देता है। वह उसका आलिंगन करती है और एक बच्चा उसके हाथों में सौंप देती है। सेर्गेई सावधानी से बच्चे को प्रैम में लिटा देता है। सब लोग वाल्या को हार्दिक बधाइयां देते हैं। नर्स दूसरे बच्चे को भी सेर्गेई को देती है। उसे विक्टर को पकड़ाकर सेर्गेई प्रैम में उसके लिए जगह ठीक करने लगता है। विक्टर पहले बच्चे की तरफ़ देखता है, फिर वाल्या की तरफ़। सेर्गेई बच्चे को प्रैम में लिटा देता है और फिर जाकर अन्तोन से हाथ मिलाता है, जैसे आभार प्रगट कर रहा हो।

इसके बाद जुलूस घर के लिए रवाना हो जाता है। आगे-आगे प्रैम को साथ-साथ ढकेलते हुए सेर्गेई और वाल्या चल रहे हैं। एक मोड़ पर, जब कोई उसे देखता नहीं, विक्टर रुक जाता है और लोगों को आगे बढ़ जाने देता है। वह अपने कोट का कालर ऊपर उठाकर अपनी गर्दन और मुंह को ढक लेता है तथा आगे बढ़ते जुलूस को देखने लगता है। अब वह अकेला है। वायलीन और मैंडोलीन की स्वर-लहरी अब सुनायी नहीं देती)

कोरस : क्या बात है, विक्टर?

विक्टर : मेरा बेड़ा गर्क हो गया! **(वह अन्धकार में ग़ायब हो जाता है)**

(वायलीन पर किसी लोरी के स्वर सुनाई दे रहे हैं। धीरे-धीरे वाल्या की धुंधली आकृति प्रकट होती है। सोये हुए अपने बच्चों को वह झुककर देख रही है)

कोरस (किंचित डांटते हुए) : हुश्! नवजात नागरिकों की नींद में ख़लल मत डालो, वे अभी बहुत छोटे हैं...

—तुम लोगों की नींद टूट जाने से कोई हर्ज नहीं होता क्योंकि तुम बड़े हो गये हो और बिना अधिक नींद के भी काम चला सकते हो... किन्तु इनकी बात दूसरी है!

—उनको मत छेड़ो, वे अभी सिर्फ़ एक ही महीने के तो हैं...

—नहीं, दो महीने के...

—नहीं, तीन के... हुश्! उन्हें सोने दो जिससे कि वे शक्तिशाली बन सकें। वे अभी नन्हे ही हैं, सेर्योगिन परिवार के नवजात नागरिक।

(लोरी बन्द हो जाती है)

कोरस : कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है... लेकिन वाल्या ऊंघ गयी है।

—उसे जगा देना चाहिए।

—उठो, वाल्या!

वाल्या (चौंककर) : क्या है? कौन है?

(वाल्या दौड़कर दरवाज़े की ओर जाती है। सेर्गेई अन्दर आता है। आंखों के सामने कमरा नज़र आने लगता है)

सेर्गेई : सो रहे हैं?

वाल्या : हां... **(धीरे से)** देखो, शोर न करना।

सेर्गेई : मैं आज बहुत थक गया हूं। **(सोते बच्चों के पास जाकर)** यह फ़्योदोर विचित्र लगता है...

वाल्या (उसकी बात को नापसन्द करते हुए) : उसमें विचित्र क्या है?

सेर्गेई : यह बहुत मोटा होता जा रहा है। बिल्कुल धन्नासेठ लगता है।

वाल्या : मोटा-वोटा वह कुछ नहीं है... भूख लगी है?

सेर्गेई : बहुत।

वाल्या (खाना लाकर) : लो।

सेर्गेई : ओह, कितना स्वादिष्ट है।

वाल्या : ज़्यादा मक्खन डालो।

सेर्गेई : सारे दिन तुम क्या करती रही हो?

वाल्या : बैठी तो नहीं ही रही। दो बच्चों को संभालना आसान नहीं है।

सेर्गेई : यह मैं जानता हूं। **(खाना खाते)** अख़बार में आज एडेनावर का वक्तव्य पढ़ा?

वाल्या : नहीं... येलेना के पेट पर एक लाल-लाल अन्हौरी जैसी दिखाई पड़ती है। क्या डाक्टर के यहां ले जायें?

सेर्गेई : शायद...

वाल्या : क्लीनिक में इन्हें ले जाना मुझे बहुत अच्छा लगता है। दूसरे सभी बच्चों से ये अच्छे लगते हैं... फ़्योदोर अभी चार महीने का ही हुआ है, लेकिन उसका वज़न छ: महीने के बच्चे के बराबर है। और येलेना बहुत समझदार है। डाक्टर भी कह रही थी—"तुम्हारी यह बच्ची अपनी उम्र के लिहाज़ से बहुत ज़हीन है,"—समझे?

सेर्गेई : येलेना तो बहुत प्यारी है।

वाल्या : फ़्रूट क्रीम दे दूं?

सेर्गेई : हां, थोड़ी-सी दे दो... मुझे ताज़ी बनी क्रीम के साथ पावरोटी बहुत अच्छी लगती है।

वाल्या : लो... ख़ूब सिंकी है।

सेर्गेई : याद है?

वाल्या (उसकी गर्दन को चूमते हुए) : अच्छा, खाना खाओ।

सेर्गेई : वाल्या, मैं तुम्हारे लिए एक साइकिल ख़रीद लाऊं?

वाल्या : वह किसलिए?

सेर्गेई : सवारी के लिए, और किसलिए!

वाल्या : (हंसते हुए) : तुम्हें भी ख़ूब सूझती है!

सेर्गेई : अच्छा, एक ख़बर सुनोगी? हो सकता है कि हमारे एक्सकेवेटर का काम कुछ दिनों के लिए रुक जाये।

वाल्या : क्यों, क्या हो गया?

सेर्गेई : उसके गियर की मरम्मत की ज़रूरत है, और उसके डोल की ज़ंजीरों को बदलना ज़रूरी हो गया है। काफ़ी मुश्किल काम है। लेकिन मुसीबत तो यह है कि एक-एक मिनट कीमती है।

वाल्या : सेर्द्यूक तो बहुत ही परेशान होंगे...

सेर्गेई : पिछले कुछ दिनों से उनका कुछ विचित्र हाल है।

वाल्या : वह लारीसा के प्रेम में पड़ गये हैं। **(हंसती है)** तुम्हारे चीफ़ ने अपनी इज़्ज़त मिट्टी में मिला दी।

सेर्गेई : क्यों? अभी इतने बूढ़े तो वह नहीं हैं।

वाल्या : यह तो बस नज़रिये की बात है। **(थोड़ी देर चुप रहने के बाद)** विक्टर हमारे यहां मिलने क्यों नहीं आता?

सेर्गेई : मैं क्या जानूं!

वाल्या (थोड़ा रुककर) : सेर्गेई...

सेर्गेई : हां?

वाल्या : तुम दुनिया में सबसे अच्छे हो।

सेर्गेई (उसे छाती से लगाते हुए) : वाल्या, मेरी प्यारी... तुम ऊब तो नहीं गयी हो, सच बताओ?

वाल्या : ऊबने के लिए मेरे पास वक़्त ही नहीं है।

सेर्गेई : बस, थोड़ा और धैर्य रखो... ज़रा बड़े होते ही हम इन्हें शिशु-गृह भेज देंगे और तब तुम चाहे पढ़ने जाना, चाहे काम करने।

वाल्या (थोड़ी देर चुप रहने के बाद) : कहो, कहां जाऊंगी?

सेर्गेई : तुम चाहो तो कंक्रीट बिछाने का काम कर सकती हो। इस वक़्त यह काम सबसे महत्वपूर्ण है।

वाल्या : मुझे तो कैशियर का काम ज्यादा पसन्द है।

सेर्गेई : नहीं, वाल्या, तुम गलती पर हो! **(भावावेश में)** आख़िर आदमी को सुख किस चीज़ से मिलता है? यही न कि उसके कार्य उसके स्तर से थोड़ा ही सही, पर श्रेष्ठ ज़रूर हों...

वाल्या : यह कैसे? मैं समझी नहीं।

सेर्गेई : मैं नहीं जानता कि इस चीज़ को किस तरह समझाऊं। मैं सिर्फ़ यह जानता हूं कि अगर इंसान अपने वास्तविक कर्तव्य का निर्वाह करता है, तो वह काम ही उसे श्रेष्ठ बना देता है। **(स्नेह-सिक्त स्वर में)** हां, अगर तुम्हें कंक्रीट का काम अच्छा नहीं लगता, तो तुम एक्सकेवेटर पर काम करो। शुरूआत एक सहायक के रूप में कर सकती हो। साथ ही

शाम के स्कूल में तुम ट्रेनिंग भी ले सकती हो। मुमकिन है तुम्हारे अन्दर कहीं ऐसी प्रतिभा हो जो तुम्हें तरक़्क़ी करके सहायक फ़ोरमैन या ऐसे ही किसी अन्य पद पर पहुंचा दे। कहते हैं कि वोल्गा के बांध पर एक लड़की है जो एक्सकेवेटर पर शिफ़्ट इन्चार्ज है। इसे ही कहते हैं किस्मत का धनी होना। है न?

वाल्या (क्रोध से): अच्छी बात है, अगर तुम यही चाहते हो कि मैं अपनी ही कमाई खाऊं तो मैं फिर दुकान में काम करने चली जाऊंगी। जान-पहचान के लोग आते-जाते हैं, बोरियत नहीं होगी।

सेर्गेई: तुम क्या कह रही हो, वाल्या?

वाल्या: चिल्लाओ नहीं, बच्चों को जगा दोगे।

सेर्गेई: लेकिन तुम तुच्छ बातें न करो।

वाल्या: मैं पूछती हूं कि दुकान में ऐसी क्या बुराई है? उस हिसाब-किताब में मैं जितना चाहती थी उतना बना लेती थी...

सेर्गेई: क्या?!

वाल्या: तुम सोचते हो मैं अपनी मज़दूरी पर जीवन बिता रही थी? धत्त! थोड़ी-सी रेज़गारी इधर की, थोड़ी-सी उधर और इस तरह शाम होने तक काफ़ी जमा हो जाती थी।

सेर्गेई (चिल्लाते हुए): वाल्या! **(फिर अपनी आवाज़ को धीमा करके)** वाल्या! मेरी प्रिय!! **(उसके बालों को सहलाता है)**

वाल्या: मुझे माफ़ कर दो, सेर्गेई। **(घुटनों पर बैठ जाती है)** माफ़ कर दो...

सेर्गेई: तुम क्या कह रही हो, वाल्या! **(उसे उठाकर स्नेह से आलिंगन करता)** ऐसा न करो!

वाल्या: मैं बहुत थक गयी हूं, सेर्गेई। बच्चे मुझे सारे दिन उलझाये रखते हैं और फिर खाना बनाना होता है, कपड़े धोने पड़ते हैं और घर की सफ़ाई भी करनी पड़ती है। और तुम मुझे वोल्गा की उस लड़की के अफ़साने सुनाते हो... ज़ाहिर है कि मुझे बुरा लगा...

सेर्गेई (प्यार से उसके बालों को सहलाते हुए): नहीं-नहीं। अब मैं एक शब्द भी नहीं कहूंगा। रोओ मत। मैं बिलकुल बेवक़ूफ़ हूं, लेकिन मैं तुम्हें बेहद प्यार करता हूं, वाल्या।

वाल्या (अपने आंसुओं के बीच मुस्कराती हुई): बेहद?

सेर्गेई: रोओ नहीं। मैं तुम्हारे आंसू बर्दाश्त नहीं कर सकता... लोगों

को इस दुनिया में ख़ुश रहना चाहिए। ख़ास तौर से उन्हें जो कम्युनिज़्म का निर्माण कर रहे हैं—जैसे कि तुम्हें और मुझे। **(धीरे से उसे कोच पर लिटा देता है)** तुम थक गयी हो, सो जाओ, प्लेटों को मैं धो दूंगा और सफ़ाई भी कर दूंगा। निश्चिन्त रहो, सारा काम करीने से ही करूंगा। और अगर फ़्योदोर या येलेना जाग गये तो मैं तुम्हें फ़ौरन जगा दूंगा। अच्छा, तुम अब सो जाओ। फ़िक्र न करो...

(वाल्या सो जाती है और कमरा धीरे-धीरे दृष्टि से ओझल हो जाता है)

कोरस: इस बीच वह दिन नज़दीक आता जा रहा है जिसे तुम अपनी यादों में बसा लोगी।

—वाल्या!

वाल्या (धीरे से प्रकट होती है): लो, मैं आ गयी...

कोरस: आज ३० जुलाई है...

(वाल्या अपने चेहरे को हाथों से ढककर छिपा लेती है)

कोरस: अच्छा, बताओ तो वह सुबह किस तरह शुरू हुई थी?

वाल्या: मुझे अच्छी तरह याद है, उस दिन मैं बहुत सुबह ही उठ बैठी थी। घर छोड़ने से पहले, सेर्गेई फाटक पर ही रुक गया था और उसने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया था।

(सामने एक छोटा-सा बाग और फाटक दिखलायी देने लगते हैं। उनके पीछे एक नये दो-मंज़िले मकान की धुंधली-सी रूप-रेखा उभरती है। वाल्या और सेर्गेई एक बेंच के पास खड़े हैं)

(वाल्या सेर्गेई की तरफ़ देखते और अपनी कहानी को जारी रखते हुए): अगर मैं जानती कि मुसीबत आनेवाली है तो मैं उससे चिपकी रहती और उसे कभी न जाने देती। लेकिन मुझे मालूम न था। आख़िर, वह एक बिलकुल साधारण सुबह थी। हां, सिर्फ़ गर्मी उस दिन ज़्यादा थी... बहुत गर्मी थी। **(सेर्गेई को सम्बोधित करते हुए)** अच्छा हो कि तुम थोड़ी देर और सो लो। आज इतवार है न।

सेर्गेई: लेकिन आज गर्मी कितनी है, वाल्या! नदी में नहाने की इच्छा हो रही है।

वाल्या: तुमने तौलिया ले लिया?

सेर्गेई (उसे तौलिया दिखाते हुए): यह रहा।

वाल्या: सेर्गेई, मेरा यह गाउन अच्छा लगता है?

सेर्गेई: ग़ज़ब का!

वाल्या: तुम्हारे लिए चमड़े का एक कोट ख़रीद लिया जाये...

सेर्गेई: बाद में...

वाल्या: नहीं, अभी ख़रीद लें। उसमें तुम बहुत सुन्दर लगोगे। **(उसे छाती से लगाती है)**

सेर्गेई: अरे देखो, चीफ़ आ रहे हैं।

वाल्या: रोबीले हैं।

(सेर्द्यूक आते हैं। पहले की अपेक्षा उनके वस्त्र ठीक-ठाक हैं)

सेर्गेई (कपट से): चीफ़, आप हमारे यहां तो नहीं आये हैं?

सेर्द्यूक (कुछ सन्देह करते हुए): मैं? ओह, मैं यों ही थोड़ा घूमने निकल आया हूं।

सेर्गेई (बमुश्किल हंसी छिपाते हुए): घूमने?

सेर्द्यूक: सुना है कि लारीसा पेत्रोव्ना अब यहीं कहीं रहती हैं।

सेर्गेई: आपकी वेश-भूषा देखकर मुझे लगता है कि आप शायद उससे मिलने जा रहे हैं।

सेर्द्यूक: छुट्टी का दिन जो है आज।

सेर्गेई (विनम्रता से): माफ़ कीजियेगा, यह सुन्दर टाई आपने यहीं दुकान से ख़रीदी थी?

सेर्द्यूक: सुनो, नौजवान! तुम तैरने जा रहे हो न? तो जाओ।

सेर्गेई: ओह, मुझे कोई ख़ास जल्दी नहीं है।

सेर्द्यूक: देखो न, कैसा तंग किया उसने! समझे? **(कुछ झेंपते हुए)** लारीसा पेत्रोव्ना से मुझे कुछ काम है।

(सेर्गेई और वाल्या खुलकर हंस पड़ते हैं)

देखो, मैं तुम्हें अभी ठीक करता हूं... **(उसे उंगली दिखाकर धमकाता है)** ठहरो, मैं तुम्हारी अक़्ल ठीक करता हूं! **(मकान की तरफ़ चला जाता है)**

सेर्गेई: चीफ़, फ़्लैट नम्बर तीन!

सेर्द्यूक: तुम्हारी मदद नहीं चाहिए। **(घर में प्रवेश करता है)**

सेर्गेई (मज़े से हंसते हुए): क्या ख़ूब! शाबाश!

वाल्या : कभी तुम्हारा भी यही हाल था। याद है दियासलाई के बहाने दुकान पर आया करते थे? **(चिल्लाकर)** हे भगवान, दूध तो उबलकर बह गया होगा... **(झपटकर अन्दर जाती है)**

(नदी की तरफ़ जानेवाली सड़क पर एक लड़का और एक लड़की चले जा रहे हैं। लड़के के हाथ में मछली मारनेवाली एक बंसी है और लड़की के हाथ में एक नन्ही बाल्टी)

सेर्गेई (लड़के को पहचानते हुए): ओह, अन्तोन! यह तो मेरा पुराना दोस्त है।

लड़का : नमस्ते, मुझे भी सब याद है। **(लड़की से)** इनके दो बच्चे हैं, एकसाथ जन्मे थे।

लड़की : वाह!

लड़का : वे कैसे हैं? ठीक हैं?

सेर्गेई : बहुत अच्छे, शुक्रिया। अन्तोन, तुम्हारे क्या हाल हैं? तो डाक्टर ही बनने का इरादा है न?

लड़का : हां। हम लोग मछलियां पकड़ने जा रहे हैं।

सेर्गेई (लड़की की तरफ़ इशारा करते हुए): और यह कौन है?

लड़का : लेरा। मैंने इसी के बारे में आपको बताया था, याद है न? चार्ली चापलिन में विश्वास न करनेवाली लड़की।

लड़की : हां, मैं नहीं मानती कि ऐसा कोई आदमी है।

लड़का (विजयोल्लास से): देखा आपने!

सेर्गेई : अजब बात है! अच्छा, मैं भी तुम लोगों के साथ चलूं?

लड़का : क्यों नहीं। मैंने एक डोंगा बनाया है।

सेर्गेई : चलो, चलें।

(सेर्गेई बच्चों का हाथ पकड़ता है और वे सब साथ-साथ नदी की ओर रवाना हो जाते हैं। रास्ते में विक्टर से उनकी मुलाक़ात होती है)

विक्टर : नमस्ते, कहां जा रहे हो?

सेर्गेई : नदी में डुबकी लगा आयें।

विक्टर : हां, गर्मी बहुत है!

(ख़ामोशी)

सेर्गेई (बच्चों से): तुम लोग चलो, मैं अभी आता हूं।

लड़का: हम आपका इन्तज़ार करेंगे।

(बच्चे चले जाते हैं)

सेर्गेई: तुम हमारे यहां जा रहे थे?

विक्टर: नहीं।

सेर्गेई: विक्टर, मामला क्या है? तुम्हें हो क्या गया है!

विक्टर: सेर्गेई ...

सेर्गेई (विक्टर के कन्धे पर हाथ रखते हुए): मैं ...

(विक्टर सेर्गेई के हाथ को झटके से हटा देता है और उसे मारने के लिए हाथ उठाता है)

विक्टर ... क्या बात है?

विक्टर: मैं वाल्या को नहीं भूल पाता। मैं उसे कभी नहीं भूलूंगा, समझे!

(ख़ामोशी)

समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं। शायद तुम मेरी मदद कर सकते हो ... **(कटु हंसी हंसता है)** तुम्हें देखकर मैं ख़ुद डरने लगता हूं ... मेरी इच्छा है कि बुरा हाल हो तुम्हारा ... पर तुम जो मेरे सबसे प्यारे दोस्त थे।

सेर्गेई (कांपती आवाज़ में): था? मैं अब भी हूं ...

विक्टर: नहीं, हमारी दोस्ती ख़त्म हो गयी। **(थोड़ी देर बाद)** अच्छी बात है, मैं यहां से चला जाऊंगा। मैं इस जगह को छोड़ दूंगा। अपने पिता के पास लेनिनग्राद चला जाऊंगा। आशा है कि अपनी सौतेली मां का मैं आदी हो जाऊंगा ... **(एकदम निराश भाव से)** अब मैं बिल्कुल अकेला हूं।

सेर्गेई: लेकिन चीफ़ का, रोदिक का अहसास नहीं, जब हमने कन्धे से कन्धा मिलाकर कठिनाइयों का मुकाबला किया था? क्या दोस्ती हमें इतनी आसानी से मिली है?

विक्टर: मैं सोचता था कि बात ख़त्म हो जायेगी, सब ठीक हो जायेगा। मैं उसे भूल जाऊंगा। लेकिन सचमुच यह न हो पाया। **(धीमी आवाज़ में)** तुमने उसे मुझसे छीन लिया।

सेर्गेई : क्या तुम उस वक़्त सचमुच उसे प्यार करते थे?

विक्टर : तो क्या नहीं?

सेर्गेई (सहजता से) : नहीं, वह प्यार नहीं था।

विक्टर (थोड़ी देर की ख़ामोशी के बाद) : ठीक कहते हो। **(तीक्ष्णता से)** अच्छा, मैं चला! फिर नहीं मिलेंगे। ख़ुश रहो! **(दौड़कर चला जाता है)**

सेर्गेई (उसे बुलाते हुए) : विक्टर...

वाल्या (घर से दौड़कर बाहर आते हुए) : अरे, तुम अभी तक नहीं गये? अच्छा ही हुआ। **(लजाते हुए)** मैं एक बात कहना चाहती हूं।

सेर्गेई (मुस्कराते हुए) : अच्छा, कहो।

वाल्या (कोमल स्वर में) : मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूं, बहुत बहुत... और जानते हो क्यों? क्योंकि मैं तुम्हें जितना ही अधिक जानना चाहती हूं, तुम उतने ही अधिक अजाने लगते हो। समझे न?

सेर्गेई : अजीब हो तुम, वाल्या... **(उसका चुम्बन लेता है)**

वाल्या : वह मेरा चुम्बन लेता है। मैं उसका हाथ पकड़कर उसकी ओर देखती हूं। मैं नहीं जानती कि उसे अन्तिम बार देख रही हूं... उसके गर्म, प्यार भरे हाथों को मैं आख़िरी बार अपने हाथों में लेती हूं, आख़िरी बार मैं उसकी आंखों में झांकती हूं... मैं अज्ञात रही कि यह हमारी अन्तिम मुलाक़ात है। काश, मैं इसे जान पाती! लेकिन मैंने सिर्फ़ इतना ही कहा... **(सेर्गेई से)** तौलिया न खो आना...

सेर्गेई : ठीक है! **(दौड़कर चला जाता है)**

वाल्या : मैं उसे सड़क पर दौड़ता हुआ देखती हूं। मैं देखती हूं कि दौड़कर वह दोनों बच्चों के पास पहुंच जाता है, उनके हाथों को पकड़ लेता है और नदी की ओर आगे बढ़ जाता है। मैं बेंच पर बैठ जाती हूं। मैं दस या बीस मिनट यों ही बैठी रहती हूं। फिर मैं निश्चय करती हूं कि उसके लौटने तक अपना काम निबटा लूं।

(वाल्या धुले हुए कपड़ों को डोरी पर फैला रही है—सेर्गेई की कमीज़ और दो बनियाइनें। लारीसा और सेर्द्यूक मकान के अन्दर से निकलते हैं)

लारीसा : हम लोग कहां जायेंगे, स्तेपान येगोरोविच?

सेर्द्यूक : चलो, बांध की ओर चलते हैं।

लारीसा : लेकिन आज तो छुट्टी का दिन है न?

सेर्द्यूक : यों ही मशीन को एक नज़र देख लूं। उसकी मरम्मत का मसला है।

लारीसा (ठंडी सांस लेते हुए) : ठीक है! फिर चलें।

सेर्द्यूक : शाम को हम लोग स्ल्यूद्यान्का चलेंगे, ठीक है न? वहां मेरे पिता हैं। मैं चाहता हूं कि तुम उनसे मिल लो।

लारीसा : उनकी क्या उम्र है?

सेर्द्यूक : पचहत्तर। और वह अब भी मत्स्य आर्टेल में काम करते हैं। ज़रूरत पड़े तो वह अब भी तैरकर अंगारा नदी को पार कर सकते हैं! मेरा ख़याल है कि वह तुम्हें पसन्द करेंगे। ओह... **(जल्दी से दरवाज़े के अन्दर छिप जाता है)**

लारीसा : क्या हुआ?

सेर्द्यूक : फ़ोरमैन की बीवी बाहर कपड़े फैला रही है।

लारीसा : और आपका कलेजा कांप रहा है?

सेर्द्यूक : ओह, लारीसा... मैं इकावन वर्ष का हो गया हूं।

लारीसा : तो क्या हुआ?

सेर्द्यूक : लोग मुझ पर हंसेंगे।

लारीसा : अभी तक तो हंसने लायक़ कुछ हुआ नहीं। तुमने मुझसे शादी का प्रस्ताव तो किया नहीं। जब करोगे तब देखा जायेगा। **(वाल्या की तरफ़ देखते हुए)** कहो वाल्या, कैसी हो?

वाल्या : क्या आप लोग घूमने जा रहे हैं?

लारीसा : स्तेपान येगोरोविच ने रेस्तरां में मुझे दावत दी है। शाम को हम लोग नाचने जायेंगे। समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं...

सेर्द्यूक : (लारीसा से धीमी आवाज़ में) : शैतान कहीं की! **(सम्मानपूर्वक अपनी टोपी उठाते हुए वाल्या से)** नमस्कार, वाल्या! **(लारीसा के पीछे बाहर चला जाता है)**

वाल्या (उनकी तरफ़ देखते हुए) : मज़े की बात है...

(विक्टर आता है)

(उसे देखकर) विक्टर... नमस्ते।

विक्टर : क्या सेर्गेई चला गया?

वाल्या: हां। **(थोड़ी देर चुप रहने के बाद)** तुम हमारे यहां आते क्यों नहीं?

विक्टर (जोश से): बेहद काम है, वाल्या!

वाल्या: तुम दुबले हो गये हो।

विक्टर (हंसते हुए): खाना भी भूल जाता हूं।

वाल्या (उसके चेहरे को ध्यान से देखते हुए): लगता है तुम पहले से अधिक अच्छे लगने लगे हो...

विक्टर: ज़रूर।

वाल्या: अब तुम नाचने किसके साथ जाते हो?

विक्टर: नाचना फ़िलहाल स्थगित है।

वाल्या: क्यों?

विक्टर: जूते घिस गये हैं...

वाल्या (थोड़ी देर बाद): क्या तुम्हें सेर्गेई से मिलना है?

विक्टर: विदा लेने आया हूं। यहां से जा रहा हूं।

वाल्या: कहां?

विक्टर: लेनिनग्राद।

वाल्या: कितने दिनों के लिए?

विक्टर: यह इस पर निर्भर करता है कि मुझे वहां कितना अच्छा लगेगा। मैं नेव्स्की प्रोस्पेक्ट पर टहलने जाऊंगा। नेवा के तट पर होकर याद करूंगा कि कैसे हम लोग अंगारा के किनारे-किनारे घूमते थे।

वाल्या: तुम्हारी बातें कुछ अजीब लग रही हैं।

विक्टर: वाल्या, मैं अभी तुम्हें देखते हुए सोच रहा था कि तब हम एक दूसरे से प्रेम करते थे या नहीं?

वाल्या: नहीं, विक्टर। वह प्रेम नहीं था। कोरा खिलवाड़ था।

विक्टर: खिलवाड़ यानी थोड़ा-सा मज़ा ले रहे थे, क्यों? समझा!

वाल्या: ओह, विक्टर! जानते हो उस खिलवाड़ की कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी मुझे? याद है, लोग मुझे "सस्ता माल" कहने लगे थे। लेकिन वह, सेर्गेई, इस सब के बावजूद मुझसे सचमुच प्रेम करने लगा। मुझे अपनी पत्नी बनाया और उसके प्रेम ने ही मेरे सोये अहसास को जगाकर मुझे इंसान बना दिया। **(यकायक कुछ ख़याल करके विक्टर की तरफ़ देखती है)** तुम नाराज़ न हो...

विक्टर (जोश से): अब नाराज़गी कैसी? सब भूल गया।

(मकान के अन्दर कहीं रेडियो बज रहा है। रोदिक आ जाता है। धीरे-धीरे चलकर वह विक्टर और वाल्या के पास खड़ा हो जाता है, लेकिन कहता कुछ नहीं। तभी कोरस आता है और इन लोगों को घेर लेता है)

वाल्या: नमस्ते, रोदिक... क्या तुम सेर्गेई से मिलने आये हो? वह तो चला गया।

रोदिक: हां।

(कोरस और नज़दीक आ जाता है)

वाल्या: आओ, बैठो। वह जल्द ही लौट आयेगा।

रोदिक: अच्छी बात है।

(ख़ामोशी। कोरस और नज़दीक आ जाता है)

वाल्या: क्या बात है, रोदिक?

रोदिक: कुछ नहीं।

वाल्या (अचानक मुस्कराते हुए): सेर्गेई आ जायेगा तो हम सब ही चाय पियेंगे। विक्टर भी... रोदिक, तुम रुकोगे न? मैं जाकर केतली में थोड़ा और पानी डाल देती हूं। मैं अभी आती हूं। **(दौड़कर घर के अन्दर चली जाती है)**

(कोरस रोदिक और विक्टर को घेर लेता है)

विक्टर (आहिस्ता से): क्यों, क्या बात है?

रोदिक: ख़ुदा के लिए तुम शान्त रहो...

विक्टर: हुआ क्या है?

रोदिक (फुसफुसाते हुए): सेर्गेई डूब गया है।

(असह्य वेदना से किसी के हाथ ऊपर उठ जाते हैं। कोरस वहीं चित्र-जटित-सा गहरी चुप्पी में खो जाता है)

विक्टर: डूब गया!

(रोदिक ने सिर हिला दिया)

विक्टर (थोड़ी देर बाद): यह कैसे हुआ?

(कोरस में हलचल सी होती है, फिर वह एकदम निस्पन्द और निश्चल हो जाता है)

रोदिक: नदी किनारे एक लड़का और एक लड़की डोंगे पर बैठे मछली मार रहे थे। उन्होंने डोंगा ख़ुद ही बनाया था... डोंगा अचानक उलट गया। सेर्गेई के अलावा वहां आस-पास कोई और नहीं था। वह तैरकर पहले उस लड़की को किनारे ले आया। फिर लड़के को लाने लौट गया... लड़का नहीं दिखलायी दिया। वह बहुत देर तक लड़के को ढूंढता रहा होगा। लड़का जब उसे मिला तब तक वह थक चुका था... लड़के को तो किसी तरह निकालकर उसने डोंगे पर लिटा दिया, लेकिन ख़ुद तैरकर किनारे आने की ताक़त उसमें नहीं रह गयी थी। लड़का सकुशल है।

विक्टर: ओह, रोदिक...

(यकायक, जैसे इस दुखद आघात से कोरस कुछ क़दम पीछे हट जाता है)

रोदिक: वाल्या को बता देना चाहिए...

विक्टर: नहीं! चुप रह...

रोदिक: कुछ भी हो उसे बताना ही होगा।

विक्टर: बेशक, बताना ही होगा।

रोदिक: फिर जाओ और कह दो।

विक्टर: नहीं, मुझसे यह न हो सकेगा।

रोदिक: विक्टर, जाओ, कृपया उसे बता दो।

विक्टर: नहीं, मुझसे यह न हो सकेगा।

रोदिक: अच्छी बात है, फिर मुझे ही कहना पड़ेगा। **(अन्दर जाता है)**

(कोरस ख़ामोश बैठे विक्टर की तरफ़ बढ़ता है। विक्टर आस-पास देखता है। मकान की तरफ़ जाता है, दरवाज़े पर ही रोने लगता है। कोरस उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाता है जैसे कि वह उसे सान्त्वना देना चाहता है। लारीसा और सेर्द्यूक आ जाते हैं, वे घूमकर लौट आये हैं)

सेर्द्यूक (सहमी हुई आवाज़ में): अरे, वहां विक्टर बैठा है...

लारीसा: तुम्हें इस तरह हर एक से डर क्यों लगता है? इतने बड़े हो गये, पर हो बच्चे ही।

सेर्द्यूक (विक्टर के पास जाते हुए): देखो, बांके, मैं अपने पिता के लिए यह पैन्ट लाया हूं। अच्छा है न?

विक्टर: क्या? **(सेर्द्यूक की तरफ़ नफ़रत से देखता है)**

कोरस (धीरे से): स्तेपान येगोरोविच, कुछ कहो नहीं।

—इस समय बोलना मना है।

—शान्त रहो, सुन रहे हो?

(वाल्या और रोदिक मकान से बाहर आते हैं। कोरस वाल्या की तरफ़ बढ़ता है)

वाल्या (कोरस को सम्बोधित करते हुए): मैंने अपनी टोपी कहां डाल दी? **(डोरी पर सेर्गेई की लटकती हुई कमीज़ पर उसकी नज़र पड़ती है; वहीं ठिठककर वह उसे देखने लगती है)** आओ, रोदिक।

(चले जाते हैं)

विक्टर (उठते हुए): लारीसा, तुम ज़रा बच्चों को संभालना। **(सेर्द्यूक से)** हां, चीफ़... हमारा सेर्गेई डूब गया है।

सेर्द्यूक (ज़ोर से चीख़ पड़ता है): तुम झूठ बोल रहे हो!

विक्टर: सेर्गेई मर गया। **(जल्दी से बाहर निकल जाता है)**

(लारीसा मकान के अन्दर जाती है। सेर्द्यूक भी उसके पीछे-पीछे जाता है। कोरस फैलकर पूरे मंच को घेर लेता है। फिर पत्थर के बुत की तरह ख़ामोश खड़े हो जाता है। रास्ते में दो छोटी-छोटी लड़कियां ख़ुशी-ख़ुशी गाती हुई आ रही हैं। उनके हाथों में फूल हैं। कोरस पूर्ववत निश्चल है। अंगारा नदी का तट। सड़क पर एक यात्री दिखाई पड़ता है)

यात्री: थोड़ी ही देर में रात हो जायेगी। सूर्यास्त हो रहा है। सूर्य वृक्षों की ललछौंह सूखी पत्तियों पर अपनी फीकी आभा बिखेर रहा है। मैं आज सुबह ही इर्कुत्स्क से रवाना हुआ था। पनबिजलीघर के इस निर्माणस्थल तक मैं मोटर-बोट से पहुंचा हूं। और लो, मैं अंगारा तट पर टहल रहा हूं! वहां दूर, मज़दूर बस्ती का छोर दिखाई दे रहा है। कहते हैं कि दस दिन पहले यहां एक युवक डूब गया था...

सामने, ढाल पर पांच व्यक्तियों का एक समूह दिखाई पड़ रहा है। वे नज़दीक ही बैठे हैं। उनके साथ एक लड़की है। वे ख़ामोश बैठे हुए हैं। हरेक अपने-अपने ख़यालों में खोया है। लेकिन वे सोच क्या रहे हैं? उनके सामने एक रूमाल पर मामूली-सा खाना और मदिरा की एक बोतल रखी है। एक बुज़ुर्ग हरेक के लिए गिलासों में थोड़ी-थोड़ी मदिरा ढालता है— लड़की को छोड़कर सब के लिए। वे सभी मौन हैं, पी रहे हैं। मैं आगे बढ़ना चाहता हूं, लेकिन कदम बढ़ ही नहीं पाते। मुझे इनमें क्यों इतनी दिलचस्पी है? आख़िर वे किस बारे में बातें कर रहे हैं? मैं सुनने की कोशिश करता हूं, लेकिन एक शब्द भी सुनाई नहीं पड़ता। घाट पर एक स्त्री कपड़े धो रही है। समूह का एक आदमी अचानक उसे देख लेता है और वह दूसरों से कुछ कह रहा है। अब वे सब उसी दिशा में देख रहे हैं। इनके बीच क्या सम्बन्ध है? इन लोगों में मुझे क्यों इतनी दिलचस्पी है? आस-पास की तमाम चीज़ों को देखने-सुनने की अपनी व्यावसायिक लत से मजबूर जो हूं! यही मुझे मजबूर कर रही है कि मैं यहीं खड़ा रहूं और देखूं कि आगे क्या होता है। संभव है कोई ऐसी चीज़ हो जो मुझे वास्तविकता का अहसास करा सके।

(सद्यः वर्णित दृश्य मंच पर उभरता है। सेर्द्यूक मगों में मदिरा ढालते हैं। उनके इर्द-गिर्द विक्टर, रोदिक, देनीस और लापचेन्को बैठे हैं। ज़िन्का थोड़े पास ही बैठी है)

सेर्द्यूक: मैं आपसे पूछता हूं कि किसी श्रमजीवी की मृत्यु के बाद शेष क्या बचता है? **(भावोद्वेग से)** उसके कार्य। यानी उसकी स्मृतियां ही सदैव के लिये शेष रह जाती हैं। कम्युनिज़्म में मनुष्य मरता नहीं, क्योंकि भविष्य में मानवीय श्रम की पौध हमसे सैकड़ों गुना अधिक विकसित हो चुकी होगी। हमारे बीच में सेर्गेई उस समय के सबसे नज़-दीक था। वह एक असली इनसान की तरह जिया, एक कम्युनिस्ट की तरह उसने काम किया, और मर गया एक वीर की तरह। उसकी स्मृति हमेशा-हमेशा तक गौरवान्वित रहे।

(सभी अपने मग उठा लेते हैं और चुपचाप पीने लगते हैं)

उस घटना को हुए आज दो हफ़्ते बीत गये। हमें भविष्य के बारे में सोचना होगा। सेर्गेई आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन हम जीवित हैं,

हम पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी है। **(थोड़ी देर रुककर)** जल्दी ही हमारा एक्सकेवेटर फिर काम करना लगेगा। और अब हमारी टीम में एक आदमी की कमी हो गयी है। इसकी हम क्या व्यवस्था करेंगे?

रोदिक: हमें बाहरी आदमी नहीं चाहिए।

ज़िन्का (जल्दी से): हां, देनीस ने भी कल मुझसे यही कहा था।

सेर्द्यूक (सख़्ती से): गुड़िया रानी, तुम्हें बोलने के लिए किसने कहा था?

लापचेन्को: हम लोग तुम्हें सिर्फ़ तुम्हारे पति के ख़याल से साथ ले आये थे। इसलिए अच्छा हो कि तुम अपना मुंह बन्द ही रखो।

सेर्द्यूक: लापचेन्को, अपने अधिकार से बाहर मत जाओ। **(थोड़ी देर बाद)** हां तो, विक्टर, तुम क्या कहते हो? मैंने सुना है कि तुम यहां से जाना चाहते हो?

देनीस: चीफ़, इस चीज़ को अधिक महत्व नहीं देना चाहिए। अपने साथियों को छोड़ कर वह नहीं जा सकता।

सेर्द्यूक (विक्टर से): ठीक है न?

विक्टर (क्षणिक हिचकिचाहट के बाद): हां, मैंने इरादा बदल दिया है।

ज़िन्का (बीच में तेज़ी से): मैं कहती हूं, यह आप लोगों को छोड़कर कभी नहीं जायेगा... क्या वह...

सेर्द्यूक: गुड़िया जी, क्या मैं फिर चेतावनी दूं?

देनीस: चीफ़, इसकी तरफ़ आपका रुख़ बहुत सख़्त है।

सेर्द्यूक: औरतों को ज़रा-सी छूट मिले तो ये सर पर सवार हो जायेंगी।

ज़िन्का: इसे क्या आपने अपने तजुर्बे से सीखा है, क्यों, कामरेड सेर्द्यूक?

सेर्द्यूक (तिलमिलाते हुए): क्या कहा? **(शान्त होते हुए)** अच्छा, बैठी रहो। **(विक्टर से)** तुम वहां क्या देख रहे हो?

विक्टर: वहां वाल्या है। कपड़े धो रही है।

(सब लोग चुपचाप नीचे घाट की तरफ़ देखते हैं)

लापचेन्को: बच्चों के कपड़े हैं।

रोदिक: स्तेपान येगोरोविच, मेरा एक प्रस्ताव है... और किसी

कामगार को हम लोग न रखें। हम चार ही पांच आदमियों का काम कर लिया करेंगे। विक्टर को शिफ़्ट का फ़ोरमैन बनाया जा सकता है। देनीस बिजली के काम को संभाल सकता है, मैं जल-व्यवस्था का काम देख लूंगा और लापचेन्को आयलमैन का। वह बहुत दिन रिज़र्व में रह चुका है। और हमें हेल्पर की दरकार न होगी। हम लोग ख़ुद सारा काम संभाल लेंगे। लेकिन मेरा ख़याल है कि पांचवें आदमी की मज़दूरी हमें रख लेनी चाहिए।

सेर्द्यूक : अब बस! शुरूआत तो तुमने ठीक की थी, लेकिन अब तुम्हा-री बात समझ से बाहर है। पांचवें आदमी की मज़दूरी हमें किसलिए चाहिए? ज़रा साफ़-साफ़ बताओ।

रोदिक : स्तेपान येगोरोविच, सेर्गेई के नाम से वाल्या को जो पेन्शन मिलेगी वह अधिक तो होगी नहीं। उन लोगों की अच्छी तरह से रहने की आदत है। वाल्या के लिए काम चलाना मुश्किल होगा। इस लिए मेरा प्रस्ताव है कि पांचवें आदमी की मज़दूरी हम वाल्या को दे दें, वैसे ही, जैसे सेर्गेई अब भी हमारा सहकर्मी है।

देनीस (रोदिक के पास जाकर): रोदिक, तुम सचमुच एक अच्छे आदमी हो—बहुत अच्छे हो!

ज़िन्का : ओह, रोदिक! **(दौड़कर उसके पास जाती है और उसका आलिंगन कर लेती है)**

सेर्द्यूक : गुड़िया रानी, तुमसे दख़ल देने के लिए किसने कहा है?

ज़िन्का : मैंने तो कुछ नहीं कहा। मैंने तो सिर्फ़ उसका आलिंगन किया और उसकी परेशानी देनीस को होनी चाहिए, आपको नहीं।

देनीस : क्या इसके लिए मौखिक शिष्टाचार पर्याप्त न था? ख़ैर, कोई हर्ज नहीं। **(उसका कान खींचता है)**

सेर्द्यूक : तो मैं देखता हूं कि बहुमत इसी के पक्ष में है। **(विक्टर से)** और तुम क्या कहते हो?

विक्टर : मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

सेर्द्यूक : क्या तुम शिफ़्ट संभालने के लिए तैयार हो? क्या तुम ज़िम्मेदारी निभा लोगे?

विक्टर : बस, आपकी मदद चाहिए।

सेर्द्यूक : और तुम, लापचेन्को... तुम हमें मझधार में तो नहीं छोड़ दोगे?

लापचेन्को : चीफ़, आप यह कहकर मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं। अब मैं बिल्कुल सुधर गया हूं। **(देनीस की तरफ़ इशारा करते हुए)** लेकिन क्या यह उसकी औक़ात से ज़्यादा न होगा? दो साल पहले वह केवल एक सहायक था और अब फ़ोरमैन का असिस्टेंट।

देनीस : मियां, तुम खुद को संभालो! और ज़रा सीधे खड़े हो। ज़रूरत है कि तुम्हें थौड़ी फ़ौजी तालीम दे दी जाये।

विक्टर : चीफ़!

सेर्द्यूक : हां?

विक्टर : वाल्या के बारे में...

सेर्द्यूक : हां, उसके बारे में क्या?

(ख़ामोशी)

बोलो! या तुमने अपनी राय बदल दी?

विक्टर : हां।

सेर्द्यूक : क्यों?

विक्टर : अब कोई फ़ायदा नहीं।

सेर्द्यूक : जैसा ठीक समझो। **(थोड़ी देर बाद)** ज़िन्का! ज़िन्का!

ज़िन्का (उत्सुकता से) : जी?

सेर्द्यूक : दौड़कर नदी किनारे जाओ और वाल्या को बुला लाओ।

ज़िन्का : अच्छा! **(दौड़ती हुई जाती है)**

(उसके जाने कै बाद "गोर्की नगर के पास मजदूर बस्ती में..." नामक गीत के बोल गूंज उठते हैं)

विक्टर : सेर्गेई को यह गीत बहुत पसन्द था।

सेर्द्यूक : अरे, तुम लोग ख़ामोश क्यों हो?

विक्टर : बात करने को है ही क्या?

सेर्द्यूक : तो शायद देनीस ही अपने मेजर के बारे में कुछ बतलायेगा।

देनीस : वह अब मेजर नहीं रहा, पिछले हफ़्ते ही वह लेफ़्टीनेन्ट कर्नल हो गया है।

रोदिक (हंसते हुए) : यहां हम लोग दिन-रात खपते-खपते मरे जा रहे हैं और तरक़्क़ियां मिलती हैं दूसरों को!

(ज़िन्का सामने आती है। उसके पीछे कपड़ों से भरा एक टब उठाये वाल्या है)

वाल्या: नमस्ते!

सेर्द्यूक (धीरे से): क्या कपड़े धो रही थीं?

वाल्या: हां, धो चुकी हूं। अब मैं घर जा रही हूं।

सेर्द्यूक: कपड़े धोने इतनी दूर क्यों जाती हो?

वाल्या: यहां का पानी ज़्यादा साफ़ है।

सेर्द्यूक: बच्चे किसके पास हैं?

वाल्या: लारीसा के।

सेर्द्यूक: तुम्हारा ख़र्च चल जाता है?

वाल्या: अभी तो चल ही रहा है।

सेर्द्यूक: आगे कैसे चलेगा?

वाल्या: चीफ़, मैं ख़ुद नहीं जानती।

सेर्द्यूक: ख़ुशी है कि तुमने मुझे इस नाम से पुकारा। याद रखो, बेटी, हरेक के जीवन का आदि और अन्त होता है। और इसी में निहित हैं विछोह और दुःख, हर्ष और आह्लाद।

वाल्या (धीरे से): मेरे लिए अब सब बराबर है।

सेर्द्यूक (दृढ़तापूर्वक): तुम्हें इस तरह नहीं सोचना चाहिए।

वाल्या: क्यों?

सेर्द्यूक: क्योंकि तुम्हारे सामने बच्चों का भविष्य है।

वाल्या (कुछ सोचते हुए): शायद मैं फिर दुकान में काम करने लगूंगी...

सेर्द्यूक: अच्छा, तो सुनो। इन लोगों ने फ़ैसला किया है कि ये सेर्गेई का भी काम करेंगे और उसके हिस्से की आमदनी... पूरी की पूरी... तुम्हारे पास पहुंचा देंगे।

विक्टर (श्रोताओं को सम्बोधित करता है): वाल्या चुप है... वह बहुत देर से ख़ामोश है। मैं क्यों चाहता हूं कि वह इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दे? इस चीज़ को मैं इतनी उत्कटता से क्यों चाहता हूं? काश, वह सिर्फ़ इतना कह दे: आप लोग यहां से चले जाइये। मुझे आपके रुपयों की ज़रूरत नहीं है। काश, वह सिर्फ़ इतना कह दे...

वाल्या: शुक्रिया। **(एक हल्की-सी मुस्कराहट के साथ)** शुक्रिया...

(नदी का ढाल और वहां मौजूद लोग आंखों से ओझल हो जाते हैं। केवल वह यात्री रास्ते पर खड़ा दिखाई देता है। वह दूर कहीं देख रहा है)

यात्री : हां तो, उन लोगों ने उस युवती को बुलाकर बातें कीं, लेकिन क्या बातें कीं, किस विषय में बातें कीं, यह मेरे लिए एक रहस्य ही बना रहेगा। अब वे उठकर चले जाते हैं। और मैं यहां खड़ा-खड़ा सोच रहा हूं कि मेरे दिल का वह कौन-सा तार है जिसे उन लोगों ने छूकर मुझे आन्दोलित कर दिया है! उनके बीच क्या बातचीत हुई है? **(कुछ क्षणों तक वह योंही अपने विचारों में खोया खड़ा रहता है)** शायद बेवकूफ़ी की कोई छोटी-मोटी बात रही होगी जो मेरी तरह के एक बाहरी आदमी को महत्त्वपूर्ण मालूम होती है। हमें कितनी बार भ्रम हो जाता है!

(यात्री अन्तर्धान हो जाता है। धीरे-धीरे अन्धकार चीरकर कोरस प्रगट होता है)

कोरस : जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो धीरे-धीरे उसके इस्तेमाल की तमाम चीज़ें उन स्थानों से हट जाती हैं, जहां वे कभी रखी रहा करती थीं। और कुछ ही महीनों में यह हालत हो जाती है कि जिस कमरे में वह रहता था, अब वही कमरा अपने भूतपूर्व निवासी के प्रति मौन हो जाता है, मानो वह कभी वहां रहा ही न हो।

—लेकिन वाल्या के यहां ऐसा नहीं हुआ। यहां सेर्गेई की हर चीज़ अछूती है। हां, परिवर्तन है तो सिर्फ़ एक। उसके छोटे-से सोफ़े के ऊपर अब सेर्गेई की एक बड़ी-सी तस्वीर लगी हुई है। इसे इर्कूत्स्क के किसी फ़ोटोग्राफ़र ने बड़ा बना दिया है।

—कमरा आरामदेह है। बच्चे गहरी नींद में सो रहे हैं, सिर्फ़ दीवार घड़ी की टिक-टिक सुनाई पड़ रही है।

—वाल्या, क्या तुम बहुत थक गयी हो?

वाल्या : हां, बहुत।

(वह अपने कमरे में अकेली है। उसने बर्तन साफ़ कर लिये हैं और तौलिया एक ओर रख देती है)

हां, दिन ढल गया। अब मैं थोड़ा आराम कर सकती हूं। **(सोफ़े पर बैठ जाती है और सेर्गेई की तस्वीर देखने लगती है)** आज जो कुछ हुआ वह सब

मैं तुम्हें अभी बताऊंगी। ज़रा ठहरो, मैं याद कर लूं। आज मैंने क्या-क्या किया है?

कोरस की आवाज़: सुबह तुम बाज़ार गयी थीं...

वाल्या: हां-हां! उसके बाद बच्चों को लेकर मैं डाक्टर के यहां गयी थी। सेर्गेई, तुम सोच भी नहीं सकते कि फ़्योदोर कितना शैतान हो गया है। मैं कितनी कोशिश करती हूं कि वह बोतल से दूध पीना छोड़ दे, लेकिन वह बहुत ज़िद्दी है, मानता ही नहीं, बराबर उसी की ज़िद करता है।... लेकिन डाक्टर हमेशा की तरह आज भी उसकी तारीफ़ कर रही थी। कह रही थी कि जल्द ही दांत निकलनेवाले हैं। येलेना अब मज़े से खाने लगी है। पहले वह ऐसी नहीं थी। दोनों अब सात महीने के हो चुके हैं। सचमुच काफ़ी बड़े लगते हैं! वे जब सो गये तो मैं कपड़े धोने के लिए नदी की तरफ़ दौड़ी। लेकिन आज मौसम ठीक नहीं था, पानी बरसने लगा। मैं बिल्कुल भीग गयी। और बाइकाल झील की तरफ़ से ठंडी हवा बहने लगी। उससे पेड़ों की सारी पत्तियां झड़ गयीं। गर्मी के आखिरी चिह्न भी समाप्त हो गये। किया ही क्या जा सकता है, नवम्बर तो आ ही गया! क्लब के सामने से गुज़रते वक़्त मैंने देखा कि वहां नोटिस लगा है—आज शाम को नाच होगा। नाच... कैसी अजब बात है! **(कुछ याद करते हुए)** ज़रा ठहरो, और कुछ भी हुआ था न?

कोरस की आवाज़: सेर्द्यूक और लारीसा चाय पीने आये थे।

वाल्या: उनकी बहुत मज़ेदार जोड़ी है। वे एक दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं, लेकिन हमेशा लड़ते रहते हैं। सेर्द्यूक तुम्हारे एक्सकेवेटर के बारे में बात कर रहे थे। लोग उसे अब सेर्योगिन एक्सकेवेटर कहते हैं। वह कह रहे थे कि काम में काफ़ी दिक़्क़त हो रही है। वर्षा की वजह से कीचड़ ही कीचड़ हो गया है। वह बहुत ही परेशान हैं। तुम्हारी टोली के लोग अक्सर आते हैं...

कोरस की आवाज़: विक्टर को छोड़कर... क्यों?

वाल्या: हां, वह क्यों नहीं आता? अरे, एक ख़ास बात तो बताना मैं भूल ही गयी—आज वह लड़का—अन्तोन, तुम्हें याद है उसकी?—मेरे पास आया था—उसके साथ उसकी मां भी थी। बच्चों के लिए वे तरह-तरह के खिलौने लाये थे। देख रहे हो? अन्तोन अब भी डाक्टर ही बनना चाहता है, बड़ा प्यारा बच्चा है। **(क्षणिक ख़ामोशी के बाद)** बस, इस तरह बीत गया सारा दिन। **(उत्कट भाव से)**

अब ज़रा मेरी बात सुन लो। सुन रहे हो? ज़िन्दगी में तुम्हीं अकेले मेरे मित्र थे। सेर्गेई, मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है। तुम्हारे बिना जीना मुश्किल हो रहा है। पर तुम्हें याद करते ही मुझे कुछ चैन मिल जाता है, मैं थोड़ा बेहतर महसूस करने लगती हूं।

कोरस की आवाज़: वाल्या, मैं तुम्हारे लिए एक साइकिल ख़रीद लाऊं?

वाल्या: वह किसलिए?

कोरस की आवाज़: सवारी के लिए, और किसलिए?

वाल्या (हंसते हुए): तुम्हें भी खूब सूझती है!

कोरस की आवाज़: अख़बारों में आज एडेनावर का वक्तव्य पढ़ा तुमने?

वाल्या: नहीं।

कोरस की आवाज़: तुम ऊब तो नहीं गयी हो?

वाल्या: ऊबने के लिए मेरे पास समय ही नहीं है! **(निराशा में डूबते हुए)** सेर्गेई, जाड़ा आ रहा है। फिर वसन्त और गर्मी आयेंगे। मैं क्या करूंगी? मैं बराबर यही सोचती रहती हूं। सेर्गेई, मैं क्या करूंगी? **(उत्तर का इन्तज़ार किये बिना)** ओह, मैं कितनी थक गई हूं! आज तो मैंने कोई ज़्यादा काम भी नहीं किया। फिर भी मैं कितनी थक गयी हूं!

(वायलिन पर परिचित लोरी की धुन बज रही है। आहिस्ता-आहिस्ता लोरी को दूसरी आवाज़ें भी दोहराती सुनाई पड़ती हैं। पहले स्त्रियों के स्वर में, फिर पुरुषों के)

वाल्या (अर्द्ध सुप्तावस्था में): दिन भर योंही दौड़ती और काम करती रही। इस तरह दिन के बाद दिन आते जाते हैं, लेकिन तुम्हारे लिए वे सब एक समान हैं। तुम काम करती जाओ, दौड़ती जाओ...

कोरस की आवाज़: तुम थक गयी हो, सो जाओ, प्लेटों को मैं धो दूंगा और सफ़ाई भी कर दूंगा। सच मानो, मैं सब काम ख़ूब अच्छी तरह से कर दूंगा। और अगर फ़्योदोर या येलेना जाग गये तो मैं तुम्हें फ़ौरन जगा दूंगा। सब चीज़ ठीक रहेगी। तुम अब सो जाओ। किसी चीज़ की चिन्ता न करो।

कोरस: वाल्या सो रही है। अंगारा की ओर से पतझड़ की क्रुद्ध हवाएं आ रही हैं। आस-पास सीटियों-सी आवाज़ें सुनाई दे रही हैं।

18 386

—वाल्या सो रहा है; वह सो रही है; किन्तु विशालकाय मोबाइल एक्सकेवेटर पर तैनात रात की शिफ़्ट बारिश में भी जूझकर काम कर रही है।

—कहीं पर वह अन्तोन, जो डाक्टर बनना चाहता है और उसकी नन्ही दोस्त लेरा जो यह नहीं मानती कि चार्ली चापलिन भी कोई आदमी है, गहरी नींद मे सो रहे हैं।

—अचानक, मध्य रात्रि में सेर्द्यूक की नींद टूट जाती है। वह अपनी उम्र से परेशान है... उसे नींद नहीं आ रही है, शायद इसीलिए भोर होने तक वह फ़्रांसीसी व्याकरण की एक पुस्तक से उलझा रहता है।

देनीस (कोरस में): ज़िन्का और मैं दोनों अपने नये कमरे में खर्राटे ले रहे हैं। उसका सिर मेरे कन्धे पर है और मैं उसे अपने बाहुपाश में स्नेह से छिपाये हुए हूं जैसे डरता हूं कि कहीं ऐसा न हो कि जब मैं सोकर उठूं तो वह बगल में न मिले!

ज़िन्का (कोरस में): हमारी नींद किसी चीज़ से नहीं टूटती—न बांध पर घर्र-घर्र करनेवाली मशीनों के शोर से, न स्टीम इंजनों की तीखी सीटियों से। हम गहरी नींद में भविष्य के सुन्दर, सलोने सपने देख रहे हैं।

विक्टर (कोरस में): और मेरी नींद ही ग़ायब है। मैं बाहर सड़क पर निकल जाता हूं, सोयी बस्ती में भटकता हूं। अब मैं वाल्या के घर की खिड़की के नीचे रुक गया हूं। लेकिन मैं दरवाज़े पर दस्तक नहीं देता। अनेक रातें बीती हैं जब इसी तरह मैं आया हूं और चुपचाप खड़ा रहा हूं। और बिना साहस किये वापस लौट जाता हूं!

कोरस: लेकिन रात अब ढल रही है और भोर होने ही वाली है। पतझड़ के बाद आता है जाड़ा। और जाड़े के बाद फिर वसन्त।

—अप्रैल! यह कैसा ठिठुरता अप्रैल है, कैसी तेज़ हवाएं हैं! हां, है तो वसन्त ही। सूर्य के ताप में अन्तिम हिमिकायें तेज़ी से पिघलती जा रही हैं!

(ज़िन्का आती है। वह बहुत उत्तेजित है। उसकी वेश-भूषा उत्सव के अनुकूल है। उसके दोनों हाथों में तश्तरियां हैं)

ज़िन्का: मुबारक हो! आज ३० अप्रैल है। फ़्योदोर और येलेना आज एक साल के हो गये। सोचो तो भला एक पूरा साल बीत गया। आज हम

लोग उनका जन्मदिन मनाने जा रहे हैं—एक छोटी-सी दावत है। "सेर्योगिन एक्सकेवेटर" की पूरी टीम आमंत्रित है। आख़िर वे उनके धर्मपिता ही हैं। **(धीरे से, जैसे कोई गुप्त बात कह रही हो)** अच्छा, बताओ तो बच्चे कहां हैं? हम उन्हें लारीसा पेत्रोव्ना के यहां छोड़ आये हैं। वहां वे अधिक शान्ति से रह सकेंगे...

(सेर्योगिन के कमरे का दृश्य। वाल्या और लारीसा खाने की मेज़ लगा रही हैं)

सेर्द्यूक अपने नौजवानों के साथ कब आ रहे हैं?

लारीसा: साढ़े सात बजे।

ज़िन्का (परेशान होते हुए): हाय राम सात बज रहे हैं!

लारीसा: फ़िक्र न करो, हम लोग सब तैयार कर लेंगे... **(वाल्या से)** क्या सोच रही हो?

वाल्या: ऐसे ही...

(ख़ामोशी)

ज़िन्का: प्लेटें कितनी लगायी जायें?

लारीसा: सब के लिए।

वाल्या: विक्टर को छोड़कर। वह यहां कभी नहीं आता।

ज़िन्का: क्यों?

वाल्या: विक्टर मज़े उड़ाने में विश्वास करता है। परेशानियों से वह दूर ही रहता है।

ज़िन्का: पर सुना है कि अच्छे काम के लिये उसे पुरस्कार मिलनेवाला है—शायद कोई तमग़ा या हज़ार रूबल।

लारीसा (वाल्या को देखते हुए): क्या बात है, वाल्या?

वाल्या: मुझे लगता है कि मेरे अन्दर सब कुछ मर गया है।

लारीसा (धीमी आवाज़ में): घीरे-धीरे तुम भूल जाओगी।

वाल्या: नहीं, वह बात नहीं है। मैं तो यह कह रही थी... कि मेरी ज़िन्दगी उजड़ चुकी है। कभी-कभी मुझे डर लगने लगता है।

ज़िन्का (मेज़ सजाने में व्यस्त है): सुना तुमने? जानती हो क्या हुआ? हमारा लापचेन्को भी दिल दे बैठा।

लारीसा: सच!

ज़िन्का : ख़ुदा की क़सम! अपने लिये फ़ैशनेबुल कोट भी ख़रीद लाया है।

वाल्या (हल्की मुस्कराहट के साथ) : लापचेन्को...

ज़िन्का : किया ही क्या जा सकता है! जब बड़ा अफ़सर ख़ुद एक मिसाल पेश करे तो...

(लारीसा की तरफ़ देखकर खिलखिला पड़ती है)

लारीसा : गुड़िया रानी, मेरे सेर्द्यूक की बात न करो। **(गम्भीरता से)** ऐसा आदमी लाखों में नहीं मिलता।

ज़िन्का (झेंपकर) : मेरा मतलब यह नहीं था... **(सहमे-सहमे)** फिर आप लोगों ने शादी क्यों नहीं कर ली?

लारीसा : शादी? क्या कहा! कहते हैं कि सबके सामने प्रेम की चर्चा करना ठीक नहीं। उनका ख्याल है कि ख़ुद को हास्यास्पद बनाना ठीक नहीं।

ज़िन्का : संकोची हैं... **(अभिमानपूर्वक)** दो साल तक उन्होंने मेरी मुसीबत कर रखी थी, क्योंकि मैं देनीस को प्यार करती थी।

वाल्या : लारीसा!

लारीसा : हां?

वाल्या : क्या कहती हो—मैं फिर तुम्हारे साथ दुकान में काम करने लगूं?

लारीसा : अब देर हो चुकी वाल्या... शाम को मैं बिल्डिंग स्ट्रकचर का काम सीखने स्कूल जाती हूं।

वाल्या : यह किसलिए?

लारीसा : इसलिए कि मेरे निर्मम सेर्द्यूक साहब मुझे ज़बर्दस्ती वहां भेजते हैं। तुम तो जानती हो उन्हें। **(सेर्द्यूक की नकल करते हुए)** तरक़्क़ी नहीं करती?

ज़िन्का (हंसते हुए) : ख़ूब! बिलकुल उन्हीं की तरह बोलती हो। **(कमरे से बाहर जाती है)**

लारीसा : वाल्या, सच तो यह है कि मैं फिर जीवन शुरू करना चाहती हूं। **(ज़िन्का के पीछे जाती है)**

वाल्या (मेज़ पर पड़े रुपयों को देखते हुए) : सेर्गेई की तनख़्वाह... **(कटु मुस्कराहट के साथ)** इसे भेजने में वे कितनी पाबन्दी करते हैं...

(दरवाज़े पर विक्टर आता है। एक लम्बी ख़ामोशी)

विक्टर, तुम?

विक्टर: हां, मैं! **(खीसें निपोड़ता)** मुझे देखकर डर गयीं?

वाल्या: तुम्हारे आने की मुझे आशा नहीं थी।

विक्टर: पर देखो, मैं तो आ गया। तुम्हें बुरा तो नहीं लगा?

वाल्या: नहीं।

विक्टर: मैं चीफ़ के साथ आया हूं। वह बच्चों को देखने चले गये और मैं सीधा तुम्हारी तरफ़ चला आया। तुम्हारा फ़्योदोर हूबहू सेर्गेई जैसा लगता है। **(वाल्या के हाथ में एक पैकेट देते हुए)** बच्चों के लिए कुछ है।

वाल्या: अपनी जैकेट वग़ैरह उतार दो। क्या बाहर हिमपात हो रहा है?

विक्टर: हां, फिर भी है तो वसन्त ही। **(अपने इर्द-गिर्द नज़र दौड़ाता है)** यहां बहुत अच्छा है। **(सोफ़े पर बैठ जाता है)** मैंने वादा किया था कि यहां से चला जाऊंगा। तुम्हें याद है? लेकिन मैं अपना वादा पूरा न निभा सका। मुझे माफ़ कर दो।

(ख़ामोशी)

वाल्या (आहिस्ता से): लेकिन तुम मिलने क्यों नहीं आये?

विक्टर: मुझे सान्त्वना देना नहीं आता।

वाल्या: फिर भी तुम आ तो सकते थे।

विक्टर (उसकी आवाज़ में कम्पन है): तुम्हें देखने से डरता था।

वाल्या: ओह, विक्टर!

विक्टर (अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण नहीं रख पाता): सोचती हो कि मैं तुम्हें भूल गया? मुझे एक-एक चीज़ याद है। हर समय तुम्हारे ही बारे में सोचता रहता हूं। हर जगह बस तुम ही तुम नज़र आती हो! मेरा ख़याल था कि हम लोग योंही खिलवाड़ कर रहे थे। लेकिन अब मैं ज़्यादा सही-सही जानता हूं कि सच्चाई क्या थी। जानता हूं कि क़सूर मेरा ही है। अपनी ख़ुशियों का गला ख़ुद मैंने ही घोंट डाला है। लेकिन वे ख़ुशियां मुझे स्वप्न में नहीं मिली थीं... बल्कि वे थीं, जीवन्त थीं, वाल्या! याद

है तुम्हें सफ़ेद पहाड़ी की वह रात? टिमटिमाते तारों भरा आकाश, याद है न?

वाल्या: चुप रहो, विक्टर।

विक्टर (उसकी तरफ़ भय से देखते हुए): तुम अब भी उससे प्रेम करती हो?

वाल्या (उसकी आवाज़ एकदम मद्धिम हो जाती है): बेहद।

विक्टर: मुझे माफ़ कर दो।

वाल्या: जाओ, माफ़ किया।

(अपने कांपते हाथों से विक्टर सिगरेट मुंह में लगाकर जलाता है। अपनी परेशानी छिपाने के लिए वाल्या भी इधर-उधर कुछ करने लगती है)

विक्टर (बैठे ही बैठे): मैं जा रहा हूं। मुझे फ़ौरन चला जाना चाहिए। कितने दिनों बाद मैंने उसे देखा है... उसके होठों के पास वह जो छोटी-सी रेखा बन गयी है, वह पहले नहीं थी। वह अब भी सेर्गेई को प्यार करती है।... वह जो कपड़ा पहने है उसे भी मैंने पहले कभी नहीं देखा था। अच्छा, तो अब उठूं और जाऊं। पर नहीं, मैं जा नहीं सकता।... कोशिश बेकार है।

वाल्या (बिना हिले): विचित्र बात है... कैसी विचित्र बात है! तो उसके न आने का यही कारण है! वह सेर्गेई की मृत्यु के कारण नहीं आया। वह बदल गया है। उसकी आंखें कितनी भिन्न लगने लगी हैं। तो क्या सचमुच मैंने कभी उसके साथ पार्क में नृत्य नहीं किया था। वही विक्टर है। पर वह बोलता क्यों नहीं? कैसी ख़ामोशी है! गुमसुम क्यों है! बेचारा विक्टर!

विक्टर (मौन टूटता है): और तुम अच्छी तो हो?

वाल्या (मानो चौंकते हुए): दिन कट रहे हैं।

विक्टर: अकेलापन लगता है?

वाल्या: कभी-कभी।... लगता है कि सेर्गेई के साथ-साथ मैं भी मर गयी!

विक्टर: ऐसी बात न करो!

वाल्या: नहीं, मैं दया की मोहताज नहीं हूं! मेरी अपनी ख़ुशियां भी हैं। वैधव्य की ख़ुशियां। मुझे बच्चों का पालन-पोषण करना है, उनके सुख के बारे में सोचना है।

विक्टर : लेकिन खुद अपने बारे में? तुम्हारे अपने जीवन के बारे में? घर, बच्चे – क्या यह काफ़ी है, वाल्या? पूरे तौर से काफ़ी है?

वाल्या : और मुझे चाहिए ही क्या? **(हंसती है)** भूखों मैं मरूंगी नहीं। तुम लोगों की मेहरबानी से गुज़र के लिए मुझे काफ़ी मिल जाता है।

विक्टर (भावविह्वल होकर) : एक बात कहूं? कितना अच्छा होता अगर तुम उस रुपये को लेने के लिए राज़ी न होतीं!

वाल्या : सच? लेकिन क्यों?

विक्टर : क्योंकि दान से मुझे नफ़रत है! तुम हमेशा स्वाभिमानी और स्वतन्त्र स्वभाव की थीं! और अब, देखो तो, तुम्हें क्या हो गया है?

वाल्या : क्या! क्या?!... बोलो...

विक्टर : तुम दूसरों की आश्रित बन गयी हो।

वाल्या (उसकी तरफ़ आश्चर्य से देखती है) : विक्टर, तुम सचमुच बदल गये हो!

विक्टर : प्रेम ने मेरा यही हाल कर दिया है।

वाल्या : उसने तुम्हें कठोर और क्रूर बना दिया है!

विक्टर : हां, तुम ऐसा कह सकती हो।

वाल्या (क्रोध से) : कठोर, कठोर।

(लारीसा का प्रवेश)

लारीसा : यह शोर-गुल क्यों हो रहा है?

वाल्या (परेशान हालत में) : कोई ख़ास बात नहीं।

लारीसा : वाल्या, बच्चों के पास जाओ। सेर्द्यूक के संभाले वे नहीं संभलते। तुम्हारे बिना वे नहीं सोयेंगे।

(वाल्या सिर झटककर दौड़ जाती है)

तुम भी खूब हो! छः महीने तक तुम्हारा कहीं पता-ठिकाना नहीं रहा और जब आए तो झगड़ने लगे!

विक्टर : तुम उसे प्यार नहीं करतीं।

लारीसा : तुम कहना क्या चाहते हो?

विक्टर : उसे कोई प्यार नहीं करता।

लारीसा : तुम्हें क्या हो गया?

(सेर्द्यूक, रोदिक, देनीस और ज़िन्का अन्दर आ जाते हैं)

सुनिये, कामरेड सेर्द्यूक, अपने इस असिस्टेंट को संभालिए। यह बहुत उपद्रव कर रहा है। **(कमरे से जाती है)**

सेर्द्यूक: क्या मामला है, विक्टर?

विक्टर (मायूसी से): कुछ नहीं...

ज़िन्का: लापचेन्को कहां है?

रोदिक: बेचारा लापचेन्को, समाज की खिदमत में कहीं ग़ायब हो गया!

देनीस: सिनेमा के सामने खड़ा-खड़ा अपनी न्यूरा का इन्तज़ार कर रहा है।

रोदिक: विक्टर, लगता है कि हम दोनों ही क्वांरे रह जायेंगे।

सेर्द्यूक: मैं जानता हूं तीर का निशाना किस ओर है।

विक्टर (अचानक सख़्ती से): अच्छा, अब आप लोग बैठ जाइये। बात साफ़ हो जानी चाहिए। मैं बहुत चुप रहा। लेकिन अब मैं चुप न रहूंगा।

ज़िन्का: लगता है कि सचमुच इसका दिमाग़ ख़राब हो गया है।

विक्टर: ज़िन्का, तुम इस झमेले से दूर रहो।

सेर्द्यूक: ख़ामोश! सब लोग चुप हो जाओ! शिफ़्ट इन्चार्ज कुछ कहना चाहता है।

विक्टर: वाल्या के सम्बन्ध में हमने जो यह व्यवस्था की है... यह एकदम ग़लत है, चीफ़... उसे नियमित रूप से रुपया मिल जाता है, लेकिन किसलिए? हाथ पर हाथ रखकर घर पर बैठे रहने के लिए?

सेर्द्यूक: तुम्हारा सिर फिर गया है, विक्टर?

ज़िन्का: विक्टर, इस तरह की बातें तुम कैसे...

रोदिक: तुम्हें शर्म आनी चाहिए!

विक्टर: चुप रहो, रोदिक! अपने इन बोगस बौद्धिक आचरण से तुम्हीं उसे नीचे गिरा रहे हो...

देनीस: क्या बक रहे हो...

रोदिक (ग़ुस्से से): सुनो, विक्टर...

(अपनी प्रेयसी न्यूरा के साथ लापचेन्को अन्दर आता है)

लापचेन्को (खुशी-खुशी): हलो, बच्चों को जन्म-दिन की बधाई! यह न्यूरा हैं, हेड आफ़िस में इलेक्ट्रीशियन। वहां इनके काम की काफ़ी चर्चा है।

न्यूरा (शर्माते हुए): नमस्कार।

लापचेन्को (न्यूरा से): मेरी शिफ़्ट के साथियों से मिलो। ये सब के सब बहुत अच्छे लोग हैं। इनसे अच्छे दोस्त कहीं नहीं मिल सकते।

विक्टर: अफ़ानासी, इस वक़्त तु"' जाओ, हमें बातें करनी हैं।

देनीस: आप बोलते क्यों नहीं, चीफ़? क्या आपने सुन लिया, यह क्या कह रहा है?

सर्दयूक: ज़रा ठहरो, मैं अभी उसे... **(भौचक लापचेन्को को रास्ते से हटाता हुआ विक्टर के पास जाता है)** हां तो, नौजवान! बतलाओ, आख़िर तुम कहना क्या चाहते हो?

विक्टर: आपने सेर्गेई और उनके बच्चों के बारे में तो सोचा, लेकिन इसके बारे में? क्या यह एक जीवित प्राणी नहीं है?

लापचेन्को (मैत्रीपूर्ण ढंग से): सुनो, साथियो!

सेर्दयूक (ग़ुस्से से): लापचेन्को, तुम यहां से चलते बनो...

न्यूरा: तुमने झूठ बोला था कि इनसे अच्छे दोस्त नहीं मिल सकते। पर यहां तो झगड़ा हो रहा है।

विक्टर: देखते नहीं, रोदिक, कि तुम्हारे रुपयों की वजह से इसका क्या हाल हो रहा है? मुझसे अब देखा नहीं जाता।

रोदिक (शान्ति से): तुम्हारी इस मामले में कुछ निजी दिलचस्पी है, विक्टर।

विक्टर: क्या? **(हाथ में कुर्सी उठाकर रोदिक को धमकाता है!)**

न्यूरा (ज़ोर से चीख़ती है): कृपया शान्त हो जाइये!

विक्टर (कुर्सी को नीचे रखते हुए): हां, हां, है मेरी निजी दिलचस्पी! मैं वाल्या से प्रेम करता हूं।

न्यूरा (फुसफुसाते हुए): हे भगवान!

विक्टर: मेरी समझ में नहीं आता कि इस बात को मैं छिपाऊं क्यों। आप ही लोग मेरा परिवार हैं। फिर यही अच्छा है कि आप जान लें। मैं अपने सुख को ख़ुद सुरक्षित न रख सका, उसे गंवा बैठा... क्यों? क्योंकि मैं एक तुच्छ आदमी था, हैसियत ही क्या थी! नतीजा यह निकला कि वाल्या सेर्गेई की पत्नी बन गयी थी। ठीक है, मैंने सोचा कि सब भूल

जाऊंगा। लेकिन मैं भूल न सका।... सेर्गेई से इसके बच्चे हुए, यह मां बनी, फिर भी इसे मैं अपने मन से दूर न कर सका। मेरा प्रेम पहले से भी अधिक गहरा हो गया। सेर्गेई की जगह मैं हो सकता था!... मैंने इससे दूर भागने की कोशिश की, लेकिन भाग न सका! मेरे लिए इतना ही जानना काफ़ी था कि यह यहां है। बस, मैं इतना ही चाहता था... रोदिक, यही मेरी निजी दिलचस्पी है। अब तुम समझ गये?

(लम्बी ख़ामोशी)

रोदिक: विक्टर, मैं माफ़ी मांगता हूं।

न्यूरा (फुसफुसाकर लापचेन्को से): क्या आप लोग हमेशा इसी तरह की बातें करते हैं?

लापचेन्को: किस तरह की?

न्यूरा: दिल की हर चीज़ को साफ़-साफ़ बता देते हैं?

लापचेन्को: हम कोशिश तो यही करते हैं।

विक्टर (न्यूरा पर पहली बार उसकी नज़र पड़ती है): और यह कौन है?

लापचेन्को: मैंने तुमसे बताया था न — यह हेड आफ़िस की न्यूरा हैं।

विक्टर (थकानभरे भाव से): इन्हें यहां क्यों ले आये?

लापचेन्को: यह... यह मेरी मित्र हैं... मैं इन्हें तुम लोगों से मिलाना चाहता था।

न्यूरा (विक्टर से, शर्माते हुए): नमस्कार।

विक्टर (न जाने क्यों स्नेह से उसे छाती से लगाते हुए): आपसे मिलकर खुशी हुई, न्यूरा।

न्यूरा: आपको मैं बहुत दिनों से जानती हूं। दो साल पहले हम लोगों ने एक बार साथ-साथ नृत्य किया था।

विक्टर (हल्की मुस्कराहट से): ज़रूर किया होगा, न्यूरा। **(अचानक मेज़ पर ज़ोर से घूंसा मारते हुए)** नहीं! मैं यह नहीं चाहता कि इसे मुफ़्त का रुपया मिले। सेर्गेई ने उसे इनसान बना दिया। आज मैं उसका सम्मान करता हूं।

सेर्द्यूक: लेकिन बच्चे... उनके बारे में भी तुमने कुछ सोचा है?

विक्टर (आख़िर कह ही देता है): चीफ़... हम इसे एक्सकेवेटर की टुकड़ी में शामिल कर सकते हैं।

सेर्द्यूक: यह कैसे हो सकता है... उसको किसी चीज़ की भी तो ट्रेनिंग नहीं है।

विक्टर (उत्साह से): उसको आने दीजिये। वह आये और देखे—उसका काम हम लोग कर देंगे। धीरे-धीरे हम उसे काम सिखाना शुरू कर सकते हैं। साल-दो साल में वह काम सीख जायेगी। उसे एक वास्तविक काम करना आ जायेगा। फिर वह दान न लेकर ख़ुद अपनी मज़दूरी घर ले जाया करेगी। वह एक मेहनतकश की ज़िन्दगी जी सकेगी।...

सेर्द्यूक (धीरे-धीरे): अच्छा! तो सारी बात यह है... मैं मानता हूं कि प्रेम आदि के बारे में तुम्हारी बातों पर मुझे विश्वास नहीं होता था। लेकिन यह तो चीज़ ही दूसरी है... **(विक्टर को छाती से लगाता है)** तुम सचमुच ही उसे प्यार करते हो।

विक्टर: चीफ़!...

सेर्द्यूक: लेकिन रोदिक के साथ तुमने बेइन्साफ़ी की है। उसने अपना प्रस्ताव पूरी सद्भावना से रखा था। शुरू में जब बच्चे छोटे थे तो वाल्या की मदद के लिए हमें कोई न कोई उपाय निकालना ही था। लेकिन अब, मुझे लगता है कि तुम ठीक ही कर रहे हो। **(रोदिक से)** क्यों रोदिक, बुरा तो नहीं मान गये?

रोदिक: बुरा क्यों मानूं! **(सहजता से)** विक्टर ठीक कह रहे हैं।

सेर्द्यूक (दूसरों से): आप लोगों का क्या ख़याल है?

देनीस: विक्टर ने बिलकुल सही बात कही है। मेरा मेजर, अब कर्नल बन गया है, अगर यहां होता तो वह भी यही कहता।...

लापचेन्को: तुम्हारे मेजर के बारे में हम लोग सब सुन चुके हैं।

ज़िन्का: लापचेन्को, उसके बारे में थोड़ा और सुन लोगे तो तुम्हारा फ़ायदा ही होगा।

न्यूरा: क्यों, लापचेन्को में क्या कोई ख़राबी है?

सेर्द्यूक: अच्छा, अच्छा! लड़कियो, तुम लोगों ने बड़ी गड़बड़ी मचा रखी है।

लारीसा (प्रवेश करती है): क्या मैं भी इन्हीं में शामिल हूं?

सेर्द्यूक (सख़्ती से): हां, तुम भी! क्योंकि मैं तुम से प्रेम करता हूं। इसका मतलब यह नहीं है कि हर वक़्त मैं तुम्हारे सामने दबकर चलूं। हर बात सोच-सोचकर कहूं। समझीं?

लारीसा (खुश होकर): आखिर तुमने माना तो!... खुले आम मंज़ूर तो किया...

सेर्द्यूक: हां, कह दिया तो क्या हुआ? शान्त, एकदम चुप हो जाओ। हुश! वाल्या से किस तरह हम बात करेंगे?

(दरवाज़े पर वाल्या आती दिखायी देती है)

विक्टर: चीफ़, इसकी आप मुझे इजाज़त दें... अब मुझे डरने की ज़रूरत नहीं है। मैंने आपसे सब कुछ कह दिया है। इजाज़त दे तो मैं कह दूं।

वाल्या: हां, विक्टर, मुझसे क्या कहना चाहते हो?

(सब लोग वाल्या की तरफ़ देखते हैं)

विक्टर (दृढ़ता से): तुम्हें चाहिए कि अब तुम ख़ुद अपने पैरों पर खड़ी हो जाओ। चलो और हमारे साथ एक्सकेवेटर पर काम करो। हम तुम्हें काम सिखला देंगे। तुम्हें काम मिल जायेगा। सबसे बढ़िया काम हैं।

वाल्या (कुछ देर रुककर): तो यह बात है! देखती हूं कि तुम अपनी बात पर अड़े हुए हो! क्यों, शिफ़्ट इन्चार्ज, मैं ठीक कह रही हूं न? **(कटुता से मुस्कराती है)** लेकिन समझ में नहीं आता कि मेरी इतनी तीमारदारी आप किस हक से कर रहे हैं? **(सेर्द्यूक से)** सुझाव के लिए धन्यवाद। लेकिन मेरा ख़याल है कि अपना इन्तज़ाम मैं ख़ुद कर लूंगी। **(रुपये निकालती है और सेर्द्यूक के सामने रख देती है)** मुझे दान नहीं चाहिए। **(सभी की ओर देखते हुए)** आपका ख़याल है कि मैं अपना काम नहीं चला सकूंगी? मैं यहां से'चली जाऊंगी। दुनिया में दूसरी तमाम जगहें पड़ी हुई हैं जहां जाकर आदमी काम कर सकता है।

देनीस (तमतमाकर): हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?

वाल्या: सिपाही भाई, मुझे तुम्हारा बौस पसन्द नहीं है। बात बस इतनी है। इनके मन में बदले की भावना भरी हुई है **(विक्टर के पास जाती है और उसकी आंखों में देखते हुए कहती है)** साफ़ है कि मेरे बारे में कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें यह भूल नहीं सकते!

विक्टर: वाल्या, तुम्हें इतना ही कहना है? **(दरवाज़े के पास जाता है, अपना जैकेट पहनता है)** अच्छा, मैं चला। **(और वह तेज़ी से बाहर चला जाता है)**

सेर्द्यूक (आहिस्ता से, शिकायती लहजे में): हे वाल्या, वाल्या...

रोदिक (वाल्या के पास जाकर): तुम्हें ऐसी बात नहीं कहनी चाहिये थी।... वह तुम्हे प्यार करता है। **(धीमे से)** बेहद।

ज़िन्का (तीव्रता से): वाल्या, तुमने बहुत ग़लत काम किया। विक्टर को इस तरह चोट पहुंचाने की क्या ज़रूरत थी!

वाल्या: क्यों, क्यों, सेर्गेई, मेरे प्राण?

(कमरा और उसमें उपस्थित लोग दृष्टि से ओझल हो जाते हैं। रोशनी में अकेली वाल्या रह जाती है)

तुम्हारे बिना मैं कितनी अकेली हूं! मेरी समझ में कुछ नहीं आता। जीवन कितना कठिन है, प्रिय! मैं करूं तो क्या करूं? मैं कुछ नहीं जानती। मेरा सिर चकरा रहा है।

कोरस की आवाज़: रोओ नहीं। मैं तुम्हारे आंसू बर्दाश्त नहीं कर सकता... लोगों को इस दुनिया में ख़ुश रहना चाहिए। ख़ास तौर से उन्हें जो कम्युनिज़्म का निर्माण कर रहे हैं—जैसे कि तुम्हें और मुझे। आख़िर आदमी को सुख किस चीज़ से मिलता है? यही न कि उसके कार्य उसके स्तर से थोड़ा ही सही, पर श्रेष्ठ हों।

वाल्या: तुम क्या कह रहे हो, मेरी समझ में नहीं आता।

कोरस की आवाज़: मैं नहीं जानता कि इस चीज़ को किस तरह समझाऊं। मैं सिर्फ़ यह जानता हूं कि अगर इनसान अपने वास्तविक कर्त्तव्य का निर्वाह करता है, तो वह काम ही उसे श्रेष्ठ बना देता है। **(स्नेहसिक्त स्वर में)** अगर तुम्हें कंक्रीट का काम अच्छा नहीं लगता, तो तुम एक्सकेवेटर पर काम करो। शुरूआत एक सहायक के रूप में कर सकती हो। साथ ही शाम के स्कूल में तुम ट्रेनिंग भी ले सकती हो। मुमकिन है तुम्हारे अन्दर कहीं ऐसी प्रतिभा हो जो तुम्हें तरक़्क़ी करके सहायक फ़ोरमैन या ऐसे ही किसी अन्य पद पर पहुंचा दे। कहते हैं कि वोल्गा के बांध पर एक लड़की है जो एक्सकेवेटर पर शिफ़्ट इन्चार्ज है। इसे ही कहते हैं किस्मत का धनी होना। है न?

वाल्या: ओह सेर्गेई! ओह मेरे प्रियतम!

(पूर्ण प्रकाश। वाल्या अब फिर कमरे में अपने मित्रों से घिरी हुई दिखायी देती है)

सेर्द्यूक : जाओ और विक्टर को वापस बुला लाओ ... वाल्या, उसे वापस बुला लाओ।

रोदिक : मैं बुला लाऊं?

वाल्या : शुक्रिया। लेकिन वह वापस नहीं आयेगा। वह अत्यधिक ज़िद्दी है। मैं उसे जानती हूं।

(दरवाज़ा खुलता है और द्वार पर विक्टर खड़ा दिखाई देता है)

तुम? लौट आये?

विक्टर : हां, यह मेरी आदत के खिलाफ़ है, है न? पर तुम ऐसे मुझे नहीं जान पाओगी। **(उसके समीप जाकर)** मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा — कभी नहीं! अगर तुम यहां से चली जाओगी, तो मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आऊंगा। और जहां भी तुम जाओगी मैं वहीं तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा। लेकिन मैं तुमसे एक विनती करता हूं, वाल्या, अपने लिए मुझसे मेरे इन दोस्तों को न छुड़वाओ। एक्सकेवेटर पर मैं सेर्गेई की जगह काम करता हूं। उस एक्सकेवेटर का हर पेंच, हर रिविट मेरे ख़ून-पसीने से भीगा हुआ है। ... वह मशीन एक इन्सान की तरह है। उसके अन्दर एक आत्मा है और मुझे लगता है कि उसके बिना मैं कभी ख़ुश नहीं रह सकूंगा! इसलिए हाथ जोड़कर मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि मुझे मेरे दोस्तों के सामने गुनहगार न बनने दो।

वाल्या : पागलों जैसी बातें न करो, विक्टर! ऐसी बातें न करो!

विक्टर (ज़िद से) : तब फिर चलो और हमारे साथ एक्सकेवेटर पर काम करो। अपने दुखों को भूल जाओ। अपने प्रति मेरे प्यार को भूल जाओ। सब कुछ भूल जाओ। आख़िरकार तो यह सेर्गेई की मशीन है, हमारे सेर्गेई की! तुम्हारे सेर्गेई की! वह अब हम लोगों के बीच नहीं है; लेकिन, वाल्या, तुम्हें और मुझे ज़िन्दा रहना होगा। यह हमारा कर्त्तव्य है — अपने प्रति और जीवन के प्रति।

कोरस : और जिस समय हर एक वाल्या के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है , उस समय दोनों छोटे सेर्योगिन — फ़्योदोर और येलेना — लारीसा के कमरे में गहरी नींद सो रहे हैं।

(अन्धकार। पुरानी सुपरिचित लोरी के स्वर सुनाई देने लगते हैं)

—वे सो रहे हैं! उनके जैसे सपने हम लोग अब कभी नहीं देख सकेंगे।

—फ़्योदोर उस नन्हे पीले फूल का सपना देख रहा है जिसे अपने जीवन में आज पहली बार उसने देखा था। वह उसके नन्हे-से बूट के पास ज़मीन से ऊपर निकला हुआ था।

—और येलेना उस चटक नीली गेंद का सपना देख रही है जो अन्तोन ने आज सुबह उसे दी थी। हां, वही अन्तोन जो डाक्टर बनने का स्वप्न देखता है।

—**सेर्गेई का अभिनय करनेवाला अभिनेता:** उनके सपनों से, उनके शैशव से मुझे सुखद ईर्ष्या होती है। ... लेकिन शायद सबसे ज़्यादा ईर्ष्या उस दिन होगी जब वे वयस्क हो जायेंगे। तब दुनिया कितनी बदल जायेगी और वे कितनी नयी-नयी अद्‌भुत चीज़ों को दुनिया में देख सकेंगे जो कम्युनिज़्म से हमें प्राप्त होंगी!

कोरस: लेकिन भावी चमत्कारों की दहलीज़ पर, अभी तो वे सिर्फ़ एक अद्‌भुत पीले फूल और एक चटक नीली गेंद के ही सुनहरे सपने देख रहे हैं।

(लकड़ी के एक छोटे-से पुल की आकृति उभरकर सामने आती है। सड़क के एक लैम्पपोस्ट के बग़ल में विक्टर और वाल्या खड़े हैं। पानी बरस रहा है)

वाल्या: विक्टर ... मेरे अज़ीज़ दोस्त, धन्यवाद।

विक्टर: किसलिए?

वाल्या: देखो ... **(हाथ खोलकर नोटों की एक गड्डी उसे दिखाती है)**

विक्टर: तुम्हारी तनख़्वाह?

वाल्या: हां, मेरी पहली तनख़्वाह ... **(उसकी आंखों में आंसू डबडबा आते हैं)** काश, वह इसे जान पाता ... कितना ख़ुश होता!

विक्टर: हां।

वाल्या (उसकी बांह पर अपना सिर रख देती है): धन्यवाद।

विक्टर (सहृदयता से): मूर्ख लड़की!

वाल्या (अचानक मुस्कराकर): कहते हैं कि वोल्गा के बांध पर एक लड़की है, जो एक्सकेवेटर पर शिफ़्ट इन्चार्ज है। क्या ऐसा संभव है?

विक्टर : क्यों नहीं!

वाल्या : ओह!

विक्टर : क्या हुआ?

वाल्या (मुस्कराते हुए) : पानी की एक बूंद मेरी गर्दन पर पड़कर अन्दर चली गयी।

विक्टर : सुना है कि हमारा एक्सकेवेटर ब्रात्स्क जा रहा है। क्या तुमने भी सुना है?

वाल्या (शीघ्रता से) : अच्छा, मैं चली। मुझे नर्सरी जाना है। बच्चे इन्तज़ार कर रहे होंगे।

विक्टर (उसके हाथ को अपने हाथ में लेकर) : वाल्या, प्रियतमे!

वाल्या : नहीं, नहीं... ऐसा मत कहो!

विक्टर : कभी नहीं?

वाल्या : अलविदा। **(भाग जाती है)**

विक्टर : वह दौड़कर चली गयी। वह ख़ुश है। उसकी आंखों में आंसू चमक रहे हैं। वह रात के अन्धकार में दौड़कर चली गयी।... क्या वह कभी भी मेरी पत्नी हो सकेगी? कभी वह इसके लिए राज़ी हो सकेगी? कौन जाने! लेकिन वह एक दूसरी ही कहानी है, दूसरी ही गाथा। यह कहानी यहीं ख़त्म हो जाती है। सड़क पर खड़ा-खड़ा मैं उसे जाता हुआ देख रहा हूं और सोच रहा हूं कि मैं उसे कितना प्यार करता हूं।...

कोरस : सफ़र मुबारक हो, विक्टर! **(दर्शकों से)** खेल ख़त्म हुआ।

(पर्दा गिरता है)

१९५९